

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिवृद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएण्टल मोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना, गुजरात साहित्य-मभा, अहमदाबाद,
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होशियारपुर, निवृत्त सम्मान्य नियामक—
(ऑनरेरि डायरेक्टर), भारतीय विद्याभवन, बम्बई ।

ग्रन्थाङ्क ५६

कविया करणीदानजी कृत

सूरजप्रकाश

भाग १

प्रकाशक

राजस्थान, राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

कविया करणोदानजी कृत

सुरजप्रकाश

भाग १

सम्पादक

श्री सीताराम लालस

वृहद् राजस्थानी शब्दकोशके कर्ता

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१८ }
प्रथमावृत्ति १००० }

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८३

{ ख्रिस्ताब्द १९६१
{ मूल्य ८००

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa,
Old Rastrani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to
India in general and Rajasthan in particular.

*

GENERAL EDITOR

PADMASREE INA VIJAYA MUNI PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, Germany; Bhandarkar
Oriental Research Institute Poona; Vishveshvarananda Vaidic
Research Institute, Hoshiarpur, Punjab; Gujrat Sahitya
Sabha, Ahmedabad; Retired Honorary Director,
Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay; General
Editor, Gujrat Puratattva Manjira
Granthavali, Bharatiya Vidya
Series; S'nght Jain Series
etc. etc.

* *

No. 56

SOORAJ PRAKAS

BY KAVIYA KARNIDANJI

Part-First

* * *

Published

Under the Orders of the Government of Rajasthan

By

The Director Rajasthan Prachya Vidya Pratishthana
(Rajasthan Oriental Research Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

विषय - सूची

भूमिका	... १-१६
अथ प्रथारभ प्रथम प्रकरण	... १
गणेशस्तुति	... १
अथ गाथा सरस्वतीरी स्तुति	... २
, , सदासिवस्तुति	... ३
, , स्त्रीसुरजजीरी स्तुति	... ४
, , स्त्रीनारायणजीरी स्तुति	... ५
, , पंचदेवस्तुति	... ६
अथ निंदोस प्रवचवरण	... ६
स्त्रीश्रक्षर पूर पिच्छम वरणण अनिकवि प्रसन	... ६
द्वितीय साखी	... ७
पुनि अनि कावि प्रसन छंद पद्धरी	... ७
राज-वसवरण	... ६
स्त्रीरामावतारवरण	... २०
जन्मोच्छ्राहवरण	... २१
राजा दसथ वाक्य विस्वामित्ररी स्तुति	... २४
स्त्रीरामचरित्र	... २६
पुनः वसवरण	... ७७
द्वितीयो प्रकरण—	... ७७
१- अथ राजा पु ज तथा उरारा तैरै पुत्रारौ वरणण	... ६४
२- राजा पु जरा प्रथम पुत्र धरमववरी वरणण	... ६४
३- राजा पुंजरै बीजा पुत्र भाणउदपरी वरणण	... ६६
४- राजा पु जरै तीजा पुत्र वीरचदरी वरणण	... ६६
५- राजा पु जरा चौथा पुत्र श्रमरविजैरी वरणण	... १०४
६- राजा पु जरा पचम पुत्र सजणविणोदरी वरणण	... १०६
७- राजा पु जरा छठा पुत्र पदमरी वरणण	... ११५
८- राजा पु जरा सातमा पुत्र श्रहररी वरणण	... १३१
९- राजा पु जरा आठमा पुत्र वासुदेवरी वरणण	... १३२
१०- राजा पु जरा नवमा पुत्र उग्रप्रभरी वरणण	... १३७
११- राजा पु जरा दसमा पुत्र सुबुविरी वरणण	... १४३
१२- राजा पु जरा ग्यारमा पुत्र भरथरी वरणण	... १५२
१३- राजा पु जरा बारमा पुत्र कर्पासिधुरी वरणण	... १७३
१४- राजा पुजरै तेरमा पुत्र चदरी वरणण	... १६१

त्रतीथी प्रकरण—

१- अथ राजा जयचदरी वरणण	.	२१६
२- राव मीहारी वरणण	.	२३६
३- राव आसथानरी वरणण	.	२३८
४- राव धूहडरी वरणण	.	२४०
५- राव रायपाळरी वरणण	.	२४१
६- राव तीडारी वरणण	..	२४२
७- राव सलखारी वरणण	.	२४३
८- राव वीरमरी वरणण	.	२४३
९- राव चूंडारी वरणण	.	२४३
१०- राव रणमलरी वरणण	.	२४५
११- राव जोधारी वरणण	.	२५०
१२- राव सूरज (सूजा)री वरणण	.	२५२
१३- कुवर वाघारी वरणण	.	२५३
१४- राव गामारी वरणण	.	२५३
१५- राव मालदेवरी वरणण	.	२५८
१६- मोटा राजा उदैसींघरी वरणण	..	२६१
१७- महाराजासूरसिंहरी वरणण	.	२६१
१८- भाटी गोविंदासरै साथ किसनसिंघरी जुघ वरणण	.	३०१
१९- परिशिष्ट		
१. नामानुक्रमणिका	.	१
२. छन्दानुक्रमणिका	.	१०

सञ्चालकीय वक्तव्य

राजस्थानके चारण साहित्यकारोंने स्वकीय काव्य-प्रतिभा और सतत साधनाके बल पर राजस्थानी भाषामे उत्कृष्ट साहित्यका निर्माण किया है, जिसका भारतीय साहित्यमे विशेष महत्त्व है। व्यक्तिगत अनुभव और अध्ययन द्वारा इन राजस्थानी कवियोंने अपनी रचनाओंको प्रामाणिक रूपमे प्रस्तुत किया है, अतएव इनका साहित्यिक एव ऐतिहासिक दोनों ही प्रकारसे विशेष उपयोग है।

कविया करणीदानजी राजस्थानके चारण कवियोंमे उच्च स्थानके अधिकारी है। मेवाडके सूलवाडा नामक ग्राममे जन्म लेकर करणीदानजी अपनी काव्य-प्रतिभा, विद्वत्ता, रण-कौशल और राजनैतिक पटुताके कारण तत्कालीन अनेक राज-कुलोंके पूज्य हुए थे, तथा जनताके भी प्रीतिपात्र बने थे। स्वयं करणीदानजीने अनेक युद्धोंमे सक्रिय भाग लेकर अपनी वीरताका चमत्कार भी प्रदर्शित किया था और साथ ही उन युद्धोंसे सम्बद्ध घटनाओंको काव्य-रूपमे मूर्तिमान किया था।

कविया करणीदानजी कृत 'सूरजप्रकाश' नामक महाकाव्य राजस्थानी भाषाकी एक उत्कृष्ट कृति है। इस कृतिमे मुख्यतः जोधपुरके महाराजा अभयसिंह द्वारा गुजरातके सूबेदार शेरविलदखाको अहमदाबादके युद्धमे परास्त करनेका चित्रण हुआ है और प्रसङ्गवश पौराणिक एव ऐतिहासिक आधारों पर राठौड वंश-वर्णन आदि सम्बद्ध विषयोंका भी निरूपण किया है। उक्त युद्धमे स्वयं कविने भी सक्रिय भाग लिया था, अतः समसामयिक रचना होनेके कारण इस काव्य-कृतिका विशेष महत्त्व है।

'सूरजप्रकाश' के इस रूपमे अब तक अप्रकाशित होनेसे जिज्ञासु जन एतद्विषयक विशेष अध्ययनसे वञ्चित थे। प्रसन्नताका विषय है कि 'सूरजप्रकाश' का प्रथम भाग अब वृहद् राजस्थानी कोशके कर्ता श्री सीतारामजी लाळस द्वारा सम्पादित होकर राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके ५६ वे ग्रन्थके रूपमे प्रकाशित किया जा रहा है। 'सूरजप्रकाश'से

सम्बद्ध विशेष ऐतिहासिक और काव्यगत विपर्योका विवेचन आदि ग्रन्थके द्वितीय भागमे सम्पादक द्वारा किया जावेगा ।

इस ग्रन्थके प्रकाशन-व्ययका अर्द्धशे भारत सरकारके वैज्ञानिक और सांस्कृतिक मन्त्रालय द्वारा आधुनिक भारतीय भाषा-विकास-योजनाके अन्तर्गत प्रदान किया गया है, तदर्थ हम भारत सरकारके प्रति अपना आभार-भाव प्रदर्शित करते हैं ।

विश्वास है कि हमारे पाठकोको यह प्रकाशन विशेष रुचिकर होगा ।

बम्बई,
गणगौर पर्व, सं० २०१८

}

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक,
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर [राजस्थान]

भूमिका

राजस्थान एक विशाल प्रदेश है। यह शताब्दियोंसे भारतीय संस्कृति, साहित्य और कलाका केन्द्र ही नहीं, रक्षक रूपसे भी रहा है। वीर-भूमि राजस्थानने अनेक वीरो तथा विद्वानोको जन्म दिया है, जिन्होंने अपने कृत्यों द्वारा, जिनमें इतिहास, वेदान्त, संगीत, नृत्यकला, वाद्यकला आदि प्रमुख हैं, सदैव राजस्थान का नाम उज्ज्वल रखा है। राजस्थानी साहित्यमें सभी रस प्रचुर मात्रामें उपलब्ध होते हैं जिनमें वीररस, शृंगाररस और शान्तरस विशेष उल्लेखनीय हैं।

जिस प्रकार वीरोंने अपने शौर्य और पराक्रम द्वारा राजस्थानकी मान-मर्यादा व प्रतिष्ठाकी रक्षा की है, ठीक उसी प्रकारसे राजस्थानके विद्वानो द्वारा इन महावीरोके यशको अमर रखनेके उद्देश्यसे अनेक काव्य-रचनाएँ हुई हैं जिनसे इन वीरोकी यश-गाथाएँ काव्य द्वारा सदैव अमर रह सकें। ऐसे विद्वानोमें डिंगल भापाके प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सूरजप्रकाश' के रचयिता महाकवि करणीदानजी कवियाका नाम भी उल्लेखनीय है।

चारण-कुल-भूषण करणीदानजी अपने समयके महाकवि, कुशल राजनीतिज्ञ, ज्योतिषी, संगीतज्ञ और इतिहासके मर्मज्ञ थे तथा संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा राजस्थानी भाषाके विद्वान थे। ये मेवाड़ राज्यमें सूलवाड़ा नामक ग्रामके निवासी थे। इनके पिताका नाम विजयराम था। इनके बचपनके जीवनके विषयमें अभी तक कुछ भी उपलब्ध नहीं हुआ है। केवल वीरविनोद नामक मेवाड़के बृहद् इतिहासमें महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदासजीने एक-दो स्थानों पर इनका जिक्र करते हुए लिखा है कि महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय चारण कविया करणीदानके गीतोसे इतने प्रभावित हुए थे कि उन्होंने इनके रचित गीतोका धूप इत्यादिसे पूजन किया।^१

इसके अतिरिक्त कर्नल टॉडने अपने राजस्थानके इतिहासमें बहुत ही

^१ वीर-विनोद, भाग २, पृ० ६६६ ।

प्रशसनीय भाषामे महाकवि कर्णीदानजी कवियाका कई म्यानों पर विजद् वर्णन किया है ।^२

महाराणा संग्रामसिंहजी द्वितीयसे सम्मान प्राप्त करनेके बाद जोधपुरके महाराजा श्री अभयसिंहजीने इनको अपने पास बुनाया । महाराजा अभयसिंहजीने इनका बड़ा सम्मान करते हुए अपना अयाचक कवि बनाया ।

राजस्थानमे वीर चरित्रोका विजद वर्णन करने वाले अनेक कवि तो ऐसे हुए हैं जो स्वय युद्धस्थलमे अपनी ओजस्विनी वाणी और शक्तिशाली भुजाओ, दोनोके चमत्कारका प्रदर्शन करते थे । ऐसे कवियोका उद्देश्य केवल अपने आश्रयदाताके सुयोगका वर्णन करना ही नहीं था अपितु युद्धभूमिमे घटित होने वाली घटनाओकी सामग्री एकत्रित करनेका भी था, ऐसे महाकवियोमें

^२ डॉड साहब लिखते हैं कि, 'कर्णीदान जिस प्रकारमे पहली श्रेणीके कवि थे उभी प्रकार राजनीतिमें भी चतुर, योद्धा और प्रगाढ पठित थे, और प्रत्येक विषयमें ही वह अपनी चतुर्गताका चूडान्त प्रमाण दिखाया करते थे । मारवाडके आत्म-विग्रहके समय प्रत्येक राजनैतिक घटनाका उन्होंने प्रशसनीय रूपसे अभिनय किया है । दूसरे उनके बलविक्रमके सम्बन्धमें हम केवल उतना ही कहना है कि राजपूत जातिके अतुलनीय प्रबल युद्ध में लिप्त हुए वीरोंमें जो कई जने अपनी जीवन-रक्षा करनेमें समर्थ हुए थे, कवि कर्णीदान भी उन्हींमेंसे एक थे । तीसरे सात हजार पाच सौ कवित्तोसे पूर्ण 'सूर्यप्रकाश' ग्रन्थ उनके पांडित्य और कवित्वका अत्यंत परिचय दे रहा है । वही सूर्यप्रकाश केवल उनका पैतृक गुण है । हृदयहारी कवितामाला तथा ग्रन्थ-शक्तिका प्रचलित प्रमाण दिखा रहा है । यही नहीं कि उन्होंने अपनी गौरवगरिमाको बढ़ानेके लिए उस श्रेष्ठ नीतिका अवलम्बन किया था इसके भी बहुतसे उपदेशमूलक प्रमाण विद्यमान हैं ।^१ राठौर राजकवि कर्णीदान विक्रमाजीनकी समामें कालिदासकी समान अथवा महामान्य भारतेश्वरीकी समामें वर्तमान लार्ड हेनिसके समान केवल वीणा-ध्वनिसे प्रवृत्तिको प्रसन्न ही नहीं कर सके किन्तु वह अपनी अमृत निस्पन्दनी लेखनीके समान जन्म-भूमिके लिये तलवार भी चला सकते थे । कर्नल टॉटने इसीको प्रकाशित किया है । इस बातको हम कह सकते हैं कि कर्णीदानने केवल अपनी लेखनीके बलसे, अथवा तलवारके बलसे, या नीनिशताके बलसे अपने यशकी किरणोंको नहीं फैलाया था, वरन् उनके द्वारा आर्य जातिका एक कलक दूर हो गया है । विलायतके निवासी शिक्षित-माणों और उन पश्चिमी शिक्षाके उपासक दृशी गणोंको बड़ विश्वास था—कि भारतमें इतिहास-रचना की प्रणाली किसी समय भी प्रचलित नहीं थी । परन्तु कवि कर्णीदानका बनाया हुआ इतिवृत्तमय सूर्यप्रकाश उस आन्तिकी जडमें अवश्य ही एक टारुण आघात करता है । कवि कर्णीदान राजपूत जातिके लिए ही गौरवरूप नहीं थे, वरन् यह सम्पूर्ण भारतके अलंकारस्वरूप थे, इतिहास अनन्त काल तक इस बातका प्रचार करता रहेगा, इसमें कुछ भी सदेह नहीं ।

करणीदानजी भी थे जिनके रचित 'सूरजप्रकाश'में दोनों प्रकारके उद्देश्योका पूर्ण निर्वाह हुआ है । -

ऐसा कहा जाता है कि महाराजा अभयसिंहजीने अहमदाबादके युद्धमें जानेके पूर्व अपने तीन प्रमुख कवियोंको युद्धका वर्णन करनेके हेतु आज्ञा दी थी, जिनमें कविराजा करणीदान, वीरभाण रतनू और बखता खिडिया थे । वीरभाण रतनूने राजरूपक ग्रंथकी रचना की जो ऐतिहासिक दृष्टिसे एक अद्भुत और महत्त्वशाली ग्रंथ है । बखता खिडियाने १६५ छप्पय कवित्तोमें इस युद्धका वर्णन किया है परंतु कविराजा करणीदानने महाराजाके आदेशानुसार अपने इस ग्रंथमें शेर बिलदखाँके साथ युद्धके वर्णनका ध्येय लेकर महाराजा अभयसिंहजीके पूर्व पुरुषोका भी सक्षिप्त इतिहास दे दिया है, और महाराजा अभयसिंहजीके जीवन-वृत्त सम्बन्धी सिर्फ दो घटनाओंका ही वर्णन किया है जिनमें प्रथम घटना नागोरका युद्ध और दूसरी घटना महाराजा अभयसिंहजीका शेर बिलदखाँके साथ अहमदाबाद-विजयका युद्ध है । अहमदाबादके युद्धका वर्णन बड़े विस्तारके साथ किया गया है एव इसकी समाप्तिके साथ ही साथ ग्रंथ भी समाप्त हो जाता है ।

ग्रंथको पढनेसे विदित होता है कि कविका उद्देश्य ग्रंथको इतिहासकी दृष्टिसे महत्त्वशाली बनानेका था और ठीक इसी सिद्धान्तके अनुसार ग्रंथारम्भसे लेकर ग्रंथके अर्द्ध भाग पर्यन्त महाराजा अभयसिंहजीके पूर्वजोका सक्षिप्त वर्णन है, जिसमें सर्वप्रथम सूर्यवंशकी वशावली, तत्पश्चात् सक्षेपमें रामायणकी कथा लिखी है । रामायणकी कथा के पश्चात् रामके पुत्र कुशसे लेकर राजा पुज तक की पुन वशावली दे कर राजा पुजके तेरह पुत्रोका वर्णन और राठौडोकी प्रमुख तेरह शाखाओंका उल्लेख किया गया है । फिर राठौड राजा जयचदसे लेकर महाराजा अभयसिंहजीके पिता महाराजा अजीतसिंहजी तकके राजाओंका कही सक्षिप्त एव कही कुछ विस्तृत वर्णन दिया गया है जिनमें महाराजा सूरसिंहजी, गजसिंहजी, जसवतसिंहजी तथा अजीतसिंहजीका वर्णन अपेक्षाकृत अन्य राजाओंसे कुछ विस्तारपूर्वक है । इस प्रकारसे ग्रंथ समाप्त किया गया है ।

ग्रंथको प्रारम्भ करके पूर्ण करने तक कवि महोदयको पूरा एक वर्ष लगा था जिसका उल्लेख ग्रंथ-समाप्ति पर कवि द्वारा इस प्रकार मिलता है—

इहा

सत्रैसै समत सत्यासियै, विजय दसमि सनि जीत ।

वदि कातिग गुण वरणिणी, दसमी वार अदीत ॥ १

वणियो गुण इक वरम विचि, उकति अरथ अणपार ।

छद अनुमटप करिउ जन, सत पंच मान हजार ॥ २

‘अभा’ तणी सुभ नजर अति, ववि छक सुकवि विधान ।

कुरवदान लहियो अधिक, कहियो करणीदान ॥ ३

जब यह ग्रथ सम्पूर्ण हो गया तो कवि महोदयने अहमदावादके युद्धका वर्णन करने वाले अन्य दोनो कवि श्री वीरभाण रतनू एव वखता खिडियाके साथ-साथ महाराजा अभयसिंहजीको एक दरवार कर अपनाग्रथ सुनानेकी इच्छा प्रकट की । तब महाराजाने ग्रथोका परिमाण पूछा । तीनोंने अपने-अपने ग्रथोका परिमाण बतलाया । महाराजा उस समय बड़े कार्योंमे व्यस्त थे । उन दिनो आये दिन युद्धका भ्रमट लगा ही रहता था और वादशाहकी सेवामे भी महाराजाको बार-बार जाना पडता था, अत इतने बड़े ग्रथोको सुननेका अवसर नहीं था । अस्तु महाराजाने समयाभावके कारण कवियोको आज्ञा दी कि अपने-अपने ग्रथोको संक्षिप्त कर के लाओ, हम सुनेगे । इस पर वीरभाण रतनू और वखता खिडिया तो मौन ही रहे । वे अपने-अपने ग्रथोको संक्षिप्त नहीं कर सके परन्तु कविराजा करणीदानजीने सूरजप्रकाशका साराण लेकर ‘विरद-सणगार’ नामक छोटा ग्रथ तैयार कर दिया । महाराजाने इस छोटे ग्रथको (विरद-सणगारको) आद्योपान्त सुना और ऐसे प्रभावित हुए कि महाराजा स्वयं करणीदानको हाथी पर सवार करा आप घोड़े पर चढ कर उनके निवास-स्थान तक पहुंचाने पधारे । इसकी साक्षीका निम्नलिखित दोहा प्रसिद्ध है ।

अस चढियो राजा अभी, करि चाडे कविराज ।

पौहर हेक जलवे मे, मोहर हने महाराज ॥

सूरजप्रकाश और विरद-सणगारके अतिरिक्त कवि-कृत एक और ग्रथ ‘जती-रासा’ मैंने महात्मा पनारामजी कवीरपथीके पास देखा था । ‘जतीरासा’की कविताका कुछ उदाहरण महात्मा पनारामजीसे मैंने लिया था जो इस प्रकार है ।

इहा

जती मिह माकळ जडै, तेडै नाग प्रतच्छ ।

कामण भुज नगरा करै, मगरा चाडै मच्छ ॥ १

छापय

काम पडै गढ कोट, आग जद हूँ अमरावा ।

काम पडै कायवा, आग जद हूँ कवरावा ।

मिसल काज मत्रिया, आग व्है जाव सवाला ।

अहम काज ऊपजै, करै जद आग कवाला ।

श्राग व्हे ग्यानरै काम अत, महत सता मन भामणा ।
हृद श्राग जदे जतियो हवै, काम पडै जद कामणा ॥ १

छद त्रोटक

कम वेम गुलाव भले कळिया ।
इकसी न हुवै कर आगळिया ।
सास्त्रा मभ भेद इसा सुणजे ।
अधमा मधमा उत्तमा मुणजे ।
जिम वस हुआ खिमसूर विजे ।
सगळी प्रत दिल्लिह सायद जे ।

जतीरासाके अतिरिक्त एक अन्य ग्रथ 'अभयभूषण' भी महात्मा पना-
रामजीसे सुना था जिसका एक सर्वैया अपन्हत्यालकारका बडा सुन्दर उदाहरण
है जो नीचे उद्धृत किया जाता है—

सर्वैया

ऐ न घटा तनत्रान सजे भट, ऐ न छटा चमके छहरारी ।
गाज न बाजत दुदुभि ऐ, बक्र पत नही गजदत निहारी ॥
ऐ न मयूर जु बोलत है, विरदावत मगनके गन भारी ।
ऐ नहि पावस काल अली, अभमाल अजावतकी असवारी ॥

इस प्रकार 'अभयभूषण' ग्रथके एक सर्वैयेसे ही ग्रथका काव्यात्मक चमत्कार
प्रदर्शित हो जाता है । अस्तु यह बडा सुन्दर ग्रथ था, किन्तु दुर्भाग्यवश अब
सपूर्ण कृति उपलब्ध नहीं होती है ।

उपर्युक्त ग्रथोके अतिरिक्त भिन्न-भिन्न विषयो पर कविराजा श्री करणी-
दानजी रचित वीसियो गीत उपलब्ध होते हैं ।

ग्रथ 'सूरजप्रकास' कवि महोदय रचित एक ख्याति प्राप्त महान रचना है । इस
ग्रथके पूर्ण अध्ययन करनेसे पता चला है कि कविराजाका राजस्थानी भाषा पर
तो विशेष अधिकार था ही परन्तु साथ ही सस्कृत एव अरबी-फारसीका भी
बडा ही उत्तम ज्ञान था । सैकडो ही शब्दोका प्रयोग अरबी, फारसी एव
सस्कृत भाषाके प्रति उनकी प्रकाण्ड विद्वत्ताका परिचय स्वत ही प्रदान कर देता
है । किन्तु फिर भी उनकी काव्य-रचनाका ध्येय सिर्फ राजस्थानीका ही था जो
उनकी मातृभूमिकी वाणी अथवा 'स्वर्गादिपि गरीयसी' थी ।

कवि महोदयने पात्रो के चरित्र-चित्रण और घटना-विधानमे कभी-कभी
अपना अनूठा काव्य-कौशल प्रदर्शित किया है । इस ग्रन्थके दूसरे भागमे
ग्रथका विशद विवेचन और प्रच्छन्न सौन्दर्यका उद्घाटन करनेका प्रयत्न
करूंगा । कविका अध्ययन भी विशाल था । भारतकी अनेक प्रान्तीय

भाषाओं पर भी कविकी रचनाएँ मिलती हैं। अलंकार, रस, काव्य-शास्त्र, इतिहास, सगीत, वैद्यक एवं ज्योतिषका भी कवि महोदयको अच्छी जान था। इन विषयों पर रचे कोई पृथक ग्रंथ तो उपलब्ध नहीं होते परन्तु 'मूरजप्रकाम' ही एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें यथा-स्थान कविने व्यवहारमें आने वाली प्रायः सभी विद्याओं व कलाओंका सुन्दर चित्रण करते हुए अपनी कुशल प्रतिभा एवं विद्याल ज्ञाननिधिका सुपरिचय प्रदान किया है।

जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं कि सूर्यवगके प्रारम्भसे लेकर महाराजा श्री अभयसिंहजी तकका दीर्घ वर्णन अनेक प्रकरणोंके माध्यमसे कवि महोदयने किया है, जिनकी क्रमानुसार सूची हम उत्तर्गद्धमें सविवेचन देगे। प्रस्तुत भाग (पूर्वार्द्ध) में हमने केवल तीन कथा-प्रकरणोंको ही लिया है जिनका परिचयात्मक विवेचन निम्नलिखित है—

प्रथम प्रकरण

सर्वप्रथम मगलाचरणके पश्चात् कविने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजीके पूर्वजोंकी पीढियोंका वर्णन किया। तत्पश्चात् रामचरितका संक्षिप्त वर्णन किया है। उक्त कथन के पश्चात् रामचन्द्रजीके पुत्र कुगसे पूज तककी वगावली है। इसी पूजके १३ पुत्रोंसे राठीडोंकी १३ शाखाएँ चली हैं, उनका वर्णन इस ग्रन्थमें द्वितीय प्रकरणसे मिलता है।

द्वितीय प्रकरण

१ राजा पूजके प्रथम पुत्रका नाम धर्मविम्ब (धर्मधुर) था। वनमें गिकार खेलते समय अङ्गिरा ऋषिसे उनकी भेट हुई। ऋषि प्रसन्न हुए और उन्होंने राजाको अखूट दान देनेकी शक्ति प्रदान की। धर्मविम्बने अपने समयमें बहुत दान दिया और उसके वगज दानेश्वर कहलाये।

२ भाणउदीप (भानुदीप) पूजके दूसरे पुत्र थे। भानुदीपने लक्ष्मणजी(तोरु ?)की यात्रा करते समय एक दिन स्वप्नमें लक्ष्मणजीको देखा और उनके आगीवादिके फलस्वरूप कागडेका राज्य पाया। राज्य प्राप्त करनेके तीन वर्ष पश्चात् कागडेमें भयकर दुर्भिक्ष आया। राजाने इसके निवारणके लिए ज्वालामुखी देवीकी आराधना की और देवीने प्रसन्न होकर उसके राज्यमें कभी अकाल नहीं पडनेका वर देकर इस भयको टाल दिया। इस अभय-दानकी प्राप्तिसे भानुदीपके वंशज अभयपुरा कहलाये।

३ पूजके तृतीय पुत्र वीरचन्द्र थे। एक रात्रिको सोते वक्त स्वप्नमें उन्होंने एक सुन्दरीको देखा। वे उस पर आसक्त हो गये और उन्हें राज्य-कार्यसे अरुचि हो गई। राज-पुरोहितके ज्ञानोपदेशसे भी राजा पर से

मोहका आवरण दूर नहीं हुआ तब उस राज-पुरोहितने अपनी आराध्य-देवीकी आराधना की और देवीको प्रसन्न कर के यह ज्ञात किया कि उक्त सुन्दरी जो कि राजाको स्वप्नमें दिखाई दी थी, अणहिल पाटणके चौहान राजा चन्द हमीरकी कन्या है। अनिष्ट नक्षत्रोमे उत्पन्न होनेके कारण राजाने उसे वनमे डलवा दिया था जहा एक ऋषिके द्वारा उसका पालन-पोषण हुआ और बड़ी होने पर ऋषिने उसको राजाके पास वापिस लौटा दिया। कन्याके विधवा होनेके योगको टालनेका यही उपाय था कि उसके साथ विवाहकी इच्छा रखने वाला राजपुत्र अपना मस्तक काट कर भगवान शंकरको अर्पण करदे तो महादेवकी कृपासे वह वापिस जी उठेगा और इस कन्याको पत्नी रूपमे ग्रहण कर सकेगा। इस बातकी सूचना मिलते ही राजाने उस कन्याके साथ अपने विवाहका प्रबन्ध करवा दिया और वरकी आरतीके समय जब राजाको आरतीमे शिवकी मूर्ति दृष्टिगोचर हुई तो उसने अपना मस्तक काट कर शिवजीको अर्पण किया। इस पर भोलेनाथ प्रसन्न हुए और राजाका कपाल (मस्तक) उसके घड पर वापिस रख कर उसे जीवित किया। इस घटनाके कारण उसके वंशज कपालिया नामसे प्रसिद्ध हुए।

४ अमरविजय पुजके चतुर्थ पुत्र थे। शिकारमे जाते वक्त उन्होने कई दिनोंसे अपूज पडा हुआ कालीका (देवीका) एक मठ देखा। अमरविजयने विधिवत बलि इत्यादि दे कर देवी की पूजा की। देवी प्रमन्न हुई और कहा कि तेरे ननिहाल वालोने १०० वर्षसे मेरी पूजा नहीं की है इसलिए उनके कुरहगढका राज्य मैं तुम्हे देती हूँ। कुरहगढ पर चढाई कर के अमरविजयने परमारोको परास्त किया और गढको अपने अधिकारमे कर लिया। इसी-लिए इसके वंशज कुरहा कमघज कहलाये।

५ राजा पुजका पंचम पुत्र सजनविनोद था। एक दिन वह विन्ध्याचल पर कुभिलादेवीके दर्शनार्थ गया। वहाँ पर उसे एक पाच-वर्षीय कन्या मिली। उसने राजासे कहा कि तेरा मनोरथ सिद्ध होगा। राजाने समझा कि यह पुजारीकी कन्या है इसलिए उसने उसको ५ मुहरे और नारियल दिया। इस पर कन्या हँसी और अन्तर्धान हो गई। तत्पश्चात् राजा मंदिरमे गया और नौ दिन तक बराबर पूजा करने पर भी देवी प्रसन्न नहीं हुई तो वह निराश होकर वापिस लौट गया। रास्तेमे जलधरनाथ नामक योगीसे राजाकी भेट हुई। उसने राजाको सान्त्वना दी कि तू चिन्तित मत हो, वह ५ वर्षको कन्या ही देवी थी। उसने तुम्हे

पहले ही वरदान दे दिया था । इस पर राजाकी चिन्ता दूर हुई और उसने जलन्धरसे प्रार्थना की कि आपका जल पर पूरा अधिकार है, कृपा कर के मुझे भी वह मंत्र सिखावे । योगीने प्रसन्न हो कर राजाको वह मंत्र सिखा दिया । राजाने मंत्रकी जाच करनेके लिए मंत्र पढा तो वहा पहाड तोड कर जल-प्रवाह निकल पडा । इस प्रकारकी सिद्धिसे राजा बहुत प्रसन्न हुआ । उसने गन्धुओ पर विजय करनेकी ठान ली और कुछ साथियो-सहित चल पडा । थोड़े आदमियोको देख मार्गमे तवरोने इन पर हमला कर दिया । इस पर राजाने मंत्र पढा और जल-श्रोत निकाल कर गन्धुओको वहा दिया । विजयी राजाने योगी जलन्धरनाथकी पूजा की । इसके वगज जल-खेडिया कहलाये ।

६ पूज के छठे राजकुमारका नाम पद्म था । इन्हीके समकालीन वृगलाणके राजाने मय जनानेके अपनी वाटिकामे डेरा किया । रात्रिमे एक सिद्ध गुटकेके वल उडता हुआ उधरसे निकला । वहाकी शोभासे मोहित होकर वह वहा उतरा और एक बिछी हुई सेज पर लेट कर गाना सुनने लगा । उस समय सब लोग गाना सुननेमे व्यस्त थे । कुछ समय पश्चात् सिद्ध निद्राविवग हो गया और गुटका उसके हाथसे छूट गया । वृगलाणके राजा उधरसे घूमता हुआ निकला और उसने उस गुटकेको उठा लिया । राजाने सिद्धको जगाया । जब सिद्धने गुटका अपने पास नही देखा तो वह बहुत घबराया किन्तु राजाने गुटका उसे लौटा दिया । इस पर सिद्ध बहुत प्रसन्न हुआ और उसने राजाको वर मागनेको कहा । राजाने पद्मिनी स्त्री प्राप्त करनेकी इच्छा प्रगट की । इस पर सिद्ध गुटकेके वल सिंहलदोपकी तरफ उडा और आकर्षण मंत्रसे वशीभूत कर के पद्मिनीको उठा कर उड चला । पुंजके पुत्र पद्म उडीसेके राजा थे । सिद्ध और पद्मिनी जब उडीसे परसे निकले उस समय राजा जल-विहार कर रहे थे । पद्मिनी राजा पद्मको देख कर मोहित हो गई और उसने अपना कगन निकाल कर राजा पद्मकी ओर फेंक दिया । इस पर पद्म पद्मिनीके लिए चिन्तित हो उठा । सिद्धने पद्मिनीको वृगलाणके गढमे पहुचा दिया । सारगविजय नामक यतिने पद्मको पद्मिनीसे मिलानेका वचन दिया और उसने भैरवका आह्वान किया । भैरवने प्रमत्त होकर उन्हे बताया कि पद्मिनी वृगलाणके किलेमे है और वसन्तपंचमीके दिन चढाई करनेमे विजय होगी । राजा पद्मने ऐसा ही किया । उधर वृगलाणके राजाकी वरात पद्मिनीसे विवाह करने हेतु रवाना हुई थी कि पद्मने उन पर हमला कर के उन्हे परास्त किया और पद्मिनीसे विवाह कर

लिया । इस प्रकार बगुलारणे पर विजय पाई और इसके वंशज बगुलारण कहलाये ।

७ राजा पुजके सप्तम राजकुमार अहर थे । उन्होने बगाल पर विजय प्राप्त की और उनके वंशज अहर नामसे ही प्रसिद्ध हुए ।

८ वासुदेव पुजके आठवे पुत्र थे । वे अपने बड़े भाईके परम भक्त थे । यहा तक कि वे उनके नित्यकर्मके कार्योंमे भी सहयोग देते थे, जैसे उन्हें स्नानके पश्चात् कपडे पहनाना, खडाऊ देना, पूजाकी सामग्री तैयार करना आदि । एक दिन बड़े भाईने प्रसन्न हो उनसे राज्य मागनेको कहा । बड़े भाईके अधिक आग्रह पर वासुदेवने इच्छा नहीं होने पर भी कन्नौजसे सात कोस दूर एक शिव-मंदिरके पास नगर बसानेकी अभिलाषा व्यक्त की । कुछ दिनों पश्चात् दोनों भाइयोंने वहा पर पारक नामका नगर बसाया और उसका राजा वासुदेव बना और उसके वंशज पारकेश (पारकरा) कहलाये ।

९ राजा पुजके नवें पुत्रका नाम उग्रप्रभ था । यह सोमभारती नामक सिद्धकी सेवा किया करता था । १२ वर्ष तक सेवा करने पर सिद्ध प्रसन्न हुआ और उग्रप्रभको गंगाजल हाथमे लेनेको कहा । जब उसने अपने हाथमे जल लिया तो उसको उसमे सर्प नजर आया, इस पर राजाने घबरा कर जल उछाल दिया । तब सिद्ध हसा और राजाको खेद हुआ । सिद्धने राजाकी चिन्ता दूर करते हुए कहा कि अब तुम्हे हिंगलाजकी यात्रा करनी चाहिए । वहा पर कूएमे तुम्हे यह सर्प फिर दृष्टिगोचर होगा किन्तु इस बार तुम उसे जाने मत देना । सिद्धके वचनोके अनुसार वहा पर राजाको वह अग्निशिखा वाला सर्प दिखाई दिया और उसने उसे तुरन्त पकड लिया । पकडते ही वह सर्प खड्ग बन गया और हिंगलाज देवीने आकाशवाणी की कि 'हे राजा तू इससे दक्षिण विजय कर' राजाने ऐसा ही किया और वहाके पवारोको हरा कर समुद्रमे खड्गको धोया । फिर राजाने वहा पर खड्गके नाम पर चदी और चदावर दो नगर बसाये और १३ वर्ष तक वही पर राज्य किया । इसके वंशज चदेल कहलाये ।

१० राजा पुजके दशवे राजकुमारका नाम सुबुद्धि था । - इसको शिकारका बडा चाव था और प्राय अकेला ही शिकारको जाया करता था । एक दिन अमावस्याकी रात्रिमे इसने जंगलमे भयानक प्रेतमाया देखी । भूत, पिशाच, योगनिया इत्यादि सब एक स्थान पर अग्नि-क्रीडा कर रहे थे ।

पासमे रुधिरकी नदी बह रही थी। चारो ओर अग्निकी लपटे उठ रही थी। पासमे ही एक अग्निके सिंहासन पर वीरभद्र बैठे हुए थे जिनके आस-पास भयानक ज्वलित वदन योगिनिया नाच रही थी। आकाशमे इधर-उधर रुण्ड-मुण्ड उड़ रहे थे। यह सब देख कर भी राजा डरा नही तब वीरभद्रने प्रमत्त होकर उसे अपने पास बुलाया। राजा वेधडक उसके पास गया। वीरभद्र ने उसको वर मागनेको कहा और 'वीरकी' उपाधि दी। राजा अपने महलको लौट आया और कुछ समय पश्चात् तुवरोको युद्धमे परास्त कर के पहाडी देश पर अपना अधिकार जमा लिया। इसके वजज वीर नामसे प्रसिद्ध हुए।

११ भरत राजा पुजका ग्यारहवा राजकुमार था। यह पूर्वमे पाटणका अधिपति था। ६० वर्षकी अवस्थामे राजवृद्धने इमको कहा कि मैं आपको २५ वर्षके युवाके समान बना सकता हूँ। परन्तु इसके लिए आपको एक कल्प करना पड़ेगा और उसमे एक सफेद हाथीकी आवश्यकता होगी। खोज करने पर वरियावरके बडगूजर राजा रुद्रसेनके पास एक ऐमा हाथी होनेकी सूचना मिली। राजाने अपने कार्य की सिद्धिके हेतु रुद्रसेनके पास दूत भेजा। रुद्रसेनने हाथी देनेके लिए मना कर दिया। इस पर राजा भरतने उस पर चढाई कर दी और वरियावरको अपने अधिकारमे करके अपना कल्प किया। इसके वजज वरियावर (वरियावरा) कहलाये।

१२. राजकुमार कृपासिंधु राजा पुजका बारहवा पुत्र था। यह पूर्ण वैष्णव था और नित्यप्रति धर्म-वर्चा करनेके उपरान्त साधु-सन्तको अपने हाथसे भोजन करवाया करता था। प्रयागके ऋषि मुनियोको अटकके उस पारसे हाथी खरीदनेके हेतु आये हुए कुछ मुसलमान लोग शिकार इत्यादि कर के तग करते थे। ऋषि-मुनियोकी प्रार्थना पर राजाने अपने पुत्रको उनकी रक्षार्थ भेजा। राजकुमारने मुसलमानोको बुरी तरह मारा और जेरखासे लडता हुआ स्वय भी वीरगतिको प्राप्त हुआ। इसकी सूचना जब राजाको मिली तो उस समय वह पूजा कर रहा था। राजा जरा भी विचलित नही हुआ, यद्यपि रणवासमे हाहाकार मच गया था। विधिवत् पूजा समाप्त करनेके पश्चात् राजा युद्धार्थ रवाना हो गया। नगरके बाहर निकलते वक्त उमने एक योगीको वेश्याके मकानके सामने बैठ कर तप करते हुए देखा। इस पर राजा हँसा। प्रत्युत्तरमे योगी भी हँसा। राजाने योगीके हँसनेका कारण पूछा। योगीने कहा, पहले आप हँसे इसलिए आप अपना वारण पहने बतलाये। राजाने कहा कि गणिकाके घरके सामने आपको तप

करते देख कर मुझे हँसी आ गई। योगीने अपने हँसनेका कारण बतलाते हुए कहा कि, राजन् ! पूजा करते समय पुत्र-मरणका समाचार सुनने पर भी आप विचलित नहो हुए। ऐसे ज्ञानी होने पर भी आपने साधुको नहीं पहिचाना। इस पर राजाने तुरन्त सिद्धके चरणोमे गिर कर क्षमा-याचना की। ऋषिने प्रसन्न होकर उसको केलेके पत्ते पर धूनीकी कुछ भस्म दी और कहा कि पुत्रका सिर घड पर रख कर इस केलेके पत्तेको उस पर लपेट देना। राजाने मुसलमानोको परास्त किया और पुत्रको जिलाया। पुत्रने भी ऐसे योगीके दर्शन करने की इच्छा प्रकट की क्योंकि योगीने राजाको एक ऐसी छडी भी दी थी जिससे बिना शस्त्र चलाये ही राजाकी विजय हुई। पिता पुत्र दोनो ही सिद्धके पास पहुँचे। सिद्धने आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी १४वी पीढी तक तुम्हारे वंशज म्लेच्छोको नष्ट करते रहेगे। राजा और कुमारने ज्योही सिर भुकाया त्योही योगी गोरखनाथ अन्तर्धान हो गये। राजा और कुवरने नगरमे बड़ा उत्सव मनाया और इनके वंशज खैरवदाके नामसे प्रसिद्ध हुए।

१३ राजा पुजके तेरहवे राजकुमारका नाम चद था। यह बड़ा बलवान था, क्योंकि नेमनाथ नामक योगीने रसायनसे सिद्ध किया हुआ पारा इन्हे खिला दिया था। उसी समयमे छत्र नामक राजा उत्तरमे तारापुरका राज्य कर रहा था। उसको स्त्री पुत्रीकी प्राप्तिके लिए पार्वतीकी पूजा किया करती थी और इधर राजा पुजकी रानी भी पुत्रकी प्राप्तिके लिए शिवकी पूजा करती थी। इस प्रकार बहुत समय बीत गया तब शिव और पार्वतीने इनकी मनोकामनाओको पूर्ण करनेके लिए इनके घरमे जन्म लिया अर्थात् पार्वती राजा छत्रके यहा और शिव राजकुमार चदके रूपमे राजा पुजके यहा उत्पन्न हुए। राजा छत्रके यहा कन्याने उत्पन्न होते ही कहा कि युद्ध होगा। इस पर राजाने अप्रसन्न हो कर कन्याको जंगलमे फेंकनेके लिए भिजवा दिया। तब कन्याने कहा कि 'मेरे पतिकी जय और पिताकी पराजय होगी'। इस पर राजाने सम्मानपूर्वक कन्याको वापिस राजमहलमे बुला लिया और उसे कुवारी रखनेका निश्चय कर लिया। कन्याकी अवस्था जब ११ वर्षकी हुई तो राजकुमार चद उससे विवाह करने चल पडे। इस पर राजा छत्रने उनको हरा कर वापिस भगानेके लिए अपनी सेना भेजी किन्तु ऐसा नहीं हुआ और राजा छत्र हार गया। इस पर राजाने अपनी कन्याका विवाह चदसे कर दिया। वहासे पति-पत्नी आशापुरा देवीके दर्शनार्थ गये और देवीसे वर प्राप्त किया। फिर ये दोनो काशी आ गये।

शिव-पार्वतीने जपसे प्रमत्त हो राजा पुज और छत्रके घर जन्म लिया था अतः चन्दके वंशज जयवन नामसे प्रसिद्ध हुए ।

तृतीय प्रकरण

राजा पुजके पुत्रोमे धर्मशिव सबसे बड़े थे । उनका पुत्र अजयचन्द हुआ और उसका अभयचन्द । अभयचन्दका विजयचन्द था और विजयचन्दका पुत्र जयचन्द बड़ा ही बलवान था । उसकी सेना बहुत बड़ी होनेके कारण जब कभी वह किमी पर चढ़ाई करना तो उसकी सेनाका ताता बध जाता था और ऐमा प्रतीत होता था मानो धीरे-धीरे पगुकी तरह चल रही है । इतनी बड़ी सेनाके कारण यह दलपु गल कहलाता था । उसकी वीरताका उदाहरण हमें इस प्रकार मिलता है कि इमने अटकके उस पार वाले मुसलमान बादशाहोको युद्धार्थ तैयार होनेके लिए पत्र लिखा । बादशाहोने उसका डट कर मुकाबला किया । घमासान युद्ध हुआ । आखिरमे जयचन्द विजयी हुआ । उसने आठो बादशाहोको बन्दी बना लिया । जब वह उन्हें लेकर कन्नौज लौटा तो उन्हें सिरोपाव दे कर वापिस छोड़ दिया ।

वरदायीसेन इमी राजा जयचन्दका पुत्र था । वरदायीसेनका पुत्र सेन, सेनका सेतराम और उसका मीहा हुआ । मीहा द्वारिकाके रणछोडजीके दर्शनार्थ कन्नौजसे चला और रास्तेमे उसने चावडोकी मदद कर के लाखा फूलाणीको मारा ।^१ (शिव और भवानीने भी इस युद्धमे भाग लिया था) । द्वारिकाधामके दर्शन करनेके पश्चात् सीहाजी वापिस कन्नौज लौट आये ।

सीहाजीके पुत्र आसथानजी थे । आसथानजीने पूर्वमे ईडर पर कब्जा कर के वहाका राज्य अपने छोटे भाई सोनगको दे दिया । पश्चिममे आसथानजीने गोहिलोसे युद्ध कर के खेड (मारवाड) पर अपना आधिपत्य जमा लिया था । अज आसथानजीका छोटा भाई था । यह द्वारिकाके पास वाले क्षेत्रके चावडा राजा भोजराजके पास चला गया । उसने इसको कटार, सिरोपाव आदि देकर सम्मानित किया और इसे अपने पास रख लिया । इमी अजका पुत्र वीकम था । वीकमको देवीने स्वप्नमे कहा कि यहाका राज्य मैं तुम्हे देती हूँ । तू यहाके चावडा राजाका सिर काट कर मुम्हे भेंट कर दे । प्रातःकाल उठते ही वीकमने ऊखा-मण्डलके चावडा राजा भोजराजको मार कर उस राज्य पर अधिकार कर लिया । उसने वहाके राजाका सिर काटा (वाढा) था, अतः इसके वंशज वाढेल कहलाये ।

१ सीहा द्वारा लाखा फूलाणीका मारा जाना इतिहासकारोमे विवादास्पद है ।

आसयानजीका पुत्र धूहड था । मारवाडसे इन्होंने कन्नौज पर चढाई की और विजयी हो कर वहासे चक्रेश्वरी देवीको मारवाडमे ला कर नागारणेमे उसकी स्थापना की । इसीसे उस देवीका नाम नागणेची देवी हो गया । इन्होंने मडोरके पडिहारोसे भी युद्ध किया था ।

अपने पिताके बैरका बदला लेनेके लिए धूहडजीके पुत्र रायमलजीने मडोरके पडिहारो पर आक्रमण किया और उनको हरा कर मंडोर पर अपना आधिपत्य जमा लिया ।

रायपालजीके पुत्रका नाम कानडजी था । कानडजीके पुत्रका नाम जालणजी । जालणजीके पुत्रका नाम छाडाजी और पौत्रका नाम तीडाजी था । तीडाजीने भीनमालके सोनगरोको परास्त कर के अपना अधिकार कर लिया था । तीडाजीके प्रतापके आगे वहाके पाँचो राव नतमस्तक हो गये और उन्होंने अपनी कन्याओका विवाह उनसे कर दिया ।

तीडाजीके पश्चात् उनके पुत्र सलखाजी हुए और सलखाजीके वीरमदेवजी ।^१ वीरमदेवजीने जोड़यो पर विजय पाई थी । वीरमदेवजीके पुत्रका नाम चूडाजी था । इनके १४ पुत्र थे जो सभी राव कहलाये । चूडाजीने मडोर पर दुवारा अपना कब्जा कर लिया था ।

रिडमलजी इन्ही चूडाजीके पुत्र थे । ये भी बडे पराक्रमी थे । जब मेवाडमे चाचा और मेराने महाराणा मोकलको मारा तब मोकलके पुत्र (बालक) कुम्भाने अपनी सहायतार्थ अपने मामा रिडमलजीको बुलाया । रिडमलजीने चाचा और मेरा दोनोको मार कर उनके खूनसे मोकलजीको अजली दी और अपने भाणजे राणा कुम्भाको गद्दी पर बैठाया । मेवाडमे रिडमलजीके प्रभावकी वृद्धि होते देख उनको मरवानेका जाल रचा गया और रिडमलजीको सोते हुए पलगसे बाध कर मारना चाहा तब वे जग गये और पलग सहित उठ खड़े हुए और १८ पुरुषोको मार कर स्वयं भी वीर गतिको प्राप्त हुए ।

राव जोधाजी रिडमलजीके पुत्र थे । राणा कुम्भाको अन्तमे जोधाजीसे मेल करना पडा था । इस पर जोधाजी मेवाडमे गये और उस समय पीछोले तालाब पर उनका डेरा हुआ । इसके पश्चात् राव जोधाजीने विक्रम सवत् १५१५की जेठ सुदि एकादशीको चिडियाटूक पहाडी पर जोधपुरके किलेकी नीव दी और नीचे नगर बसाया ।

१. ग्रन्थकर्त्ताने वीरमजीकी विजयका उल्लेख किया है किन्तु वास्तवमे वीरमजी जोड़योसे युद्ध करते हुए वीरगतिको प्राप्त हुए थे ।

ग्रन्थकर्त्तकानुसार राव जोधाका उत्तराधिकारी राव सूजा हुआ । उस समय अजमेरके हाकिम मल्लूखा मारवाडके कोसाणा नामक गावसे कन्याओंको अपहरण कर के ले गया । मल्लूखा घड़का या धुडला भी कहलाता था । राव सूजाने उन कन्याओंको छुड़ा कर अपने-अपने सम्बन्धियोंको वापिस सौंपी । यह भी बड़ा दातार था ।

राव सूजाका उत्तराधिकारी उसका बड़ा पुत्र राव बाघा उसके जीवन-कालमें ही स्वर्गवासी हो गया अतः राव सूजाके पश्चात् जोधपुरके सिंहासन पर कुवर बाघाका पुत्र और राव सूजाका पौत्र राव गागा सुशोभित हुआ । गागाके चाचा शेखाको यह बात अप्रिय लगी और उसने नागौरके शासक खानजादा दौलतखासे मिल कर जोधपुर पर चढ़ाई कर दी । किन्तु इस युद्धमें शेखा मारा गया और खानजादा दौलतखा पराजित होकर नागौर भाग गया ।

उपरोक्त घटनाओंके पश्चात् ग्रन्थकर्त्तानि जोधपुरके राजसिंहासन पर राव गागाके पुत्र राव मालदेवका सिंहासनारूढ होना लिखा है । मालदेव बड़ा महत्वाकाक्षी था । उसने एक-एक कर के कई स्थानों पर विजय प्राप्त की । मालदेवके वर्णनके साथ ही साथ उसके पुत्र उदयसिंहका भी संक्षिप्त वर्णन मिलता है ।

उदयसिंहके पश्चात् उसके पुत्र राजा सूरसिंहका वर्णन ग्रन्थकर्त्तानि विस्तारपूर्वक लिखा है । इसमें सर्व-प्रथम गुजरातके शासक मुजफ्फर और उसके ज्येष्ठ पुत्र बहादुरका वर्णन है । बहादुरने गुजरातमें लूटमार शुरू कर दी थी । इस पर बादशाह अकबरने राजा सूरसिंहको बुलाया । एक बड़ा दरवार किया और गुजरातके उपद्रवको मिटानेके लिए पानका वीडा फेरा । इस वीडेको उठानेका बादशाहके दरवारमें किसी ने भी साहस नहीं किया । इस पर राजा सूरसिंहने वीडा उठाया और बड़े जोशपूर्ण शब्दोंमें बादशाहको धैर्य वधाया । तत्पश्चात् सुसज्जित हो कर गुजरातकी ओर प्रस्थान किया । गुजरातकी ओर जाते समय राजा सूरसिंह जब सिरोहीके पास पहुंचे तो धोखेसे सिरोहीके राव सुरतान द्वारा राव चन्द्रसेनके पुत्र राव रायसिंहके मारे जानेकी घटना उनके मस्तिष्कमें आई और उन्होंने प्रतिशोध लेने हेतु अपने मिपाहियोंको सिरोहीके ग्रामको लूटनेकी आज्ञा दे दी । इस पर सिरोहीके रावने घबरा कर राजा सूरसिंहसे संधि कर ली । इस विजयके पश्चात् राजा सूरसिंह गुजरात पहुँचे और मुजफ्फरके उपद्रवोंको दवानेमें पूर्ण सफल हुए । मुजफ्फरका पुत्र बहादुर, जो गुजरातमें लूटखसोट करता था, भयभीत हो कर भाग गया और गुजरात पर

राजा सूरसिंहका पूर्ण अधिकार हो गया । बादशाह अकबर इस विजयसे बहुत ही प्रसन्न हुआ । राजा सूरसिंह गुजरातसे बहुत सा धन-माल लेकर मारवाड लौटे । ग्रन्थके अनुसार उस समय राजा सूरसिंहने अपने आश्रित कवियोंको बहुत सा धन-माल और जागीरें दी ।

इसके पश्चात् राजा सूरसिंहको यह सदेश मिला कि दण्डिखमे अमर चपूने उपद्रव खडा कर दिया है तो राजा सूरसिंह बादशाहकी आज्ञासे दक्षिणमे निजामुलमुल्कके सेनापति अमरचपूको दण्ड देनेके लिए गये और अमरचपूको परास्त कर विजयदु दुभि बजाते हुए वापिस लौटे ।

गुजरात और दक्षिणकी विजयके कुछ समय पश्चात् बादशाह अकबरका देहावसान हो गया और दिल्लीके राजसिंहासन पर शाहजादा सलीम बादशाह जहागीरके नामसे आसीन हुआ ।

सिंहासनारूढ होते ही बादशाह जहागीरने पुन सूरसिंहजीको अपने पास बुलाया । राजा सूरसिंहजी महाराजकुमार गजसिंहजीके साथ दिल्ली पहुँचे । बादशाह इन पर बहुत प्रसन्न हुआ और जालोरका परगना गजसिंहजीको इनायत कर दिया । साथमे यह भी आज्ञा मिली कि सिरोहीके रावको भी अपने अधीन कर लेना और मेवाडके राणा पर भी अपना आधिपत्य जमाना । प्रत्युत्तरमे महाराजकुमार गजसिंहने बादशाहको विश्वास दिलाया कि मैं आपकी आज्ञानुसार सब स्थानो पर बादशाही अमल जमा दूंगा ।

ग्रन्थके अनुसार इन दिनोंमे जालोर पर बिहारो पठानोका शासन था । गजसिंहने बडा दल सजा कर जालोर पर आक्रमण किया और घमासान युद्ध कर के वहाके शासकको पराजित कर जालोर पर अपना अधिकार जमा लिया । तत्पश्चात् गजसिंहजी सिरोहीकी ओर अग्रसर हुए और वहाके रावने अपनी हार मान ली । यही हाल उस समय मेवाडके राणाका हुआ ।

यही पर अथकत्तानि राजा सूरसिंहके प्रमुख अमात्य गोविन्ददास भाटीको मारनेकी घटना बडे विस्तारसे लिखी है । राजा सूरसिंहके छोटे भाई किशनसिंह थे । इनके भतीजे गोपालदासको सूरसिंहके प्रमुख अमात्य गोविन्ददासने मार डाला था । अतः किशनसिंह अपने भतीजेका प्रतिशोध लेनेके लिए गोविन्ददास भाटीसे वैमनस्य रखता था । उधर शाहजादा खुर्रमने भी किसी कारणवश गोविन्ददासको मारनेके लिए किशनसिंहको भडकाया । एक समय सब सरदार अजमेरमे पडाव लिए हुए थे । उस समय राजा किशनसिंहने गोविन्ददास भाटीके मकान पर अचानक हमला बोल दिया । महाराजा सूरसिंह व महाराजकुमार

गजसिंहका भी निवास-स्थान पासमे ही था । अत वे भी जाग गये किन्तु उस समय तक किशनसिंहके योद्धाओंने गोविन्ददासको मार डाला था । महाराज-कुमार गजसिंहने उस समय विगेष कार्य किया । उन्होने गोविन्ददासकी हत्याके अपराधमे राजा किशनसिंह पर और उसके योद्धाओं पर उसी समय आक्रमण कर दिया । भयकर युद्ध हुआ और राजा किशनसिंह अपने एक भतीजे कर्णके साथ मारे गये । जब महाराजा सूरसिंहजीने अपने भाई, भतीजे और प्रमुख अमात्यके मारे जानेका हाल सुना तो उन्हें बड़ा दुख हुआ । इस प्रकार प्रस्तुत प्रथम भागमे प्रकाशित पाठका साराण पूर्ण होता है ।

मैने 'टाँड राजस्थान'का ऐतिहासिक वर्णन पढनेके अतर्गत जब कविराजा करणीदानजीकी टाँड साहब द्वारा लिखी विलक्षण एवं कीर्तिमयी जीवनीका अवलोकन किया तो मेरे हृदयमे एक प्रबल आकाक्षा जागृत हो गई कि मैं कविराजा कृत ग्रथ 'सूरजप्रकाश'का पूर्ण अध्ययन करूँ । उस समय मेरे पास 'सूरजप्रकाश'की एक ही खडित प्रति थी, अत मैं इस अनूठे ग्रथकी पूर्ण प्रतिकी तलाशमे रहा । आखिरमे ग्राम विराईके ठाकुर श्री गोविन्ददानजीके सुपुत्र श्री शक्तिदानजी कविया द्वारा एक प्रति मुझे वि० सवत् १८०८की लिखित प्राप्त हुई । इस प्रतिका मैंने पूर्ण अध्ययन किया एव इस ग्रन्थका सम्पादन प्रारम्भ किया ।

'सूरजप्रकाश'का संपादित भाग मैंने प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके उप-संचालक श्रीमान् गोपालनारायणजी बहुराके समक्ष प्रस्तुत किया तो उन्हें बड़ा पसन्द आ । उन्होने मेरा उत्साह बढ़ाने तथा इस सुन्दर ग्रन्थका सुस्टु संपादन करानेके हेतु प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके सग्रहसे दो हस्तलिखित सूरजप्रकाशकी अन्य प्रतियाँ मुझे दी, जिनमेसे एक प्रति सवत् १८४१की लिखी हुई है तथा दूसरी प्रति विक्रमी सवत् १८८४ को लिखी हुई है । इन दो प्रतियो और श्री शक्तिदान कविया द्वारा दी गई प्रतिके अतिरिक्त जो मेरे पास एक खडित प्रति थी, इन ४ प्रतियोकी महायतासे मैंने इस ग्रन्थका संपादन पूर्ण किया । मेरे पास वाली प्रतिका लिपिकाल कुछ निश्चित नही कर सका, कारण कि उसकी दशा जीर्णशीर्ण हो चुकी है ।

पाचवी प्रति जोधपुर महाराजाके 'पुस्तक प्रकाश' से राजस्थानी कोशमे शब्द लेनेके लिए हमने नकल करवाई थी, परंतु उसकी नकल सम्पूर्णा नही हो सकी । उपरोक्त प्रतियोके साथ पाठान्तरमे इस प्रतिकी भी सहायता ली गई है ।

इस प्रकार पाच प्रतियोंके आधार पर हमने यह सपादन प्रस्तुत किया है । पाठ-निर्धारणमें हमारा ध्येय श्री शक्तिदान कविया द्वारा प्राप्त प्रति जो सबसे प्राचीन है, उसीका रहा है । परंतु कहीं-कहीं पर अन्य प्रतियोंका पाठ हमें शुद्ध प्रतीत हुआ तो उसको भी स्थान दिया गया है ।

छंदोंके सख्याकनमें हमारा ध्येय चार पक्तिके समूहको ही छंद माननेका रहा है, हाला कि चारणों द्वारा लिखित साहित्यमें छंद-विशेषमें एक साथ लिखित चरण समूहको एक छंदके अंतर्गत ही माना जाता है । परंतु स्थान-स्थान पर पाठांतर व शब्दार्थ देनेमें जो पद्धति हमने अपनाई है, उसमें चारण कवियों द्वारा स्वीकृत पद्धति हमारे इस सपादन-कार्यमें असुविधाजनक प्रतीत होती थी, अतः हमने चार चरणोंके समूहको ही छंद माना है ।

जहाँ पर डिगलके गीतोंको कविने अपने ग्रथमें स्थान दिया है, पूर्ण गीतकी हमने एक सख्या मानी है, चाहे वह कितने ही द्वालोमें क्यों न हो, परंतु पाद-टिप्पणीके लिए छंदोंकी चालू सख्याके साथ द्वालोंकी सख्याका भी निर्देश किया गया है । इसमें हमें पादटिप्पणीमें शब्दार्थ देनेमें सुविधा रही है ।

राजस्थानीके ग्रंथोंके सपादनमें सबसे बड़ी कठिनाई वर्णविन्यास या अक्षरीकी रहती है । शुद्धिका निर्णय केवल छंदकी जातिके आधार पर ही किया गया है । मूल प्रतियोंकी लिपिमें द्वित्तका ध्यान नहीं रहा है । उदाहरणार्थ 'चड गडगगड रत चडै'का सिर्फ 'चड गडगड रत चडै' ही लिखा मिलेगा, किन्तु यह खास बात है कि राजस्थानके कविगण उस उच्चारणको बोलनेमें तो बिल्कुल शुद्ध बोलते थे परंतु लिखनेमें ही यह स्वच्छदता थी । किस छंदमें कौनसा गण होता है, उसका ठीक ध्यान रखते हुए हमने बड़ी सतर्कतासे मात्राएँ, गण, अनुस्वार आदिके साथ छंदोंका शुद्धतम पाठ प्रस्तुत करनेका प्रयास किया है । चंद्रविन्दुका मूल पाठोंमें तो नाम मात्र भी ध्यान नहीं रखा किन्तु प्रस्तुत सस्करण में छंदोभंग होनेकी त्रुटिका निराकरण करते हुए शुद्ध रूप लिखा है जिससे पाठक-वृन्द वास्तविक उच्चारणके साथ छंदोंकी प्रपाठ विधिको सही रूपसे सीख सके ।

'सूरज-प्रकाश'के सपादनमें जिन प्रतियोंकी सहायता ली गई है उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है ।—

(क) यह प्रति विराई ग्रामके निवासी श्री गोविंददानजी कवियाके सुपुत्र श्री शक्तिदान कवियासे मुझे प्राप्त हुई है जो वि० स० १८०८में तलवाडा ग्राम मध्ये लिखी गई थी । प्रतिकी पुष्पिकामें सिर्फ सवत् ही पढा जा सका है, तिथि एव वार पढा नहीं जाता तथा लेखक एक जैन यति हैं जिनका नाम उदयचंद है ।

(ख) यह प्रति मुझे राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरसे प्राप्त हुई जो सवत् १८८४मे फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा, शनिवारको जोधपुरमे महाराजा मानसिंहजीके राज्यकालमे लिखी गई थी। लेखक ब्रोजा मगदत्त है।

(ग) यह प्रति भी मुझे प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरमे इस ग्रथमे पाठान्तर लिखने निमित्त मिली है जो सवत् १८४१मे अमाह शुक्ला पष्ठमी गुरुवारको वधनोरमे लिखी गई थी। लेखक रामचंद्र सेवक है तथा शुद्ध-कर्ता सेवक चौथराम है।

(घ) यह प्रति जोधपुरके 'पुस्तकप्रकाश'की प्रतिकी प्रतिलिपि है जिसकी मैंने डिगल कोशके लिए नकल करवाना गुरु की थी परंतु पूर्ण प्रतिकी नकल नहीं करवा सका, अतः इसके भी पाठान्तर कही-कही लिखे गये हैं। परंतु यह प्रति (क) प्रतिसे समानता अधिक रखती है और प्रतिका पाठ करनेसे ऐमा प्रतीत होता है मानो ये दोनो प्रतियाँ एक ही की प्रतिलिपिया हो। आगे (घ) प्रतिका पाठान्तर नहीं मिलता है।

इनके अतिरिक्त जो प्रति खडित रूपमे मेरे पास है उसको भी ध्यानमे रख कर पाठकी शुद्धि पर विचार किया गया है। आशा है उक्त आधार पर किया गया यह सपादन-प्रयास पाठकवृन्दके लिए लाभप्रद होगा। सपादन-कार्यमे सहायक रूपमे मेरे विद्यार्थी एव तर्हण कवि श्री शक्तिदान कविया धन्यवादके पात्र हैं जिनकी दी हुई प्राचीन प्रति इस सपादनमे महत्त्वपूर्ण रही है। श्री शक्तिदान कविया डिगलके गीतो व छंदगास्त्रके अच्छे ज्ञाता हैं और प्राचीन लिपिके छंदोभगके सुधारमे भी मुझे बहुत सहायक हुए हैं। श्री दुर्गालालजी माथुर, क्यूरेटर, जोधपुर म्यूजियमने समय-समय पर इतिहास सवधी पुस्तकें देकर मेरी पूर्ण महायता की। जोधपुर महाराजा के वर्तमान गृहस्थ-प्रवधक घामली ठाकुर साहव श्री मनोहर-सिंहजीको भी मैं धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने मुझे डिगल कोशके शब्दोके लिए सूरजप्रकाशकी नकल करवानेकी अनुमति दी।

अतमे हम राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके प्रति आभार प्रदर्शित किये बिना नहीं रह सकते। प्रतिष्ठान इस प्रकारकी साहित्यिक अमूल्य व अप्राप्य निधिको राजस्थान पुरातन ग्रथमालाके अतर्गत प्रकाशित कर सतत क्रियाशील है। प्रस्तुत ग्रथको इस रूपमे प्रस्तुत करानेका सर्वतोभावेन श्रेय मुनि श्रीजिनविजयजी महाराजको है, जिन्होंने राजस्थानी साहित्यके इस अमूल्य ग्रथका प्रकाशन राजस्थान पुरातन ग्रथमाला द्वारा करना स्वीकार किया।

कविया करणीदान विजैरामोतरौ कह्यौ

सूरजप्रकास

अथ^१ ओ३म नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ राज राजेश्वर महाराजाधिराज स्त्रीछत्रपति प्रिथिपति रघुवससिरताज महाराज स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री अभैसिघजीरौ रूपक सूरजप्रकास कविया करणीदान विजैरामोतरौ कहियौ लिखते ।

अथ प्रथम गाथा

स्त्रीपति^२ भगति^३ सकाज, सिध^४ रिध सुवर^५ नमौ^६ सकर^७ सुत ।

सुर अगिवाण^८ समाजं, स्त्रेष्ठ^९ बुधि दीजिये^{१०} गणेश्वर ॥ १

१ ख. ॥ स्त्री गणेशाय नमः ॥ स्त्री सरस्वत्यै नमः ॥ स्त्री गुरुभ्यो नमः ॥ अथ राज राजेश्वर महाराजाधिराज स्त्रीछत्रपति हिंदूपति पृथ्वीपति रघुवस सिरताज महाराज स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री अभैसिघजीरौ रूपक सूरजप्रकास कविया करणीदान विजैरामोतरौ कहियौ लिखते ॥

ग ॥ हूं उं ॥ श्री गणपति सरस्वत्यै नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ अथ राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराज स्त्रीछत्रपति हिंदूपति प्रिथिपति रघुवससिरताज महाराज श्री श्री श्री श्री श्री अभैसिघजीरौ रूपक सूरजप्रकास कविया करणीदान विजैरामोतरौ कहियौ लिखते ॥

घ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ अथ राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराज श्री छत्रपति हिंदुपति पृथ्वीपति रघुवससिरताज महाराज श्री श्री श्री श्री श्री अभैसिघजीरौ रूपक सूरजप्रकास कविया करणीदान विजैरामोतरौ कहियौ लिखते ॥

२ ख घ. श्रीपति, ग. श्रीपति । ३ ग. भगति । ४ ग. सिधरिध । ५ ग. सुवर ।

६ ख ग. नमो । ७ ग. संकरसुत । ८ ख. अगिवाण । ग. अगिबाण । ९ ख. ग. श्रेष्ठ ।

१० ग. दीजिये । ११ ख. गणेश्वर ।

१ रघुवससिरताज — रघुवशियोमे श्रेष्ठ । रूपक — वह काव्यग्रन्थ जिसमे किसी महान वीरके यशमय चरित्रका वणन हो । सूरजप्रकास — ग्रन्थका नाम । कविया — चारण वशका एक गोत्र विशेष । विजैरामोतरौ — विजयरामके पुत्रका । स्त्रीपति भगति सकाज — श्रीविष्णुकी (लक्ष्मी-पति) भक्तिके लिए । सिध — सिद्धि । रिध — ऋद्धि । सुवर — श्रेष्ठ वरदान देने वाला । सकर-सुत — श्री शिवका पुत्र, श्रीगणेश । सुर-अगिवाण समाज — देवसमाजमे जो सदैव अग्रगण्य व अग्रगामी है ।

छप्पय— सूडादंड^१ अहेस रागरीभेस समोसर ।
 वणि^२ सिंदूर चित्रवेस^३ धार मद वेस पडैवर ॥
 फरस पाणि^४ फावेस^५ उभै डसणेस अधक्कर ।
 निलै अरध नखतेस^६ मसत^७ भणणेस मधुक्कर ॥

समरेस होम जोगेस^८ सुत^९ सेव पेस कवि साधिये^{१०} ।
 गावण नरेस 'अभमाल' गुण ओ^{११} गणेस^{१२} आराधिये^{१३} ॥ २

अथ गाथा सरस्वतीरी^{१४} स्तुति^{१५}

सोळ वरस^{१६} वय^{१७} सार, सोळ सिंगार रूप अति सोभा ।
 विधि विधि^{१८} जस विप्ततार^{१९} सुभ वरदान^{२०} समप्प^{२१} सरस्वति^{२२} ॥ ३

छप्पय— सोभवती^{२३} संजती^{२४}, सोळ सगार^{२५} सकक्ती^{२६} ।
 हसगती^{२७} हल्लती^{२८}, हस आरोह हक्कती^{२९} ॥

१ ग सुडादंड । २ ग वणि । ३ ग चित्रवेस । ४ ख ग घ पाणि । ५ ख. फावेस ।
 ६ ग. नखतेस । ७ ग मसत्त । ८ ग. जोगेसु । ९ ग सुत्त । १० ख. ग घ, साधिये ।
 ११ ख ग ऊ । घ ओं । १२ ख गणेश । १३ ख आराधिये । ग घ आराधिये ।
 १४ ग स्वरसुत्तीरी । घ सरसुत्तीरी । १५ ग स्तुत्ति । १६ ग. वरस । १७ ग वय ।
 १८ ग. विधि विधि । १९ ग विसत्तार । २० ग वरदानं । घ वरदान ।
 २१ घ. समप्पि । २२ ग सरस्वत्ति । २३ ग सोभवत्ती । २४ ग संजत्ती ।
 २५ ख शृगार । ग श्रंगर । घ सिंगार । २६ ग सकक्ती । घ सकत्ती ।
 २७ ग हसगत्ती । २८ ग हल्लत्ती । घ हल्लती । २९ ग हक्कत्ती । घ हक्त्ती ।

२ अहेस — (अथ + ईश) श्री गणेश । समोसर — श्रेष्ठ अवसर, मागलिक अवसर ।
 पाणि — (पाणि) हाथ । डसणेस — दात । निलै — (निलिट) ललाट, भाल । नखतेस —
 (नक्षत्र + ईश) चन्द्रमा । मधुक्कर — भौरा । अभमाल — महाराजा अभयसिंह । गुण —
 कीर्ति, यश ।

३ सोळ — सोलह । वय — आयु । समप्प — दीजिये ।

४ आरोह — सवारी, वाहन ।

अधर दुती^१ आक्रती^२ जत्र वजवती^३ जुगती^४ ।

रूपवती^५ रजती^६ माळ भूलती^७ मुक्ती^८ ।

विमळती^९ वेदे^{१०} रघु^{११} वचती^{१२} आणदति^{१३} हरती^{१४} कुमति^{१५} ।

'अभपती^{१६}' गुणां गावण^{१७} उकति^{१८} सरस्वती^{१९} दीजे^{२०} सुमति^{२१} ॥ ४

गाथा सदासिवरी^{२२} स्तुति^{२३}

अस्टाग^{२४} जोग अभ्यासी^{२५} कासी वसण^{२६} नमौ^{२७} कयळासी^{२८} ।

समपि ग्यान अविणासी^{२९} सिध भोळी चक्कवै महेस्वर ॥ ५

छप्पय— जहर विखम^{३०} जारग भुजा^{३१} धारग भुजगम ।

भाल^{३२} तेज^{३३} भारग जरा हारंग लसे^{३४} जम ।

१ ग. दुती । २ ग. आक्रती । घ आक्रिती । ३ ग वजवती । घ. वजवती ।
 ४ ग जुगती । ५ ग रूपवती । ६ ग रजती । ७ ग भूलती । ८ ग मुक्ती ।
 ९ ग विमळती । १० ग वेद । ११ घ रिग । १२ ग वचती १३ ग आणदति ।
 १४ ख हरति । ग हरत्ति । घ. हरती । १५ ख उमति । ग उमत्ति ।
 १६ ग अभपती । १७ ख ग गावण । १८ ग उकति । १९ ख घ. सरस्वती ।
 २० ख. ग घ दीजे । २१ ग सुमत्ति । २२ ख. शिवरी । २३ ग स्तुत्ति ।
 २४ ख ग अष्टाग । घ अष्टग । २५ ख अभासी । २६ ग वसण । २७ ख ग घ नमो ।
 २८ ख कैलासी । २९ ग अविणासी । ३० ख. घ विषम । घ. विषम । ३१ घ भुजा ।
 ३२ ख ग घ भालि । ३३ ग. तेज । ३४ ख घ लसे । ग लसे ।

४ दुती — द्युति, काति । जत्र — वीणा । वजवती — वजाती हुई । जुगती — युक्ति ।
 माळ — माला । मुक्ती — मौक्तिक, मोती । रंजती — प्रसन्न करती हुई । विमळती—
 पवित्र करती हुई । रघु — ऋग्वेद ।

५ सिध-भोळी चक्कवै — सिद्धोमे और भोलोमे चक्रवर्ती ।

६ विखम — विषम, भयप्रद, भयकर । जारग — हजम करने वाला । धारग — धारण
 करने वाला । भुजगम — सर्प । भाल — ललाट । भारग — चंद्रमा । जरा — वृद्धा-
 वस्था । हारग — हरण करने वाला ।

वर^१ अनेक वारग^२ पाव वद^३ गुरपत्नी^४ ।
 पावण करि पारग त्रिपुर^५ नारग सकन्ती^६ ।
 तारग^७ मत्र आदेस तो^८, दिढचा रंग निस मधि दिव ।
 सारंग नयण उमया सुवर^९, सीम गंग वारग निव^{१०} ॥ ६

गाथा श्री^{११} सूरजजीरो^{१२} स्तुति^{१३}

सहस किरण^{१४} परकाम, पकज चक्रवाक^{१५} अति^{१६} प्रीतम^{१७} ।
 डळ^{१८} नवखड^{१९} उजास, मूरज^{२०} देव^{२१} नमी^{२२} कासिवसुत^{२३} ॥ ७

छप्पय— उदित ब्रह्म^{२४} मधि ईम पछी^{२५} वप विसन^{२६} प्रकाने ।
 तम^{२७} नास^{२८} जोवता^{२९} नाम^{३०} कहता^{३१} अघ नाने ।
 अतरीख^{३२} मग उरस चचळ सातहमुख^{३३} चर्ल^{३४} ।
 सुरग पग सारथी^{३५}, हेक चक्रह रथ हाले ।

१ ख वर । २ ग. वारग । ३ ग वद । ४ ख गुरपती । ५ ख ग त्रिपुर ।
 ६ ख सककती । ग सककती । ७ ग तारग । ८ ग तो । ९ ग सुवर । १० ग शिव ।
 ११ ख ग घ श्री । १२ ग सूरिजजीरो । १३ ग स्तुति । १४ ग. किरण ।
 १५ ग चक्रवाक । १६ ग. अति । १७ ग प्रीतम । १८ ख ग. यत् ।
 १९ ख ग नवखड । २० ग घ सूरिज । २१ ख. वस । २२ ख. ग घ नमी ।
 २३ ख कासिवसुत । ग कासिवसुत । २४ ग ब्रह्म । घ ब्रह्म । २५ ख पछी ।
 घ पछे । २६ ग विसन । २७ ग तम । २८ ग नाहले । घ. न्हासे । २९ ग जोवता ।
 ३० ख. घ नाम । ३१ ग कहता । ३२ ख. ग अतरीप । ३३ ख सानहमुख ।
 ग सातहमुख । ३४ ख चर्ल । ३५ ख. ग घ सारथी ।

६ वारग — देने वाला । सुर-पत्नी — इन्द्र । त्रिपुर — त्रिपुरासुर । नारग — राक्षस, दैत्य ।
 तारग — उद्धार करने वाला ।

८. ब्रह्म — ब्रह्म । पछी — पश्चात । वप — शरीर । विसन — विष्णु । नास — मिटते है,
 नाश होते है । अघ — पाप । अतरीख — आकाश, आसमान । उरस — ऊपर ।
 चचळ — घोडा, अश्व । सुरंग — सूर्यके रथका सारथि, अरुण । पग — पगु ।

अदभूत^१ चरित्र किरणां अगमि^२, सीतल^३ जल^४ वरसै^५ सयण ।
कर जोड़^६ वयण दाखै^७ सुकवि, नमौ नमौ^८ रवि जगनयण ॥ ८

गाथा स्त्री^९ नारायणजीरी स्तुति^{१०}

आदि एक^{११} अविणासी^{१२}, तत^{१३} निरकार^{१४} दुतिय^{१५} तेजोमय^{१६} ।
प्रभु आकार प्रकासी, त्रितीय^{१७} स्वरूप^{१८} नमौ^{१९} कमलापति^{२०} ॥ ९

छप्पय— पागा^{२१} गगजल प्रघल बिब^{२२} कछनी पीताबर^{२३} ।
कवसति^{२४} मणि वयजती^{२५} सख^{२६} चक्र गदा पदमधर ।
सुदर तन घनस्याम^{२७} भुजा आजान^{२८} चतुरभुज^{२९} ।
कुडल तिलक मणिमुकुट^{३०} धरण भ्रिगुलता^{३१} गरुडध्वज^{३२} ।

मुख मद हास आणदमय^{३३}, आराधित अहि नर अमर ।
दंडवत्त^{३४} तूभ मारण दयत्त^{३५}, वारण तारण लच्छिवर^{३६} ॥ १०

१ ग अदभूत । घ अदभुत । २ ख ग. घ अगनि । ३ ग सीतल । ४ ग जल ।
५ ग वरसै । ६ ख ग घ जोड़ि । ७ ग दाखै । ८ ख ग घ. नमो नमो ।
९ ख ग. घ श्री । १० ग. स्तुति । ११ ग ऐक । १२ ग अविणासी ।
१३ ग. तत्त । १४ ख निकार । १५ ख दुतीय । ग. दुतीय । १६ ग तेजोमय ।
१७ ग. तृतीय । घ. तृतीय । १८ ग घ. स्वरूप । १९ ख ग. घ नमो ।
२० ग. कमलापति । २१ ख पागा । २२ ख. बिब । २३ ग पीताबर ।
घ पीतबर । २४ ग. कवसति । घ कौस्तुभ । २५ ग वैजयत्त । घ वयजति ।
२६ ख ग. सख । २७ घ घनस्याम । २८ ग. आजान । २९ ग चतुरभुज ।
३० ख ग. घ मणिमुकुट । ३१ ख. ग. घ भुगुलता । ३२ ग घ गरुडधुज ।
३३ ख ग घ आनदमय । ३४ ग दंडवत्त । ३५ ग दयत्त । घ दयत्त ।
३६ ग. लच्छिवर ।

८. सयण — मित्र, हितैषी ।

१०. प्रघल — अपार, असीम, बहुत । बिब — लाल । कछनी — घोतीके स्थान पर पुरुषोका
पहनावा-विशेष जो घुटनो तक ही होती है, कछा । कवसतिमणि — कौस्तुभमणि ।
वयजती — वैजयन्ती नामक माला विशेष जिसे भगवान विष्णु कठमें धारण करते हैं ।
वारण — गज । तारण — उद्धार करने वाला । लच्छिवर — विष्णु ।

॥ अथ दोहा पञ्च देव एकत्र^१ स्तुति ॥

स्त्री गणपति स्त्री सारदा, स्त्री सिव^२ स्त्री ग्रहराज ।

सुप्रसन हो^३ स्त्रीपति सहित, स्त्री सुर पञ्च समाज ॥ ११

अथ निदोस प्रवच वरणण^४

दूहा— आदि^५ अथरै स्त्री^{*} अक्षर, सुकवि कहै बुधिमार्^६ ।

तठै अगण दूखण तिता, लगै न हेक लगार ॥ १२

स्त्री अक्षर पूर पिछम^७ वरणण^८ अनि^९ कवि प्रन्न

कठै साख^{१०} इण विध^{११} कही, सुणि डम कहै मुजाण ।

उत्तर— माडै^{१२} कायव^{१३} माघ मधि, पडित माघ प्रमांण^{१४} ॥ १३

१ ग. ऐकत्र । २ ख. श्रीशिव । ३ ख ग घ ही । ४ ख वनन । ग वनन ।
घ वर्णन । ५ घ आद । ६ ख बुधिसार । ७ ख ग घ पछि । ८ ख वनन ।
ग वर्णन । घ वरणन । ९ घ पुन । १० ख. ग साधि । घ नाधि ।
११ ख. घ विधि । ग विधि । १२ ख ग घ माडे । १३ ख काइव ।
१४ ख ग प्रमाण ।

* ग्रथारभमे श्री अक्षर आचार्योने शुभ माना है यथा—

श्रीर्वेशरचनाशोभाभारतीत्तरलद्रुमे

लक्ष्म्याम् त्रिवर्गसम्पत्तिविधोपकरणेषु च ।

विशेष विवरण— अथवर्ताने मेदिनी कोशके उपर्युक्त श्लोकके अर्थोके अनुसार और माघ तथा भारविके प्रयोगोके अनुसार मागलिक मान कर अपने ग्रन्थमे मंगला-चरणमे ही श्री अक्षरका प्रयोग किया है । उसकी साक्षीमे माघ व भारविके प्रयोगोका उल्लेख किया है । माघकविने अपने शिशुपालवच महाकाव्यके आरभमे 'श्रिय पति. श्रीमति आसितु जगत्' इत्यादि प्रयोग किया है । यहा 'श्रिय प' ।।। यह जगण है । "ज सूर्यो कुन्ते रज" इम वचनके अनुसार जगणका देवता सूर्य ताप करता है । एव "जतौ तु वशस्थमुदीरित जरौ" इस छद शास्त्रके वचनसे जगण लाना अनिवार्य होता है परन्तु यह दोष श्रीके प्रयोगमे नहीं रहता । जैसा ऊपर माघ कविका उदाहरण दिया गया है उसी प्रकार भारविके किरतार्जुनीय काव्यमे भी उमी छदमे 'श्रिय कुरुणामवि पस्य पालिनीम्" इत्यादि प्रथम श्लोकारभमे श्रीका प्रयोग मिलता है ।

११ ग्रहराज—सूर्य ।

१२ नि—नर, मनुष्य । तठै—वहा । अगण—छदशास्त्रमे चार बुरे गण—जगण, रगण, सगण और तगण, छदके आदिमे इनका रखना बुरा माना गया है ।

१३ कठै—कहा । साख—साक्षी । सुणि—सुनकर । इम—इस प्रकार ।

मुजाण—पडित, विद्वान । कायव—काव्य । माघ—शिशुपाल-वच नामक महाकाव्य । मधि—मध्य, मे ।

दुतीय^१ साखी^२

भार अरथ कवि भारवी^३, कायब^४ कियौ^५ किरात ।

मल्यनाथ टीका मही, वळ^६ लिखी^७ आ^८ वात^९ ॥ १४

छप्पय— वळ^{१०} लिखी आ^{११} वात^{१२} विमळ मलिनाथ ब्राह्मण^{१३} ।

स्त्री सुर मगळ सबद^{१४} आदि कहिया नह अवगुण ।

ऐ^{१५} त्रिहु सबद^{१६} उदार आदि गुणरै मै^{१७} आणै^{१८} ।

स्त्रीपति मगळ सरूप ब्रह्म^{१९} चत्रुवेद^{२०} वखाणै^{२१} ।

कवि वेदव्यास^{२२} बलमीक^{२३} कवि, करि अस्तुति वदण कियौ^{२४} ।

सूरज प्रकास सूरज^{२५} जिसौ, “अभमल” गुण आरभियौ^{२६} ॥ १५

पुनि^{२७} अनि कवि प्रसन छद पद्धरी

अनि सुकवि कोइक^{२८} पूछै अभास ।

किण अरथ नाम सूरिज^{२९} प्रकास ।

जिण जतन काजि^{३०} साचौ^{३१} जवाब^{३२} ।

सजुगत^{३३} अरथ दाखू^{३४} सताब^{३५} ।

१ ग दुत्ती । घ दुतिय । २ ख ग साषि । घ. साख । ३ ग घ भारवि ।
४ ख कायब । ५ ख. कीयौ । ग. कीयो । घ कियो । ६ ख. घ वळे । ग बले ।
७ ख. लीषी । ८ ख ग या । ९ ग. वात्त । १० ख. घ बले । ११ ग या ।
१२ ग वात्त । १३ ख ब्राह्मण । ग घ ब्रह्मण । १४ ख. सबद । १५ ख ये ।
ग घ ओ । १६ ख सबद । १७ ख घ. मै । १८ ख आणै । १९ ख ब्रह्म ।
घ ब्रह्म । २० ग चत्रुवेद । २१ ग वखाणै । २२ ग. वेदव्यास । २३ ख. घ बलमीक ।
ग बलिमीक । २४ ख कीयौ । ग. कीयो । २५ ग सूरिज प्रकास सूरिज ।
२६ ग आरंभीयो । २७ ग पुन । २८ ग कोइक । २९ ख घ सूरज ।
३० ख काज । ३१ ख साचौ । ३२ ख जवाब । ३३ ग सजुगत । ३४ ख दाखू ।
घ दाखै । ३५ ख. सताब ।

१४ भार — अर्थ-गौरव । कायब — काव्य । किरात — किरातार्जुनीय नामक महाकाव्य ।
वळ — फिर, पुन ।

१५ वळ — फिर, पुन । आ — यह । ब्राह्मण — ब्राह्मण । अवगुण — दोष । गुण — काव्य ।

१६ अनि — अन्य । जतन — यत्न, लिए । साचौ — सच्चा । सजुगत — युक्ति-पूर्वक,
युक्तिसहित । दाखू — कहता हूँ । सताब — शीघ्र ।

उत्तर- तिम कसिप सुतन^१ मन सोहिज^२ तात ।
 माता अदित यम^३ सुवुद्धि^४ मात ।
 ज्या^५ हूत हुवा^६ तप जप उदार ।
 परिहार निसा जडता प्रहार ।
 चक हेक सुरथ चक^७ हेक चाव ।
 सारथी अरुण वरणण^८ सभाव^९ ।
 इह^{१०} भाति रूप उज्जळ अरोहि ।
 सपतास तुरग जिम उछव सोहि ।
 ऊगता अनै कहता उदार ।
 प्रफुलत्त^{११} कमळ कवि मुख अपार ।
 जोवता कुमुद^{१२} कुमळाइ जाड ।
 सुगताज कुकवि चख धर समाड ।
 सत करै देखि ध्यानह^{१३} सनान ।
 दातार सूर^{१४} सुणि करै दान ।
 ग्रहराज^{१५} किरणि जिम वाणि^{१६} ग्रथ ।
 प्रेरक^{१७} सकति कवि^{१८} रसण पंथ ।
 निसचरां जेम दूजा नरेस ।
 सुणि^{१९} दवे^{२०} सूम^{२१} कायर जिकेस ।
 सूरिज^{२२} समान^{२३} जग जस उजास ।
 पोह^{२४} ग्रथ नाम^{२५} सूरज प्रकास ॥ १६

१ ख ग घ सुकवि । २ ख ग सोहीज । ३ ख अदित्यम । ग आदित्य ।
 घ अदित्य यम । ४. ख सुवध्य । ग घ सुवध्य । ५ ख घ. या । ग. या ।
 ६ ख ऊवा । ग. हूवा । ७ ख वक । ग घ वक । ८ ग. वरणण ।
 घ वरणण । ९ घ सुभाव । १० ख इह । घ इण । ११ घ प्रफुलत्त ।
 १२ ख कुमुदा । १३ घ ध्यानह । १४ ग सुर । १५ ख ग घ ग्रहराज ।
 १६ ख. घ वाणि । १७ ख प्रेरक । १८ ग कवि । १९ ख. सु णि । २० ख दवे ।
 ग घ दवे । २१ ख सूव । ग सूव । घ सूव । २२ ख घ सूरज । २३ ख समान ।
 २४ ख ग घ पोही । २५ ख ग नाम ।

१६ निसा - रात्रि । जडता - अज्ञान चक - चक्र । हेक - एक । इह - इस ।
 चख - चक्षु, नेत्र । धर - भूमि । ग्रह-राज - सूर्य । रसण - रसना, जिह्वा ।
 निसचरा - राक्षसी ।

दोहा— 'अभमल' सूरज^१ हिदवां, जस सूरज्ज^२ उजास ।
 कुळ सूरिज^३ वरणै^४ सुकवि, कह^५ सूरज^६ परकास^७ ॥ १७
 वरणवि कवि रघुवसियां^८, सोभा जग सिरताज ।
 जिण कुळ मांहे^९ ऊपजे^{१०}, रामचद्र महाराज^{११} ॥ १८

राजस वस^{१२} वरणण^{१३} गाथा

निराकार निरवाण^{१४}, जोगेस्वरां दुलभ जाग तेजोमय ।
 रूप विस्तु^{१५} रहमाण, पकज नाभ ब्रह्म^{१६} उत्तपन्नौ^{१७} ॥ १९

द पदरी

जिण ब्रह्म^{१८} तणै मारीच जाणि ।
 मारीच तणै कासिप प्रमाणि^{१९} ।
 सुत कासिप सूरज^{२०} तप अमाधि ।
 वडवस्तु^{२१} सूर सुत तेज वाधि^{२२} ।
 वडवस्तु^{२३} तणै इक्ष्वाकु^{२४} वीर^{२५} ।
 सभ्रम इक्ष्वाकु^{२६} विकुख^{२७} सधीर ।

१ ग सूरिज । २ ख. ग घ सूरज । ३ ख ग घ सूरज । ४ ख वरणे । ग वरणे ।
 ५ ख घ कहै । ६ ख ग सुरज । ७ ख प्रकास । ८ ख रघुवसीया । ग रघुवसीया ।
 ९ ख ग. घ मांहे । १० ख उपजे । ग ऊपजे । ११ ग माहाराज । १२ ग वस ।
 १३ ख वर्तन । ग वर्तनं । घ वर्णन । १४ ग निरवाण । १५ ख घ विस्त ।
 ग विस्त । १६ ग घ ब्रह्म । १७ ग उत्तपन्नौ । १८ ख ब्रह्म । ग घ ब्रह्म ।
 १९ ख ग प्रमाणि । २० ख. ग. घ सूरिज । २१ ग वडवस्तु । २२ ग बाधि ।
 २३ ग वडवस्तु । २४ ख ग इक्ष्वाकु । २५ ग वीर । २६ ख ग इक्ष्वाकु ।
 २७ ख घ विकुख । ग. विष्वक ।

१८ सोभा — कीर्ति ।

१९ दुलभ — दुर्लभ । पकज — कमल । नाभ — नाभि । ब्रह्म — ब्रह्मा । उत्तपन्नौ —
 उत्पन्न हुआ ।

२० नोट—पुराणोंके अनुसार परमेश्वरके पुत्र ब्रह्मा, ब्रह्माके मरीचि, मरीचिके कश्यप, कश्यपके
 सूर्य, सूर्यके वैवस्तमनु और वैवस्तमनुके पुत्र इक्ष्वाकु हुये । इसी इक्ष्वाकु वंशकी वंशावली
 ग्रथकर्ता यहां अपने ग्रथमे दे रहा है ।

ब्रह्म — ब्रह्मा । तणै — के । कासिप — कश्यप । वडवस्तु — वैवस्तमनु । सभ्रम —
 पुत्र । विकुख — विकुक्षि नामक सूर्यवंशी राजा, इक्ष्वाकुके पुत्र ।

सुत विकुख^१ सकुनिज^२ सुत स्वसाद ।
 पुत्र ज^३ ककुस्थ^४ अति हित प्रमाद ।
 जे^५ सुत अनन प्रथु^६ पुत्र जास ।
 राजै प्रथु नदन विष्टरास^७ ।
 आरद्र^८ जेयमुत^९ वंस^{१०} ओप^{११} ।
 जे सुत^{१२} जवनासव^{१३} ब्रह्म^{१४} जोप ।
 सभ्रम जवनासव^{१५} हुवौ^{१६} स्राव^{१७} ।
 ब्रह्दस्व^{१८} जेण सुत तप वधाव ।
 ब्रह्दस्व^{१९} तणै सुत तेण वार ।
 महाराजा^{२०} उपजै^{२१} धुधमार ।
 धुधमार तणै उपजै द्रढासु^{२२} ।
 सुत जयद्रढासु हरिजस प्रकास ।
 जे^{२३} सुत निकुभ कीरति उजास^{२४} ।
 सुत निकुभ तणै नृप^{२५} सहितासु^{२६} ।

१ ग विकुष । २ ख ग घ. सकुनिजै । ३ ख. ग घ पुत्रजै । ४ ग ककुस्थु ।
 ५ ख ग घ. जै । ६ ख ग घ पृथु । ७ ख घ विष्टरास । ग. विष्टरास ।
 ८ ग आरद्र । ९ ख ग घ जैसुत । १० ग वंस । ११ ख औप । १२ ख. ग
 घ जैसुत । १३ ख. ग घ जुवनासव । १४ ख ब्रह्म । ग. घ ब्रह्म । १५ ख.
 घ जुवनासव । ग जुवनासव । १६ ख ग हुवौ । १७ ख ग घ श्राव । १८ ग. ब्रह्दस्व ।
 घ ब्रह्दस्व । १९ ग. ब्रह्दस्व । २० ख महाराजा । २१ ख ग. घ उपजै ।
 २२ ख ग घ द्रढासु । २३ ख ग घ जै । २४ ख ग घ. उजास । २५ ख ग.
 घ नृप । २६ ख सहितासु ।

२० सकुनिज - विकुक्षिका पुत्र, सकुनि । स्वसाद - सूर्यवशी राजा, शशाद । अनेन -
 सूर्यवशी राजा ककुत्स्थके पुत्रका नाम । प्रथु - सूर्यवशी राजा पृथु जो अनेनका पुत्र था ।
 विष्टराम - राजा पृथुके उत्तराधिकारी राजाका नाम जिमके शुद्ध मस्कृत नाम विश्वगश्च,
 विष्टराम्ब, विश्वगधी थे । आरद्र - विश्वगश्चके पुत्रका नाम-आर्द्र । औप - काति,
 शोभा, कीर्ति । जवनासव - युवनाश्व (प्रथम) सभ्रम - पुत्र । स्राव - युवनाश्व
 प्रथमका पुत्र, गावन्त, इसका दूसरा रूप श्रावन्त भी है । ब्रह्दस्व - बृहदश्व ।
 धुधुमार - सूर्यवशी राजा कुवलाश्वका एक नाम । द्रढासु - दृढाश्व । हरिजस -
 दृढाश्वके पुत्र हर्यश्व (प्रथम) । निकुभ - राजा हर्यश्वका पुत्र । सहितास - सूर्य-
 वशी राजा सहताश्व, इसका दूसरा नाम बहुलाश्व भी था ।

नोट-यहा पर प्रथकतनि दृढाश्वके पुत्रका नाम हरिजम (हर्यश्व) लिखा है परन्तु पुरासोंके
 अनुसार दृढाश्वके पुत्रका नाम प्रमोद था और प्रमोदके पुत्रका नाम हर्यश्व मिलता है ।

सहितासु^१ तणै पुत्र अक्रसासु(स) ।
 अक्रसासु तणै पुत्र जवनासु^२ ।
 सुत युव्वनास^३ सेसट^४ स्रवेस^५ ।
 निज हुवौ^६ मानधाता^७ नरेस ।
 पुरु-क्रुसीमान^८ सुत वस^९ रूप ।
 पुर क्रुस्समु^{१०} तणै^{११} सभूत भूप ।
 सभूत सुतण^{१२} मुद्धन^{१३} खिताज ।
 सुधना सुत त्रिधना नृप^{१४} सकाज ।
 त्रिधनासुत त्रिध्यारण तपीस ।
 सतव्रत^{१५} हुवौ जिणसू प्रथीस ।
 सतव्रत^{१६} सुत हरिचद सत^{१७} जिहाज^{१८} ।
 रोहितास चद सुत महाराज ।
 रोहितास तणै ह्रित चचुराय ।
 तप^{१९} सुत सुदेव तपभाण^{२०} ताय ।

१ ख सहितासु । २ ख जुवनासु । ग घ जूवनास । ३ ख ग घ. युवनास । ४ ग घ श्रेसट । ५ ख लवेस । ग घ श्रवेस । ६ ख ग हुवौ । ७ ख घ. मानधाता । ८ ख पुरुकुसिमान । ग पुरुकुसिमान । घ पुरुकुस्सिमान । ९ ग घ वस । १० ख. ग पुरुकुसिसु । घ पुरकुस्सि । ११ ग घ तण । १२ घ. सुतन । १३ ख. ग सुधन । १४ ख ग घ नृप । १५ ख सतव्रत । ग सत्तिव्रत । घ सतिव्रत । १६ ग सतव्रत । १७ ख घ सुत । १८ ख निहाज । १९ ग तस २० ख तपभाण

२० अक्रसासु - सूर्यवशी राजा कुशाश्व ।

नोट - पुराणोंके अनुसार राजा सहताश्वके दो पुत्र हुए । एकका नाम कुशाश्व और एकका नाम अक्षयाश्व था । अक्षयाश्वका वश नहीं चला । सभव है यहा पर पाठ क्रमासु ही हो जिसका शुद्ध रूप कुशाश्व होता है । लेखक भूलसे ही हुआ हो परन्तु सब प्रतियोंमें पाठ अक्रासु ही मिलता है ।

पुरु-क्रुसीमान - पुरुकुत्स नामक राजा । सभूत - पुराणोंके अनुसार राजा पुरुकुत्सके पुत्र असेहस्यके पुत्रका नाम । त्रिधना - त्रिधन्वा नामक राजा । त्रिध्यारण - सभव है यह नाम त्रिध्यारणके लिये प्रयोग किया गया हो जो त्रिधन्वाका पुत्र था । सतव्रत - सतव्रत नामक सूर्यवशी राजा । इसका दूसरा नाम त्रिशकु और सत्यरता भी मिलता है । हरिचंद - राजा हरिश्चंद्र । चद - राजा हरिश्चंद्र । ह्रित - राजा हरिश्चंद्रका पुत्र और रोहिताश्वका पुत्र हरित । चचुराय - हरितका पुत्र चचु । इसका दूसरा नाम चाप भी था ।

सभ्रम सुदेव नृप^१ विजयसूर^२ ।
 पुत्र जास रुक तप तेज पूर ।
 सुत रुक हुवौ^३ ब्रक^४ पोह^५ सधीर ।
 ब्रक^६ सुतण वाहु^७ वीराधिवीर^८ ।
 सुत वाहु^९ सगर परगट ससार ।
 असमज^{१०} सगर सुत नृप^{११} उदार ।
 असुमान जेण सुत जस उदीप ।
 दुतिवत जेण सुत नृप दलीप^{१२} ।
 भागीरथ सुत जिण तप अभग ।
 गो सुरग अहृति^{१३} जिण आणि^{१४} गग ।
 भागीरथ सभ्रम सुत भुवाळ ।
 नाभग^{१५} हुवौ^{१६} सुत सुत^{१७} नृपाळ^{१८} ।
 नाभग तणे अवरीख^{१९} नंद ।
 सिंधुदीप जेण सुत गुण समंद ।

१ ख ग घ नृप । २ ग विजयसूर । ३ ख ग हुवो । ४ ग. ब्रक । ५ ख. ग घ पोहो । ६ ग ब्रक । ७ ख वाहु । ८ ग. वीराधिवीर । ९ ख वाहु । १० ग असमजस । ११ ख ग घ नृप । १२ ख. ग घ. दिलीप । १३ ख हृति । ग हुंत । घ हूत । १४ ग आणि । १५ ग नाभंग । १६ ख ग हुवो । १७ ख घ श्रुतसुत । ग सुत्सुत् । १८ ख ग. घ नृपाळ । १९ ख अवरीष । ग. अवरीष । घ. अवरीष

२० सभ्रम—पुत्र । विजयसूर—पुराणोंके अनुसार चंचुका प्रथम पुत्र विजय । रुक—विजयका पुत्र, सूर्यवंशी एक राजा । ब्रक—रुकका पुत्र वृकनाम सूर्यवंशी राजा । इसका दूसरा नाम घृतक भी था । पोह—प्रभु, राजा । सुतण—पुत्र । वाहु—वृकके पुत्रका नाम, इसका दूसरा नाम यादवी और असित भी मिलते हैं । वीराधिवीर—महावीर । सगर—प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा सगर । इसके दूसरे नाम केशिनी और सुमति भी मिलते हैं । असमंज—राजा सगरके उत्तराधिकारी पुत्रका नाम । असुमान—असमजसके पुत्रका नाम । सभ्रम—पुत्र । सुत—राज भगीरथका पुत्र श्रुत । भुवाळ—राजा । नाभंग—भगीरथका पुत्र, राजा नामाग । नृपाळ—राजा । अवरीख—राजा अम्बरीष । नंद—पुत्र । सिंधुदीप—सिंधुद्वीप जो अम्बरीषका पुत्र था ।

सिधुद्वीप तर्णं सुत रवि सजोप^१ ।
 उपंजे अयुताजित वंस^२ ओप ।
 पुत्र तासि^३ रित्रुपरण^४ वृधि प्रकास ।
 सुत जासु^५ रित्रुपरणरै सुदास ।
 सनु दास^६ तास पुत्र तप सधेज ।
 ते पुत्र सरवकर्मा^७ सतेज ।
 जिण सुतण अने रण हुवी^८ जत्र ।
 तिण सुतण व्रद^९ नर विरुप^{१०} तत्र ।
 सुत भिद्धन^{११} अनमित्र वंस^{१२} दीप ।
 दुलि दुहजे^{१३} सुत ते^{१४} सुत दिलीप ।
 सभ्रम दिलीप रघु निप^{१५} सकाज ।
 रघुरै सुत^{१६} अज राजाधिराज ।
 अज^{१७} सभ्रम दसरथ अवधि ईस ।
 सिरताज राज सोभा सचीस ।
 रथ सतरि लाख चीकी विराज ।
 सौ लाख गयंद नग हीर साज ।
 मूरा^{१८} दतार उजवाळ साख ।
 लाइक वड^{१९} जोधा बीस^{२०} लाख ।

१ ख सजोय । २ ग वंस । ३ घ. तास । ४ ग. घ रित्रुपरण । ५ ग घ जास ।
 ६ ख ग. घ. सउदास । ७ ख. सखकर्मा । ग सरवकर्मा । घ सरवकरमा । ८ ख
 ग. हुवी । ९ ख व्रध । ग व्रिध । घ. व्रध । १० ग. घ विरुप । ११ ख निघन ।
 ग. घ निघन । १२ घ वंस । १३ ख ग घ दुलि दुहजे । १४ ख ग. घ ते ।
 १५ ख ग. घ. नूप । १६ ख ग घ. पुत्र । १७ ग अजै । १८ घ मूरा । १९ ग वड ।
 २० ग. बीस

२०. अयुताजित - सिधुद्वीपका पुत्र । रित्रुपरण - ऋतुपरण । सुदास - ऋतुपरणका पुत्र
 परन्तु पुराणोके अनुसार ऋतुपरणके पुत्रका नाम, सर्वकाम (आर्तपाणि) था और इस
 सर्वकामके पुत्रका नाम सुदास था । सुनु - (शूनु) पुत्र । दास - सुदास नामक राजा ।
 तास - उस । सभ्रम - पुत्र । सचीस - इन्द्र । उजवाळ - उज्ज्वल करने वाला ।
 साख - वंश ।

खट कोडि थाट राजट खंधार ।
 पमंगां लघु किकरां नको पार ।
 सोभन^१ अवास सोभा सुमेर ।
 कोटक^२ भंडार समसर कुमेर ।
 फव^३ हार धार घण फरहरत^४ ।
 वागीचा^५ चादर जळ वहत^६ ।
 भर फूल फळित अढार^७ भार ।
 जुथ करत भ्रमर भणहण^८ गुजार ।
 मिळि करत नाच छत्र कोहक^९ मोर ।
 सुक^{१०} चात्रिग^{११} कोकिल करत सोर ।
 थानक^{१२} सुरेस जिम अवधि थान ।
 सरजू वहत गगा समान ।
 कछ मछ अनेक क्रीळा करंत ।
 नवहस वाळ खजन नचत ।
 तापस अनेक तट मुनि^{१३} तपेस ।
 जोगारंभ अजपा - जप जपेस ।
 वइसनव^{१४} ग्यान^{१५} केवळ वियाप ।
 छक प्रेम तुलिसिका^{१६} तिलक छाप ।

१ ख घ सोन्न । ग सोन्न । २ ग घ कोटिक । ३ ग. घ फवहार । ४ ख हरफरत ।
 ग घ फरहरत । ५ ख वागीचा । ग वागीचा । ६ ग वहत । ७ ग घ आढार ।
 ८ ख भणहर । ९ ख. ग घ कौहक । १० घ सुक । ११ घ चत्रिग । १२ ख.
 ग थानिक । घ थानिक । १३ ख. मुनि । १४ ख वइसनव । ग घ वईस्तव ।
 १५ ख ज्ञान । १६ ग घ तुलिसिका ।

२०. खघार - स्कधावार = सेना । समसर - समान, तुल्य । कुमेर - कुंवर । चादर -
 जलकी चौडी वार जो कुछ ऊपरसे गिरती हो । जुथ - यूथ = समूह । कोहक - मोरकी
 आवाज । चात्रिग - चातक पक्षी । थानक - स्थान । सुरेस - इन्द्र । अवधि -
 अयोध्या । सरजू - सरयू नदी । क्रीळा - क्रीडा । जोगा-रंभ - योगाभ्यास । अजपा-
 जप - वह जप जिसके मूल मंत्र हमका उच्चारण ब्वास प्रश्वासके गीमनागमेन मात्रसे
 होता जाय, हममंत्र । जपेस - जपते हैं । वइसनव - वैष्णव । ग्यान केवळ - केवल्य
 ज्ञान । वियाप - व्याप्त ।

लायक^१, दुज वायक^२ मत्र लीध ।
 कुस हाथि कमडळ दड कीध ।
 पाटवर^३ धोयति जिग प्रवीत^४ ।
 उदार तिलक क्रांती^५ अद्वीत^६ ।
 सिन्नान^७ घात मधि संधियास ।
 उचरत^८ मत्र गायत्रि^९ अभ्यास ।
 आस्रम चत्र अरु चत्र व्रण उदार ।
 क्रत करत दान खोडस प्रकार ।
 बौह^{१०} चंद्रवदन^{११} सुलक्षण बतीस^{१२} ।
 सोळै सिंगार आभ्रण छतीस ।
 सभि आवत पदमणि भूल राग ।
 उरवसी^{१३} सची रति लजत अग ।
 आनूप रूप दुति सक्रय अस ।
 हालत मधुर जिम थकित हस ।
 कोकिला कठ गावत केक ।
 आवत भरण जळ त्रिय अनेक ।
 चद्र जाणि वदन^{१४} धावत चकीर ।
 सिर करत भ्रमर गुजार^{१५} सोर ।
 वपु^{१६} नीलवसन^{१७} मभि इम^{१८} वखाण^{१९} ।
 जगमेगते घटा मभि छटा जाण^{२०} ।

१ ख ग लाईक । २ ग वाईक । घ वाइक । ३ ख पाटवर । ४ ख प्रवीन ।
 ग प्रवीत्त । ५ ख ग घ. क्राअति । ६ ख. अद्वीप । ७ ख. ग घ सनान । ८ ख
 ग घ उचरत । ९ ख गायत्रे । १० ख बौह । ग घ बौह । ११ ग चद्रवदन ।
 १२ ख वतीस । १३ ग उरवसी । १४ ग वदन । १५ ग गुजार । १६ ग वपु ।
 १७ ग वसन । १८ ग ईम । १९ ख घ वखाणि । ग वखाणि । २० ख ग घ. जाणि ।

२० चत्र - चार । व्रण - वरी । खोडस - (खोडस) सोलह । आभ्रण - आभूषण ।
 भूल - समूह, यूथ । उरवसी - उर्वशी, एक अप्सराका नाम । सची - इन्द्राणी ।
 रति - कामदेवकी पत्नी । केक - कई । अणु - शरीर । मभि - मध्यमे मे ।
 छटा - विजली, विद्युत ।

त्रिय कोटि कोटि इम^१ सरजु तीर ।
 नग भटित^२ भरत घट हेम नीर ।
 चत्र वर वजार^३ चित्रकाम^४ चार^५ ।
 दुतिवत वेलि^६ गुल - रगदार ।
 हट^७ अटा हेम नग जटित हीर ।
 धज कोटि कोटि ऊपर^८ सधीर ।
 हिम हीर^९ गौख जाळी हजार^{१०} ।
 दमकत जोति अति जिलहदार ।
 जर तार^{११} चिगां साइवान^{१२} जास ।
 परगटे जाण^{१३} बहु^{१४} रवि प्रकाश^{१५} ।
 सिधि अस्ट नवै निधि पति सभाय ।
 अणपार^{१६} करत वापार आय ।
 वाणिज्य^{१७} वईस^{१८} फवि^{१९} जेण वेर^{२०} ।
 कोटेक जाण^{२१} वप धर^{२२} कुमेर ।
 बोलत^{२३} उदार नर मभि वजार^{२४} ।
 एक एक नाम^{२५} ऊपर^{२६} अपार ।

१ ख ग घ यम । २ ख. ग. घ. जटित । ३ ख वजार । ४ ख घ चित्र काम । ५ ग घ. चार । ६ ग घ वेलि । ७ घ हटा । ८ ख. उपरि । ग घ ऊपरि । ९ घ हीर । १० ख ग घ. यहजार ११ ख ग घ. जरदार । १२ ख. साइवान । ग साइवान । १३ ख ग घ जाणि । १४ ख बहु । १५ ख प्रकाश । १६ ख. ग. घ अपार । १७ ख. घ वाणिज । ग वाणिज । १८ ख वईस । ग घ वईस । १९ ख फवि । २० ग घ वेर । २१ ख जाणि । ग घ. जाणि । २२ ग. वषधर । २३ ख बोलत । २४ ख. वजार । २५ ख ग घ नाम । २६ ख उपरि । ग. घ. ऊपरि ।

२०. भटित - जडा हुआ । हेम - सुवर्ण, मोना । दुतिवत - सुंदर, मनोहर । गुल-रग-
 वार - गुलाबके फूलके रगका, गुलाबी रगका । हट - हाट, दुकान । अटा -
 अट्टालिका, महल । हेम - स्वर्ण, सोना । हिम - स्वर्ण, मोना । दमकत - दमकते
 हैं । जोति - ज्योति, प्रकाश । जिलहदार - चमकदार, आभायुक्त । जर - सुवर्ण,
 सोना । चिग - वासकी पट्टियोंका पर्दा, चिक, चिलमन । साइवान - मकानका
 छन्ना । रवि - सूर्य । बहु - वंश । वप - शरीर । मभि - मध्य, मे ।

जित एक किसब उतिम सुजाण ।
 पुर माहि इता ग्रह ग्रह प्रमाण ।
 उडुंत^१ चंग मधि आसमाण^२ ।
 वर^३ जाण^४ अमर सोभित विमाण^५ ।
 नववती^६ राग घडियाळ^७ नद्^८ ।
 सागर जिम नगर उछाह सद्^९ ।
 अनुकूळ पुरम पतिव्रता^{१०} जोय^{११} ।
 सुभ^{१२} करम करत कुळ ध्रम सकोय^{१३} ।
 नव खड तणा बहु अन^{१४} नरेस ।
 पगवद^{१५} करत धन करत पेस ।
 छत्रपती^{१६} इता मिळि जुटत^{१७} छत्र ।
 तिल मुसटि पडत नह भोमि तत्र ।
 कमळा कटाछि^{१८} नव नव प्रकार^{१९} ।
 दळ गहमह^{२०} उच्छव^{२१} राज द्वार^{२२} ।
 इद्रह सरस राजस अमास ।
 प्रिय जूथ^{२३} सातसै मुर चास ।

१ ख. उडत । ग. घ ऊडंत । २ ख. ग आसमाण । ३ ग. वर । ४ ख ग. घ जाणि ।
 ५ ख विमाण । ग. विमाण । ६ ख नववति । ग घ नववत्ति । ७ ख ग घडीयाळ ।
 ८ ख. नद । ग नद् । ९ ग सद् । १० ख पतिवृता । ग घ पतिव्रता । ११ ख.
 घ जोइ । ग जोई । १२ ख शुभ । १३ ख. घ सकोइ । ग सकोई । १४ ख ग.
 घ अन्य । १५ ग पगवद । १६ ख छत्रपति । १७ ग घ जुडत । १८ घ कटाच्छ ।
 १९ ख ग घ. प्रकारि । २० ख गहम । २१ ख ग उछव । घ. उच्छव । २२ ख.
 ग घ राजद्वारि । २३ ख जुथ ।

२० चंग - वडी गुड्डी, पतंग । आसमाण - आममान । नद् - नाद, ध्वनि । सद् - शब्द ।
 अन - अन्य । पेस - नजर, भेंट । छत्रपती - राजा । मुसटि - मुष्टि, मुठ्ठी । भोमि -
 भूमि । कमळा - स्त्री, लक्ष्मी । कटाछि - कटाक्ष । गह=मह - भीड, समूह । उच्छव -
 उत्सव । सरस - समान । राजस - शोभा देते हैं । मुर - तीन ।

निज कौसल्य^१ केकई^२ सुमित्रा नाम^३ ।
 वरियाम^४ तणै अति हेत वाम^५ ।
 दसरत्थ^६ विभै^७ इम^८ नजर^९ दीध ।
 कामना^{१०} पुत्र धरि जिगन कीध ।
 आविया^{११} नाग नर सुर अमाप ।
 आविया ब्रह्म^{१२} सिव विसन^{१३} आप ।
 आविया^{१४} मुनेस्वर^{१५} नृप^{१६} अपार ।
 आऊठ - कोटि तीरथ उदार ।
 सिध चारण गावत जस सथांन ।
 गण गंध्रप गावत मधुर गांन^{१७} ।
 कर^{१८} उघट कहत संगीत केक ।
 नृत^{१९} करत वजत^{२०} वाजित्र^{२१} अनेक ।
 नाखित्र सूर ससि अर मुनिद्र^{२२} ।
 आविया वरुण^{२३} कुम्मेर^{२४} इद्र ।
 विप्र^{२५} वेद मत्र विधवत^{२६} विचार^{२७} ।
 आहूत^{२८} वेद^{२९} सुरमुख अपार ।

१ घ कोसल्य । २ ख कैकई । ३ ख ग घ नाम । ४ ख ग वरीयाम । ५ ख.
 घ वाम । ग वाम । ६ ख. ग दसरथ । ७ ग. विभै । ८ ग. ईम । ९ ग निजर ।
 १० ख घ कामना । ग कामनां । ११ ख ग आवीया । १२ ख. ब्रह्म । ग. घ ब्रह्म ।
 १३ ग विसन । १४ ख. ग आवीयां । १५ ख. मुनेस्वर । १६ ख. ग घ. नृप ।
 १७ ग ग्यांन । घ गान । १८ ख ग घ करि । १९ ख ग नृत । घ नृत ।
 २० ग घ वजत । २१ ग घ. वाजित्र । २२ ख. मुनींद्र । २३ ग वरण । घ वरण ।
 २४ ख ग. कुमेर । घ कुमेर । २५ ग विप्र । २६ ख. घ विधिवत । ग विधिवत ।
 २७ ग विचार । २८ ख. ग. घ आहूति । २९ ग. वेद ।

२० वरियाम - श्रेष्ठ । विभै - वैभव । कामना - इच्छा । जिगन - यज्ञ । कीध -
 किया । अमाप - असीम । ब्रह्म - ब्रह्मा । विसन - विष्णु । आऊठ-कोटि - अडसठ
 करोड । उघट - मगीतमें वाद्यो पर ताल देना, सम पर आना । वाजित्र - वाद्य ।
 नाखित्र - नक्षत्र । सूर - सूर्य । ससि - चंद्रमा । सुर-मुख - अग्नि, आग ।

सुर मिळै कीध मसलति सकाज ।
 आंखां^१ प्रभु आगळ^२ अरज आज ।
 सुरिइद्र^३ मिळै^४ ब्रह्मदेव^५ साथ ।
 हरि अग्र रहै^६ सह^७ जोडि हाथ ।
 दाखियौ^८ प्रभू कुण चित देव ।
 भाखियौ^९ सुरां दुख रांण भेव ।
 त्रैलोक^{१०} कीध रांमण^{११} सत्रास ।
 साहाय^{१२} करौ^{१३} हरि जग निवास ।
 सुणि सुरां अरज बोले^{१४} लछीस ।
 आडू^{१५} मो सेवग अवधि ईस ।
 रीभियौ^{१६} अह दसरत्थ^{१७} राय ।
 अवतार धरुं इण^{१८} ग्रेह आय ।
 जग^{१९} प्रळव^{२०} रीछि^{२१} पेटे सजोड^{२२} ।
 कपि रीछ^{२३} धरौ वप तेत्रिस^{२४} कोड^{२५} ।
 सुर तजौ चित वरती असोक ।
 लकेस हणू सुख करा^{२६} लोक ।

१ ख. आख । २ ख ग घ आगळि । ३ ख. सुरीयत । ग सुरीयद । घ. सुरियद ।
 ४ ख. ग घ मिले । ५ ग घ ब्रह्मदेव । ६ ग घ रहे । ७ ख सौहो । ग. घ सौहो ।
 ८ ख दाखीयो । ग दाखीयो । ९ ख भाषीयो । ग भाषीयो । १० ग घ त्रैलोक ।
 ११ ख ग. रामण । १२ ख साहाइ । ग सहाइ । १३ ग करो । १४ ख बोले ।
 १५ ख. आडू । १६ ग रीभीयो । १७ ख. ग दसरय । १८ ख ग घ यण ।
 १९ ख ग घ. जग्य । २० ख. प्रलव । २१ घ रीछि । २२ ख ग घ. सजोडि ।
 २३ ख ग रीछ । २४ ख ग घ त्रितिस । २५ ख ग. त्र. कोडि । २६ ख करो ।
 ग. घ करी ।

२० मसलति - विचार । आंखां - कहे । आगळ - अगाडी, सम्मुख । सह - सब ।
 दाखियौ - कहा । कुण - क्या । भाखियौ - कहा । राण - रावण । भेव - भेद ।
 त्रैलोक - त्रिलोक । कीध - किया । सत्रास - भययुक्त, सकटपूर्ण । साहाय -
 सहायता, मदद । लछीस - विष्णु । रीभियौ - प्रसन्न हुआ । अह - मैं । ग्रेह -
 धर, वश । वप - शरीर । चित - चिन्ता । असोक - आनन्द । लकेस - रावण ।

जिग^१ हुवै सपूरण^२ एम जाप
 प्रत्तेस्ट^३ वधै^४ अति नृप^५ प्रताप ।
 प्रभु आगळ^६ करि करि सुर प्रणांम^७ ।
 धरि मतौ^८ गए^९ इम धांम धांम^{१०} ।
 सिव ब्रह्म^{११} विसन^{१२} निज पुर सिधाय ।
 प्रिय^{१३} भूप जिगन व्रत^{१४} सगि पाय^{१५} ।
 त्रिय^{१६} भूप धरम थित गरभ^{१७} तांम^{१८} ।
 कामना^{१९} सफल^{२०} नृप ज्याग काम^{२१} ॥ २०

श्री रामा अवतार जन्म वर्णन^{२२}

दोहा—भावी थित पूरण गरभ^{२३}, दसमै मास उदार ।

जनमे कोसळ^{२४} मात जदि, रांमचद अवतार ॥ १

छप्पय—मधि^{२५} त्रेताजुग चैत्रमास^{२६}, सक्रति - मेखि^{२७} सरि ।

करक लगन पख सुकळ^{२८}, धरा^{२९} पन्नवसु^{३०} नखित्र धुरि^{३१} ।

प्रगटि^{३२} ऊच^{३३} ग्रह पच, राग उच्छाह^{३४} निरंत्रा ।

जनमे भरथ^{३५} केकई, सत्रघण लखण^{३६} सुमित्रा^{३७} ।

१ घ जग । २ ख ग घ सपूरण । ३ ख ग घ प्रतिष्ठा । ४ ग. वधे । ५ ख. ग घ नृप । ६ ख ग. घ. आगलि । ७ ख प्रनाम । घ प्रणाम । ८ ग मतौ । ९ ग गऐ । १० ख घ धाम धाम । ११ ख. ब्रह्म । ग. घ ब्रह्म । १२ ग विसन । १३ ख ग. प्रीय । १४ ख ग घ व्रत । १५ ग पाइ । १६ ख. ग त्रिय । १७ ख. गर्भ । १८ ख ताम । १९ ख. घ कामना । ग कामना । २० ख ग घ सुफल । २१ ख. काम । २२ ख वर्नन । ग वर्नन । घ वर्णन । २३ ख. गर्भ । २४ ख कौतलि । २५ ख ग घ मधि । २६ ग चैत्रमास । घ. चैत्रमास । २७ ख. ग घ मेष । २८ ख शुकल । २९ ख ग घ घुरा । ३० ख ग पुनर्वसु । ग पुनर्वसु । ३१ ख ग घ. धरि । ३२ ख ग. घ प्रगट । ३३ ग ऊच । ३४ ख उच्छाह । ग उच्छाह । ३५ ख भरथ । ग. घ भ्रथ । ३६ ख लखण । ग घ लखण । ३७ ग. घ सुमित्र ।

२० जिग - यज्ञ । प्रत्तेस्ट - प्रतिष्ठा । मतौ - विचार । विसन - विष्णु । जिगन - यज्ञ । ज्याग - यज्ञ ।

१. मात - माता । जदि - जव ।

२ मधि - मध्य, मे । सक्रति-मेखि = मेषसक्रति । करक लगन - कर्क लगन । पन्नवसु - पुनर्वसु । नखित्र - नक्षत्र । ऊच - श्रेष्ठ, उत्तम । सत्रघण - शत्रुघ्न । लखण - लक्ष्मण ।

बजि^१ थाळ सकळ वाजित्र^२ वजे^३, कुसम सघण सुरियंद^४ किया^५ ।
वेखियां^६ हीज आवै वणै^७, उण दिन तणी अजोधिया^८ ॥ २

जन्मोच्छाह^९ वरणनं^{१०} छद अरद्धाराच^{११}

सिंगार सोळ सज्जयं, लखै सची सुलज्जयं ।
इसी^{१२} न रभ इदरी^{१३}, सभक्त ग्यान^{१४} सुदरी ॥ ३
सगीत नूत्त^{१५} सोहती, मुनेस हस मोहती ।
अनग रग आतुरी, प्रिया^{१६} नचंत पातुरी ॥ ४
कुलीन^{१७} तारि केकय, आणंद मे^{१८} अनेकय ।
सुहाग भाग सू भरी^{१९}, अनेक राग उच्चरी ॥ ५
इसी^{२०} जबाण^{२१} उच्चरै, किलोळ कोकिला करै ।
प्रफुल्लय^{२२} प्रकासय, हसत के हुलासय ॥ ६
करत के किलोहळ, महा उछाह मगळ ।
सभै^{२३} इसी सहच्चरी^{२४}, उर वसी^{२५} न अछरी^{२६} ॥ ७

१ ख बजि । २ ख वाजित्र । ग घ बाजित्र । ३ ग. घ वजे । ४ ख. ग सुरीयंद ।
५ ख ग कीया । ६ ख वेषीया । ग. वेषीयां । ७ ख. घ वणै । ग वणै । ८ ख.
ग अजोधिया । ९ ख जन्मउछाह । ग जनमउछाह । घ. जन्मउच्छाह । १० ख. वर्नन । ग वर्नन ।
घ वर्नन । ११ ग अर्धनाराज । घ अर्धनाराज । १२ ख ईसी । १३ ख ग
घ यंदरी । १४ ख ग्यान । १५ ख ग घ. नृत्य । १६ ख ग प्रीया । १७ ख
ग घ कुलीण । १८ ख घ मै । ग मै । १९ ख. सुदरी । २० ख ग ईसी ।
२१ ख वाणि । ग वाणि । ग वाणि । २२ ख ग घ प्रफुल्लयं । २३ ख ग घ सभै ।
२४ ख ग घ सहचरी । २५ ग उरवसी । २६ ग अछरी ।

२ वाजित्र - वाद्य, वाजा । कुसम - पुष्प, फूल । सघण - वर्षा । सुरियद - इन्द्र ।
वेखिया - देखने पर, देखने से ।

३ सोळ - सोलह । सची - इन्द्राणी । रभ - रम्भा, अप्सरा । इदरी - इद्राणी ।

४ नूत्त - नृत्य । मुनेस - मुनीश, महर्षि । हस - आत्मा, जीव । अनग - कामदेव ।
आतुरी - आतुर ।

५ केकय - कई । सुहाग - सौभाग्य ।

६ बाण - वाणी । उच्चरै - उच्चारण करती है । किलोळ - क्रीडा । हुलासय - हर्ष ।

७ किलोहळ - आमोद-प्रमोद, कल्लोल । सहच्चरी - सखी । अछरी - अप्सरा ।

वणाव^१ सोळ वामरा^२, कटाच्छ^३ वाण^४ कामरा^५ ।
 उछाह मे^६ उमगय, रचत राग रंगयं ॥ ८
 रमै हसै नरिदर^७, मभार^८ राज मिदर^९ ।
 करै उछाह सुक्किया^{१०}, पचास सातसै^{११} प्रिया^{१२} ॥ ९
 छभा उछाह छक्कय, अनेक दान अप्पयं ।
 सकाज अस्ट^{१३} सिद्धय, नवै उदार निद्धय ॥ १०
 छत्रप्पती^{१४} उछाह मे, धनेस माल उद्धमै^{१५} ।
 वेदोगत^{१६} विधानय^{१७}, दुजा अनेक दानय^{१८} ॥ ११
 वसिष्ठ^{१९} आदि ब्रह्मयं, करंत जातक्रमयं^{२०} ।
 हळद्द^{२१} कुकम^{२२} हरी, करत छोह^{२३} केसरी ॥ १२
 दिपै उछाह डमर, घमक घोर घुघर^{२४} ।
 वर वरं^{२५} प्रभा वणी, घर घरं प्रभा घणी ॥ १३

१ ग वणाव । २ ख घ. वामरा । ३ ख. कटाछ । ग घ कटाछि । ४ ख वाण ।
 ५ ख घ कामरा । ६ ख ग घ मे । ७ ख ग घ नरिदरां । ८ ख ग मभारि ।
 ९ ख. ग घ मिदरा । १० ख सुकीया । ग सुक्कीया । घ सुक्कि (क्कि) या ।
 ११ ख सातसै । १२ ख लीया । ग प्रीया । १३ ख. ग घ इष्ट । १४ ख ग.
 घ छत्रपती । १५ ग घ ऊधमै । ख उधमै । १६ ग वेदोगत । १७ ग विधानय ।
 १८ ख ग घ. दानय । १९ ख. घ वसिष्ठ । ग वसिष्ठ । २० ख ग जात क्रमय ।
 २१ ख ग हलद । २२ ख घ कुकुम । २३ ख छेल । ग. व छेल । २४ ख ग
 घ घुघर । २५ ग वरवरं ।

८ वामरा - वामाके, महिलाके, स्त्रीके । कटाच्छ - कटाक्ष ।

९ मभार - मध्य । सुक्किया - स्वकीया, पतिसे ही अनुराग रखने वाली स्त्री ।

१०. छभा - सभा । उछाह - उत्सव, हर्ष । छक्कयं - तृप्त । अप्पय - देता है ।

११ घनेस - कुवेर । माल - धन, दौलत । उद्धमै - उपभोग करता है, दानादिमे देता है ।
 वेदोगत - वेदोके अनुमार । विधानयं - अनुष्ठान, धर्म-शास्त्रकी आज्ञा, विधान ।
 दुजा - द्विजो, ब्राह्मणो । दानयं - दान ।

१२ ब्रह्मयं - ब्राह्मण । करंत - करते हैं । जातक्रमय - जातकर्मनामक सस्कार जो बालकके
 जन्मके समय किया जाता है ।

१३. घमक-घोर - ध्वनि विशेष । प्रभा - शोभा ।

डहंत केलि डालय, उपति^१ वंद्रवालय^२ ।
 वहत^३ दुदभं वयं^४, जपंत देव जैजयं ॥ १४
 किसू वखाण^५ कीजियै^६, लहै न पार लीजियै^७ ।
 इळा सहाय अमरै^८, त्रिलोकनाथ औतरे^९ ॥ १५
 दुहा^{१०}—राम लखण^{११} सत्रघण^{१२} भरथ, सूरज^{१३} वस सिगार ।
 एक अस चत्र वप^{१४} अवधि, ऐ चत्रधा^{१५} अवतार ॥ १६
 उच्छव^{१६} वधै^{१७} अजोधिया, प्रभु दरसण^{१८} परमाणि ।
 चंद्र देखि सामद्र^{१९} चढै, जळ राका निस जाणि ॥ १७
 वीता^{२०} इम^{२१} केइक वरस, अति आणद अवधेस ।
 ऊगमणै^{२२} रवि रूप अग, वणै^{२३} कुवर ससि वेस^{२४} ॥ १८
 लघु लघुसर कर धनक^{२५} लघु, लघु वय^{२६} बाळक लार ।
 रामति सरजू तटि रमै, कीळा^{२७} राजकुमार ॥ १९

१ ख ग घ उपत । २ ख वंद्रवालय । ३ ख वजत । ४ ग वय । ५ ग वखाण ।
 ६ ख ग कीजियै । ७ ख ग लीजियै । ८ ख अमरै । ख ग अमरे । ९ ख.
 ग. औतरे । १० ख दुहा । ग घ दोहा । ११ ख. लखमन । १२ ख. ग घ. सत्रघन ।
 १३ ख ग घ सूरिज । १४ ग. वप । १५ ग घाम । १६ ख. उच्छव । ग. उत्छव ।
 घ. उच्छव । १७ ग. वधै । १८ ग घ दरसणि । १९ ख. ग सामद । घ सामद ।
 २० ख वीना । ग वीता । २१ ग ईम । २२ ख उगमणे । ग. घ ऊगमणे । २३ ख
 ग. वणे । घ वणे । २४ ग वेस । २५ ख. ग घ धनुक । २६ ग. वय ।
 २७ ख क्रीडा । ग घ. क्रीळा ।

१४ उपति—शोभा देती है । वंद्रवालय—वदनवार । जपत—उच्चारण करते हैं ।
 जैजयं—जय जय ।

१५ किसू—क्या, कैसे । वखाण—वर्णन । इळा—पृथ्वी । अमरै—देवता । औतरे—
 अवतार लिया ।

१६ लखण—लक्ष्मण । सत्रघण—शत्रुघ्न । सिगार—(शृंगार) शोभा । चत्र—चार ।
 वप—वपु, शरीर । चत्रधा—चार प्रकार के ।

१७. उच्छव—उत्सव । सामद्र—समुद्र । राका—पूर्णिमा, पूर्णिमाकी रात्रि । निस—
 रात्रि ।

१८ इम—इस प्रकार । ससि—शिशु । वेस—आयु, उम्र ।

१९. सर—वाण, तीर । कर—हाथ । धनक—धनुष । वय—आयु । लार—पीछे ।
 रामति—खेल । कीळा—क्रीडा ।

गाथा—अवधिपुरी आणद, दसरथ ग्रेह गाधिसुत जिण दिन ।

निज सुत लेयण नरचदं, विस्वामित्र^१ आवियौ^२ मुनिवर^३ ॥ २०

विघवत^४ वेद^५ विधान^६, दडव्रत^७ करे करे परदछिणा ।

सभ्कि^८ नृप^९ वह^{१०} सनमान^{११}, आसण समपि जोड़ कर अखै^{१२} ॥ २१

राजा दसरथ वाक्य^{१३} विस्वामित्र^{१४} री स्तुति

छन्द नाराच^{१५}

भलोस^{१६} आज मुंभु भाग^{१७}, आप ग्रेह आविया^{१८} ।

दरस्स^{१९} तो रघू^{२०} दिलीप, पुन्यहूत^{२१} पाविया^{२२} ।

कहौ मुनिद्र^{२३} काज केण^{२४}, आगिया^{२५} सु कीजिये^{२६} ।

करी^{२७} तुरी^{२८} कदेस कौस^{२९}, लछी^{३०} भोमि लीजिये^{३१} ॥ २२

वदै^{३२} मुनेस जेण वार^{३३}, देखि^{३४} भूप वीनती^{३५} ।

मख सहाय काज मेलि^{३६}, पुत्र तो रघूपती^{३७} ॥ २३

१ ख विश्वामित्र । ग विस्वामित्र । घ विसवामित्र । २ ख आवीयो । ग आवीयो ।
३ ग मुनिवर । ४ ग विघवत । ५ ग वेद । ६ ग. विधान । ७ ग दडव्रत ।
८ घ. सभ्कि । ९ ख ग घ. नृप । १० ख वही । ग घ वही । ११ ख ग.
घ सनमान । १२ ख ग घ अख्ये । १३ ख घ वाक्य । ग वाक्य । १४ ख घ.
विश्वामित्र । ग विस्वामित्र । १५ ख. ग. नाराज । १६ ग घ. भलोस ।
१७ ख मुंभु । ग घ मूभु । १८ ख. ग आवीया । १९ ख दरस्स । ग. दरस ।
२० ख ग घ रघुं । २१ ग पुंन्य । २२ ख ग पावीया । २३ ख. मुनीद्र । ग.
घ मुन्यद्र । २४ ख ग घ. केणि । २५ ख ग आगीया । २६ ख ग. कीजिये ।
२७ घ करी । २८ घ तुरी । २९ ख कौस । ३० ख ग लछि । घ लच्छि ।
३१ ग लीजिये । ३२ ग. वदै । ३३ ग जेणवार । ३४ ग वेखि । घ वेखि ।
३५ ग वीनती । ३६ ख ग घ मेलिह । ३७ ख ग घ रघुपती ।

२० ग्रेह — घर । गाधिसुत — विश्वामित्र । नरचदं — नरेंद्र, राजा ।

२१ परदछिणा — प्रदक्षिणा, परित्रमा । वह — बहुत । जोड़ कर — कर-वद्ध होकर ।
अखै — कहता है ।

२२. भलोस आज मूभु-भाग — मेरा आज अहोभाग्य है । दरस्स — दर्शन । काज — कार्य ।
केण — किस । आगिया — आजा । करी — हाथी । तुरी — घोडा । कौस — खजाना ।
लछी — लक्ष्मी । भोमि — भूमि ।

२३ वदै — कहते हैं । मुनेस — मुनीश, महर्षि । जेण वार — जिस समय । मखं — यज्ञ ।

राजोवाच^१

रटै नृपेस^२ हो^३ रिखेस, आप एह^४ उच्चरी ।
 पयस राम नीर पेखि, पेखि मीन ज्यां^५ पुरी ॥ २४
 रचे चिंतामणी सु हार, कठि रक कीजियै^६ ।
 पल पल विलोकि^७ पुत्र, जेण भाति जीजियै^८ ।
 यतो न भेद जाणियै^९ ह, ज्याग सैण दूजण ।
 सधाण-वाण जाण ए न^{१०}, ताण ऐ^{११} सरासण ॥ २५
 कराळ देस राकसा, कुमार^{१२} ऐन मोकळू ।
 जिग^{१३} सहाय काज जै, चत्रुग^{१४} साजि^{१५} मै^{१६} चलू ।
 विस्वामित्रेस^{१७} एण^{१८} वात, कोपियौ^{१९} भयकरा ।
 गिरा तरा सरा गभीर, धुज्जवे^{२०} विसुधरा^{२१} ॥ २६
 रोमच अग धोम रूप, ब्रह्म तेज मे वणै ।
 जटास^{२२} छमंटा^{२३} जडागि, आग^{२४} नेत्र ऊफणै^{२५} ।
 वसिष्ठ आय जेण वार, ग्यान कीध धू-मती ।
 दईव सेस तूभ नद, भै न कोइ भूपती ॥ २७

१ ग. राजोवाच । २ ख ग घ नरेस । ३ ख ग घ हे । ४ ख ग घ घेह ।
 ५ ख ग घ ज्यौं । ६ ख ग कीजीये । ७ ग विलोकि । ८ ख ग जीजीये ।
 ९ ख ग घ जाणये । १० ख ग घ येन । ११ ख ग घ ये । १२ ग. कुमार ।
 १३ ख जिमज । १४ ख. चतुरग । ग. घ चतुग । १५ ख ग घ साभि । १६ ख ग
 घ हू । १७ ख विश्वामित्रेण । ग विस्वामित्रंस । घ. विस्वामित्रेस । १८ ख एस ।
 १९ ख कोपीयौ । २० ख. ग न धूजके(वे) । २१ ख ग विसधरा । २२ ख ग घ. जटा ।
 २३ ख. ग. घ. छटा छटा । २४ ख ग घ आगि । २५ ख ग घ. ऊफणे ।

२४ रिखेस - ऋषीश महर्षि । एह - यह । पयस - दूध । पेखि - देख कर । मीन -
 मछली ।

२५ कठि - कठ मे । रक - गरीव, निर्घन । विलोकि - देख कर । जेण - जिम । ज्याग -
 यज्ञ । सैण - हितैपी । दूजण - द्विज, ब्राह्मण । सधाण-वाण - धनुष पर तीर चढानेकी
 क्रिया । ए - यह । सरासण - धनुष ।

२६ मोकळू - भेजू । जिग - यज्ञ । काज - लिये । चत्रुग - चतुरगिणी सेना । एण -
 इस । गिरा - पर्वतो । तरा - वृक्षो । सरा - तालावो । विसुधरा - वसुन्धरा, पृथ्वी ।

२७ रोमच - रोमाच । धोम - अग्नि । जटास - रुद्र, महादेव । छमटा - आगकी लपट ।
 जडागि - जटाकी अग्नि । दईव - देव । सेस - शेष, लक्ष्मण । तूभ - तेरा । नद - पुत्र ।

कराल औ मुनिद्र कोइ, भाखसी^१ वुरौ भलौ ।

अहिद्र रामचद्र ऐ, मुनिद्र साथ मोकळौ ॥ २८

दुहो^२— तदि नृप^३ पग वदि^४ मुनितणा, क्रोधज छिमा कराय ।

साथ^५ दिया^६ लछमण^७ सहित^८, रछ्या^९ कजि^{१०} रघुराय ॥ २९

गाथा— विध बलमीक विधान, रचि सखेप कहू गुण राघव ।

अनड - मेर उनमान, मेरह जेम प्रिथी दत मभळी^{११} ॥ ३०

दुहो— सिव^{१२} हणवत नरहर सुकवि, केसव^{१३} माधवदास ।

कहिया जिण विध हू कहू, प्रत^{१४} अनुसार प्रकास ॥ ३१

स्त्रीरामचरित्रः छंद भुजगी

रिखा^{१५} साथि आये दुहूं भ्रात रूपं ।

भणै जत्र चाळीस संग्राम भूपं ।

हणे ताडिका बाण हूता सुबाह ।

वचै^{१६} मूरछा^{१७} होय^{१८} मारीच वाहां^{१९} ॥ ३२

विस्वामित्ररै^{२०} ज्याग सोभा वधारी ।

त्रिया रैणपैहंत गोतम्म^{२१} तारी ।

१ ख भापणी । २ ख डूहा । ग. घ दोहा । ३ ख ग घ. नृप । ४ ग घ वदि ।
५ ख ग. घ साथि । ६ ख. ग दीया । ७ ख ग लखमण । ८ ग सहित ।
९ ख रछि । ग रत्छि । घ रच्छक । १० घ. जिग । ११ ख. ग घ. मभळि ।
१२ ग शिव । १३ केशव । १४ ख ग. घ प्रति । १५ ख ग घ रिषं । १६ ख
ग. वचे । घ वचे । १७ ख ग घ मूरिछा । १८ ख घ होइ । ग होई । १९ ग वाह ।
२० ख विश्वामित्र । ग. विस्वामित्र । घ विस्वामित्र । २१ ख. ग. घ गोतम ।

२८ भाखसी - कहेगा । वुरौ - अशुभ, अमागलिक । अहिद्र - अहीन्द्र = शेषनाग, लक्ष्मण ।
मोकळौ - भेंजिये ।

२९ तदि - तद । छिमा - क्षमा । रछ्या - रक्षा । कजि - लिये ।

३० विध - विधि, प्रकार । बलमीक - बाल्मीकि ऋषि । सखेप - सक्षेप । गुण - कीर्ति ।
अनड-मेर - मुमेर पर्वत । मेरह - मेरु पर्वत । प्रिथी - पृथ्वी । मभळी - मध्य, मे ।

३१ प्रत - प्रति ।

३२ रिखा - ऋषि । दुहू - दोनो । मूरछा - मूर्च्छा ।

३३ ज्याग - यज्ञ । त्रिया - स्त्री । रैणपैहंत - बूलि पर से ।

पति^१ स्नापहू^२ देह पाई पखाणै ।
जिका दिव्य देहा^३ हुई स्रब्ब^४ जाणै ॥ ३३
कुटवा सहेता^५ हुती नाव कीरं ।
वळै पाय^६ रैणा तरी रघुवीर^७ ।
मिथल्लेसरै^८ ज्याग आए समीप ।
दुवा^९ भूप आए^{१०} मिळे सात दीप ॥ ३४
उठै बाण दंतेस लकेस आया ।
मिळै देव द्रोही उभै धूतमाया ।
इता छत्तधारी मिळे ज्याग आया ।
छित धूप लागै नही छत्रछाया ॥ ३५
मिळे छत्रछत्रां घसै भीड माचै ।
रैणा हीर मोती भडै रूप^{११} राचै ।
ओपै जोति नौलाखहूता अपारा ।
तिकै^{१२} जाण^{१३} साजोत^{१४} रै^{१५} भोमि तारा ॥ ३६
मुनिद्रेस^{१६} जोगेस कव्वेस मेळा ।
भुजगेस देवेस स्रब्बेस^{१७} भेळा ।

१ ख ग पती । २ ख ग घ श्राप । ३ ख. देही । ४ ख ग श्रब । घ श्रब्ब ।
५ ख. ग घ सहेत । ६ ख पाई । ग घ पाइ । ७ ख. रघुवीर । ग. रघुवीर ।
८ ख ग मिथलेस । ९ ख. ग घ. दुआ । १० ग. आये । ११ ख रूप । १२ ख
ग घ. तिके । १३ ख. ग. घ जाणि । १४ ख ग. घ. साजोति । १५ ख ग. घ रा ।
१६ ग. मुनिद्रस । १७ ख श्रवेस । ग स्रबेस ।

३३. पंहंत - पैंरोसे । स्नापहू - शापसे । पखाणै - पत्थररूप । स्रब्ब - सर्व, सब ।

३४ सहेता - सहित । हुती - थी । वळै - फिर । पाय - पाद = चरण । रैणा - धूलि ।
मिथल्लेसरै - राजा जनकके । ज्याग - यज्ञ । दुवा - दूसरे ।

३५. बाण - वाणासुर = सहस्राजुंन । दंतेस - दैत्य + ईश । लकेस - रावण । छत्र-धारी -
राजा । छित - पृथ्वी ।

३६ रैणा - पृथ्वी । जोति - नक्षत्र, तारा, प्रकाश । साजोत - ज्योतिर्मय, प्रकाशपूर्ण,
प्रकाशसहित ।

३७ मुनिद्रेस - महर्षि, मुनीश । जोगेस - योगीश । कव्वेस - कवीश । भुजगेस - शेषनाग ।
देवेस - इन्द्र । स्रब्बेस - सर्व, सब । भेळा - सहित ।

विदेह^१ प्रतंग्या कहै एम वाकं^२ ।
 पुत्री जो वरै^३ सोज ताणै पिनाक ॥ ३७
 लगे बाणहूं आद^४ आयौ लकेसू ।
 खपे वीस हाथांज धानख खेसू ।
 हलै हेक राई न को स्रम्म^५ होता ।
 जती जीव चालै न ज्यू बांम जोतां ॥ ३८
 तरै वाण बादे गयो देखि तासं ।
 मुराराज भल्ले न हल्ले सरास ।
 खसे दैत देवा दुवां पाण खूटा ।
 तरै भूप दूजांतणा जोम तूटा ॥ ३९
 जिकै वार बोले वडा पात जद् ।
 वडा वंस वाखांण हद् विहद्^६ ।
 छुटै अम्रताधार^७ अप्पार^८ छंद ।
 चवै वस^९ वाखाण^{१०} वे भांण चदं ॥ ४०
 जिकै वस^{११} दाता हुवा सूर जेता ।
 तिकै वद्^{१२} बोलै सुणै भूप तेता ।
 उभै वातरौ पात दाखै अहांचौ ।
 खत्री ध्रम्म छाडी क धानख^{१३} खाचौ ॥ ४१

१ ग विदेह । २ ग वांक । ३ ग वरै । ४ ख. आदि । ग वादि । घ. वादि ।
 ५ ख ग घ श्रम । ६ ग विद् । ७ ख. ग घ अमृतावार । ८ ख अपार ।
 ग घ आपार । ९ ग. वस । १० ग वाखांण । ११ ग वंस । १२ ख वद् ।
 ग व्रिद् । घ. व्रिद् । १३ ख ग. प धानंक । -

३७ प्रतंग्या - प्रतिज्ञा । वाक - वाणी । पिनाक - शिव-धनुष ।

३८ आद - आदि । खपे - यत्न करके । धानख - धनुष । खेसू - खीचा । स्रम्म - यत्न ।
जती - समयी जितेन्द्रिय, तपस्वी, यति । वाम - म्त्री ।

३९ तरै - तव । तासं - उमको । मुराराज - इन्द्र । भल्ले - पकडा । हल्ले - हिला ।
सरास - धरामन = धनुष । खसे - प्रयत्न किया । पांण - शक्ति । खूटा - समाप्त
हुआ, नष्ट हुआ । जोम - जोश, शक्ति, बल ।

४० पात - ऋवि । जद् - जव । वाखांण - यश । हद्-विहद् - अपार, असीम । चवै -
बहते हैं । भाण - सूर्य । चद - चद्र ।

४१. वद् - विरुद्, यश । अहांची - शीघ्रता । छाडी - छोडदो । क - या, अथवा ।

सुणे भूप ऐ वात^१ ऊठे सतेज ।
 अचां पाण कोमंड भालै अजेज ।
 ततै रोस^२ टिल्ला^३ करै गैद तेही ।
 जु मस्सै^४ न कोमंड^५ धू ग्यांन जेही ॥ ४२
 जकै^६ भूप दीसै महासूर जाता ।
 ओपै नार^७ जेहा जिकै फेर आता ।
 दसा एम राजा जनकेस देखै ।
 प्रतग्या धरी आप सो वात पेखै ॥ ४३
 हुई भोम^८ निव्वीज^९ दाखै हुकम्मं ।
 कवारो रही कन्यका लेख क्रम्म^{१०} ।
 सुणे एम बोले जती बाण^{११} साची ।
 कहीजे नहीं राम ह्वै ताम काची ॥ ४४
 ब्रहम्मंड^{१२} कोटेक जो रोमवास ।
 स तौ जोवतां जेणि केतौ सरास ।
 एको राम रौ दास जोरै अपारै ।
 धरा सात दीपावती सेस धारै ॥ ४५
 जोवी दूसरौ दास कूरम्म^{१३} जेही ।
 इळा सेससूधी धरै पीठ^{१४} एही ।

१ ग वात । २ ख. ग. रोसि । ३ ख ग घ. टिला । ४ ख ग जुम्म सैन ।
 ५ ख कौमंड । ग. कोदंड । ६ ख घ जिके । ७ ख ग घ नारि । ८ ख ग
 घ भोमि । ९ ख ग. नृवीर । घ निरवीर । १० ख ग क्रम । ११ ग. बाणि ।
 घ वाणि । १२ ख. ब्रह्मंड । ग घ ब्रह्मंड । १३ ख. ग कूरम । १४ ख ग. घ पीठि ।

४२ अचा - हाथ । पाण - वल । कोमंड - घनुष । अजेज - शीघ्र । मस्सै - टससे मस
 होना । धू (ध्रुव) ध्रुव । जेही - जैसा ।

४३ नार - नारी, स्त्री । जनकेस - राजा जनक । प्रतंग्या - प्रतिज्ञा । पेखै - देखता है ।

४४ भोम - भूमि । निव्वीज - वीजशून्य । दाखै - कहता है । जती - यति, लक्ष्मण ।
 बाण - वारी, शब्द ।

४५ ब्रह्ममंड - ब्रह्माण्ड । जेणि - जिस । सरासं - शर्रासनः, घनुष । धरा - भूमि ।
 दीपावती - वह जिस पर द्वीप हो । सेस - शेषनाग । सेससूधी - शेषनाग सहित ।

४६. इळा - पृथ्वी । एही - ऐसा ।

पांणे तांणसी राम आराम पावी ।
 मिथल्लेस^१ धानख^२ वेगौ^३ मगावी ॥ ४६
 मख ग्रेह पैठे करे भेख मल्लां ।
 हमाला लखां आणियौ^४ नीठ हल्ला ।
 हरी वाळ^५ चमाट जेही चहोडै ।
 तमासा ज्युही^६ खाचि धानख^७ तोडै ॥ ४७
 सजी त्रूटते बूव एही सरस्स^८ ।
 पहाडा सुणी घोर वद्री परस्स ।
 प्रंजा राज आणद पूगी परखा^९ ।
 वधै देवता कीध फूला वरिक्खा^{१०} ॥ ४८
 कवी^{११} छद बोलै प्रभू अग्रकारी ।
 धणी कठि सीता वरम्माळ^{१२} धारी ।
 तेडे दूत अज्जोधिया^{१३} जाय ताम ।
 रटै वाण^{१४} जीता जिग सीत राम ॥ ४९
 रटैत^{१५} वधाई ब्रवै दासरत्थ ।
 उधम्मेस^{१६} औघेस घन्नेस अत्थ ।

१ ख ग घ मिथलेस । २ ख ग घ धानक । ३ ख वेगो । ग घ वेगो ।
 ४ ख ग आणीयो । ५ ग घ पाल । ६ ख ग जही । घ जहीं । ७ ख धानेष ।
 ग धानष । घ धानक । ८ ख ग सरस । ९ ख परीषा । ग परिषा । १० ख वरिषा ।
 ग वरिषा । ११ ख. कवि । १२ ख घ. वरमाल । ग वरमाल । १३ ख ग. अजोधिया ।
 १४ ख वाणि । ग वाणि । घ वाणि । १५ ख रटेता । १६ ख ग घ उधमेस ।

४६ पाणे - पाणि, हाथ । आराम पावी - चैन रखो । मिथल्लेस - राजा जनक । धानख - धनुष । वेगौ - शीघ्र ।

४७ मखं - यज्ञ । वाळ - केस । चमाट - चिमटी । चहोडै - उखाड देता है ।

४८. बूव - आवाज, ध्वनि । एही - ऐसी । सरस्स - समान । कीध - की । वरिक्खा - वर्षा ।

४९ धणी - पति । कठि - कठ मे । वरम्माळ - वर-माला । तेडे - बुलाया । वाण - वाणी । जिग - यज्ञ ।

५०. रटैतं - कहने पर । वधाई - खुशखबर । ब्रवै - कहता है । उधम्मेस - दान आदिमे द्रव्य लुटाना । औघेस - राजा दशरथ । घन्नेस - कुवेर । अत्थ - अर्थ, धन, द्रव्य ।

सभे आवळाभूळ जानी सुरंगा ।
 चढै दासरत्थं बजै राग चगा^१ ॥ ५०
 हय रत्थ गैजूह पायक्क हल्लै ।
 इळा जाणि सामद्र साते उभल्लै ।
 जिकै वार^२ स्त्रीराम^३ री जान जोई ।
 कहै ओपमा पार पावै न कोई ॥ ५१
 अवद्धेस^४ राजेस जानेस आया ।
 विदेहेस^५ साम्हैस आणे वधाया^६ ।
 कु वारा विन्है^७ आय जूहार कीधा ।
 लगे प्रीत^८ छाती पिता भीडि^९ लीधा ॥ ५२
 सत्यानद^{१०} नाळेर दीधा समत्थं ।
 हुकम्म^{११} पिता धारिया^{१२} राम हत्थ ।
 भरत्थ^{१३} सत्रंघणा सेस सुभेवै ।
 त्रिएहै भ्रात नाळेर वदै^{१४} सत्रेवै ॥ ५३

१ ख वगा । २ ग वार । ३ ख ग घ श्रीराम । ४ ख अवधेस । ग घ अवधेस ।
 ५ ग विदेहेस । ६ ग. वधाया । ७ ख घ विन्हे । ८ ख ग घ. प्रीति । ९ ख. भीड़ ।
 १० ख ग सत्याणद । ११ ख. ग हुकम । १२ ख. ग धारीया । १३ ख. ग. भरथं ।
 १४ ख. वादै । ग बादे । घ वादे ।

५० आवळाभूळ - सुसज्जित, पूर्ण सजा-धजा हुआ । जानी - बराती । सुरंगा - सुदर ।
 चगा - श्रेष्ठ ।
 ५१ हय - घोडा । गैजूह - हस्ती दल । पायक्क - पैदल । जाणि - मानो । उभल्लै -
 मर्यादासे बाहर हुआ हो, उमडे हुए हो । जान - बरात । जोई - देखी । ओपमा -
 उपमा ।
 ५२. अवद्धेस - अयोध्यापति, दशरथ । राजेस - राजा । जानेस - बरात । विदेहेस -
 राजा जनक । साम्हैस - सम्मुख । आणे - आकर । वधाया - स्वागत किया ।
 विन्है - दोनो । जूहार - अभिवादन । कीधा - किये । लीधा - लिए ।
 ५३ सत्यानद - राजा जनकके कुल-पुरोहित । समत्थ - समर्थ । भरत्थ - भरत । सत्रघणा -
 शत्रुघ्न । सेस - लक्ष्मण ।

वर^१ बेहडा वाद^२ सोभा वणाई^३ ।
 वदै^४ तोरणा रंग साई वधाई ।
 रचै कुभ सोव्रन्न^५ थभा अरेह ।
 वणै आद्रवै वस^६ सोव्रन्न वेह^७ ॥ ५४
 चहूं भ्रात चौरी चढै नेह चगा ।
 उचारै दुजा देव वाणी^८ उमगा ।
 ज्वाळा होम आहूति सीची सजग्गी^९ ।
 लखै वेद^{१०} वाणी^{११} वधेवाद^{१२} लग्गी^{१३} ॥ ५५
 वणै^{१४} चन्न^{१५} धाए रचै पत्तिव्रत्ता ।
 सिया^{१६} मंडवी^{१७} उरमिळा^{१८} सत्यक्रत्ता^{१९} ।
 विधं^{२०} वेद^{२१} मन्नादि कीधा विवाह^{२२} ।
 अखै जोड^{२३} स्रव्वेस^{२४} दाखै उछाह ॥ ५६

१ ग वर । २ ग वादि । ३ ग वणाई । ४ ग वदे । ५ ख सोव्रन । ग. सोव्रन ।
 घ सोव्रन । ६ ग. वस । ७ ग वेह । ८ ख घ वाणी । ९ ख. ग सजगी ।
 १० ग वेद । ११ ख घ वाणी । १२ ख घ वदेवाद । ग वदेवाद । १३ ख
 ग. लगी । १४ ख ग. घ वणै । १५ ख चक्र । घ क्षत्र । १६ ख. ग श्रीया ।
 घ श्रिया । १७ घ माडवी । १८ ख ग. उर्मला । घ उर्मला । १९ ग. घ सत्यकृता ।
 २० ग विधं । २१ ग. वेद । २२ ग विवाह । २३ ख ग घ जाड़ । २४ ख श्रवेस ।
 ग श्रवेस । घ स्रव्वेस ।

५४ बेहडा — शिर पर जलसे भरा रखा जाने वाला जल-पात्रके ऊपर दूसरा जल-पात्र ।
 तोरणा — विवाह अवसर पर कन्याके पिताके भवनके मुख्य द्वार पर लगाया जाने वाला
 काष्ठकी खपच्चियोका बना एक मागलिक उपकरण जिस पर काष्ठकी वनी चिड़ियाए
 अथवा तोते बने होते हैं । यह रंग विरगे रंगोंसे सुसज्जित किया जाता है । विवाहके समय
 वरात लेकर दूल्हा जब कन्याके पिताके घर आता है तब मुख्य द्वार इस तोरणको
 वृक्षादिकी हरी टहननी ने स्पर्श करता है । कुभ — जल-पात्र, कलश । सोव्रन्न — स्वर्ण,
 सोना । वेह — विवाह-मंडपके चारो ओर सोने, चादी अथवा मिट्टीके रखे जाने वाले
 कलश या वर्तन । चौरी — विवाह मंडपका यज्ञ-कुण्ड ।

५६ सिया — सीता । मंडवी — राजा जनकके भाई कुशध्वजकी कन्या जो भरतको व्याही
 गई थी, माडवी । उरमिला — सीताकी छोटी बहिन जो लक्ष्मण को व्याही गई थी,
 उर्मिला । सत्यक्रत्ता — राजा जनकके भाई कुशध्वजकी कन्या जो शत्रुघ्नको व्याही गई
 थी, श्रुतकीर्ति । कीधा — किए । अखै — अक्षय । जोड — जोड़ी । स्रव्वेस — (सर्व +
 ईश) = सर्वेश । दाखै — कहते हैं ।

कवी क्रीत दाखै जिता रोर कापै ।
 अनेकां कुमेरा जिता माल आपै^१ ।
 अपै^२ डायजै भूप अन्नेक अत्थं ।
 राजा औधि पथं चढै दासरत्थ^३ ॥ ५७
 जकै^४ वाररी^५ औधि^६ सोभा जगांणी ।
 ब्रह्म^७ सारदा होत^८ जायै वखाणी^९ ।
 जनकेस^{१०} बोले^{११} वळे^{१२} जान आए^{१३} ।
 उठै धोम रूपी दुजाराय^{१४} आए ॥ ५८
 चखा भाळ तूटै मुखा भाळ चडा ।
 परस्सी फरस्सी भ्रमावै प्रचडा ।
 वदै रामहू राम वायक^{१५} विक्ख^{१६} ।
 तिकै रामरा बांण जाणै सतिक्ख^{१७} ॥ ५९
 जुनौ^{१८} भांजि कोमड तै भूप जीता ।
 सुरा^{१९} मोड^{२०} बागौ^{२१} जता^{२२} व्याहि^{२३} सीता ।

१ ख ओपे । २ ग घ. आपै । ३ ख ग. रथ । ४ ख ग घ जिकै । ५ ग वाररी ।
 ६ ख ग जोति । घ ज्योति । ७ ग ब्रह्मा । घ. ब्रह्मा । ८ ख हून । ग. घ हून ।
 ९ ग. बषाणी । १० ख जनवेस । ११ ख. बोले । घ बोले । १२ ख घ वले ।
 १३ ग घ जाए । १४ ख ग घ दुजाराज । १५ ख घ. वायक्क । ग. वायक्क । १६ ख
 विष्य । ग विष्य । घ विष्य । १७ ख ग. घ सतिष्य । १८ ख ग जूनौ । घ जूनौ ।
 १९ ख. घ सुरां । ग. सरा । २० ग घ. मोड़ । २१ ख घ वागौ । २२ ख ग घ
 जतू । २३ ग व्याहि ।

५७ क्रीत - कीर्ति । रोर - निर्धनता, दारिद्र्य । कापै - नाश करते हैं । कुमेरा - कुमेरो ।
 आपै - देते हैं । अपै - देता है । डायजै - दहेजमे । अन्नेक - अनेक । अत्थं - अर्थ,
 धन । औधि - अयोध्या ।

५८ जकै - जिस । वाररी - समयकी । जनकेस - राजा जनक । धोम - अग्नि, आग ।
 दुजाराय - परशुराम ।

५९ चखा - नेत्री । भाळ - ज्वाला, अग्नि । चडा - भयकर । परस्सी - परशुराम ।
 फरस्सी - परशु । भ्रमावै - घुमाते हैं । वदै - कहते हैं । वायक - वाक्य । विक्ख -
 विष । सतिक्ख - अति तीक्ष्ण ।

६० जुनौ - पुराना, प्राचीन । भांजि - तोड़ कर । कोमड - कोदण्ड, घनुप । मोड -
 मोर । बागौ - पहनावा, पोशाक ।

मुखे वास आवै अजे दूध मारा ।
 धुवै^१ खेल दीठा नही फूलधारा ॥ ६०
 ज तू राम वाळक्क^२ मोनू न जाणै ।
 पिता ताहरौ सूज^३ आछै पिछाणै ।
 पिता ताहरौ^४ माहरौ साच पायी ।
 इसी^५ पावसी तूज^६ औ जोग आयौ^७ ॥ ६१
 खत्री मार^८ इक्कीस मै वार^९ खोए^{१०} ।
 जिकै देव नागा नरां खेल जोए^{११} ।
 लगाऊ सुरा वायका चोट लागै ।
 जती बोलियो^{१२} क्रोध पावक्क जागे ॥ ६२
 इळा^{१३} खत्रिया^{१४} आप लीधी अछेहा ।
 जरै जोध हूता नही राम जेहा ।
 खारा वैन बोले किसू माण खोवौ ।
 जुड़े आज बवीसमी वार^{१५} जोवौ ॥ ६३
 जती दोय^{१६} जूटै इसी राय जाणै ।
 प्रिथीनाथ कीधौ विना^{१७} जोड-पाणै^{१८} ।

१ ख धूवे । ग धवे । घ धुवे । २ ख बालक । ग. वाल्लक । ३ ख सूझ । ग घ सूझ ।
 ४ ग घ. ताहरै । ५ ख ग घ यसौ । ६ ख ग तूज । ७ ख घ आयो । ८ ख
 ग घ वार । ९ ख ग घ. मारि । १० ख षाए । ग षोए । ११ ख ग. जोए ।
 १२ ख बोलीयो । ग बोलीयो । १३ ग. घ यला । १४ ख ग षत्रिया । १५ ग बार ।
 १६ ख घ जोड । १७ ख घ. विनौ । ग विनौ । १८ ख ग घ जोडि ।

६० धुवै - ध्रुव, निश्चय ही, क्रोधमे होता हुआ । फूलधारा - तलवारो, शस्त्रो ।

६१ ताहरौ - तेरा । पिछाणै - जानता है । माहरौ - मेरा । औ - यह । जोग - अवसर, मौका ।

६२ जती - लक्ष्मण । पावक्क - अग्नि, आग ।

६३ इळा - पृथ्वी । जरै - जब । जोध - योद्धा । हूता - थे । जेहा - जैसे । खारा - कटु । वैन - वचन । माण - मान, प्रतिष्ठा । खोवौ - नाश करते हो । वार - समय । जोवौ - देखो ।

१५ विना - विनय । जोड - पाणै - हाथ जोडे हुए ।

विनां कीजतां ब्रह्म^१ राजा वकारै^२ ।
 धरा तूज^३ ही डीकरां ग्रब्ब^४ धारै ॥ ६४
 गिणै तुच्छ^५ मात्रै^६ पुरा ग्रब्ब^७ मोडै^८ ।
 तिकै खेचि भूतेस कोमंड तोडै ।
 तरा^९ राम बोलै इसी^{१०} वैण तीजौ ।
 खिमा भूप बोलीजता काइ^{११} खीजौ ॥ ६५
 अवधेस^{१२} राजा प्रभू ध्रंम^{१३} असी ।
 वडी रीत चालै सदा भाण - वसी^{१४} ।
 लडै काळ चाळां गहे वाद^{१५} लागै ।
 उभै हाथ जोडै गरु विप्र^{१६} आगै ॥ ६६
 वडा^{१७} वंसरी^{१८} रीत^{१९} राजा विचारै^{२०} ।
 जिकै वासतै ब्रह्म^{२१} तो वैण जारै ।
 महासूर धानख धानख मेळौ ।
 भली भात हूता^{२२} पछै^{२३} लोह भेळौ ॥ ६७
 हरी मेल^{२४} धानख^{२५} धानख हाथे ।
 सकौ^{२६} पाण खैचे^{२७} लियौ^{२८} हेक साथे ।

१ ख. ब्रह्म । ग घ. ब्रह्म । २ ग घ वकारै । ३ ख. घ तूज । ग तुज । ४ ख
 ग ग्रब्ब । ५ ख ग तुच्छ । ६ ग मात्रै । ७ ख ग्रव । ग ग्रव । ८ ग घ गोडे ।
 ९ ख ग घ तरै । १० ख ग घ यसौ । ११ ख ग घ. काय । १२ ख. अवधेस ।
 ग घ. अवधेस । १३ ख ग ध्रम । घ ध्रम्म । १४ ग वसी । १५ ख घ वादि ।
 ग वादि । १६ ग विप्र । १७ ग. वडा । १८ ग वस । १९ ग. रीति ।
 २० ग. विचारै । २१ ग. घ ब्रह्म । २२ ख ग घ भली भाति । २३ ख ग घ पछौ ।
 २४ ख ग. घ मेलि । २५ ग घ धानक । ख धानक । २६ ख ग घ. सकौ ।
 २७ ख. खेचे । २८ ख. ग. लीयौ ।

६४ डीकरा - पुत्री । ग्रब्ब - गर्व ।

६५ भूतेस - महादेव । कोमंड - कोदण्ड, घनुप । तरा - तव । इसी - ऐसा । वैण -
 वचन । खिमा - क्षमा । काइ - क्यो । खीजौ - कोप करते हो ।

६६ ध्रंम - धर्म । भाण-वसी - सूर्यवशी । काळ-चाळां - युद्धो । उभै - दोनो । गरु -
 गौ, गाय । विप्र - ब्राह्मण । आगै - अगाडी ।

६७ जिकै - जिस । वासतै - लिए । ब्रह्म - ब्राह्मण । वैण - वचन । जारै - सहन किये ।
 धानख - घनुप ।

सकौ - सब । पाण - पाणि, हाथ, शक्ति, बल ।

मदोमत्त हाथी हुवै^१ हीण मद्दै^२ ।
 जिसी रैणकापुत्र दीसंत जद्दै^३ ॥ ६८
 दुजाराज ज्यारा धरे ध्यान देखै ।
 प्रभू सच्चिदानंद^४ स्त्रीराम पेखै ।
 दुजं^५ दीन ह्वै आसरीवाद दीधौ ।
 क्रपानाथ^६ वदै विदा ब्रह्म कीधौ ॥ ६९
 इसा^७ रामरौ प्रव्व^८ हेला उतारै ।
 पिता साथि छै^९ श्रीधि सांमा^{१०} पधारै ।
 मिळे रग उच्छाह^{११} आणद^{१२} मेळा ।
 भणै नृत्य^{१३} संगीतके नृत्त^{१४} भेळा ॥ ७०
 वरं^{१५} नारिके कुभ नीला वदावै^{१६} ।
 गिरा प्रेम बोलै हसै प्रेम गावै ।
 धजा^{१७} तोरणा सोहिय धांमधामं ।
 रळी रंग वाधाय जै सीत रामं ॥ ७१
 साईवान चिंगा^{१८} जरी तार सोहै ।
 मडे भालरी मोतियां हंस मोहै^{१९} ।

१ ख हुवो । २ ख. ग मद । घ मद्द । ३ ख घ. जद्द । ग दद् । ४ ख. ग घ सच्चतानंद । ५ ख ग. घ वजं । ६ ख. ग. घ क्रिपानाथ । ७ ख ग घ. यसा । ८ ग प्रव । ९ ख ग घ ह्वै । १० ख ग. घ. सांम्हा । ११ ख. उच्छाह । ग उच्छाह । १२ ख आनंद । १३ ख ग घ गीत । १४ ख ग. घ. नृत्य । १५ ग वर । १६ ख. ग. घ. वदावै । १७ ख ग घ. वजं । १८ ख. ग. चिंगां । १९ ख ग घ. मडे मोतिया भालरी हंस मोहै ।

६८ मदोमत्त - मदोन्मत्त । मद्दै - मद । रैणकापुत्र - परशुराम । दीसत - दिखाई देता है । जद्दै - जव ।

६९. दुजाराज - द्विजराज । ज्यारा - जिनके । पेखै - देखते हैं । दुजं - परशुराम । आसरीवाद - आशीर्वाद । दीधौ - दिया । कीधौ - किया ।

७० प्रव्व - गर्व । हेला - क्रीडा, लीला । श्रीधि - अयोध्या । सांमा - सम्मुख, सामने । नृत्त - नाच ।

७१ वरं - श्रेष्ठ । कुभ - कलश, घट । वंदावै - वदना कराना । गिरा - वाणी । धजा - व्रजाएँ । सोहिय - शोभा देती हैं । धांम-धांमं - भवन-भवन । रळी - आनंद, हर्ष । रंग - प्रेम ।

७२ साईवान - मकानका छज्जा, छाजन, साइवान । चिंगां - वांन वा सरकडोकी तीलियोसे बना हुआ भफरीदार परदा, चिक, चिलमन ।

जडी हीर पत्तां नगां हेम जाळी ।
 सभै चित्र कोरीगरां चित्रसाळी ॥ ७२
 तई नैर ओछ्वाडियौ^१ हेम तारां ।
 हुवा भाण उदोत जाणै हजारं ।
 सभै गायणी सोळ स्त्रिगार^२ साजा ।
 वजावै छहै^३ तीस आणद वाजा ॥ ७३
 छहै तीस ही आभ्रणां धारि साजै^४ ।
 लखे रूप मैणगना रूप लाजै ।
 सभै राम आमास रभा सराहै ।
 चिता^५ सारदा जास तालीम चाहै ॥ ७४
 भिदै जाळियां^६ रूप सोभा भळक्की^७ ।
 वणै वीजळी जाण आभै वळक्की^८ ।
 मदोमत्त गौखा चढी हंस मोहै ।
 सची इदरा मिदरां जाण^९ सोहै ॥ ७५
 हरी केसरी बोळ^{१०} कूकू^{११} हळदं ।
 जठै मोतिया धार वूठै जळदं^{१२} ।

१ ख ग ओछ्वाडीयो । २ ख घ. शृगार । ग. शृगार । ३ ख घ छहतीस । ४ ख. ग. घ. छाजै । ५ ख ग. घ चित । ६ ख ग जालीयां । ७ ग भलकी । ८ ख. ग वल्लकी । ९ ख ग घ. जाणि । १० ख. ग घ झोल । ११ ख ग घ. कूकू । १२ ख. ग जल्लद ।

७२ हीर - हीरा । हेम - स्वर्ण, सोना ।

७३. तई - वह । नैर - नगर । जाणै - मानो । गायणी - गाने वाली ।

७४ आभ्रणां - आभरणो । मैणगना - कामदेवकी स्त्री, रति । राम - आराम । आमास - आवास, भवन । रभा - अप्सरा । सराहै - प्रशंसा करती है । जास - जिसकी । तालीम - शिक्षा ।

७५. सोभा - कात्ति, दीप्ति । भळक्की - चमकी, दमकी । जाण - मानो, जैसे । आभै - आकाशमे । वळक्की - चमकी, दमकी । मदोमत्त - मदोन्मत्त । हस - प्राण । मोहै - मोहित करती है । सची - इन्द्राणी । इदरां - इन्द्रके । मिदरा - मदिरोमे ।

७६ बोळ - रगमे डुवोनेकी क्रिया या डुवोना । वूठै - वरसता है । जळदं - वादल ।

इसा रग उच्छाहपू^१ राम आया ।
 वधे मात कौसल्य आए वधाया ॥ ७६
 सुमंत्रा^२ अनै केकई मात साई ।
 भली भात^३ वध्धाविया^४ च्यार भाई ।
 वहू^५ च्यार^६ पगां लगै जेण वारै ।
 सुमत्रा^७ अनै केकई कोसल्यारै^८ ॥ ७७
 हसै दीध आसीस आणंद हूती ।
 अखै - भाग सोभाग हो पुत्रवती ।
 जुवा खेल जीता हथोहत्थ^९ जूटा ।
 खुभै छेहडा^{१०} तेहडा तांम खूटा ॥ ७८
 जडाऊ नगां मिदरां हेम जाळी ।
 सभै सेज साहेलियां चित्रसाळी ।
 वणै ऊजळी सेज एही विराजै^{११} ।
 लखै खीर सामदरा फेण लाजै ॥ ७९
 जगाजोत^{१२} हीरा मणी दीप जगै^{१३} ।
 लखा भात^{१४} तो गघ सामीर लगै ।

१ ख ग उच्छाह । २ ख ग सुम्यत्रा । घ सुम्यता । ३ ख ग. घ भांति । ४ ख वधावीया । ग वधावीया । घ वद्धाविया । ५ ग घ वहू । ६ ख ग घ च्यारि । ७ ख. ग घ सुमित्रा । ८ ख ग. घ कोसला । ९ ग हथोहथ । १० घ नेहडा । ११ ग विराजै । १२ ख ग घ. जोति । १३ ख जगे । १४ ख ग घ भांति ।

७७ अनै - और । वध्धाविया - स्वागत किया । वहू - वधू । जेण - जिस । वारै - समय ।

७८ अखै-भाग - अक्षय-भाग । जुवा - विवाहके पश्चात् दूल्हा व दुलहिनको जुवाका खेल खिलाया जाता है जिसमे छद्मों से कौडी, मुद्रिका व छुहारा आदि डाल कर उन्हे मुद्रिका तलाश करनेको कहा जाता है । छेहडा - दूल्हा दुलहिनका गठ-वधन । तेहडा - वैसे । तांम - उनके । खूटा - छूटे ।

७९ सभै - तैयार करती है, तैयार करते हैं । सेज - शय्या, पलंग । साहेलिया - मखियाँ चित्रसाळी - चित्रशाला । विराजै - शोभा देती है ।

८०. नामीर - नमीर, हवा, पवन ।

चियारै^१ वसै मदरां भ्रात च्यारै ।
 प्रिया^२ च्यार^३ आए जठै हेत प्यारै ॥ ८०
 लछी रूप सीता प्रभू राम लीला ।
 कवीपुत्र दाखै नही जेण कीला^४ ।
 अगै^५ बाळमीका^६ जिसा गाय आया ।
 गुणां तास सपेखि नूदोख^७ गाया ॥ ८१
 किसा^८ दीह आणद - विन्नोद कीधा ।
 लहै भूप आग्या^९ वनोवास लीधा ।
 जती^{१०} राम साथै सिया^{११} बाम^{१२} जोड़ै ।
 तिका नाम लेतां अघा ओघ तोड़ै ॥ ८२
 मुकटा^{१३} जटां बाधिया हस मोहै ।
 सुतभूप सन्यासियां रूप सोहै ।
 राजा देवलोकं वसै दासरत्थ ।
 कृपानाथ^{१४} ऐसा सुणे भेद कत्थ ॥ ८३
 लहे ग्यान राजां वडा रीति लीधी ।
 क्रिया वेद^{१५} माहै कही जेम कीधी ।

१ ख ग चीयारे । २ ख ग. प्रीया । ३ ख ग घ. च्यारि । ४ ख ग. घ. क्रीला ।
 ५ ख आगै । ६ ख घ. वालमीका । ७ ख ग घ नूदोष । ८ ख. ग घ कित्ता ।
 ९ ख ग. अग्या । १० ख जति । ११ ख ग श्रीया । घ श्रिया । १२ ग बाम ।
 १३ ख ग मुकटा । १४ ग घ कृपानाथ । १५ ग वेद ।

८० चियारै - चारो ।

८१ लछी - लक्ष्मी । दाखै - कहते है । जेण - जिस । कीला - क्रीडा । अगै - पहिले ।
 गुणा - यश, कीर्ति, वरांन करता हू । तास - उस । सपेखि - सम्प्रेक्ष्य, देख कर ।
 नूदोख - निर्दोष ।

८२ आणद-विन्नोद - आनद-विनोद । कीधा - किये । वनोवास - वनवास । लीधा - लिये ।
 जती - लक्ष्मण । बाम - वाम = वामा = स्त्री, पत्नी । जोड़ै - साथ । अघा - पापो ।
 ओघ - समूह । तोड़ै - नाश करता है ।

८३ हस - प्राण, मन । सोहै - शोभा देता है । कत्थ - कथा, वृत्तात ।

८४ लीधी - ली । क्रिया - अन्त्येष्टि सस्कार । जेम - जैसे । कीधी - की ।

भरत्थ विदा^१ कीध दे सीख भारी ।
 घरा^२ चित्रकोटां^३ वसै^४ चापधारी ॥ ८४
 हले चित्रकोटा तजे तांम हेळा ।
 विचै^५ व्याध^६ आए मिळै जेण वेळा ।
 हळाबोळ क्रोधाळ दैतेस हच्छ^७ ।
 अणी सूळमे वाधिया^८ वाध^९ अच्छ^{१०} ॥ ८५
 चखा चोळ मे रग^{११} कोदड^{१२} चाढे ।
 कसे वांण हेकौ बहै प्रांण काढे ।
 तजे राकसी देह^{१३} व्है दिव्यतास ।
 बधै देवलोक किया जेण^{१४} तास ॥ ८६
 वना^{१५} दंडकारा विचे^{१६} पचवट्टी^{१७} ।
 जठै धार गोदावरी आय जट्टी^{१८} ।
 तठै^{१९} म्रिग^{२०} मारै भखै मारि तारै ।
 धुरा तात अग्या तणौ नेम धारै ॥ ८७
 हजारं दसां हाथिया^{२१} पाण हाली ।
 कराळी महा राकसी घोर काळी ।

१ ग विदा । २ ख ग. घ घुरा । ३ ख. ग घ. चित्रकोटां । ४ ग वसे । ५ ग विचै ।
 ६ ख. ग घ व्याधि । ७ ख. ग हच्छं । ८ ख घ. वेधिया । ग वेधिया । ९ ग. वाध ।
 १० ख ग अछं । ११ ख ग. घ राम । १२ ख. ग घ कोमंड । १३ ख देहकै ।
 ग. देहकै । १४ ख. ग घ. जेणि । १५ ख. घ वन । ग वन । १६ ख. घ विचै ।
 ग विचै । १७ ग पचवट्टी । १८ ग जट्टी । १९ ख. ग. जठै । २० ख ग. मृगा ।
 २१ ख ग हाथीया ।

८४ विदा - प्रस्थान, रवाना । कीध - किया । घरा - भूमि । चित्रकोटा - चित्रकूट ।
 ८५ चापधारी - धनुषधारी । हेळा - कटिनतासे, खेल । दिचै - बीचमे, मध्यमे ।
 हळाबोळ - अत्यधिक । क्रोधाळ - क्रुद्ध, क्रोधी । दैतेस - राक्षस ।
 ८६. चखा - नेत्रो । चोळ - लाल । रंग - युद्ध । कोदड - धनुष । कसे वाण - प्रत्यक्षा
 पर वाण चढाया । राकसी - राक्षसी । तासं - उस, वह त्राम ।
 ८७. वना दंडकारा - दण्डकारण्य । जठै - जहा । तठै - वहा । म्रिग - मृग, हरिण ।
 धुरा - दृढतासे । अग्या - आज्ञा ।
 ८८ राकमी - राक्षसी । घोर - भयकर ।

जका सूपनेखा कटा फूल जाई । -
 अवधेसरा^१ रूपसू रीभ^२ आई ॥ ८८
 तरै भ्रात वेवै^३ हसे दीध ताळी^४ ।
 भखेवा कजे राकसी सीत भाळी ।
 ग्रहे बाधसी राकसी सीत ग्रासा ।
 निजोडे जती जेणरा कान नासा ॥ ८९
 कळाहीण ह्वै भाजि कूके कहोकी ।
 चले जाय कूकी जठै राण चौकी ।
 मुणे कूक हज्जार^५ जे जैत मेलहै^६ ।
 पनंगेस बाणां जती मारि पेलै ॥ ९०
 खरा दूखरा त्रस्सरा^७ दैत खीजे ।
 भिडेवा^८ कजे आविया^९ क्रोध भीजे^{१०} ।
 सारा^{११} ओसरा^{१२} दीजता जूभ साके ।
 चढै राम नागेसहू ताम चाकै ॥ ९१

१ ख ग अवधेस । २ घ. रीभि । ग. रिभि । ३ ख वेवेह । ४ ख. ताली ।
 ५ ख ग हजार । ६ ख ग घ. मेले । ७ ख. ग. त्रसरा । ८ ग भिडेवा ।
 ९ ख ग आवीया । १० ख. ग घ भीजे । ११ ख ग घ. सरा । १२ ख. ग वोसरा ।
 घ वीसरा ।

८८ जका - वह । सूपनेखा - शूर्पणखा नामक राक्षसी जो रावणकी बहन थी । रीभ -
 मोहित हो कर ।

८९ तरै - तव । वेवै - दोनो । दीध - दी, दिया । भखेवा - भक्षण । कजे - लिए ।
 सीत - सीता । भाळी - देखी । निजोडे - दूर किए, काट डाले । जती - लक्ष्मण ।
 जेणरा - जिसके । नासा - नाक ।

९० कळाहीण - शक्तिहीन । भाजि - दौड कर । कूके - त्राहि-त्राहि की पुकार की ।
 मुणे - कही । कूक - पुकार । पनंगेस - नाग, लक्ष्मण । पेलै - पराजित किये ।

९१ खरा - रावण तथा शूर्पणखाका भाई खर नामक राक्षस । दूखरा - दूषण नामक
 राक्षस जो रावणका भाई था । त्रस्सरा - त्रिशिरा नामक रावणका एक भाई जो
 खर दूषणके साथ दण्डकारण्यमे रहता था । दैत - दैत्य । खीजे - कोप किया ।
 भिडेवा - भिडनेके । कजे - लिये । क्रोध भीजे - क्रोधपूर्ण । जू भ - युद्ध ।

तमासा जेही^१ सेस ओधेस^२ तारां^३ ।
 हणे सायका बार^४ वेवे^५ . हजारं ।
 चवद्वै^६ हजार किा जग^७ चौडै^८ ।
 डळा ग्रीध गाळा^९ लिये^{१०} प्रेत^{११} दौडै^{१२} ॥ ६२
 लखे^{१३} राकसी वधवा^{१४} ज्वाळ लागी ।
 भरे नैण^{१५} लका गई^{१६} लाज भागी ।
 उभै भेख सन्यासिया^{१७} दिठा^{१८} अखू ता ।
 हुई^{१९} वात^{२०} सारी कही राणहूता ॥ ६३
 सत्री हेक साथै जिया^{२१} रूप साजै ।
 लखै^{२२} रूप कामंगना दिव्य^{२३} लाजै ।
 मुणू^{२४} और कासू^{२५} प्रभू देखि^{२६} मोहै ।
 सखी^{२७} उरवसी^{२८} दासिका रूप सोहै ॥ ६४
 वडै^{२९} रूप वाही जके^{३०} लच्छि^{३१} बीजी^{३२} ।
 त्रियह^{३३} लोक माही^{३४} न को नार^{३५} तीजी ।

१ ग घ जही । २ ख घ ओधेस । ३ ग तारा । ४ ख घ बार । ५ ख वेवै ।
 ग घ वेवै । ६ ग. चवद्वै । ७ ख ग घ. गज । ८ ख चौडै । ९ घ गाळां ।
 १० ख ग लीयै । ११ ख ग घ प्रेम । १२ ख ग. घ दौडै । १३ ख लखे ।
 १४ ख वधवा । १५ ग नैण । १६ ग गई । १७ ख ग घ संन्यासा । १८ ख ग
 घ दीठा । १९ ख हुई । २० ग वात । २१ ख जीया । ग. जीया । २२ घ. लखे ।
 २३ ख ग घ देव्य । २४ ग मुणू । २५ ग कासु । २६ ख. देख । २७ ख. ग घ.
 सखी । २८ उर्वसी । ग उर्वसी । २९ ग. वडै । ३० ख कहै । ग. घ. जके ।
 ३१ ख. लच्छे । ग. लच्छि । ३२ ख ग बीजी । घ बीजी । ३३ ख. ग. घ त्रिएहे ।
 ३४ ख ग. माहे । घ माहे । ३५ ख ग घ नारि ।

६२ जेहीं - जैमे । सेस - लक्ष्मण । ओधेस - श्रीराम । हणे - मारे, मार कर । सायकां - तीरो, वारणो । डळा - खड, टुकडा । गाळा - मासपिण्ड ।

६३ लखे - देख कर । वधवा - भाइया । दिठा - देखे । अखू - कहता हू । ता - तुम्हको । राणहूता - रावणसे ।

६४. कामंगना - कामदेवकी स्त्री, रति । दिव्य - सुंदर । लाजै - लज्जित होती है । मुणू - कहू । कासू - क्या, किमसे । सखी - सहेली । उरवसी - उर्वंगी नामक अप्सरा । दासिका - दासी, चेट्टी ।

६५ वडै - महान । लच्छि - लक्ष्मी । बीजी - दूमरी । त्रियह - स्त्री । न को - न कोई । नार - नारी । तीजी - तीमरी ।

सुणे वात^१ मारीच थानं^२ सिधाए^३ ।
 उभै दैत^४ मांमो^५ सु भांणेज आए^६ ॥ ६५
 जुथा^७ दंडकारा^८ धरे भेख जू जौ^९ ।
 दता^{१०} भेख हेकौ म्रिगा^{११} भेख दूजौ ।
 छिपा कदली मे^{१२} मुनीराण छाया^{१३} ।
 उठै सोवनी म्रिग^{१४} मारीच आयौ ॥ ६६
 जगाजोत^{१५} आदीतरी जोत ओपै ।
 उभै हीर चांमीरमे^{१६} स्रग^{१७} ओपै ।
 स्त्रिया^{१८} देख^{१९} दाखै^{२०} प्रभू काज सारौ ।
 म्रिगौ^{२१} नोख^{२२} रूपी ग्रहौ^{२३} काय मारौ ॥ ६७
 दई दैत्य^{२४} जाणै^{२५} इसी^{२६} जाब^{२७} दीधौ ।
 कळा म्रिग्घरौ^{२८} भेख मारीच कीधौ ।
 चवै सीत मोनु^{२९} तुचा^{३०} एह^{३१} चाहै^{३२} ।
 वहौ^{३३} म्रिग^{३४} मारीचनु बांण वाहै ॥ ६८

१ ग वात । २ ख जत्था । ३ ख सिधाये । ग सिधाए । ४ घ. दैत । ५ ख मामो । ग घ. मामौ । ६ ख आये । ग आए । ७ ख ग. घ जुथ । ८ ख. ग दडकार । घ दडकार । ९ ग. जू जो । १० ख. घ दत । ग दत । ११ ख ग घ मृग । १२ ख ग. घ मै । १३ ग छायो । १४ ख मृग । ग मृघ । घ मृघ । १५ ख ग. घ. जगाजोति । १६ ख घ मै । ग मै । १७ ख शृग । ग शृग । घ सृग । १८ ख. ग श्रीया । घ श्रिया । १९ ग घ देखि । २० ख घ दाखे । २१ ख ग. घ मृगौ । २२ ख ग घ नोख । २३ ख ग्रही । २४ ख घ. दंत । ग दंत । २५ ख जाणै । घ जाणे । २६ ख इसी । २७ ख. जाव । २८ ख. ग मृग । घ मृघ । २९ ख मोनुं । ३० ग तूचा । ३१ ग ऐह । ३२ ख ग चाहे । ३३ ख. घ. वहौ । ३४ ख मृग । ग मृघ । घ मृघ ।

६६ जुथा - यूथो । दडकारा - दण्डकारण्य । जू जौ - पृथक-पृथक । हेकौ - एक । म्रिगा - मृग । दूजौ - दूसरा । कदली - एक प्रकारका पौधा जो नदियोंके किनारे पर होता है । मुनीराण - मुनिका वेश धारण किया हुआ रावण । उठै - वहा । सोवनी - स्वर्णका । म्रिग - मृग, हरिया ।

६७ आदीत - रवि, सूर्य । जोत - ज्योति, प्रकाश । दाखै - कहती है । म्रिगौ - मृग । नोख - अद्भुत, विचित्र । काय - या, अथवा ।

६८ दई - देवी । इसी - ऐसा । जाब - जवाब, उत्तर । दीधौ - दिया । कळा - प्रकार, तरह, भाति । म्रिग्घ - मृग । कीधौ - क्रिया । चवै - कहती है । सीत - सीता । तुचा - त्वचा । एह - यह । चाहै - चाहिए ।

भलावे जती सीत ले चाप भाथै ।
 सिकारी हुवा राम मारीच साथै ।
 दमकै^१ वहै म्रिग^२ ऊडाण देती ।
 लखे बाणहू वेधिया^३ डाण लेती ॥ ९९
 पडते जती आव एही पुकारै ।
 मह राम^४ लकेसरै माम मारै ।
 स्त्रिया^५ आकुळै सभळे राम सह ।
 जती घाय वैगौ कहै सीत जह ॥ १००
 दखै भाख ज्यारा जती वस दीता ।
 सकौ कत त्रीलोकरो नाथ सीता ।
 ब्रह्मड^६ कोडेक भाजै वणावै ।
 इसी^७ राम माता कठै कामि^८ आवै ॥ १०१
 अजू लागणा वैण सीता लगाए ।
 धरे बाण कोमड नागेश धाए ।
 जिकै वार राणै मुनी घात जांणी ।
 वदै देवदत्त^९ महा वेद वाणी ॥ १०२
 महामगळासे^{१०} हुती जोगमाया ।
 छळी सीत राणै अली रूप छाया ।

१ ख दमकै । ग घ दमकै । २ ग घ मृग । घ मृगघ । ३ ख वेधीयो । ग वेधीयो ।
 ४ ख ग घ महाराम । ५ ख ग श्रिया । घ श्रिया । ६ ख घ ब्रह्मड । ग ब्रह्मंड ।
 ७ ख ग घ यसौ । ८ घ काम । ९ ख ग घ देवदत्त । १० ख. महामांगला ।

- ९९ भलावे—सौपते हैं । जती—लक्ष्मण । चाप—धनुष । भाथै—तरकश, तूणीर ।
 दमकै—चमकता है । ऊडाण—छलाग । डाण—छलाग ।
 १०० एही—ऐसा । सह—मुझको । लकेसरै—रावणके । माम—मातुल, मामा । स्त्रिया—
 सीता । सभळे—सुन कर । सह—शब्द । घाय—दौड । वैगौ—शीघ्र । जह—जब ।
 १०१ दखै—कहता है । भाख—भाषा वाणी । ज्यारा—जिनके । दीता—आदित्य, सूर्य ।
 ब्रह्मड—ब्रह्माण्ड । कोडेक—करोडो । भाजै—नाश करता है । वणावै—रचता है ।
 १०२ अजू—अब भी, अभी और । लागणा—लगने वाले । वैण—वचन । कोमंड—
 कोदण्ड, धनुष । नागेश—लक्ष्मण । जिकै—जिस । वार—मौका, अवसर ।
 राणै—रावण ।
 १०३ महामगळा—पृथ्वी, भूमि, अग्नि । राणै—रावण ।

छठे रथ^१ चाढ़े नभां^२ माग छूटौ ।
जठे दासररथा^३ सखा ग्रीध जूटौ ॥ १०३
भिड़े रथ^४ चाचा नखां भाजि भारौ ।
सुरगौ कियौ^५ राणरौ गात सारौ ।
चपेटां परा भाट पजां चहोड़ै ।
त्रए - सात लकेसरा छत्र तोड़ै ॥ १०४
लडतौ करा वीस जट्टाय लीधौ ।
कसे पूर काया चकाचूर कीधौ ।
विढे^६ अवर माग आयौ ब्रजाग^७ ।
विचै^८ सीत मेले^९ असोकेस वाग^{१०} ॥ १०५
उठे वाहरू^{११} राम नागेस आया ।
परा चच तूटां जटाएस पाया ।
करा गोदि^{१२} ले ग्रिध^{१३} पावन्न^{१४} कीधौ ।
दई अंतरी वार दीदार दीधौ ॥ १०६

१ ख ग. रथ । २ ख ग घ नभ । ३ ख. ग रथं । ४ ख रथ । ग रथ ।
५ ख ग कीयो । ६ ख विटे । ग विढे । ७ ग. ब्रजाग । न ग विचै । ८ ख ग घ
मल्हे । १० ग वागं । ११ ग वाहरू । १२ ख ग. घ. गोद । १३ ख ग्रीध ।
ग ग्रिध । घ ग्रिद्ध । १४ ख ग. घ पावन ।

१०३ नभां माग - आकाश-मार्ग । जठे - जहा । दासररथां - दशरथका । जूटौ - भिडा ।

१०४ सुरगौ - लाल । रांणरौ - रावणका । गात - शरीर । सारौ - सब । चपेटां -
टक्करो । परां - पखो । त्रए-सात - दश । लकेस - रावण ।

१०५ लडतौ - लडता हुआ । जट्टाय - जटायु । लीधौ - लिया । चकाचूर - चूर्ण, नाश ।
कीधौ - किया । विढे - बढ कर, चल कर । अवर - आकाश । माग - मार्ग, रास्ता ।
ब्रजाग - ब्रजाङ्ग, शक्तिशाली । विचै - बीचमे, मध्यमे । असोकेस वागं -
अशोक वागमे ।

१०६ उठे - बहा पर । वाहरू - रक्षार्थ तलाश करने वाला । नागेस - लक्ष्मण । परां -
पख । चच - चचु । जटाएस - जटायु । ग्रिध - गृध = गीध, जटायु । पावन्न -
पवित्र । कीधौ - किया । दई - ईश्वर । अंतरी - मृत्यु की । वार - समय ।
दीदार - दर्शन । दीधौ - दिया ।

समाचार पूछे कहे भेद साहै ।
 मिळै हंस जट्टाय^१ वैकुठ माहै ।
 जठा अग्र हाले प्रभू क्रोध जोसा ।
 कमधेस बांहां करै आठ कोसा ॥ १०७
 विचै आवता वधवां बांह वाळे ।
 रटै राम^२ बाण जती छेदि राळे ।
 मुणै रामचद्रेस अद्वीत माया ।
 कहो कोण^३ आंटै हुई दैत काया ॥ १०८
 कमंध-दत्त^४ नाम हूं गध्रप आदि देवं ।
 सकौ गोरि नदी जिकै स्नाप^५ स्नेव^६ ।

१ ख ग घ जटाय । २ ख घ रामि । ३ ख केहि । ग घ केणि । ४ ख ग घ दत्त । ५ ख ग घ स्नाप । ६ ग घ. स्नेव ।

१०७. हंस - प्राण । जट्टाय - जटायु नामक गिद्ध । वैकुठ माहै - स्वर्गभे । कमधेस - कवच नामक दानव । बांहा - भुजाओ । विचै - वीचमे । वंधवां - भाइयो । बांह वाळे - भुजाएँ मोडदी ।

१०८ छेदि राळे - काट दिये । मुणै - कहता है, कहते हैं । रामचद्रेस - रामचद्र । अद्वीत - अद्वितीय । कोण आंटै - किन लिए किस कारण । काया - शरीर ।

१०९ कमध - वाल्मीकि रामायणके अनुसार दण्डकारण्यमे निवास करने वाला एक भयकर दैत्य जिमके शिर रहित शरीरमे केवल घड था । इमी कारणमे डमका नाम कवच पडा । इसके पेटमें विकराल दात थे । वक्षस्थलमे एक भयानक नेत्र था । आकार पत्रतके समान था और भुजाएँ एक एक योजन लंबी थी । यह पहले एक गधर्व था किन्तु इमने इन्द्रमे भगडा किया जिसमे इन्द्रने वज्रके प्रहारसे इसके शिर और जघाएँ पेटमे घुसेड दी । जटायुवधके समय सीताकी खोज करते हुए राम लक्ष्मणके रूपर कौच वनमे मतग मुनिके आश्रमके पास कवचने आक्रमण किया । रामने डमकी भुजाएँ काट डाली जिसमे मुमूर्खावस्थामे प्राप्त हो उमने अपना शरीर जला डालने को कहा । भस्मीभूत होने पर यह मद्गतिको प्राप्त हुआ और विश्वावसुनाम एक दिव्य शरीरधारी गधर्व हो गया । रामको सीताका पता बताते हुए सुग्रीवसे उनकी मैत्री करवा कर वह रावणके विरुद्ध जय-यात्रामे रामका बडा सहायक हुआ ।

गध्रप - गधर्व । स्नाप - स्नाप ।

पुणै स्रापमो ताम बांणी प्रकासी ।
 प्रभू राम श्रोतारि^१ तूं मोखि पासी^२ ॥ १०६
 एही रांम दाखे जती वैण^३ एहा ।
 दना^४ ताम पाई महादिव्य देहा ।
 दनां दाखियौ^५ मूक पाहाड देखौ ।
 प्रभू पच^६ जोधा महासूर पेखौ ॥ ११०
 कहेसी जिकै आपहूता करारा ।
 समाचार सीतातणा भेद सारा ।
 प्रभू आय पंपा नदी मूक पासै ।
 उधारी जठै सब्वरी^७ नांम आसै ॥ १११
 सुखेणां नल नील सुग्रीव साथ। ।
 हणू आदि आए मिळे जोडि हाथा ।
 कहै रांम सुग्रीव तू राज काटै^८ ।
 अठै पाहडामे वसै केणि आटै^९ ॥ ११२
 वदै^{१०} ताम सुग्रीव मो बाळि वैरी^{११} ।
 तिके^{१२} पाहडां हू वसू^{१३} धाक तेरी ।

१ ख ग. घ श्रोतारि । २ ख. मोषपासी । ग घ मोषिपासी । ३ ग वैण ।
 ४ ख ग. दन । ५ ख ग. दाषियौ । ६ ख ग घ पाच । ७ ग घ. सब्वरी ।
 ८ ग. काटै । ९ ग आटै । १० ख घ. वदै । ११ ख घ. वैरी । १२ ख तके ।
 ग घ. तके । १३ ग वसू ।

१०६. ताम - उन्होंने । बांणी प्रकासी - अपनी वाणी प्रकट की । प्रभू राम श्रोतारि तू
 मोख पासी - श्रीराम भगवानके अवतार होने पर तेरी मोक्ष हो जायेगी ।

११०. दाखे - कहे । जती - लक्ष्मण । एहा - ऐसे । दाखियौ - कहा । मूक पाहाड -
 ऋष्यमूक-पर्वत । पच - पाच । जोधा - योद्धा । पेखौ - देखिए ।

१११. कहेसी - कहेगे । आपहूता - आपसे । करारा - कठोर । मूक - ऋष्यमूक पर्वत ।
 सब्वरी - शबरी ।

११२. सुखेणा - सुपेण नामक वानर । साथं - साथमे । हणू - हनुमान । जोडि हाथां -
 करबद्ध होकर । केणि - किस । आटै - लिये ।

११३. वदै - कहता है । ताम - उनकी । धाक - आतक, भय ।

जती बोलियौ बाळिनू रांम जारै ।
 महाबाहू हेको बहै बाण मारै ॥ ११३
 प्रभू वाळि साभेस तो राज पावा ।
 अमै^१ दास सेना सभे लार आवा ।
 ग्रहां राज साखी नदी^२ ज्वाळ गाई ।
 तरै राम सुग्रीवरी मित्रताई^३ ॥ ११४
 जिकै सीत जातां पडै^४ भोमि जाणे ।
 उठै बदरा^५ भुभरा चीर आणै^६ ।
 सबै भेट^७ दाखै प्रभू काज सारूं ।
 मने धीर दाखै हमै बालि मारूं ॥ ११५
 वदै^८ भाख^९ मोनू प्रभू तांम वाता^{१०} ।
 सरा हेक वेधो तरा ताड साता ।
 हणे दुदनु बाळि हेला अहणौ ।
 धरे भुडडां दुदरी देह धूणौ ॥ ११६
 सता^{११} ताड वेधे^{१२} प्रभू हेक साथे ।
 हिचोळे सता जोजना^{१३} दुद हाथे ।

१ ख ग अम्हे । २ ख. ग घ नदी । ३ ग मित्रताई । ४ ख पडी । ५ ख ग घ. बदरै । ६ ख आणें । ग. आणे । घ आणे । ७ ख ग घ भेटि । ८ घ वद । ग वदै । ९ ख ग. घ भाण । १० ख. वानू । ग वाता । ११ ख ग घ सत । १२ ग वेधे । १३ ख ग. घ जोजन ।

११३ जती - लक्ष्मण । मारै - सहार करेंगे, मार डालेंगे ।

११४ साभेस - सहार करेंगे, मार डालेंगे । राज पावा - राज्य प्राप्त कर सकूंगा । अमै - हम, मैं । लार - पीछे, साथ । ग्रहां राज - सूर्य । साखी - साक्षी । तरै - तव । मित्रताई - मैत्री, दोस्ती ।

११५ भोमि - भूमि । भुभरा - स्त्रियोके पैरोका आभूषण, भुभर । चीर - वस्त्र । आणै - लाये । मने - मनसे । धीर - धैर्य । हमै - अभी ।

११६ वदै - कहता है, कहते हैं । भाख - भाषा, वाणी । मोनू - मुझको । सरा - तीरो, वाणी । तरा - तरु, वृक्षो । हणे - मारा । दुदनु - द्रव्य, दोनोका युद्ध । हेला - अपमान, हतक । अहणौ - विना हुए ।

११७. सता - सातो । ताड - वृक्ष विशेष, हिचोळे - हिला कर । जोजना - योजनो ।

लखे रांमरा पाणरौ चाप लीधौ ।
 कळहै बाळिहूता न सुग्रीव कीधौ ॥ ११७
 समै तेण राघौ रहे बाण साहे ।
 गयौ बाळि सुग्रीवरौ पाण गाहे ।
 पुणै भाण राघौ रहै केम पेखै ।
 दुवै भाइयां एक सारीख^१ देखै ॥ ११८
 सुग्रीवा^२ ग्रीवां^३ रांमरी^४ फूल^५ सोभा ।
 लडै फेर भाई बिनै^६ राज - लोभा ।
 लडतां थका वाण राघौ लगायौ ।
 बुरा^७ बालि वेधे^८ धरा वाण आयौ ॥ ११९
 कढे हंस बाळेसनु मोक्ष^९ कीधौ ।
 दई राजके कध सुग्रीव दीधौ ।
 रचै अगदेस दियौ^{१०} जोबराज^{११} ।
 क्रिपानाथ^{१२} छाये गुफा देव काजं ॥ १२०
 मिटै मोह छोळा थटै देवमाया ।
 उठै थाट ले भूप सुग्रीव आया ।

१ ख ग. घ सारूप । २ ख सुग्रीव । ग घ सुग्रीव । ३ ख ग घ मुख । ४ ख ग घ की । ५ ख ग स्याम । घ श्याम । ६ ख बिनै । ग घ बिनै । ७ ग बुरा । ८ ग वेधे । ९ ख. मोष । ग घ मोषि । १० ग घ दीयौ । ११ ख. ग. घ जोवराज । १२ ख ग घ कृपानाथ ।

११७ पाणरौ - हाथका, शक्तिका । चाप - धनुष । लीधौ - लिया । कळहै - युद्ध, झगडा । कीधौ - किया ।

११८ समै - समय । तेण - उस । राघौ - श्रीरामचंद्र भगवान । साहे - धारण कर के । पाण - हाथ । पुणै - कहता है । पेखै - देखा, देखो । दुवै - दोनो । सारीख - समान, सहश ।

११९ ग्रीवा - गर्दन । बिनै - दोनो । राज-लोभा - राज्यका लोभ । लडता थका - लडते हुए । राघौ - श्रीरामचंद्र । वेधे - वेध कर, छेद कर ।

१२० कढे - निकल कर । हंस - प्राण । बाळेसनु - बालिको, वानरराजको । मोक्ष कीधौ - मुक्ति दी,

मोक्ष कर दिया । दीधौ - दिया । अगदेस - बालि-पुत्र अगद । जोबराज - युवराज ।

१२१ छोळा - तरंगो । उठै - वहाँ । थाट - समूह, दल, वैभव ।

अखै नाम^१ ऊभी सुग्रीवेस आगै ।
 लखै राम जोवा^२ कपो पाय लागै ॥ १२१
 मत्तौ धारि पूरव्व^३ वन्नीत^४ मेले ।
 पचीसेक रोडै कपी साथ^५ पेले ।
 रमा वेस^६ साते वली^७ उत्तराधं ।
 विनै^८ कोडि यक्कीस^९ जे थ्राट वाध ॥ १२२
 कपी वीस कोडेक सुक्खेण^{१०} कीधा ।
 दिसा पाच्छिम^{११} सोधिवा लार दीधा ।
 पखा दोयरौ ठीक कीधौ प्रमाणे ।
 जियां^{१२} पूठ^{१३} आवै तिया^{१४} वाध^{१५} जाणै ॥ १२३
 सभै फौज कीधौ विदा^{१६} अगदेस ।
 दिसा दिच्छिण^{१७} सोधिवा काजि देस ।
 लहे अगद दक्खण^{१८} माग लीधा ।
 दवादस्स सेनापती लार दीधा ॥ १२४

१ ख ताम । २ ख ग. घ जोधा । ३ ख पूरव । ग. पूरवि । घ पूरव्वि । ४ ख वनीत ।
 ग वनीत । ५ ख. ग साथि । ६ ख घ रमावेश । ७ ख. घ वाली । ८ ख विन्है ।
 ग. विन्ह । घ विन्है । ९ ख ग घ इक्कीस । १० ख सुपेड । ग सुपेण । ११ ख
 पच्छिम । घ पच्छिम । १२ ख ग जीया । १३ ख ग. घ पूठि । १४ ख ग तीयां ।
 १५ ख वाध । ग घ वाध । १६ ग विदा । १७ ख ग दच्छिण । १८ ख दक्षिण ।
 ग घ दक्षणं ।

१२१ अखै - कहता है । सुग्रीवेस - सुग्रीव । आगै - अगाडी । कपी - वानर ।

१२२ मत्तौ - विचार । मेले - भेजा । रोडै - बढिया, उत्तम । कपी - वानर । पेले - गये ।
 उत्तराध - उत्तर दिशा । विनै - दोनो ।

१२३ सुक्खेण - सुपेण नामक वानर । कीधा - किये । पाच्छिमं - पश्चिम । सोधिवा -
 तलाश करने को । लार - पीछे । दीधा - दिये । पखा - पक्षो । ठीक - निश्चय ।
 कीधौ - किया ।

१२४. विदा - प्रस्थान । अगदेस - अगद । दिच्छिण - दक्षिण । काजि - लिये । माग -
 मार्ग । लीधौ - लिये । दवादस्स - द्वादश, बारह । लार - पीछे । दीधा - दिये ।

जिहा^१ माहि जोधा हणूमान जेहा ।
 दई मुद्का^२ जेणनू मेघदेहा ।
 प्रळंबै सत्रेवै भरै^३ छेह पाया ।
 यको^४ मासरा ठीक नू नीठ आया ॥ १२५
 वडौ दुग्गमी^५ देस जोधै विळूधौ^६ ।
 सुधै अगद अतरानेर सूधौ^७ ।
 तरै खेद होता त्रखा देह ताणी ।
 प्रळंबेस लाधौ नही^८ पाख पांणी ॥ १२६
 दुखीवंत भू बदरा रध देखै ।
 पखी उडुता^९ चक्कवा हस पेखै ।
 सुरगा धसै हाथहू^{१०} हाथ साहै^{११} ।
 महा हेमरा धाम आराम माहै ॥ १२७
 इसा देखि आचभिया^{१२} जोध एतै ।
 जठै जोगणी सुदरी दीठ जेतै ।
 त्रखावत देखे जिकै नीर पाया ।
 इसा जोध दाखौ अठै केमि^{१३} आया ॥ १२८

१ ख ग जीया । घ. जिया । २ ख. ग घ मुद्रिका । ३ ख ग घ धरा ।
 ४ ख ग घ इको । ५ ख ग दण्णणी । घ दण्णणी । ६ ग बिलूधौ । ७ ख ग. घ
 सुधौ । ८ ख यही । ९ ख उडता । ग घ उडता । १० ख सु । ग सू ।
 ११ ख सोहे । १२ ख ग आचभीया । १३ ख ग घ केमी ।

१२५ जिहा - जिन । माहि - मध्यमे । जोधा - योद्धा, वीर । जेहा - जैसा । मुद्का -
 मुद्रिका । मेघदेहा - बादलके से शरीर वाले राम । छेह - अत । नीठ - कठिनतामे,
 मुश्किलसे ।

१२६ वडौ - महान्, बडा । दुग्गमी - दुग्म । जोधै - योद्धाओ । विळूधौ - दृढा ।
 सूधौ - सहित, तक । तरै - तव । खेद - कष्ट, पीडा । त्रखा - प्यासा, तृषा ।
 पाख - पास, निकट ।

१२७ भू - भूमि । रध - छेद । पखी - पक्षी । चक्कवा - चक्रवाक । पेखै - देखते हैं ।
 सुरगा - गुफाओ । धसै - प्रवेश करते हैं । साहै - पकडते है । हेमरा - सुवर्गके,
 सोनेके । धाम - भवन । आराम - वगीचा, उपवन । माहै - भीतर, मे ।

१२८ आचभिया - आश्चर्ययुक्त हुए । जोध - योद्धा । दीठ - देखी । त्रखावत - प्यासमे
 पीडित । दाखौ - कहो । केमि - कैसे, क्यो ।

हुवा राम ओतार^१ सीता हरांणी ।
 पखै जोइवा^२ आविया देखि पाणी ।
 सत्रू^३ कोण दाखै कपी जोध सारा ।
 थटै सोवनी धाम कै देव थारा ॥ १२९
 अहं नाम सोय प्रभा धाम एता ।
 जिकै तात विस्वैक्रमा^४ कीध जेता ।
 हिमानी सखा माहरै एक हूती^५ ।
 अठाहूत^६ सो उद्धरी भागवती ॥ १३०
 रटै मुञ्जहू^७ वाणि जै उद्धरेता^८ ।
 तरेसीज तू राम ओतार तेता ।
 उठाहूत आणे भडा पाइ आई ।
 पुणै राम सोयं प्रभा मोक्ष^९ पाई ॥ १३१
 अजे जानकी सोधवा जोध आया ।
 गिरा^{१०} अगदेस चढे राम गाया ।
 सुणे रामरौ नाम उच्छाह^{११} साई ।
 उठै ग्रीध सपातरै^{१२} पखि आई ॥ १३२

१ ख अवतार । २ ख ग जोववा । ग. जोववा । ३ ख ग घ सत्रू । ४ ख. घ वीसैक्रमा । ग वीसैक्रमा । ५ ख ग. हुती । ६ ख. ग हुत । ७ ख. ग मुञ्ज । घ मुञ्ज ।
 ८ ख ग वद्धरेता । घ वद्धरेता । ९ ख मोष । ग घ. मोषि । १० ख ग घ गिरं ।
 ११ ख उच्छाह । ग उत्छाह । १२ ख सपति । ग घ संपाति ।

- १२९ ओतार—अवतार । सीता हरांणी—सीताका हरण हुआ । पखै—लिए, निमित्त ।
 जोइवा—तालाश करनेको, देखनेको । सोवनी—स्वर्णका, सोनेका ।
- १३० विस्वैक्रमा—विश्वकर्मा । कीध—किये । हूती—थी । अठाहूत—यहासे । सो—
 वह । उद्धरी—मोक्ष प्राप्त की ।
- १३१ उद्धरेता—वह जो अपने वीर्यको गिरने न दे, ऊर्ध्वरेता, ब्रह्मचारी । ओतार—
 अवतार । तेता—उतने ।
- १३२ सोधवा—तालाश करनेको, ढूढनेके लिये । जोध—योद्धा । गिरां—पर्वतो । अगदेसं—
 अगद ।

सुता^१ बाळि सपाति ह्वै एक सत्थ ।
 कहै आपरा^२ सीतरा भेद कत्थ ।
 वणै च्यारसै^३ कोस सामद्र^४ वका^५ ।
 लखा राकसा धाम तैपार^६ लका ॥ १३३
 उठे वाग^७ आसोक रूखां अथाहै ।
 महामाय^८ सीता वसै^९ जेणमाहे^{१०} ।
 दसै ही दिसा रामरी कार दीधी ।
 कळा सील सामदरी^{११} पाळि कीधी ॥ १३४
 सुणे वात^{१२} आवै^{१३} जोध^{१४} सारा ।
 इखै^{१५} नीर सामद्र छौळा अपारा ।
 उठै संकुचै पूछ सुग्रीव^{१६} ऊणै ।
 धरा पार दीसै नही सीस धूणै ॥ १३५
 मही दीठ धारै चवै वण^{१७} मद^{१८} ।
 निरवखे^{१९} भडा बोलियौ बाळि नदं ।
 उलघू अह सामद्र वीस वारा ।
 सभौ दीण भाखा नमौ सीस सारा ॥ १३६

१ ख ग घ सुतं । २ ख. आपणा । ३ ख. चारसै । ४ ख सामुद्र । ५ ग. घ. वका । ६ ख जैपार । ७ ग. वाग । ८ ख. ग घ महमाय । ९ ग वसै । १० ख ग घ. जेणिमाहै । ११ ख सामदरी । ग घ सामदरी । १२ ग वात । १३ ख ग घ. आवै । १४ ख ग कपी । १५ ख ग यखै । १६ ख ग घ. धू-ग्रीव । १७ ग. वण । १८ ख ग घ मह । १९ ख ग निरखे ।

१३३ सत्थ - साथ । सीतरा - सीताके । कत्थ - कथा, वृत्तान्त । सामंद्र - समुद्र । वका - वाका विकट । तैपार - उसके पार ।

१३४. वाग आसोक - अशोकवाटिका । रूखां - वृक्षो । अथाहै - अपार, असीम । महामाय - महामाता । जेणमाहे - जिसमे । कार - रेखा । दीधी - दी । कीधी - की ।

१३५ इखै - देखते हैं । छौळा - तरंगो । ऊणै - उदासीन, खिन्न चित्त ।

१३६. चवै - कहता है । वण - वचन । मद - मद । निरवखे - देख कर । बाळिनदं - अग्रद । उलघू - क्रुद्धता हू । अह - मैं । सामद्र - समुद्र । दीण - उदासीन ।

उठै जामवत कहै वैण एहा ।
 करै दास ऊभा धणी काज केहा ।
 कपी देव अंसी सकौ काय कापौ^१ ।
 जिसौ ह्वै तिसौ आपरौ पाण जांपौ^२ ॥ १३७
 लगै वैण जामतरौ^३ सीख लागै ।
 उठै आविया^४ बाळिरा नंद आगै ।
 दसा^५ जोजनां^६ डाणगै नाम दाखै ।
 यताहूत^७ दूणा गवाखेस आखै ॥ १३८
 गवै जोजनां तीस दाखे गहीरं ।
 धरै गदमादीख चाळीस धीर ।
 विदूरत्थ^८ पच्चास^९ जोजन^{१०} बाणी ।
 इळा साठ^{११} जोजन दुव्वाधि आणी ॥ १३९
 धरां^{१२} जोजनां^{१३} सत्र^{१४} रामैद धारै ।
 असी जोजना सूभ^{१५} नामा उचारै ।
 उचारै निवै जोजना जामवंतं ।
 त्रिए घाटि सौए^{१६} नळां^{१७} दाखि^{१८} तंत^{१९} ॥ १४०

१ ख ग घ कपौ । २ ख ग घ जपौ । ३ ख ग घ जामुत । ४ ख ग आवीया ।
 ५ ख ग घ दस । ६ ख ग घ जोजनं । ७ ख ग घ इता । ८ ख. विदूरत्थ ।
 ग विदूरत्थ । घ. विदूरत्थ । ९ ख ग घ पाचास । १० ख ग जोजन । ११ ख.
 ग घ साठि । १२ ख ग घ धरं । १३ ख ग घ. जोजनं । १४ ख ग घ सतर ।
 १५ ख ग श्रभ । घ श्रब्भ । १६ ख ग घ ये । १७ ख ग. घ नल । १८ ग राधि ।
 १९ ख नत ।

१३७ वैण—वचन । एहा—ऐसे । सकौ—सब । काय—क्यो । पांण—शक्ति, बल ।
 जापौ—कहो ।

१३८ नद—पुत्र । आगै—अगाडी । गवाखेस—गवाक्ष नामक बदर जो रामकी सेनाका
 सेनापति था । आखै—कहता है । गवै—गवय नामक रामकी सेनाका बदर ।
 दाखै—कहता है । गहीर—गभीर । विदूरत्थ—एक वानरका नाम ।

१३९ जोजन—योजन । दुव्वाधि—एक वानरका नाम, दुविधा ।

१४०. दाखि—कहा । तंत—सार ।

सभै सोउ^१ मैडाण^२ ऊडाण^३ सारां ।
 पयोधारहूता न को होय^४ पारां ।
 पुणै ताम अज्जै कपी भेद पाया ।
 जतू काय बोलै न सामीर - जाया ॥ १४१
 लखां जोजना जामतै भाण लीधौ ।
 किसू जोजना सौतणौ सोच कीधौ ।
 पुणौ^५ ताम लागौ धणी बोल पाऊ ।
 जळाधाररै पार सौ वार जाऊ ॥ १४२
 सकौ पाव वादै^६ कपी ह्वै हुलास ।
 तिलक्क करै अगद सीस तास ।
 जरै रग धारै चखा चोळ जोसा ।
 कियौ अग उत्तग^७ सौ वीस कोसा ॥ १४३
 जिकै वार^८ तेजोमई थाट जाडौ ।
 उभै वीस^९ कोसा जितौ कीध आडौ ।
 करे पाव टिल्ला पछै चूर कीधौ ।
 दिसा लक आकासमे डाण दीधौ ॥ १४४
 तगस्सेस नागां सिरै जाणि तूटौ ।
 छछोहौ जिसौ रामरौ बाण छूटौ ।

१ ख ग. घ सौ । २ ख ग. घ महीडाण । ३ ख उडाण । ४ ख ग. घ. होइ ।
 ५ ख ग घ पुणै । ६ ख घ वदै । ग वदै । ७ ख तग । ८ ग वार । ९ ग
 वीस ।

१४१ पयोधारहूता - समुद्रमे । पुणै - कहता है । काय - क्यो । सामीरजाया - पवनपुत्र,
 हनुमान ।

१४२. जामतै - जन्मते ही बाल्यावस्थामे ही । लीधौ - लिया । सौतणौ - सीका । सोच -
 चिन्ता, विचार । कीधौ - किया । पुणौ - कहो । लागौ - हनुमान । जळाधाररै -
 समुद्रके ।

१४३. सकौ - सब । हुलास - हर्ष, प्रमन्नता । तासं - उसके । जरै - जब । चखा -
 नेत्रो । चोळ - लाल । जोसा - जोश । उत्तग - उत्तुग, ऊचा ।

१४४ वार - समय । टिल्ला - आघात, टक्कर । चूर - चूर्ण, नाश । कीधौ - किया ।
 दिसा - तरफ, ओर । डाण - कदम, डग । दीधौ - दिया ।

१४५ तगस्सेस - गरुड । छछोहौ - तेज । जिसौ - जैसा ।

सुरस्ता^१ असी जोजना डाव साहै ।
 थमाऊ निवै जोजना ह्वै अथाहै ॥ १४५
 चित्त^३ सिघका^४ विग्रहां दाउ चाहै ।
 मुखां^५ फाड़^६ गी राकसी लक माहै ।
 सकौ लंक मजार ह्वै धाड़^७ सोधी ।
 कळाकाळ दीठा घणा दैत क्रोधी ॥ १४६
 मडै दीठ^८ नौ ही ग्रहा वदि माहै ।
 सकौ तार नौलाख मूसाळ साहै ।
 दिना^९ तैर सोई करै वास देवं ।
 सकौ भूप दूजा करै पाव सेव ॥ १४७
 पखाला भरै जम्म^{१०} भैसौ सप्राजै^{११} ।
 सुराराव^{१२} सिक्कौ^{१३} छिडक्काव^{१४} साजै ।
 सचीरूप उद्दार^{१५} सोभा सिंगारी ।
 नरी^{१६} नागणी आसुरी देव नारी ॥ १४८

१ ख. ग सुरस्ता । २ ख. ग घ जोजनं । ३ ख ग घ चित्त । ४ ख. सघ ।
 ५ ख. ग घ मुख । ६ ख ग. घ. फाडि । ७ ख ग घ. धाय । ८ ख ग घ दीठि ।
 ९ ख. ग. घ. दिन । १० ख जंम । ११ ख ग घ सुप्रान्कं । १२ ख ग सुराराव ।
 १३ ख घ सक्कौ । १४ ख छटक्काव । ग छडकाव । घ खडक्काव । १५ ख ग. घ.
 उदार । १६ ख. तरी ।

१४५ सुरस्ता — प्रसिद्ध नागमाता जो समुद्रमें रहती थी और जिनने हनुमानजीको समुद्र
 पार करनेके समय रोका था । थमाऊ — रोकू, रोक दू । जोजनां — योजनो ।
 अथाह — अपार, असीम ।

१४६. सिघका — सिंहिका एक राक्षसी जो राहुकी माता थी, यह राक्षसी दक्षिण समुद्रमे रहती
 थी और आकानगामी उडते जीवोंकी परछाई देख कर उनको खीच कर खाती
 थी । इसको लका जाते समय हनुमानजीने मारा था । सकौ — सब, वह । धाड़ —
 दौड़ कर । सोधी — तलाश की । कळाकाळ — महा भयकर ।

१४८ पखाला — चमड़ेका जल भरनेका बड़ा थैला जो पशुओंकी पीठ पर लाद कर लाया
 जाता है । सुराराव — इन्द्र । छिडक्काव — पानी आदि छिडकनेकी क्रिया, छिडकाव
 सचीरूप — इन्द्राणीके रूप । सिंगारी — शृंगारित । नरी — नारी । नागणी — नाग-
 कन्या । आसुरी — राक्षसी ।

उठै^१ तीन लोका तणै दड आवै ।
 नरां हैमरां गैमरा पार नावै ।
 किला सोवनी दीठ सो वीस कोस^२ ।
 जगाजोति हीरा मणी भाण जोस^३ ॥ १४९
 तरै सोच धारै कपी देह त्याग^४ ।
 वळै आवियौ^५ आदि असोक वाग ।
 तजे रूप मजार कीला तमास ।
 कपी आपरी रूप धारै प्रकासं ॥ १५०
 इसी^६ लक देखे असोकेस आयौ ।
 पुत्रा^७ मात सीता महा^८ मोद^९ पायौ ।
 दई दीध सो मुद्रका सीत दीधी ।
 लहे मुद्र^{१०} चूडामणी^{११} दीध लीधी ॥ १५१
 खुध्यावंत हू मातहू वैण^{१२} अक्खै^{१३} ।
 भणै मात भौमी फळा वीण^{१४} भक्खै^{१५} ।
 स्त्रिया^{१६} छांह राखिया^{१७} व्रच्छ^{१८} सूधा ।
 अनै रास कोरा लिया^{१९} व्रच्छ^{२०} ऊधा ॥ १५२

१ ख. उभै । २ ख ग घ कोना । ३ ख ग घ जोसा । ४ घ त्यागा । ५ ग आवीयौ । ६ ख ग. घ. घसी । ७ ख ग. घ पुत्रमात । ८ ख ग घ. लखे । ९ ख ग घ हेत । १० ख ग घ मुद्रि । ११ ख चूडामणि । १२ ख ग घ वैण । १३ ख ग. अण्ये । १४ ख घ वीणि । ग वीणि । १५ ख. ग भण्ये । १६ ख ग. स्त्रीया । १७ ख. ग रापीया । १८ ख व्रिच्छ । ग व्रिच्छ । घ व्रिच्छ । १९ ख. ग लीया । २० ख वृच्छ । ग वृच्छ । घ कृच्छ ।

१४९. हैमरा - घोडो । गैमरा - हाथियो । सोवनी - मोनेका, सोनेकी ।

१५०. तरै - तव । कपी - हनुमान । वळै - फिर । असोक वागं - अशोक वाग । फीला - क्रीडा ।

१५१. असोकेस - अशोक वाग । महा मोद - अत्यधिक आनद । दई - श्रीराम । दीध - दी । मुद्रका - मुद्रिका । दीधी - देदी । मुद्र - मुद्रिका । चूडामणी - स्त्रियोके शिरका आभूषण विशेष । लीधी - ली ।

१५२. खुध्यावत - भूखा । मातहू - मातासे । वैण - वचन । अक्खै - कहता है । भणै - कहती है, कहता है । भौमी - सीता । वीण - चुन कर । भक्खै - खाता है । छांह - छाया । राखिया - रक्खे । व्रच्छ - वृक्ष ।

लगावै फळा भोमि आहार^१ लीधौ ।
 कपी वाग^२ ऊधामि चौगान कीधौ ।
 सभै तै हजारे असो दैत साथी ।
 हणे पाचसै पूर मैमत हाथी ॥ १५३
 हुई लकमे बूब आया हकारे ।
 मत्री रांणरा सात हज्जार मारे ।
 अखौ^३ राणरौ पुत्र जूटौ अछायौ ।
 घणै क्रूधि^४ तेनू हणूमान^५ घायौ ॥ १५४
 जळावोळ लीधां दळा राणजायौ ।
 अखौ मारियौ साभळे मेघ आयौ ।
 उठै रांमरा^६ जोध कूदे अमामौ ।
 सभे हाथ पच्छै^७ अयौ मेघ सामौ ॥ १५५
 करा मेघ ब्रह्मातणी^८ पासि काढी ।
 चलावै कपी राजरै कठि चाढी ।
 मुणै ब्रह्म^९ तोडै रखै लोपि मोनू ।
 तवै तात कोई न ह्वै घात तोनू ॥ १५६

१ ग. अहार । २ ग वाग । ३ ख अषै । ४ ख क्रोध । ग घ क्रोधि । ५ ख ग घ हणू मानि । ६ ख ग घ रांमरौ । ७ ख. पछै । ग पच्छै । ८ ग ब्रह्मातणी । घ. ।, ९ ग ब्रह्म ।

१५३ आहार - भोजन । लीधौ - लिया । वाग ऊधामि - वागमे ऊधम कर । चौगान - मैदान । हणे - सहार कर दिये । मैमत - मस्त ।

१५४ बूब - पुकार, त्राहि-त्राहि । अखौ - अक्षयकुमार । रांणरौ - रावणका । जूटौ - भिडा । अछायौ - जोशीला । क्रूधि - क्रोधमे । हणूमान - हनुमान । घायौ - मारा, सहार किया ।

१५५ जळावोळ - अत्यधिक, भयकर । लीधां - लिए हुए । राण जायौ - रावण का पुत्र अखौ - रावण-पुत्र, अक्षयकुमार । साभळे - सुन कर । मेघ - इन्द्रजीत । अमामौ - उत्तम, वढिया । सामौ - सम्मुख ।

१५६ करा - हाथी । ब्रह्मातणी पासि - ब्रह्माका दिया हुआ ब्रह्मपाश नामक अस्त्र । कठि - कठमे । मुणै - कहता है । तवै - कहता है । घात - प्रहार, चोट । तोनू - तुम्हको ।

लहे ब्रह्म अग्या ब्रदा^१ मेघ लीधौ ।
 दसैकध आगै हणू आणि दीधौ ।
 वदै^२ रांणनू कोण कै दास वारा^३ ।
 किसै वैर^४ तै थाट मारै कँवारा^५ ॥ १५७
 जपै जाति नै नाम भेद जणावौ^६ ।
 अठै जानकी सोधिबा^७ काज आवौ ।
 लघू^८ दास हू रांमरै जूर^९ लेवौ ।
 कहै वैर^{१०} जाणै नही सीत केवौ ॥ १५८
 अजै^{११} राज चाहैस तौ धारि आछी ।
 पगां रामरा वादि^{१२} दै सीत पाछी ।
 महाराजरी आगिया^{१३} होय^{१४} मोनू ।
 त्रणां^{१५} जेम राळू करे चूर तोनू ॥ १५९
 सकौ राकसा एकणी^{१६} हाथ^{१७} साहे ।
 मेलु^{१८} लक साहेत पाताळ साहे ।
 जपै वैण ऐहा हणूमान^{१९} ज्यारा ।
 तेडै मान^{२०} बव्भीखणां^{२१} भ्रात त्यारा ॥ १६०

१ ख ब्रदा । ग घ ब्रदं । २ ग वदै । ३ ख. घ वार । ग वार । ४ ग. वैरि ।
 घ वैरि । ५ ख ग घ. कवार । ६ ख ग. घ जणावौ । ७ ग. सोभिवा । घ
 सोभिवा । ८ ख लुघु । ग घ लुघ । ९ ख जूरि । ग घ जूठि । १० ग बैर ।
 ११ ख. ग. घ. अजौ । १२ ख घ. वदि । ग वदि । १३ ख. ग आगीया । १४ ख घ
 होइ । ग होई । १५ ख ग त्रिणा । घ तिणा । १६ ख ग घ येकणी । १७ ग घ.
 हाथि । १८ ख घ. मेलू । ग. मेलू । १९ ग घ हणूमानि । २० ख. ग. घ. मात ।
 २१ ख वव्भीषण । ग वव्भीषण । घ वव्भीषण ।

१५७. दसैकध - रावण । हणू - हनुमान । आणि - ला कर । दीधौ - दिया । थाट -
 सेना । कँवारा - अक्षयकुमारके लिये प्रयोग किया गया है ।

१५८. जपै - कहता है । सोधिबा - तलाश करनेको । काज - लिये ।

१५९. चाहैस - चाहता हो । आगिया - आज्ञा । जेम - जैसे । राळू - फेंक दू, गिरा दू ।
 चूर - नाश, ध्वश । तोनू - तुम्हको ।

१६०. सकौ - सब । साहे - मार कर । साहेत - सहित । साहे - अदर, मे । वैण -
 वचन । ऐहा - ऐसे । ज्यारा - जब । तेडै - बुलाता है । बव्भीखणां - विभीषण,
 रावणका छोटा भाई । त्यारां - तब ।

मतौ गुंभ^१ कीधौ जठै राण माता ।
 भणै वात वव्भीखणा^२ तेम भ्राता ।
 रैणा लक थारै किसू तोटि राजा ।
 कपी सीत छाडौ करौ एह^३ काजा ॥ १६१
 सुणै वात ऐ^४ मातनै भ्रात साथै ।
 हसै तेम^५ लकेस दे ताळ हाथै ।
 भुजा^६ वीस^७ सीस दस मूभ^८ भाई ।
 खिता^९ द्रुग^{१०} लका जळाधार खाई ॥ १६२
 वधू^{११} 'कुभ' जेहौ अनै 'मेघ' खेटौ ।
 खंवां जोडि^{१२} मोनू^{१३} करै कोणि^{१४} खेटौ ।
 प्रचंडेस जीता त्रहू^{१५} लोक पाणै ।
 वियांनै^{१६} डरावै जतू^{१७} त्रुच्छ^{१८} जाणै ॥ १६३
 मुसा दादराहूत^{१९} नागा मराडै ।
 खुरा कीडियांहूत^{२०} हाथी खुदाडै ।
 कपमेसको^{२१} दीठ केकध काए ।
 जिकै तालिया^{२२} दी जता भाजि जाए ॥ १६४

१ ग. घ. गुंभ । २ ग वभीषणं । घ वभ्भीषण । ३ ख ग घ येह । ४ ख ग घ ये ।
 ५ ख ग घ ताम । ६ ग भूजा । ७ ग. वीस । ८ ख ग मुभ । ९ ख ग घ खितं ।
 १० ख द्रुम । ग द्रुग । घ द्रुग । ११ ख वधू । १२ ग घ जोड़ । १३ ख ग
 घ. मोसू । १४ ख ग घ. कोण । १५ ख ग घ त्रिहं । १६ ख ग घ. जियांनू ।
 १७ ख ग घ जतू । १८ ख त्रुच्छ । ग त्रुच्छ । घ तुच्छ । १९ ख. ग. घ दादुराहून ।
 २० ख. ग कीडीयाहूत । २१ ख ग घ कपीसंसको । २२ ख ग तालीया ।

१६१ मतौ - विचार । गुंभ - गुप्त । जठै - जहा । तेम - उसको, वैसे । रैणा - भूमि ।
 तोटि - त्रुटि, कमी, अभाव । कपी - हनुमान । सीत - सीता । छाडौ - छोड़ दो ।
 एह - यह । काजा - कार्य ।
 १६२ तेम - वैसे । लकेस - रावण । मूभ - मेरे । खितां - क्षिति, भूमि । द्रुग - दुर्ग,
 नगर । जळाधार - समुद्र ।
 १६३ कुंभ - कु भवर्ण । जेहौ - जैसा । अनै - और । मेघ - मेघनाद, इन्द्रजीत ।
 मोनू - मुभमे । खेटौ - युद्ध । प्रचंडेस - महान, प्रचंड । पाणै - भुजाओमे ।
 वियांनै - दूमरोको । त्रुच्छ - तुच्छ ।
 १६४ मुसा - त्रुहा । दादराहूत - मेटकसे । नागां - मर्षों । मराडै - मरवाता है । खुरां -
 पैंरो । कीडियाहूत - चीटियोसे । खुदाडै - रौदवाना है । दीठ - देखा । केकध -
 किष्किषा ।

जुड़े रांम लाखंमणा^१ काजि जैता ।
 दुवै रूप मांनिक्ख^२ जै भ्राख^३ दैता ।
 पुणै फेरि वव्भीखणौ^४ जोडि पाणे ।
 जोधा वदरा^५ यै^६ नरा यै^७ न^८ जाणे ॥ १६५
 सही सेस लाखमणां धारि सोधा ।
 जगादीस^९ राघौ सकौ देव जोधा ।
 इकै कीध सो ती न^{१०} तै दीठ आछा ।
 तिसा रामरी लार अत्तेक^{११} ताछा ॥ १६६
 जिका^{१२} आविया^{१३} सीस ती लक जासी ।
 परा फेरि सीता कपी चैन पासी ।
 दसैकध कै कायरा^{१४} ध्रग^{१५} दीधौ ।
 कणेठी उरा पाव^{१६} प्राहार कीधौ ॥ १६७
 हुवौ मूरछा^{१७} मत्रिया^{१८} लीध हामा^{१९} ।
 तके रान लेगा रथा चाढि तामा^{२०} ।
 कहै स्त्रीमुखा राण जोधा करारा ।
 हणू पूछ^{२१} रू घत्त^{२२} बाधौ हजार ॥ १६८

१ ख ग घ लाखमणं । २ ख. ग मानिष्य । घ मानिष्य । ३ ख ग भ्रष । घ. भष्य ।
 ४ ख. वव्भीषणं । ग वव्भीषण । घ वव्भीषण । ५ ख वदरा । ६ ख ग घ श्रै ।
 ७ ख ग घ. यौ । ८ ख. ग घ म । ९ ग जगदीस । १० ख ग घ. जतै ।
 ११ ख ग आनेक । १२ ख ग. घ जिकां । १३ ख ग. आवीया । १४ ख ग घ.
 कायरं । १५ ख ग. ध्रिक । घ ध्रिक । १६ ख. ग घ. पावु । १७ ख ग घ
 मूरिछा । १८ ख ग मंत्रीया । १९ ख ग घ हाम । २० ख ग. घ. तामं ।
 २१ ख ग घ पूछि । २२ ख. ग. घ घ्रित ।

१६५ लाखमणा — लक्षमणा । मानिक्ख — मनुष्य । पुणै — पुनः कहता है । वव्भीखणौ —
 विभीषण । पाणे — हाथ । जोधा — योद्धा । यै — ये । नरा — मनुष्य ।

१६६ लाखमणा — लक्षमणा । जगादीस — जगदीश, ईश्वर । राघौ — श्रीरामचन्द्र । सकौ —
 सब । तिसा — तैसे ।

१६७. सीस — ऊपर । ती — तेरी । ध्रग — धिक्कार । दीधौ — दिया । कणेठी — छोटा,
 छोटा भाई । प्राहार — प्रहार, आघात । कीधौ — किया ।

१६८ स्त्रीमुखा — स्वयं । राण — रावण । करारा — बलवानो । हणू — हनुमान । रूँ — रूई ।

घरे वव^१ पावक्करी^२ ऊक वारौ ।
 महा राकसां वंदरां^३ एम^४ मारी ।
 उहे ह त्रितां^५ राकसां ऊक दीधी ।
 लगी आग^६ ज्यारां^७ कपो^८ भांफ लीगी ॥ १६९
 जाले^९ राणरा कुभरा ग्रेह जाले ।
 भरै डांग जाले घणा दैत भाळै ।
 अनी कोस चाळोस भाळी^{१०} उंचाळी^{११} ।
 जडाऊ^{१२} नगां सोवनी लंक जाली ॥ १७०
 ठ्हे सामंद्रां^{१३} नीरमे पूछ ठारौ^{१४} ।
 निळे कुडि सामंद्र सेना मभारौ^{१५} ।
 वदै^{१६} अंगदेसं हुवा^{१७} जोय वंका^{१८} ।
 लंगा भोकरै भोक प्राजाळ लंका ॥ १७१
 अहीखंभ^{१९} डांपं^{२०} भरंता अछाया ।
 अडे गैणसू दंडके कथ आया ।
 प्रणांमं करै अंगदं रांस पाए ।
 अनेडां सको^{२१} वंदिया^{२२} पाव आए ॥ १७२

१ व. वंव । २ ल. पाक्क । ३ ल. वदरां । ग. घ वदरौ । ४ ल. ग घ एमि ।
 ५ ल. ग. घ. त्रितां । ६ ग. घ. आगि । ७ ग. जारा । न ल. ग. घ. ह्यूं । ८ ल.
 जळे । ९ ल. चाळी । १० ल. ग. घ. उडाळी । ११ ल. ग. घ. उडाळ । १२ ल.
 ग. घ. सानद्र । १४ ल. ग. घ. ठारो । १५ ल. ग. घ. मभारो । १६ ग. वदै । घ
 वदै । १७ ल. ग. घ. हुवा । १८ ग. घ. वंका । १९ ल. अणीखंभ । २० ल. ग. घ.
 डांपां । २१ ल. ग. घ. अनेरास । २२ ल. वंदीया । ग. वदीया ।

१६९ पावक्करी - अग्निकी. आगनी । ऊक - वारा, ज्वाला । ज्यारां - जत्र । भांफ - कुदान, छत्राग ।

१७०. जाले - जन्म कर । ग्रेह - घर । डांपं - छत्राग । भाळै - देवते हैं । भाळी - ज्वाला । सोवनी - स्वर्णकी, सोनेकी । चाळी - जला दी ।

१७१. ठ्हे - ठहर कर । सामंद्र - समुद्र । ठारौ - ठण्डा करो । सामंद्रा - समुद्रो । मभारौ - मध्य, मं । वदै - बहता है । अंगदेसं - अंगद । लंगा - हनुमान । भोकरै भोक - धन्य-धन्य । प्राजाळ - जला कर, जलाने वाला ।

१७२. अहीखंभ (अडिग स्तम्भ) - ज्वरदस्त । डांपं - कदम, डग, छत्राग । अछाया - जोशीला । गैणसू - गणतंत्रे, आकाशदे । अनेडां - अन्या, दूसरों । सको - सबको ।

दुवै पाव वदै^१ हणू मैण^२ दीधी ।
 कपीसा हणू पाण तारीफ कीधी ।
 भूले राघवां^३ सेस पिन्नाक भल्ले ।
 उभै तेज सामद्र जाणै उभल्ले ॥ १७३
 अरोहै हणू राम मैइ अनुज्ज ।
 धरा वोम धुज्जै^४ सिरा लक धुज्ज ।
 अडीखंभ जोधा पदम्म^५ अठारा^६ ।
 पिले^७ थाट नीसांण वाजै अठारा^८ ॥ १७४
 भणके चलौ^९ कोमंडा तूर भेरी ।
 फवै सख सहनाय^{१०} आनेक फेरी ।
 विखम्मी^{११} सुरा सिद्धवा^{१२} डाक वागी^{१३} ।
 ब्रह्मड^{१४} इक्कीसमै हाक वागी^{१५} ॥ १७५
 इता हालिया^{१६} थाट ते भार आगा ।
 लटै सेसरा सीस कामठि लागा ।

१ ग वदै । २ ख. मैण । ३ ख ग घ राघव । ४ ख ग. घ धूजै । ५ ख ग घ.
 पदंम । ६ ख ग. घ अठार । ७ ख मिले । ग घ पिले । ८ ख. ग घ अपारं ।
 ९ ख ग घ चिला । १० ख ग घ सैनाय । ११ ख. विषमी । ग विषमी । घ. विषमी ।
 १२ ख ग घ सीधवा । १३ ग वागी । १४ ख. ब्रह्मड । ग घ ब्रह्मड । १५ ग.
 वागी । १६ ख ग. हालीया ।

१७३ सेस - लक्ष्मण । पिन्नाक - धनुष । भल्ले - धारण किया । उभल्ले - उमड गये ।
 १७४ वोम - व्योम, आकाश । अडीखंभ - जवरदस्त, शक्तिशाली । पिले - चले । थाट -
 सेना ।

१७५. भणके - ध्वनि विशेष हुई । चलौ - प्रत्यंचा । कोमंडा - धनुष । तूर - वाद्य विशेष ।
 भेरी - वाद्य विशेष । सहनाय - वाद्य विशेष । आनेक - नगाडा । विखम्मी -
 विषम, भयकर । डाक - ध्वनि विशेष । वागी - वजी, हुई । ब्रह्मड - ब्रह्माण्ड ।
 हाक - आवाज, ध्वनि ।

१७६ कामठि - कच्छपावतार ।

छछोहा कपी घूमरा एम छूटा ।
 फवै जाण^१ कोटेक सामद्र फूटा ॥ १७६
 महारुद्र डैरू वजै^२ जोगमाया ।
 इसा थाट ले तीर सांमद्र आया ।
 सरां - राज माथै ररा अक सारै ।
 तरां - पत्र जेही गिरां जुत्थ^३ तारै ॥ १७७
 उवै वार^४ वब्भीखणौ^५ चालि आयौ ।
 लखे ते हणूमान पावा लगायौ ।
 प्रणामेस^६ वैभाखणां^७ भूप येनू ।
 जपै आव लकेस श्रीराम^८ जेनू ॥ १७८
 वणै^९ सूर दाता उभै ब्रह्म^{१०} वका^{११} ।
 लियांहूत^{१२} पैली^{१३} दिवी दान लका ।
 दुवै छेह सांमद्र वाधौ वधारं ।
 उतारेस पारं पदमं अठारं ॥ १७९

१ ख ग जाणि । २ ग घ वजे । ३ ख ग घ जूथ । ४ ग घ. वार । ५ ख
 वब्भीषण । ग वभीषण । घ वब्भीखण । ६ ख प्रमाणेस । ७ ख वभीष्यण । ग
 वभीष्यण । घ वब्भीषणं । ८ ख ग घ. श्रीराम । ९ ग वणै । १० ख ब्रह्म । ग
 ब्रह्म । ११ ग घ. वंका । १२ ख ग लीयांहूत । १३ ख ग घ. पैली ।

१७६ छछोहा - तेज नोत्साह । घूमरा - समूह, यूथ । एम - इस प्रकार । जाण - मानो ।
 कोटेक - करोडो । सांमद्र - समुद्र ।

१७७ डैरू - रुद्रका डमरू नामक वाद्य विशेष । सरां-राज - समुद्र, महासागर । माथै -
 ऊपर । ररा अक - राम नाम । तरां-पत्र - वृक्षोंके पत्ते । जेही - जैसे । गिरा -
 पर्वतो । जुत्थ - यूथ, समूह ।

१७८ उवै - उस । वार - समय । वब्भीखणौ - विभीषण । लखे - देख कर । ते -
 उसे । हणू मान - हनुमान । जपै - कहते हैं । लकेस - लकापति रावण । जेनू -
 जिसको ।

१७९ उभै - दोनो । ब्रह्म - विरुद्ध । पैली - पहिला, प्रथम । दिवी - देवी । सामद्र -
 समुद्र । वाधौ - पूरा ।

अथ नीसांगी

पार^१ उतारे^२ पूछियौ^३, कपिराज^४ हकारे ।
 कठै ब्रह्म^५ राकस^६ कही, इम राम उचारे ।
 तवै अरज सुग्रीव ताम, वर^७ बुद्धि विचारे^८ ।
 भारी ह्वै सो भूपती, भर नम्मै^९ भारे ॥ १८०
 एकवार^{१०} मेलहौ अगद^{११}, महि लक मभारे ।
 दई हुकम अगद^{१२} दियौ^{१३}, वप^{१४} ताम वधारे^{१५} ।
 अडियौ^{१६} जाय मसतक्क^{१७} उरसि^{१८}, धूपर दिठ^{१९} धारे ।
 प्रचड नमाए^{२०} लक प्रौळ^{२१}, आए उपरारे ॥ १८१
 अट्टके^{२२} नह सकिया^{२३} अंगद^{२४}, दहकंध दुवारै^{२५} ।
 दइता^{२६} इम^{२७} दीसै अगद, अतक उणहारे^{२८} ।
 आगम सपेखे अगद, माया विसतारे^{२९} ।
 पीसोधरि^{३०} अरि^{३१} फेरि पूठि, सिल सभा सभारे ॥ १८२

१ ख. ग घ पारि । २ ग उत्तारि । ३ ख ग पूछीयौ । ४ ख ग घ कपिराव ।
 ५ ग ब्रह्म । ६ घ राकस्स । ७ ग. वर । ८ ग विचारे । ९ ग नम्मै । १० ग
 ऐकवार । ११ ख ग. अगदि । घ अगदी । १२ ख ग घ अगिद । १३ ख ग घ
 दीयी । १४ ग वप । १५ ख. वधारे । १६ ग. घ अडियौ । १७ ग. मसतक । १८ ग
 घ वरस । १९ ग. दीठि । घ दिठ्ठी । २० ख ग नमाये । घ नमाओ । २१ ख ग घ
 पौलि । २२ ख ग घ अट्टके । २३ ग. कीया । ख क्रिया । २४ ख. ग घ. अगिद ।
 २५ ख ग घ दवारे । २६ ख. दइयता । ग दयता । न दयता । २७ ग घ यम ।
 २८ ख ग घ वणहारे । २९ ग विसतारे । ३० ख. ग घ पिडसोधरि । ३१ ख. ग
 घ. अर ।

१८० हकारे - आवाज करते हैं । कठ - कहीं । ब्रह्म राकसं - ब्रह्म राक्षस । इम - इम
 प्रकार । तवै - कहता है । वर - श्रेष्ठ ।

१८१ मभारे - मध्यमे । दई - ईश्वर, श्रीराम । वप - शरीर । मसतक्क - मस्तक ।
 उरसि - आसमानमे ।

१८२ दहकंध - रावण । दुवारं - द्वार पर, द्वारमे । अतक - यमराज । उणहारे - सूरत,
 शकल । आगम - आना । सपेखे - देख कर । पीसोधरि - राक्षस, असुर ।

पिंड पिंड दस दस सिर परठि, सिर^१ सिर छत्रधारे ।
 जगमग हीर जडाव, जोति आदित आभारे ।
 देखि अगद वही चोपदार, अति माम वचारे^२ ।
 चद मद बुद्धि धीर^३ चव^४, असतूति^५ अपारे^६ ॥ १८३
 अज गुर सुत^७ भाखौ अलप, वायक^८ उच्चारे^९ ।
 भौळे सूर^{१०} न भूलियौ^{११}, छकयंद्र^{१२} छभारे ।
 एह^{१३} छभा असुराण इद, मुनियद्र^{१४} प्रहारे ।
 ईखे मन हसियौ^{१५} अगद^{१६}, धर^{१७} छळ^{१८} धृतारे^{१९} ॥ १८४
 पै हिण^{२०} सिल फेरै प्रचड, सनमुक्ख^{२१} सभारे ।
 रहिया^{२२} यक^{२३} अग साच राण, मिटिया^{२४} मायारे ।
 देखि^{२५} छभा रुख बालिसुत्त, कथ कहै करारे ।
 हू जाणू त्रए राण दह, कुण सो अधिकारे ॥ १८५
 इम^{२६} वायक^{२७} सुणि अगदह^{२८}, रामण^{२९} उच्चारे ।
 तू^{३०} जाणै कपि^{३१} त्रण^{३२} तिकै, कहि राण किसारे ।

१ घ सिरि । २ ख ग घ. उचारे । ३ ख. बुद्धिधीर । ग घ दुद्धिधीर । ४ ख. ग घ. चवि । ५ ग घ असतुति । ६ ग आपारे । ७ ख ग घ लुत्य । ८ ख. घ वायक्क । ग वायक्क । ९ ग घ उचारे । १० ख ग घ सुरा । ११ ख ग. भूलियै । घ भूलियै । १२ ख घ छकइद्र । ग छकइद्र । १३ ख ग घ येह । १४ ख मुनियंद्र । ग घ सुतयंद्र । १५ ख ग हसीयौ । १६ ग घ अगिद । १७ ख. धरि । १८ ख ग घ झळ । १९ ख ग धृतारे । २० ख ग. घ पै हिणि । २१ ख ग सनमुष्य । घ सनमुष्य । २२ ख ग रहीया । २३ ख ग घ इक । २४ घ मिटीया । २५ ग वेषि । घ वेषि । २६ ख. ग घ यम । २७ ग वायक । २८ ख अगद । ग. घ अगिदह । २९ ख ग घ रामणि । ३० ख भूजाणै । ३१ ख ग घ कपी । ३२ ख ग. घ त्रिएह ।

१८३ आदित - सूर्य । आभारे - चमक, दमक । चोपदार - चोवदार । माम - अपनी स्थिति (?) । चव - कहते हैं, कह कर ।

१८४ छकयद्र - इन्द्रका वैभव । छभा - सभा । असुराण - राक्षस राजा, रावण ।

१८५ पै - पैर, चरण । हिण - प्रहार कर । राण - रावण । छभा - सभा । करारे - जवरदन्त ।

१८६ इम - इस प्रकार । वायक - वाक्या । त्रण - तीन ।

इक^१ बाधौ सहसा - अजणि, जळ क्रीड मभारे ।
 वामणि^२ गदा विहडियौ^३, दूजौ बळि द्वारे ॥ १८६
 सो भखतौ दासी प्रसाद, करि करि नृत^४ कारे ।
 मुणता तीजौ लाज मो, आवै अधिकारे^५ ।
 पित मो बाधौ पालणै, रामत^६ रिभवारे ।
 इम रामण सुणि अगदह, खळ^७ वायक^८ खारे^९ ॥ १८७
 वदियौ^{१०} स्वांन वनंचरा^{११}, नहिं^{१२} लाज निहारे ।
 मुख^{१३} भख ग्रासज मेलिहजे^{१४}, मस्तक^{१५} पर मारे ।
 भूलै मार सताव भेव^{१६}, भख चाहै . भारे ।
 औ औखाणौ^{१७} अगद आदि, सुणता प्रसतारे ॥ १८८
 सो तौ दीठौ आज साच, निज चखा निहारे ।
 वालि^{१८} सरीखौ पित वहे^{१९}, जै राम जुहारे ।
 अम्हं विसटाळै^{२०} आवियौ^{२१}, लगि ज्याहिज^{२२} लारे ।
 कटक^{२३} सुणि अगद कहै, पित तूभ प्रकारे ॥ १८९

१ ख ग. घ यक । २ ख घ. वामणि । ३ ख विडडीयो । ग विहडीयो । ४ ख. ग घ. नृतकारे । ५ ख. ग घ इधकारे । ६ ख ग घ रामति । ७ ख घल । ८ ख. वाइक । ग. घ. वाइक । ९ ख पारे । १० ख वदीयो । ग वदीयो । ११ ख. घ. वनेचरा । ग वनेचरा । १२ ख ग घ नह । १३ ग घ मुषि । १४ ख ग घ मेलहजे । १५ ख ग घ. मसतक । १६ ख भेष । १७ ख. ग घ अखाणौ । १८ ग घ वालि । १९ ग वहे । २० ग विसटाळै । २१ ख ग आवीयो । २२ ख ज्याहीज । ग जाहीज । २३ ग घ. कटिक ।

१८६. सहसा अजणि - सहस्वार्जुन । वामणि - वामनावतार । विहडियौ - मारा ।

१८७ नृत - नृत्य, नाच । मुणता - कहने पर, कहते हुए । रामत - खेल, क्रीडा । खारे - अप्रिय, कटु ।

१८८ वादियो - कहा । स्वांन - कुत्ता । वनचरा - वनमे चरने वाला । भख - भक्ष्य पदार्थ । सताव - शीघ्र । औ - यह । औखाणौ - वाग्धारा, मुहावरा ।

१८९ चखा - नेत्रो । निहारे - देख कर । सरीखौ - समान, जैसा । पित - पिता । जुहारे - अभिवादन करता है । अम्ह - हमारा, मेरा । विसटाळै - मध्यस्थता करनेको । कटक - राक्षस, रावण ।

लोक लाजि^१ तजि हल्लतौ, प्रभु जेणि प्रहारे ।
 उणसू तो माहै अधिक, करसी करतारे ।
 सहत भडां तो साभसी, पुत्रे परिवारे^२ ।
 इम सुणि रामण^३ खीजियौ^४, उडि नयण अगारे ॥ १६०
 कपि पकडौ पकडौ कहै, राकस हलकारै ।
 जूटा हुकम प्रमाण जोध, कपिहू अधिकारै ।
 काळ हुकमि जिम^५ काळरा, किकर कहारै ।
 होय लटां - चट्टा हिचै, विकटा^६ वाकारै^७ ॥ १६१
 रोस उपट्टा रौभटा, वही^८ थटा वथारे ।
 कोडि असुर भपटा करै, अगद^९ एकारे ।
 घटियौ^{१०} वळ देता घणा, हटियौ^{११} नह हारं ।
 रांम हुकमि भड रामरै, करि भाटि^{१२} करारे ॥ १६२
 उभै कोडि राकस अंगद^{१३}, पळ माहि प्रहारे ।
 कर^{१४} ग्रहि रामणरौ मुकट, उडियौ^{१५} अवरारे ।
 करि प्रसतानौ ले चले, दस सिरि जमद्वारे ।
 कूदि चढे दहकधरै^{१६}, चित हित चौवारे ॥ १६३

१ ख. ग घ. लाज । २ ख परवारे । ३ ख ग घ रावण । ४ ग खीजीयो ।
 ५ ख जिमि । ६ ग विकटां । ७ ख वाकारे । ८ ख वही । ९ ग अगिद ।
 १० ख. ग घटियो । ११ ख ग हटियो । १२ ख. भाट । ग. भटि । १३ ख ग
 अगिद । १४ ख. ग करि । १५ ख ग उडीयो । १६ ख दसकध ।

१६० हल्लतौ - चलता । सहत - सहित । साभसी - मारेगा । खीजियो - कोप किया ।
 १६१. हलकारै - ललकारते है । जूटा - मिले, जुडे । लटा-चट्टां - गुत्थमगुत्था । हिचै -
 युद्ध किया, भिडे । वाकारै - ललकारा, जोगपूर्ण आवाज की ।
 १६२ उपट्टां - वडा, उत्पन्न हुआ । रौभटा - लडाई । वही - बहुत । थटा - दलो, सेनाओ ।
 वथारे - भिडे, युद्ध किया । कोडि - करोडो, अपार । भपटा - टक्करो । एकारे -
 एक ही । घटियो - कम हुआ । हटियो - हटा । हारे - हार कर, पराजित हो कर
 भाटि - भपट, टक्कर । करारे - जवरदस्त, भयकर ।

१६३ पळ - क्षण । माहि - मे । प्रहारे - सहार किये, मार डाले । अवरारे - आकाशमे ।

उप^१ कनक^२ हीरां जडाव, जग जोति जुहारे^३ ।
 आच पछट करि महल ओप^४, भाजे बळ भारे ।
 आयौ चाहतां अगद, मह सेन मभारे ।
 प्रभु पद^५ वादे^६ जोड^७ पांण, अग्र^८ मुकट अधारे ॥ १६४
 स्त्रीपति बभ्भीखणह^९ सिर^{१०}, सो मुकट सधारे ।
 समाचार पूछे सकळ, प्रभु जेण^{११} प्रकारे ।
 कर जोडे अगद^{१२} कहै, इण भात^{१३} उदारे ।
 राम प्रधानौ राजिरौ, रामण^{१४} नह^{१५} धारे ।
 समहर माडौ^{१६} सूरिमा, इम^{१७} वयण^{१८} उचारे ॥ १६५

गीत त्रिकुटबंध^{१९}

इम वयण सुणि कपिरावरा^{२०}, रघुवीर हाकलि वदरा^{२१} ।
 दौडिया^{२२} लका लियण^{२३} दारुण, वधे^{२४} कपि विकराळ^{२५} ॥
 हुय^{२६} बौतकारा^{२७} हौफरा, धर अवर थरहर धरधरा ।

१ ख ग वोप । घ ओप । २ ख ग घ कनक । ३ ग जूहारे । घ जुहारे ।
 ४ ख ग. वोप । ५ ख ग घ पग । ६ ख घ वदे । ग. वदे । ७ ख ग घ जोडि ।
 ८ ख ग घ अग्रि । ९ ख बभ्भीखणहि । ग घ. बभ्भीखणहि । १० ख ग घ. सीस ।
 ११ ग घ जेणि । १२ ग अगिद । १३ ग घ भाति । १४ ख ग घ रामणि ।
 १५ ख नहि । १६ ख. ग घ मडौ । १७ ख ग घ यम । १८ ग. वयण ।
 १९ ख ग घ त्रिकुटबंध । २० ख रावरी । २१ ग घ वदरा । २२ ख. ग
 दौडिया । २३ ख ग लीयण । २४ ग वधे । २५ विकराळ । २६ ख. हौय ।
 ग घ होय । २७ ख वूतकास ।

१६४ उप - शोभा, काति । कनक - सुवर्ण, सोना । आच - हाथ । पछट - प्रहार कर,
 पटक कर । वादे - नमस्कार कर । जोड पाण - करबद्ध होकर ।

१६५ स्त्रीपति - लक्ष्मीपति, श्रीराम । बभ्भीखणह - विभीषण । सधारे - वारण करवाए ।
 प्रधानौ - प्रधानता । राजिरौ - श्रीमानका, आपका । समहर - युद्ध, समर ।
 समहर माडौ - युद्ध रचो, युद्ध करो । सूरिमा - वीरो । इम - इस प्रकार । वयण -
 वचन ।

१६६(१) कपिरावरा - सुग्रीवके । हाकलि - जोशपूर्ण वचन कहे । दारुण - जवरदस्त,
 भयकर । हौफरा - तेज आवाज, जोशपूर्ण आवाज । धर - पृथ्वी । अवर - आकाश ।
 थरहर - कपायमान ।

वरतूर^१ त्रं व सर^२ अडर^३ वीफर^४ ।
 भेर सँख मुर गहर धर भर ।
 अमर वर रथ सोक अपछर ।
 वीर हर कर डवर रिखवर ।
 नहर धर पर घौख नाहर ।
 धुवर^५ रज भर भँखर तप धर ।
 सर जहर उडि धोम धर सर ।
 रीठ तर पडि वजर^६ गिरउर^७ ।

चौ तरफ घमचाळ ॥ १

तदि मत्रि^८ सभरि महिपती^९, रणि दीठ रामण^{१०} रघुपती ।
 कागुरे कागुर^{११} दीठ वह^{१२} कपि, लूविया^{१३} धक^{१४} लागि ॥
 मद-गध^{१५} जिम सँक नहि^{१६} मनै, अति हाकले असुराणनै ।

दौडिया^{१७} खळ दळ सवळ दमगळ । .

छिव^{१८} कमळ नभ सकळ वळछळ ।

हुवि^{१९} जुगळ धुवि लोह भळहळ ।

विमळ^{२०} जळसर फूटि वळवळ ।

१ ग. वरतूर । २ ख त्रवसुर । ग घ. त्रवसुर । ३ ख अवरडर । घ. अरड । ४ ग. वीफर । ५ ख धूँवर । ६ ग वजर । ७ ख. ग घ गिरवर । ८ ख ग मत्रीय । घ मत्रियाँ । ९ ख ग घ. महपती । १० ख ग घ. रामणि । ११ ख. घ कागुरे । ग कांगुरि । १२ ख वहाँ । ग. घ वहाँ । १३ ग लूवीया । १४ ख ग. घ धख । १५ ख ग घ मद गयद । १६ ख ग घ. नह । १७ ख ग दौडीया । १८ ख छिवि । ग घ छिवि । १९ ख हुव । ग घ हुव । २० ग विमळ ।

१६६(१) त्रव - नगाडा । वीफर - भयावह । वीर - युद्धप्रिय देव । हर - महादेव । डवर - चटक-मटक, हर्ष । रिखवर - नारद । घौख - घोष । रीठ - प्रहार । गिर-उर - पर्वत । घमचाळ - युद्ध ।

१६६(२) संभरि - तैयार होकर । रणि - युद्धमे । दीठ - देखा । लू विया - लूमे, लडूमे । धक - क्रोध । मद-गध - मदोन्मत्त हाथी । सक - भय, डर । असुराणनै - रावणको । दमगळ - युद्ध । छिव - स्पर्श । कमळ - शिर, मस्तक । नभ - आकाश । हुवि - मिड कर । जुगळ - युगल । धुवि - भयकर । लोह - गस्त्र । भळहळ - चमक, दमक । वळवळ - चारो ओर ।

बहळ^१ ससियळ^२ धमक सावळ ।

वहै^३ कळकळ प्रवळ वीजळ^४ ।

चकळ इळतळ वितळ^५ चळचळ ।

मँगळ भळ चँड धमळ मगळ ।

विढै सूर व्रजागि ॥ २

बौह पड़ै घड घड वेहड़ा^६, जुधि लड़ै भड जम जेहडा ।

जुध-दुद^७ राघव अनै इद्रजित, भयाणक^८ पडि भार ॥

उण वार^९ रत नद ऊभळै^{१०}, हुय^{११} हाक धर गिर हलहलै ।

भड अनड उड^{१२} रव बाणि बहिभड^{१३} ।

उरड अपहड दुजड औभड ।

कर डमर गड वरड^{१४} कर घड ।

लुडत तडफड जुटत लडथड ।

बढि^{१५} कँधड मुख करत बडवड^{१६} ।

फरड^{१७} फिफरड कळिज^{१८} फडफड ।

१ ख वहल । २ ख. ग. ससियळ । ३ ग. बहै । ४ ग वीजळ । ५ ग वितळ ।

६ ख घ वेहडा । ७ ख ग दूद । ८ ख ग. घ. भयाणक । ९ ग वार । १० ख

उभले । ११ ख. ग घ होय । १२ ख. ग वुरडव । घ वुरवड । १२ ख ग बाण ।

घ बाण । १३ ख घ बहिभड । १४ ख. वरड । १५ ख कटि । १६ ख वडवड ।

नोट- ख. प्रतिमे ये पक्तिघा नही है—

फरड फिफरड कळिज फडफड

फील घड पड ग्रभड भडफड

१७ घ फडड । १८ घ. कळिज ।

१९६(२) वहळ - बहुत । ससियळ - चंद्रमा । सावळ - भालाविशेष । कळकळ - भयकर, भयावह । वीजळ - तलवार । चकळ - भ्रमायमान । इळतळ - भूमडल । वितळ - सप्तलोकोंमे एक लोक । चळचळ - विचलित । मँगळ - अग्नि, आग । चँड - भयकर, भयावह । विढै - वीर गति प्राप्त होते हैं ।

१९६(३) बौह - बहुत । घड - शरीर । वेहडा - एकके ऊपर एक इस क्रमसे, सर पर रख कर पानी भर लाने के वर्तन । जम - यमराज । जेहडा - जैसा । जुध-दुद - दूध युद्ध, दो का युद्ध । - राघव - श्रीरामचन्द्र । अनै - और । उण - उस । वार - समय । रत - रक्त, खून । नद - बड़ी नदी । ऊभळै - उमडते हैं । हाक - वीर-ध्वनि । हलहलै - कपायमान होते हैं । अनड - योद्धा, वीर, पर्वत, पहाड । अपहड - जबरदस्त, वीर । दुजड - तलवार । औभड - प्रहार । लुडत - युद्ध करते हैं । जुटत - भिडते है । लडथड - लडथडाते हैं । कँधड - कथा । फिफरड - फेफडा । कळिज - कलेजा ।

फील घड पड ग्रभुड भुडफड ।

हुय^१ दडड रत मुनद^२ हडहड ।

पडे दळ अणपार ॥ ३

सत्र हणै वळ^३ समराथरा, रिण लडै भड रघनाथरा ।

तदि लखण^४ अगद^५ सुग्री हणवत^६, नील नळ नर नाह ॥

जामवँत क्रुध भळ जळहळी^७, सुक्खेण^८ मयदह सतवळी ।

कपि कटक हूचक कटक दैतक ।

उरक वेधक^९ सरक अँतक ।

अँतक तक भड भचक इक^{१०} इक ।

पडि जरक मुद गरक पासक^{११} ।

धमक सेलक वँवक^{१२} धकधक ।

तदि उवकि^{१३} पत्र चँडिक त्रपतक ।

चहक पावक वभक चहु चक ।

तद^{१४} अरक रथ थरक कौतिक^{१५} ।

उदधि रण अणथाह ॥ ४

१ ख ग घ होय । २ ख ग. घ मुनिद । ३ ख. वळ । ४ ख ग लखिण ।
५ ख ग अगिद । ६ ख ग हणमत । ७ ख जळहरी । ८ ख ग सुक्खेण । घ
सुक्खेण । ९ ग वेधक । १० ख. पक पक । ग यक यक । घ दक यक । ११ घ.
वासक । १२ ख ववक । १३ ख ग. उवक । घ उवक । १४ ग. घ तदि ।
१५ ख ग घ. कौतिळ ।

१६६(३) फील - हाथी । घड - सेना । ग्रभुड - गिद्ध । भुडफड - पक्षियोंका पखोंको
फडफडाना क्रिया । दडड - द्रव पदार्थका तेज प्रवाह या इस प्रकारके प्रवाहकी
ध्वनि । रत - रक्त, खून । मुनद - नारद ऋषि । हडहड - तेज हँसनेकी ध्वनि ।
अणपार - अपार, अनीम ।

१६६(४) सत्र - शत्रु । हणै - सहार करते हैं । समराथरा - समर्थके । तदि - तव ।
लखण - लक्ष्मण । सुग्री - सुग्रीव । हणवत - हनुमान । सुक्खेण - सुपेण नामक
वानर । कटक - सेना । हूचक - युद्ध कर, युद्ध करते है । दैतक - दैत्य, राक्षस ।
उरक - हृदय । वेधक - वेधते है । अँतक - इस प्रकार । अँतक - यमराज ।
जरक - टक्कर । धमक - प्रहार । सेलक - भाला । वँवक - प्रहार, घाव ।
धक-धक - द्रव पदार्थके तेज प्रवाहकी क्रिया या ध्वनि । तदि - तव । उवकि -
उमड कर । पत्र - देवीका खप्पर । चँडिक - चडिका । त्रपतक - तृप्त । वभक -
भयंकर । चहु चक - चारो ओर । तद - तव । अरक - सूर्य । थरक - स्थिर ।
उदधि - समुद्र, मागर ।

बौह^१ घरट जुधि^२ अह वाणरौ^३, रचि गयौ अद्र सट राणरौ ।
कूभिला पूजण लगौ कूवर, जठै कुभकरण^४ जागि ॥
वधि^५ रांण सुवप^६ वधारियौ^७, असमाण छिबतौ^८ आवियौ^९ ।

कर सूळ विकटह^{१०} सुभट कौचट^{११} ।

रांम थट भट भपट रौभट ।

पछट वज्रघट कुघट ऊपट ।

रंगट भट फुट भ्रकुट मरकट ।

कुळट^{१२} नट वट उछट कटकट ।

गरट गजधर अघट गाहट ।

ग्रध^{१३} भपट बहु^{१४} मास गटगट ।

नहट हट^{१५} स्वर कुंभट नीछट ।

मिळे हँस सुगि^{१६} माग^{१७} ॥ ५

सर पहर अठ जुध सारियौ^{१८}, मेघनाद लछमण^{१९} मारियौ^{२०} ।

सभि अंसख दळ बळ^{२१} सबळ^{२२} दससिर, आवियौ^{२३} अरवनाड ॥

स्त्रीराम^{२४} खळ^{२५} हुय^{२६} सैफळा, हुव^{२७} बाण^{२८} बहजळ^{२९} भळहळा^{३०} ।

१ ख बौहौ । ग घ. बौहौ । २ ख ग घ जुध । ३ ख वाणरौ । ४ ख क्रन ।
५ ग घ वधि । ६ सुवप । ७ ख वधावीयौ । ग वधावीयौ । ८ ख छिबतौ ।
९ ख ग आवीयौ । १० ग विकटह । ११ ख कौचकट । १२ घ कुजट । १३ घ
ग्रिध । १४ ख वहौ । ग घ वहौ । १५ ख ग घ. हस्य । १६ ख श्रुगि । ग. श्रुग ।
घ. श्रुगि । १७ ख ग घ मागि । १८ ख ग सारीयौ । १९ ख ग घ लछिमणि ।
२० ख. ग मारीयौ । २१ ख बल । २२ ख सबळ । २३ ख ग. आवीयौ । २४ ख
ग घ श्रीराम । २५ ख लख । २६ ख ग घ होइ । २७ ख घ. हुव । २८ ख
वाण । २९ ख वहौजळ । ग घ वहौजळ । ३० ख ग घ जळहळा ।

१६६(५) कूभिला—एक देवीका नाम जिसका कुभकर्णके इष्ट था । रांण—रावण ।
सुवप—सुन्दर शरीर । वधारियौ—वढाया । छिबतौ—स्पर्श करता हुआ । रौंभट—
लडाई । रंगट—राघड, वीर । भ्रकुट—मस्तक । मरकट—वानर । कुळट नट वट—
नटके समान कुलाच । गरट—समूह । गाहट—सहार कर । ग्रध—गिद्ध । गटगट—
निगलना क्रिया । हँस—प्राण । सुगि—स्वर्ग । माग—मार्ग ।

१६६(६) सभि—सज कर, तैयार कर । अरवनाड—वीर, योद्धा । सैफळा—अस्त्रशस्त्रो
सहित । हुव—भिडे । भळहळा—दमक, चमकयुक्त ।

मँड घमँड जुध थँड विहँड^१ रँडमुँड ।
 भुँड भ्रकुँड चँड त्रिपत ग्रध भुँड ।
 पिड विहँड वह^२ भरत रत पँड ।
 सिहँड ध्वज मुख वयँड^३ धजसँड^४ ।
 प्रचँड रँडमुँड^५ माल परचँड ।
 खँड विहँड^६ पँड^७ वयँड^८ खँडखँड ।
 उचँड नवखँड तरँड ऊडँड ।
 चँड कुमँड प्रभु वहे^९ सर चँड ।

पडै घाट पहाड ॥ ६

इक^{१०} उभय दस अयताणिय^{११}, पमगेस गज पिसणाणयं ।
 धर^{१२} पडै ऊठै^{१३} कवध^{१४} इक तदि, कोटि इसा^{१५} इक राळ ॥
 ऊठत कमध उदारय, तदि वजै^{१६} इक टकारय ।

रण वाण^{१७} घण सभि असण वरसण^{१८} ।

करि प्रसण घण अतण कणकण ।

कुळ हतण इद्रजितण कुभक्रण ।

मँडण पण करि हणे रामण ।

१ ग विहँड । २ ख वहाँ । ग. घ वहाँ । ३ ग घ वयड । ४ ख ग घ धुजसँड ।
 ५ ख मुडरुड । ग मँडरुड । घ डडरुड । ६ ख घ वितड । ग वितड । ७ ख ग
 घ पिड । ८ ग वयड । ९ ग वहे । १० ख. ग घ यक । ११ ख ग घ अयताणय ।
 १२ ख घ घड । १३ ख ग उठै । १४ ख कवध । १५ ख ग घ. साइ । १६ ग
 वजै । १७ ख वाण । १८ ग वरसण ।

१६६(६) थँड - समूह । विहँड - सहार कर, नाश कर । भ्रकुँड - मस्तक, शिर । चँड -
 चडिका । त्रिपत - तृप्त । ग्रध - गिद्ध । वह - बहुत । रत - रक्त, खून । रतपँड -
 युद्धमे वीर गति प्राप्त वीर द्वारा अपने ही रक्तसे मिट्टीके बाँधे हुए गोल पिड या
 लोदा जो वह अपने पितरोको युद्धस्थलमे अर्पित करता है । सिंहँड ध्वज - स्वामी
 कार्तिकेय । मुख वयँड - हस्तीका सूड या गजानन । धजमँड - महादेव । वयँड -
 हाथी । तरँड - वृक्ष । कुमँड - धनुष ।

१६६(७) पमगेस - घोडा । पिसणाणयं - शत्रु । टकारय - प्रत्यचाकी ध्वनि । असण -
 तीर, वज्र । प्रसण - शत्रु । अतण - नाश ।

वरण^१ रँभ क्रत सुमण वरखण^२ ।
 मिटण दुख ग्रह बँधण^३ मोखण ।
 सरण असरण ब्रदण^४ साभण ।
 टँकर वण किय^५ वजण^६ दिन तिण^७ ।

वार^८ तेर विशाल^९ ॥ ७

जळइम्रत^{१०} थाट जिवाविया^{११}, लज^{१२} सील सुध^{१३} स्त्रिय^{१४} लाविया^{१५} ।
 ब्रवि^{१६} वभीखण^{१७} लक राज रघुवर^{१८}, आविया^{१९} अवधेस ॥
 कुल मिळे उच्छव^{२०} बोह^{२१} किया,^{२२} अति धमळ^{२३} मँगळअजोधिया^{२४} ।

वजि अदँग^{२५} चँग रँग उपँग वारँग^{२६} ।
 अनँग छवि^{२७} चँग उमँग अँगअँग ।
 नूतँग^{२८} रित^{२९} अँग करँग नादँग ।
 रस तरँग वह^{३०} तरँग रँगरँग ।
 रजँग^{३१} नूप^{३२} अँग सुरँग चतुरँग^{३३} ।
 सीत सँग करि^{३४} खतँग सारँग ।

१ ग वरण । २ ग वरखण । ३ ख वधण । ४ ख ब्रदण । ५ ख ग घ कीय ।
 ६ ग वजण । ७ ग तण । ८ ग. वार । ९ ग विसाल । १० ख ग घ अमृत ।
 ११ ख ग जिवावीया । १२ ख जल । १३ ख श्रुद्ध । ग सुद्ध । घ शुद्ध । १४ ख
 ग घ. श्रीये । १५ ख ग लावीया । घ ल्याविया । १६ ग. ब्रवि । घ ब्रवि । १७ ग
 वभीषण । १८ ग रघुवर । १९ ख ग आवीया । २० ख उच्छव । ग उच्छव ।
 घ उच्छव । २१ ख वही । ग घ वही । २२ ख ग घ. कीया । २३ ख ग घ के
 अनुसार—

कुल मिळे उच्छव वही कीया अति मगळ धमळ अजोधिया ।

२४ ख ग. अजोधिया । २५ ख ग घ मृदँग । २६ ग वारग । २७ ख छवि ।
 २८ ख ग घ नूतग । २९ ख ग घ रति । ३० ख वही । ग घ वही । ३१ ख
 रजत । ३२ ग घ. नूप । ३३ ख ग घ चत्रुरग । ३४ ख ग घ कर ।

१९६(७) रँभ - अम्परा, रभा नामक अम्परा । सुमण - देवता, पुष्प । वँधण - बधन ।
 मोखण - मुक्ति । ब्रदण - विरुद्ध । टँकर - प्रत्यचाकी ध्वनि ।

१९६(८) स्त्रिय - सीता । ब्रवि - दान देकर । उच्छव - उत्तमव । बोह - बहुत । धमळ-
 मँगळ - मागलिक गीत । नादँग - नाद, ध्वनि । वह - बहुत । तरँग - प्रकार,
 तरह । सीत - सीता । खतँग - वाण । सारँग - धनुष ।

मात चरणंग करंग प्रणमंग ।

सुजस गंग रंग कथंग सरवंग^१ ।

नमी अवधि^३ नरेस ॥ १६६(८)

छप्पय

अवधि राज करि इधक^३, महल^४ सुख कीध महावळ ।

सभे त्याग असमेध, दइव जीता वीह^५ नृपदळ^६ ।

भार उतारे भोमि, अवधि सैदेह^७ उधारे ।

वसे^८ राम वैकुठ^९, विमळ^{१०} जग जस विसतारे^{११} ।

अघ नास कहत भाजत अघ, जनम कोटि कीधा जियां ।

जिण वसि^{१२} राम प्रगटे जिकौ, वस^{१३} सुधिन^{१४} रघुवासिया^{१५} ॥ १६७

सुधन्य माता कौसल्या^{१६}, तात दसरथ धनि^{१७} भूपति ।

अवधि पूरि^{१८} धनि अवनि, प्रिया धनि सीत तासपति ।

धन्य^{१९} सत्रघण धन्य^{२०} लखण, भरथ धनि जै हर^{२१} भाई ।

धन^{२२} त्रेतायुग^{२३} सुधनि, वाणि^{२४} वाळमीक^{२५} वणाई^{२६} ।

१ ख सरवग । २ घ अवधि । ३ ख ग घ अधिक । ४ ख ग घ. महलि । ५ ख वही । ग. घ वही । ६ ख. ग. घ नृपदळ । ७ ग सैदेह । ८ ग. वसे । ९ ग. वैकुठि । १० ग. विमळ । ११ ग विसतारे । १२ ख घ वस । ग वंस । १३ ग वस । १४ ख ग घ सुधनि । १५ ख रघुवसीया । ग रघुवंसीया । १६ क कोसल्य । १७ ग धन्य । १८ ख ग घ पूरी । १९ ख ग घ धनि । २० ख ग घ धनि । २१ ख ग घ. हरि । २२ ख ग घ. धन्य । २३ ख ग घ त्रेतायुग । २४ ग वाणी । २५ ख वलमीक । ग वालमीक । २६ ग. वणाई ।

१६६(८) चरणंग - चरण । करंग - करके । प्रणमंग - प्रणाम ।

१६७ इधक - अधिक । ज्याग - यज्ञ । असमेध - अश्वमेध । दइव - देवता । वीह - बहुत । अवधि - अयोध्या । सैदेह - शरीरसहित । वसि - वंगमे । जिकौ - वह । सुधिन - सुधन्य ।

१६८ अवनि - पृथ्वी । धनि - धन्य । सीत - सीता । तास - उस । सत्रघण - शत्रुघ्न ।

सुग्रीव अंगद हनुमत सहत^१, प्रातम धनि आहसिया^२ ।

जिण वस^३ रांम प्रगटे जिकौ, वस^४ सुधिन^५ रघुवसिया^६ * ॥ १६८

इति रांमायण

छन्द बेअक्षरी^०

पुन वसवरणण

राम पाट^७ कुस भूप विराजे^८ ।
 सुज कुस पाटि अतिथ दिन साजे ।
 सभ्रम अतिथ निखधि^९ नृप^{१०} सोहत ।
 राजा निखध पाटि नभ राजत ॥ १
 पुडरीक नभ पाटि विरदपति^{११} ।
 सुज^{१२} पुत्र खेमधन्व^{१३} वायक^{१४} सति ।
 देवानीक तास पुत्र दीपत ।
 सुर^{१५} दातार अनीक तास सुत ॥ २
 जे सुत पारिजात क्रत ऊभळ^{१६} ।
 बाळ नृपति^{१७} जे सुतण महाबळ^{१८} ।

१ ख ग. घ सहित । २ ख ग व आहसीयां । ३ ग विस । घ. वसि । ४ ग वस ।
 ५ ग घ सुधन्य । *यह पक्ति ख प्रतिमे नही है ।
 ६ ग रघुवसीया । ७ ख घ वे अक्षरी । ख. वै अक्षरी । ८ ख ग घ पाटि । ९ क.
 विराजै । १० ख ग घ निषिध । ११ ख. ग घ नृप । १२ ग. विरदपति ।
 १३ ग घ. सुजि । ख सुजस । १४ ग घ खेमधन्वा । १५ ग वायक । १६ ख ग.
 घ सूरदतार । १७ ख. ग उभल । घ ऊजल । १८ ख ग घ नृपति । १९ ख
 महाबळ ।

- १६६ (१) पाट - राज्यसिंहासन । अतिथ - अतिथि । निखधि - निषध नामक राजा ।
 नभ - राजा निषधके पुत्रका नाम । इसका दूसरा नाम पुराणोमे नल भी मिलता है ।
 विरदपति - विरुदपति, यशस्वी ।
- १६६ (२) खेमधन्व - खेमधन्व नामक राजा । वायक - वाक्य, वचन । सति - सत्य ।
 तास - उस । दीपत - शोभा देता है । अनीक - राजा अहिर्नगुके स्थान पर प्रयोग
 किया गया है ।
- १६६ (३) पारिजात - पारियात्र (पारिपात्र) नामक राजा । क्रत - कार्य, काम, कृत्य ।
 ऊभळ - उज्ज्वल । बाळ - पारिपात्रके पुत्रका नाम दल और दलके पुत्रका नाम
 पुराणोमे बल मिलता है । यहाँ पर यह दलके स्थान पर प्रयोग किया गया है ।

वाल^१ सुतन नृप^२ सिथळ उवंवर^३ ।
 वज्रनाभ्र^४ जिण सुतण भूपवर^५ ॥ ३
 वज्रनाभ सुत सुगण^६ धरमवप^७ ।
 ते सुत विध्रत^८ नरेस उग्र तप ।
 सुत जय^९ हरिणनाभ सुभियाणै^{१०} ।
 पुख^{११} नृप जे सुत इद्र प्रमाणै ॥ ४
 पुक्ष^{१२} सभ्रम ध्रुवसधि प्रथीपति^{१३} ।
 सुत सुदरसण उदारह दत्ति सति^{१४} ।
 अगन^{१५} वरण^{१६} जे सुत आचारी ।
 सीघ्र^{१७} नृपति^{१८} जिण सुत सतिधारी ॥ ५
 मरु जिण सुतण तपोवळ^{१९} मडै ।
 खित्त गलिका परगट नव खडै ।
 वरण अनेक करत तप वीता^{२०} ।
 पांणिग्रहण त्रिय^{२१} कीध प्रवीता^{२२} ॥ ६

१ ख वाल । २ ख ग घ नृप । ३ ख उवंवर । ४ ख ग वज्रनाभ । घ. वज्रनाभ ।
 ५ ख भूपवर । ग घ भूपवर । ६ ख सगुण । ग घ सुगुण । ७ ग. धरमवप ।
 ८ ख विधृत्य । ग विधृत्य । घ विधृत । ९ ग जय । १० ख ग सुभियाणै । ११ ख.
 ग. घ पुषि । १२ ख ग घ पुष्य । १३ ख प्रथीपत्य । ग घ. प्रियिपत्य । १४ ख.
 ग. सत्य । १५ ख ग घ अगनि । १६ ग. वरण । १७ घ सिद्ध । १८ ख नृपति ।
 ग घ नृपत । १९ ख तपोवल । २० ग तपवीता । २१ ख. त्रिय । २२ ग प्रवीता ।

१६६ (३) सिथळ— राजा वालका पुत्र, परन्तु पुराणोमे यह नाम नहीं मिलता है । उवंवर— वीर, बहादुर । वज्रनाभ— पुराणोमे वज्रनाथ नाम मिलता है ।

१६६ (४) सुगण— इसके स्थान पर पुराणोमे गखन नाम मिलता है । हरिणनाभ— हरण्यनाभ नामका राजा । नोट— यहा पर जो नाम विध्रत आदि है वे पुराणोकी वशावलीसे मेल नहीं खाते है । सुभियाणै— श्रेष्ठ । पुख— पुष्य नामक राजा ।

१६६ (५) पुक्ष— पुष्य नामक राजा जो हिरण्यनाभका पुत्र था । सभ्रम— पुत्र । ध्रुवसधि— ध्रुवसन्धि नामक राजा । सुदरसण— सुदर्शन नामक राजा । दत्ति— दान । सति— सत्य, शौर्य, वीरता । अगन वरण— अग्निवरुण नामक राजा जो पुराणोके अनुसार ध्रुवसन्धिका पुत्र था और ग्रथकतनि इसे सुदर्शनका पुत्र माना है । आचारी— उदार, वदान्य । सीघ्र— सुदर्शनके पुत्रका नाम, एक सूर्यवशी राजा । सतिधारी— सत्यको धारण करने वाला, वीर ।

१६६ (६) मरु— सूर्यवशी राजा गीघ्रके उत्तराधिकारी राजाका नाम । सुतण— पुत्र । त्रिय— स्त्री । कीध— किया, किये । प्रवीता— पवित्र ।

जे सुत हुवौ सधि हत दूजण ।
 मरखण संधिसुतण कुळ मडण ।
 मरखण सुत सिहसान^१ भूप मणि ।
 भूप^२ विस्वासा^३ द्वै^४ ते सुत भणि ॥ ७
 नूपति^५ प्रसेनजीत ते नदण ।
 खुनक प्रसेन सुतण खळखडण ।
 बळवत^६ खुनक सुजाव ब्रह्मदबळ^७ ।
 दुभल^८ हुवौ हरवळ कैरव दळ ॥ ८
 पडव दळा अनेक प्रहारे ।
 महाभारथ कुरखेत^९ मभारै ।
 धारे^{१०} अणी सरीर करे धित^{११} ।
 महिपति अभिमुनि^{१२} हाथळहे म्रित^{१३} ॥ ९
 पौहतौ^{१४} सुरग एम करि पौरिस ।
 जगत विख्यात^{१५} ब्रह्मदबळरौ^{१६} जस ।

१ ख नहसान । ग महसान । घ सहसान । २ ख ग घ. भूपत । ३ ख विस्वासा ।
 ग विस्वा । घ. विस्वासा । ४ ख. ग घ हूतै । ५ ख घ. नूपत । ६ ख बलवत ।
 ग. घ बलिवंत । ७ ख ब्रह्मदबलि । ग. घ. ब्रह्मदबलि । ८ ख दुकुल । ९ ख उर ।
 १० ख. ग. घ धारे । ११ ख ग घ धित । १२ ख. ग. अभिमन्यु । घ. अभिमन्यु ।
 १३ ख. ग घ. हे मृत । १४ ग पौहौतौ । घ. पौहौतौ । १५ ग विख्यात । १६ ख.
 ब्रह्मदबलि । ग घ ब्रह्मदबलि ।

१६६ (७) सधि - मरूके पुत्र सुसधिके लिये यह नाम आया है । मरखण - राजा मर्षण जो पुराणोके अनुसार मरूका प्रपौत्र था । सिहसान - सहस्वान नामक राजा जो मर्षणका पुत्र था । विस्वासा - पुराणोके अनुसार राजा विश्रुतवान ।

१६६ (८) नदण - पुत्र । सुतण - पुत्र । खळ - दुष्ट, शत्रु । खडण - नाश करने वाला । सुजाव - पुत्र । ब्रह्मदबळ - सूर्यवशी राजा विश्रुतवानका पुत्र बृहदब । दुभल - वीर, योद्धा । हरवळ - हरौल । कैरव - कौरव । दळ - सेना ।

१६६ (९) पडव - पाडव । प्रहारे - सहार किये, मारे । कुरखेत - कुरुक्षेत्र । मभारै - मध्य, मे । धारे - तलवारें, शस्त्रोंके । अणी - नोक । धित - भूमि पर । अभिमुनि - अभिमन्यु । हाथळ - हाथसे । म्रित - मृत ।

१६६ (१०) पौहतौ - पहुँच गया, पहुँचा । एम - इस प्रकार । पौरिस - पौरुष, पराक्रम ।

नृप^१ जे सुत वरकिय^२ कुळनाडक^३ ।
 वळक^४ ब्रध्व^५ ते सुत वरदाडक^६ ॥ १०
 धरि^७ जे सुत प्रतव्योम^८ घुरंधर ।
 सुत प्रतव्योम^९ भाण राजेश्वर^{१०} ।
 भाण सुजादव^{११} दिवा (क) तेज भर ।
 सुत सहदेव हवीं इद्र समसर ॥ ११
 कहि जिण सुतण वीर^{१२} नृप^{१३} केही ।
 जग जम प्रगट भगीरथ जेही ।
 जे सुत ब्रह्मदस्व^{१४} भूप करण जय ।
 ते सुत भानुमानु^{१५} तेजोमय ॥ १२
 प्रतीकास जिण सुत वीह^{१६} पौरस ।
 जेण^{१७} सुतण सुप्रतीक उजळ जस ।
 सुत जे नृप मरुदेव वयण सति ।
 पुत्र जास मुनक्षत्र प्रथमि^{१८} पति ॥ १३

१ ख ग घ नृप । २ ख ग घ क्रीय । ३ ख. ग घ नायक । ४ ग. बळक । ५ ख
 ग घ. वृद्धि । ६ ख घ वरदायक । ग वरदायक । ७ ख ग घ. धर । ८ ख. ग.
 घ. प्रति । ९ ग व्योम । १० ख राजेश्वर । ११ ख घ सुजाव । ग सुजाव ।
 १२ ग वीर । १३ ख ग घ नृप । १४ ख. ग. ब्रह्मदस्व । १५ ग घ भानुमान ।
 १६ ख वही पौरस । ग घ वही पौरस । १७ ख. वण । १८ ख ग. घ प्रियमीपति ।

१६६ (१०) वरदाडक - श्रेष्ठ ।

१६६ (११) दिवा(क) - दिवाकर नामक सूर्यवंशी राजा । समसर - समान, बराबर ।

१६६ (१२) सुतण - सुत, पुत्र । केही - कैसा । जेही - जैना । ब्रह्मदस्व - पुराणोके अनुसार
 सहदेवके पुत्र ब्रह्मदस्वका नाम । भानुमानु - पुराणोके अनुसार ब्रह्मदस्वके पुत्रका
 नाम, इसका दूसरा नाम भानुरथ भी था ।

१६६ (१३) प्रतीकास - भानुमानके पुत्र प्रतीकासका नाम । वीह - बहुत । पौरस - पौरुष,
 पराक्रम, शक्ति । सुप्रतीक - प्रतीकाश्वके पुत्रका नाम । मरुदेव - राजा सुप्रतीकके
 उत्तराधिकारी पुत्रका नाम । वयण - वचन । सति - सत्य । जास - जिसके ।
 मुनक्षत्र - राजा मरुदेवके उत्तराधिकारी राजाका नाम । प्रथमि - पृथ्वी, भूमि ।

पुत्र सुनिखत्र^१ नृपरै नृप पुक्कळ^२ ।
 सुत जे^३ अतरीख दळ सव्वळ^४ ।
 कहि सुतपा जिण^५ सुत ब्रद^६ कोटिक ।
 अमित्रजीत तेण सुत नृप इक^{*} ॥ १४
 जे सुत ब्रह्दभोज^७ जगजाहर^८ ।
 हदभोज^९ सुत^{१०} वहन्य^{११} क्रीत वर^{१२} ।
 जिण नृप^{१३} वहनि सुजाव क्तजय^{१४} ।
 जेण सुजाव नरेस रणजय^{१५} ॥ १५
 तिण सुत संजय रघुकुळ तारण ।
 साक्य सजय सुत दुसह सघारण ।
 सभ्रम साक्य^{१६} स्वधोद सकाजा ।
 राजै जे सुत लायक राजा ॥ १६

१ ख सुनिखत्र । घ. सुनिक्षण । २ पुक्कळ । ३ ख. ग घ जं । ४ ख सव्वल । ग घ सव्वल । ५ ख. पाणिज । ६. ख घ. ब्रद ।

*ख ग. घ. के अनुसार यह पक्ति निम्न प्रकार है—

अमित्रजित सुत पा मुत नृप यक ।

७ ख. ब्रह्दभोज । ग ब्रह्दभाज । घ ब्रह्दभोज । ८ ख. जजाहर । ९ ग ब्रह्दभाज । ग ब्रह्दभोज । १० ख. सुहत । ११ ख. वहति । ग वहनि । घ वहनि । १२ ग वर । घ. कर । १३ ख ग घ. नृप । १४ ख ग. घ क्तजय । १५ क रणजय । १६ ख ग घ साकि ।

१४ पुक्कळ — पुराणोमे पुक्कळ नामके स्थान पर किन्नर नाम मिलता है । अतरीख — अतरीक्ष नामक राजा । सुतपा — राजा अतरीक्षके उत्तराधिकारी राजाका नाम । अमित्रजीत — अमित्रजित नामक राजा ।

१५ ब्रह्दभोज — पुराणोके अनुसार राजा बृहद्राज । वहन्य — पुराणोके अनुसार शुद्ध नाम वहि जिसका दूसरा नाम धर्मी भी मिलता है । सुजाव — पुत्र । क्तजय — कृतजय नामक राजा । रणजय — पुराणोमे शुद्ध नाम रणजय मिलता है ।

१६ साक्य — राजाका नाम । दुसह — दुष्ट, शत्रु । सघारण — नाश करने वाला । सभ्रम — पुत्र । स्वधोद — राजाका नाम, पुराणोके अनुसार लागळ नामक राजा, जिसका दूसरा नाम राहुल भी पुराणोमे मिलता है ।

तास सुजाव प्रसेनजीत तत्र ।
 जिण सुत खुद्रक भूप हुवौ^१ जत्र ।
 खुद्रक सुतण रिणक्क दहण खळ* ।
 हुवौ सुरथ जिण सुत भाळाहळ ॥ १७
 सुतण सुरथ नृप^२ सुमित्र सरूपति ।
 तपसी हुवौ राज तजि भूपति ।
 आसणि^३ गलिका तीर अधारै ।
 ध्यान समाधि जोगमय धारै ॥ १८
 भिदि खट चक्र नाळि अलि भ्र मर^४ ।
 भेदे भमर गुफा नद भमर^५ ।
 ऊतर भाण उदित गग उत्तर ।
 पकज पख हजार तास पर ॥ १९
 असट पख वासी^६ चढि आयौ ।
 दुति निरवाण तेज^७ दरसायौ ।
 प्रति सूरिज^८ कोटेक प्रकासं ।
 आतम जगमग जोति उजास ॥ २०

१ ख ग हुवौ । *ख ग और घ. प्रतियोके अनुसार यह पक्ति निम्न प्रकार है—

पुद्रक सुत नृप रिणक दहण पल ।

२ ख ग. घ नृप । ३ ख ग घ आसणी ।

४ ख. ग और घ प्रतियोके अनुसार यह पक्ति निम्न प्रकार है—

भिदि पट चक्र वक्र नाळि अनिल भर ।

५ ख. भम्मर । ग. घ भम्मर । ६ ग वासी । ६ ख तज । ७ ख ग घ सूरज ।

१७ तास — उस । सुजाव — पुत्र । प्रसेनजीत — प्रसेनजित नामक राजा । खुद्रक — खुद्रक नामक राजा । सुतण — पुत्र । रिणक्क — रणक नामक राजा । दहण — नाश करने वाला । खळ — शत्रु, दुष्ट । भाळाहळ — तेजस्वी देदिप्यमान ।

१८ सुमित्र — राजाका नाम । आसणि — आसन । गलिका — एक नदीका नाम । तीर — तट ।

२० सूरिज — सूर्य । कोटेक — करोड । आतम — आत्मा । उजास — प्रकाश ।

सीचे अमृत^१ अग अति सजम ।
 जोवन^२ लगै विकार^३ जरा जम ।
 परमहस आणंद^४ मे^५ प्राणी ।
 ब्रह्म^६ अकासि^७ हुई तदि^८ वाणी^९ ॥ २१
 कळिजुगि^{१०} केकि^{११} वरस^{१२} वीता^{१३} कर^{१४} ।
 वयळ^{१५} वस धर प्रगट त्रिया^{१६} वर^{१७} ।
 वस^{१८} वधाय^{१९} वळै^{२०} तप बाधौ^{२१} ।
 आतम ग्यान सचेत आराधौ^{२२} ॥ २२
 वीतां^{२३} केक वरस^{२४} नृप^{२५} त्रियवर^{२६} ।
 प्रगट कियौ^{२७} रवि वंस^{२८} प्रथीपर^{२९} ।
 सुतण सुमित्र नृपति^{३०} सतधारी ।
 ऊपजियौ^{३१} कमधज अग्रिकारी^{३२} ॥ २३
 राजा कमधज सुतण पदारथि^{३३} ।
 उण सुत गणपति भूप ब्रवण^{३४} अथि^{३५} ।

१ ख ग घ. अमृत । २ ख ग घ जोरव । ३ ग. विकार । ४ ख ग घ. आनंद ।
 ५ ख. ग. घ मय । ६ ख घ ब्रह्म । ग ब्रह्म । ७ ख ग घ आकासि । ८ घ. तदि ।
 ९ ग वांणी । १० ख ग घ. कलजुग । ११ ख ग. घ. केक । १२ ग वरस ।
 १३ ग. वीतां । १४ ख कार । ग घ करि । १५ ख घ वयळ । १६ ख ग त्रिया ।
 १७ ख घरि । ग. वरि । घ. वरि । १८ ख घ वस । १९ ग. वधाय । २० ग वळै ।
 २१ ख बाधौ । २२ ख. ग घ आराधौ । २३ ग वीता । २४ ग वरस । २५ ख.
 ग घ. नृप । २६ ख. त्रियवर । ग त्रियवरि । घ त्रियवरि । २७ ख ग कीयौ ।
 २८ ग वस । २९ ख घ प्रिथीपरि । ग प्रथीपरि । ३० ख ग घ नृपति ३१ ख
 ग. ऊपजीयौ । ३२. ख. ग घ अग्रिकारी । ३३ ख ग घ पदारथ । ३४ ग ब्रवण ।
 ३५ ग. घ अथ ।

२१ सजम - सयम । जरा - वृद्धावस्था । तदि - तव ।

२२. कळिजुगि - कलियुगमे । केकि - कई, कुछ । वयळ - सूर्य । वळै - फिर ।

२३. सुतण - सुत, पुत्र । ऊपजियौ - जन्मा, उत्पन्न हुआ । अग्रिकारी - अग्रगण्य,
तेजस्वी ।

२४. ब्रवण - दान देना, वितीर्ण करना । अथि - अर्थ, द्रव्य ।

तोगनाथ जिण सुतण भूप तवि ।
कीरति पार जेण' न लहै कवि ॥ २४
पौह^२ भरीच^३ जिण सुतण प्रमाणै ।

इति प्रथम प्रकरण

अथ राजा पुज तथा उणरा ते'रे पुत्रा री वरणण
जिण सुत पूजराज नृप^५ जाणै ।
पूज तणै तेरह सुत दिव^६ पख ।
सुजि त्याहूत कमध तेरह सख ॥ १
प्रगटे जेण^६ रीत^७ प्रथमी परि ।
ऽवा विधि^८ कहौ जुगति सुध उच्चरि ।

राजा पुजरा प्रथम पुत्र धरमवंदरी वरणण

धरमवव^९ सुत वडौ^{१०} धुरधर ।
दादा^{११} सूरराज छक उवर^{१२} ॥ २
सो आखेटक गए^{१३} सकाजा ।
रिख^{१४} अगिरा मिळे तिण राजा ।
रिख पूजा करि नृपति^{१५} रिभाए^{१६} ।
भणियौ^{१७} वर मांगौ मन भाए^{१८} ॥ ३

१ ख ग घ जेणि । २ ख. ग. पहाँ । घ एहौ । ३ ग मरीच । ४ ख ग घ नृप ।
५ ख घ दिव्य । ग दिव्य । ६ ख ग घ जेणि । ७ ग घ. रीति । ८ ग विधि ।
९ ख. धरमवत । ग. घ धरमवंभ । १० ग घ वडौ । ११ ख ग घ दाता । १२ ख.
डंवर । ग घ. डमर । १३ ग गऐ । १४ ख ग घ रिषि । १५ ख. ग. घ. नृपति ।
१६ ग रिभाए । १७ ख ग भणियौ । १८ ग भाए ।

२४ तवि - कह, कह कर । जेण - जिस ।

१. दिव - दिव्य । पख - पक्ष । त्याहूंत - उनने । सख - गाखा ।

२ जुगति - युक्ति । सुध - शुद्ध । उच्चरि - उच्चारण कर, पढ कर । धरमवव - राजा
पु जके प्रथम पुत्र धर्मधुरका नाम । वडौ - महान । धुरंधर - प्रवीण, दक्ष, महान ।
दादा - पितामह । सूरराज - नूर्य । छक - वैभव । उवर - तेजस्वी ।

३ सो - वह । आखेटक - शिकार । रिख - ऋषि । तिण - उस । रिभाए - प्रसन्न
किये । भणियौ - कहा । वर - वरदान । मन भाए - अभीष्ट ।

कमधज वर^१ मागै जोडे^२ कर ।
 हुवै दान चाहौ^३ सुज^४ हाजर^५ ।
 तथास्तु^६, कहि मुनिद^७ वळे^८ तुर ।
 राका दिन मिळसी राजेस्वर^९ ॥ ४
 प्रगट नृपति^{१०} राका वर^{११} पायौ ।
 भणै सुदन^{१२} आवै मन^{१३} भायौ ।
 वारै^{१४} मास माभ^{१५} दिन वारै^{१६} ।
 सुपह दान पूगौ जग^{१७} सारै ॥ ५
 तिण कामना जाचियौ^{१८} तिसडी ।
 जिण पामियौ^{१९} सु इच्छा^{२०} जिसडी ।
 सतोखियौ^{२१} भूप जग^{२२} सारौ ।
 जस धम करि जीतौ जमवारौ ॥ ६
 असख्यात दत्त^{२३} कमण गिणावै ।
 असि गज द्रव^{२४} नग पार न आवै ।
 धिन^{२५} धिन नृप^{२६} नभ वाणि हुई धुर ।
 स्रव^{२७} जग सिरै ज तू दानेसुर ॥ ७

१ ग वर । २ ग जोडि । ३ ख ग घ. चाह । ४ ख ग घ सुजि । ५ ख ग. घ. हाजिर । ६ ख. घ. तथास्तु । ७ ख. ग घ मुन्यंद । ८ ग वळे । ९ ख. ग घ. राजेसुर । १० ख ग घ. नृपति । ११ ग वर । १२ ग सुदिन । १३ ख मति । ग घ मनि । १४ ख वारै । १५ ख ग. घ माहि । १६ ग वारै । १७ ख ग. घ जगि । १८ ख ग जाचियौ । १९ ख. ग पामियौ । २० ख इच्छा । ग इच्छ्या । घ इच्छ्या । २१ ग सतोषियौ । २२ ख ग घ जगि । २३ ग. घ दन । २४ ख द्रव । २५ ख घ. धन धन । ग घन घन । २६ ख घ. नृप । २७ ख स्रव । घ स्रव ।

४. जोडे कर - करवद्ध होकर । सुज - वह । मुनिद - मुनीन्द्र, महर्षि । वळे - लौट गये । तुर - तत्पर, शीघ्र । राका - पूर्णमासी ।
 ५. भणै - कहता है । सुदन - श्रेष्ठ दिन । मन भायौ - अभीष्ट । वारै - वारह । माभ - मध्य । सुपह - राजा, नृप ।
 ६. कामना - इच्छा । जाचियौ - याचना की । तिसडी - वंसी । पामियौ - प्राप्त किया । जिसडी - जैसी । सतोखियौ - सतुष्ट किया । जमवारौ - जीवन, जन्म ।
 ७. असंख्यात - असंख्य । दत्त - दान । कमण - कौन । असि - घोडा । गज - हाथी । धिन धिन - घन्य-घन्य । नभ वाणि - आकाशवाणी । धुर - प्रथम स्रव - सर्व, सब । सिरै - श्रेष्ठ, शिरोमणि । दानेसुर - दान देने वालोसे समर्थ ।

उण दिनहू^१ ते रत^२ उजवाळी^३ ।
एक साख दानेसरवाळी^४ ।

राजा पुजरें बीजा पुत्र भाण उदीप रौ वरण

इण नूप^५ वभतणै^६ अधिकार्ई ।

भाणउदीप दूसरौ भाई ॥ ८

लखमण जात्रा हेत लगायौ ।

अभग भूप सहंसाजळि आयौ ।

मनि^७ सुधि^८ पूजे वीर^९ लखमण^{१०} ।

त्रिहै^{११} मास रहि वळै^{१२} पुज तण ॥ ९

कोस आठ डेरी नूप कीधौ ।

दरसण लखिण^{१३} सुपन मभि दीधौ ।

चवि नूप माग^{१४} सु वर उज्जळ चित ।

हूं रीभियौ^{१५} तूभ सेवा हित ॥ १०

पितहू जुदौ^{१६} राज धर पाऊ^{१७} ।

ज्वाळामुखी कगुडै^{१८} जाऊं^{१९} ।

१ ख ग घ हूत । २ ख ग घ रीत । ३ ख ग घ अजुवाळी । ४ ख घ दानेसुर ।
ग दानेसुर । ५ ख ग घ नूप । ६ ख ग वभ । ७ क. मुनि । ८ ख ग घ
सुध । ९ ग वीर । १० ख ग. लख्यमण । घ लखमण । ११ ख घ. त्रिएहे । ग
त्रिएहे । १२ ग वले । १३ ख ग घ लखण । १४ ख ग घ मागि । १५ ख ग
रीभीयौ । १६ ग जुदौ । १७ ग पाउ । १८ ख ग घ कागुडै । १९ ग जाउ ।

८. उण - उस । दिनहूं - दिनसे । ते - उस । रत - रीति । उजवाळी - उज्ज्वल की ।
साख - शाखा । दानेसरवाळी - दानेश्वरोकी, राठौडोकी प्रमुख तेरह शाखाओमे से
प्रथम शाखा दानेमरोकी । इण - इस । नूप वंभ = धरमवंभ - वर्मधुर नामक पु जके
प्रथम पुत्र । अधिकार्ई - विशेषता । भाणउदीप - राजा पु जके द्वितीय पुत्रका नाम ।
९. लखमण - लक्ष्मण । जात्रा - यात्रा । हेत - लिये, प्रेम । अभग - वीर । सहसाजळि -
एक तीर्थ-स्थान । मनि - मन । लखमण - लक्षण । त्रिहै - तीन । वळै - फिर ।
पुज तण - पुजतनय, राजा पुजका पुत्र ।

१०. डेरी - पडाव, ठहग्नेका स्थान । कीधौ - किया । लखिण - लक्ष सुपन - स्वप्न ।
मभि - मध्य, मे । दीधौ - दिया । चवि - कह कर, कहा । सु वर - श्रेष्ठ वरदान ।
हूं - मैं । रीभियौ - प्रमत्त हुआ ।

११. पितहू - पितासे । जुदौ - पृथक ।

वीर^१ लखण^२ कहियौ^३ सत वायक^४ ।
 देस आय लडियौ वरदायक^५ ॥ ११
 सेना कवच तुवर सघारे ।
 धर कागुडै दुरंग छत्र धारे ।
 वरस^६ तीसरै मेह न वूठै^७ ।
 ईत^८ मरी दुरभख^९ भय ऊठै ॥ १२
 कहियौ^{१०} नृप^{११} प्रज भय किणसू ।
 ज्वाळामुखी न^{१२} पूजै जिणसू^{१३} ।
 भाणउदीप^{१४} विगत^{१५} सुण^{१६} भारी ।
 विधवत^{१७} सकति पूजि^{१८} विसतारी ॥ १३
 वाम दखिण^{१९} मति^{२०} दुज मुख वारिज^{२१} ।
 चवै प्रमाण सकराचारिज ।
 उवै^{२२} सास्त्र लखि दुज्ज^{२३} उचारे^{२४} ।
 ध्यान धरेस^{२५} अखडित धारे ॥ १४

१ ग वीर । २ ख ग घ. लखिण । ३ ख ग कहीयौ । ४ ग. वायक । ५ ग वरदायक । ६ ग वरस । ७ ग. वूठै । ८ ख ग ईत । ९ घ दुरभख । १० ख ग कहीयौ । ११ ख ग घ नृप । १२ ख तप्त । १३ ख जिणसुं । १४ ख. ग घ भाणदीप । १५ ख. ग घ. विगति । १६ ख ग घ सुणि । १७ ख ग घ विधवति । १८ ख ग घ पूज । १९ ख. दक्षिण । २० ग घ. मत्त । २१ ग वारिज । २२ ख ग. घ वेसास्त्र । २३ ख ग. घ दुज । २४ ख उच्चारे । २५ ख ग घ नरेस ।

११ वायक - वचन । वरदायक - श्रेष्ठ ।

१२. सघारे - सहार किये । दुरंग - गढ, दुर्ग । मेह न वूठै - वर्षा नहीं होती है । ईत - ईति, खेतीको हानि पहुँचाने वाले उपद्रव जो सात माने जाते हैं, यथा—१ अतिवृष्टि, २ अनावृष्टि, ३ टिड्डीदल, ४ चूहे, ५ पक्षियोंकी अधिकता, ६ दूसरे राजाकी चढाई, ७ अपने राजा द्वारा किया जाने वाला युद्ध । मरी - महामारी । दुरभख - दुर्भिक्ष, दुष्काल ।

१३ प्रज - प्रजा । विगत - वृत्तान्त ।

१४. चवै - कहते हैं । सकराचारिज - शकराचार्य । धरेस - राजा । अखडित - अखड ।

एक वांम^१ अगुष्ठ^२ आधारे^३ ।
 *नव दिन राति रहै निरहारे ।
 कमंध मतौ सिर ढाळण^४ कोधौ ।
 दरंसण सकति प्रतखि तदि^५ दीधौ ॥ १५
 रीभ^६ अेम^७ कहियौ सुरराणी ।
 भूपति वर^८ मागौ^९ मन^{१०} भांणी ।
 पेखे सकति वदन^{११} पहपहियौ^{१२} ।
 कर जोडे राजा इम कहियौ^{१३} ॥ १६
 मो पुर प्रज^{१४} मो देस मभारै ।
 मरीयत^{१५} दुरभख नह मारै ।
 कहियौ^{१६} तै जिमहिज^{१७} मै कीधौ ।
 दाखे सकति अभै वर^{१८} दीधौ ॥ १७
 इता देस पुर^{१९} ज^{२०} तू दवावै^{२१} ।
 इत^{२२} मरी दुरभख नह आवै ।

१ ग वांम । २ ख ग घ अगुष्ठ । ३ ख ग अधारे ।

*ख ग और घ के अनुसार— नव दिन रात रहि निरहारे ।

४ ख ग. घ चाडण । ५ ख. तई । ६ ग घ रीभ । ७ ख ग कहीयो । ८ ग
 वर । ९ ख मांग्यौ । १० ख ग घ मनि । ११ ग वदन । १२ ख ग पहपहीयो ।
 १३ ख ग घ कहीयो । १४ ख. प्रजा । १५ ख घ मरीइत । ग मरीइत । १६ ख
 ग कहीयो । १७ ख ग. जिमहीज । १८ ग वर । १९ ग. पुर । २० ख मत ।
 ग. जू । २१ ख ग दवावै । २२ ख. ग इत ' घ ईत ।

१५ निरहारे— निराहार । मतौ— विचार । ढाळण— काटना । कीधौ— किया । प्रतखि—
 प्रत्यक्ष । तदि— तव । दीधौ— दिया ।

१६ रीभ— प्रसन्न हो कर । सुरराणी— देवी । मन भाणी— इच्छित, अभीष्ट । पेखे—
 देख कर । वदन— मुख । पहपहियौ— प्रफुल्लित ।

१७ मो— मेरा, मेरी । पुर— नगर । प्रज— प्रजा । मभारै— मध्य, मे । मरीयत—
 महामारी । जिमहिज— जैसे ही । कीधौ— किया । दाखे— कह कर । अभै— अभय ।
 वर— वरदान । दीधौ— दिया ।

१८ इता— इतने । इतै— इति ।

इम वर पाय^१ सञ्जे दळ अेहा ।
जळ सामद ऊभळिया^२ जेहा ॥ १८
कोच पु(री)डीर वैस^३ मकवाणा ।
चाढे^४ धकै तुवर चहुवाणा ।
धडछे^५ ऊमरखान खग धारे ।
साठ हजार पठांण संधारे ॥ १९
भिडिया^६ तिकै मुवा^७ काइ^८ भ्रमिया^९ ।
जट लौहाण^{१०} खत्रो जोखमिया^{११} ।
जुडि गज खेत पडै बौह^{१२} जिसडा ।
इकसठ^{१३} समर जीपियौ^{१४} इसडा ॥ २०
ज्वाळ घणा खळ उरा जळाई ।
तितै लीध धर मान तळाई ।
पुर करि अभै अभै व्रद^{१५} पाया ।
अभैपुरा जिणहूत^{१६} कहाया ॥ २१
राजा पुजरै तीजा पुत्र वीरचदरौ वरणण
तण नृप^{१७} पुज^{१८} सथानक^{१९} तीजै ।
वीरचद्र^{२०} राजा वरणीजै^{२१} ।

१ ख. ग घ पाइ । २ ख. ग ऊभळिया । ३ ख घ वैस । ४ ख चढि । ५ ख ग घ धडछे । ६ ख ग भिडीया । ७ ख. भ्रया । ग मूवा । ८ ख ग घ काय । ९ ख भ्रमीया । ग भ्रमीया । घ. भ्रमिया । १० ख ग घ बौहाण । ११ ख. जोखमीया । ग जोषमीयां । घ जोखमिया । १२ ख बहौ । ग घ बहौ । १३ ख ग इकसठि । १४ ख ग जीपीयौ । १५ ग वृद । १६ ख ग घ. तिणहूत । १७ ख ग घ नृप । १८ ख ग घ पुज । १९ ख ग. घ. सथानिक । २० ग. वीरचद्र । २१ वरणीजै ।

१८ अेहा - ऐसा । सामद - समुद्र । ऊभळिया - उमडा । जेहा - जैसा ।

१९ वैस - एक राजपूत वंश । मकवाणा - भाला राजपूत वंशकी एकशाखा । संधारे - सहार किये ।

२० जोखमिया - मारा, सहार किया । जुडि - भिड कर, युद्ध कर । जिसडा - जैसा । समर - युद्ध । जीपियौ - जीता, विजय किया । इसडा - ऐसे ।

२१ ज्वाळ - दाह, जलन । खळ - शत्रु । व्रद - विरुद । अभैपुरा - राठोडोके तेरह प्रमुख वंशोमे से एक । जिणहूत - जिससे ।

२२. सथानक - स्थान ।

इक निस^१ भाग वीतियां आधौ ।
 लगि अनुराग सुपन नूप लाधौ ॥ २२
 त्रिय इक^२ अति सुदर चख तीखे ।
 ऊमर वरस^३ खोडसा ईखे^४ ।
 निज अग भळक दीप फानूसा^५ ।
 सुरग जरी पौसाख^६ भळूसा ॥ २३
 गड जडाव भूखण नव ग्रह गण ।
 अठ-बि^७ सिंगार^८ छत्रीसई^९ आभ्रण ।
 अग छवि^{१०} रवि सिस^{११} कोटि^{१२} उदोतां ।
 जोगी ध्यान तजै तिण^{१३} जोता ॥ २४
 छक मसताक^{१४} रूप अति छाजै ।
 लख^{१५} दुति सची उरवसी^{१६} लाजै ।
 भोला सुगंध चहू दिस^{१७} भलिया^{१८} ।
 अतर गुलाब^{१९} समद्र ऊभळिया^{२०} ॥ २५

१ ख ग न. निसि । २ ख ग घ यक । ३ ग वरस । ४ ख. ईपे । क ईष ।
 ५ क कानूमा । ६ ख यौसाष । ७ ख अछवि । घ. अठवि । न ख ग शृंगार । घ.
 शृंगार । ८ ख छत्रीसेइ । ग छत्रीमंड । घ. छत्रीसेई । १० ख छवि । ११ ख ग
 घ ससि । १२ ख कोट । १३ ख ग घ तिणि । १४ ख ग घ मुसताक ।
 १५ ख ग घ लखि । १६ ख घ उरवसी । १७ ख ग घ चहूवळ । १८ ख ग
 भलीया । १९ ख गुलाब । २० ख ग. उभलीया ।

२२. इक - एक । निस - निशा, रात्रि । भाग - हिस्सा । वीतियां - व्यतीत होने पर ।
 आधौ - आधा, अर्ध । अनुराग - प्रेम । सुपन - स्वप्न । लाधौ - मिला ।
 २३. चख - चक्षु, नेत्र । तीखे - तीक्ष्ण । खोडसा - मोलह वर्षकी, पोडगो । ईखे -
 देखी । भळक - काति, दीप्ति । सुरग - सुन्दर, लाल । भळूसा - शोभित ।
 २४ अठ-बि - मोलह । आभ्रण - आभूषण । छवि - काति, दीप्ति । रवि - सूर्य । सिस -
 चद्रमा । कोटि - करोड । उदोता - उदय होने पर । तिण - उस । जोता - देखने पर ।
 २५ छक - उत्साह, जोश । मसताक - उत्कृष्ट, उत्सुक, मुस्ताक । छाजै - गोभा देता है ।
 दुति - काति । सची - इन्द्राणी । उरवसी - उर्वशी नामक अप्सरा । भोला - वहार ।
 चहू दिस - चारो ओर । ऊभळिया - उमडे ।

ईखे सुपन त्रिया छिब^१ एही ।
 सुपह^२ दाखियौ^३ वचन^४ सनेही ।
 जपतौ^५ नाम कमण कुण जाणै ।
 प्रसधि^६ नाम तो^७ जगत पिछाणै ॥ २६
 आवण अठै केणि अधिकार्ई ।
 आप वरण^८ कारण हू आई ।
 करि कटाच्छ^९ इम^{१०} हसि^{११} त्रिय कहियौ ।
 चित^{१२} अनुराग नृपति^{१३} अति चहियौ^{१४} ॥ २७
 वरमाळा^{१५} ले कंठि^{१६} वणावै ।
 पलक खुली तदि^{१७} त्रिया न पावै ।
 उण दुखहूत^{१८} जीव व्याकुळ^{१९} अति ।
 पडै न जक सोचै नित भूपति ॥ २८
 महल^{२०} सेज^{२१} नह रमण^{२२} उमाहै ।
 चौकी खास न खिलवति^{२३} चाहै ।

१ ख. छवि । ग घ छवि । २ ख सुपन । ३ ख ग दाषीयौ । ४ ग घ वचन ।
 ५ ख ग घ जपितौ । ६ ख प्रसिद्ध । ग. घ प्रसिध । ७ ख ग. घ. मो । ८ ग
 वरण । ९ ख ग घ कटाछि । १० ख ग. घ हसि । ११ ख ग घ. इमि ।
 १२ ख ग चिति । १३ ख ग घ. नृपति । १४ ख ग चहीयौ । १५ ग वरमाळा ।
 १६ ख कठ । १७ ख. ग घ जदि । १८ ख. दुखहूत । १९ ग व्याकुल । २० म.
 महलि । घ महणि । २१ ख. ग. घ सेभ । २२ ग. घ रमणि । २३ ख. खिल-
 वत । ग घ खिलवत ।

२६ ईखे—देखा । सुपन—स्वप्न । त्रिया—स्त्री । छिब—शोभा, सुन्दरता । एही—
 ऐसी । सुपह—राजा । दाखियौ—कहा । कमण—किस । कुण—कौन ।

२७ अठै—यहाँ । केणि—किस । अधिकार्ई—विशेषता, अधिकार । वरण—कन्या द्वारा
 विवाहमे वर (पति) स्वीकार करनेकी रीति । हू—मैं । कटाच्छ—कटाक्ष । इम—
 इस प्रकार । त्रिय—स्त्री । कहियौ—कहा ।

२८ कठि—कठमे । तदि—तब । उण—उस । दुखहूत—दुखसे । जक—चैन, आराम ।

२९ महल—महिला, स्त्री । सेज—शय्या । रमण—मैथुन, सभोग । उमाहै—उमगयुक्त
 होना, उत्कण्ठित होना । खिलवति—एकान्त स्थान ।

कर^१ दरवार^२ न्याव नहि^३ कीजै ।
 दान सौळ दुज^४ हथा न दीजै ॥ २६
 भ्रम आखेट न बाण^५ अभ्यासी ।
 नृत^६ सगीत न राग निवासी ।
 मत्री^७ सुभट थडत नह मेळा * ।
 चवै न नवरस सुकवि सचेळा ॥ ३०
 प्याला मुरा पिवै^८ नह पावै ।
 भोजन पान कपूर न भावै ।
 दिव्य पौसाक न हुकम दिवाणै^९ ।
 अत्तर जुहरि^{१०} नजीक न आणै^{११} ॥ ३१
 छिलती सलित न्याव नह छूटै ।
 जेठी गयंद कुरंग नह जूटै ।
 मझि जळ क्रीड न सहल विमोहै^{१२} ।
 अस^{१३} सिवका^{१४} गज रथ न अरोहै ॥ ३२
 भूपट चमर छत्रछाह^{१५} न भेलै ।
 खेल वसत^{१६} गुलाल न खेलै^{१७} ।
 हित करि वाग^{१८} रूस नह हालै ।
 चादर हाँज फुहार न चालै^{१९} ॥ ३३

१ ख ग घ करि । २ ख ग दरवार । ३ ख नही । ग घ नह । ४ ख ग घ द्विज । ५ ख. बाण । ६ ख ग घ नृत । ७ ख ग और घ के अनुसार—

*मत्री पडित मुभट नह मेळा ।

८ ख ग घ पौवै । ९ घ दीवाणै । १० ख ग घ जुहार । ११ ख आणै । १२ ग विमोहै । १३ ख ग घ अस्व । १४ ख ग सिविका । घ सिविका १५ ख छत्रा । १६ ख प्रतिमे निम्न दो पक्तिया नही है—

खेल वमत गुलाल न खेलै । हित करि वाग रूस नह हालै ॥

१६ ग वसत । १७ ग घ वाग । १८ ख हालै ।

२६ दुज = द्विज - ब्राह्मण । हथा - हाथ, हस्त ।

३० भ्रम - भ्रमण, परिभ्रमण । आखेट - शिकार । नृत - नृत्य, नाच । थडत - एकत्रित । चवै - कहते हैं वर्णन करते हैं ।

३१. सुरा - सराव । दिवाणै - दीवान, दरवार ।

३२ छिलती - उमडती हुई । सलित - नदी । न्याव - नौका । जेठी - ज्येष्ठ । गयंद - गजेन्द्र हाथी । कुरंग - घोडा । मझि - मध्य, मे । क्रीड - क्रीडा । अस - अस्व, घोडा । सिविका - सिविका, पालकी, डोली । अरोहै - आरोहन करता है ।

३३ चमर - चँवर । रूस - (?) । चादर - पानीकी चौडी धार जो कुछ ऊपरसे गिरती हो ।

धर अन^१ राज काज नह धारै ।
 इक मुख^२ पिया^३ पिया उच्चारै^४ ।
 इम त्रह^५ दिन वीता^६ तिण^७ औसर ।
 वेद धरम नामा प्रोहित वर^८ ॥ ३४
 आय नृपति^९ पूछी^{१०} विध^{११} एही^{१२} ।
 सावधान हुय धरम सनेही ।
 विखै^{१३} अग्यान^{१४} धरम^{१५} वीसारौ^{१६} ।
 सूरजकुलचौ^{१७} धरम सभारौ^{१८} ॥ ३५
 तो कुल^{१९} भाण जगत सिरताजा ।
 रामचद्र प्रगटे महाराजा^{२०} ।
 प्रभु सूरिज^{२१} दुति कोटि प्रकासी ।
 आतम परम ब्रहम^{२२} अविणासी^{२३} ॥ ३६
 वप घणस्याम^{२४} नेत्र दुति वारज^{२५} ।
 क्रत^{२६} अवतार सुराचे^{२७} कारज^{२८} ।

१ ख. अति । ग घ अनि । २ ख ग मुखि । ३ ख ग प्रीया, प्रीया । घ. प्रिया, प्रिया ।
 ४ ख ग घ. ऊचारे । ५ ख. ग त्रिण्हि । घ त्रिन्हि । ६ ख. ग घ वीता । ७ ख
 जिणि । ग घ. तिणि । ८ ग वर । ९ ख ग घ. नृपति । १० ख ग घ पूछे ।
 ११ ख घ विधि । ग विधि । १२ ग ऐही । १३ ग विषै । १४ ख अज्ञान ।
 १५ ग धर । १६ ख विसारौ । ग वीसारौ । १७ ख सूरिजकुल । १८ ख सभारौ ।
 १९ ख ग घ. कुळि । २० ख ग महाराजा । २१ ख सुरजि । २२ ख ब्रह्म ।
 ग ब्रह्म । घ ब्रह्म । २३ ग अविणासी । घ अवीणासी । २४ घ. घणश्याम ।
 २५ ग वारिज । घ. वारिज । २६ ख ग घ. कृत । २७ ख ग घ सुराचै । २८ ख
 ग. घ. कारिज ।

३४. इक - एक । त्रह - तीन । तिण - उस । औसर - समय ।

३५ विखै - विषय । सभारौ - स्मरण करो, स्मृतिमे लाओ ।

३६. सूरिज - सूर्य । दुति - काति, दीप्ति । ब्रह्म - ब्रह्म । अविणासी - जिसका कर्मी
नाश न हो ।

३७ वप - वपु, शरीर । वारज - कमल । क्रत - किया ।

ध्रम नृप^१ उग्र सनातन धारे ।
 वेद^२ अजाद^३ धरम विसतारे^४ ॥ ३७
 होता प्रभु करता जग^५ हरता ।
 कहता गुर वसिस्ट^६ जिम करता ।
 धरि गुर वचन^७ वचन पित धारे ।
 प्रभु^८ सिय^९ जुत वनवास^{१०} पधारे ॥ ३८
 मणि त्रिलोक^{११} प्रभा जगि^{१२} मडित ।
 इकपतनीव्रत^{१३} धरम अखडित ।
 कारज^{१४} सुरा करण किय^{१५} क्रीला ।
 लीला समद^{१६} मानखी^{१७} लीला ॥ ३९
 रमा हुतासणि^{१८} सरणि रहाए^{१९} ।
 हथि रामण स्रिय छाह हराए ।
 छाया हरण हुवा दुख छाया ।
 माया अबसि मोह वसि^{२०} माया ॥ ४०
 अवर ग्यान नह ध्यान उचारै^{२१} ।
 आप जेम^{२२} प्रिय^{२३} प्रिया^{२४} उचारै^{२५} ।

१ ख ग घ नृप । २ ग वेद । ३ ख मृजाद । ४ ख विसतारे । ५ ख ग घ
 जगि । ६ ख घ वसिष्ट । ग वसिष्ट । ७ ग वचन । ८ ग प्रभु । ९ ख ग
 श्रीय । घ श्रिय । १० ग वनवास । ११ ख. त्रयलोक । १२ ख ग घ. जग ।
 १३ ग पतनीव्रत । १४ ख ग घ कारिज । १५ ख ग. कीय । १६ ख समुद्र ।
 १७ ख ग. और घ मानुखी । १८ ग हुता । १९ ग रहाए । २० ग वसि ।
 २१ ख ग घ उचारै । २२ ख ग घ जेमि । २३ ख. ग प्रीय । २४ ख ग प्रीय ।
 २५ ख. ग ऊचारै ।

३७ ध्रम - धर्म । अजाद - मर्यादा ।

३८ सिय - मीता । जुत - युत, सहित ।

३९ क्रीला - कीला, क्रीडा । समद - समुद्र । मानखी - मनुष्योकी ।

४० रमा - लक्ष्मी, सीता । हुतासणि - अग्निकी । सरणि - शरणमे । हथि - मार कर ।
 स्रिय - श्री, लक्ष्मी, सीता ।

सिव त्रिय इम प्रभु लखि तिण समियै ।
 भूली' चित माया व्रित^१ भ्रमियै^२ ॥ ४१
 दिव^३ नयणा परब्रह्म^४ न देखे ।
 पराकृती^५ नर जिम हरि पेखे ।
 जोग ध्यान सिमरै^६ सिव ज्यानू ।
 औ अति भार फवै^७ नह ज्यानू^८ ॥ ४२
 करे विचार^९ एम^{१०} सिव कामणि ।
 भेख सरीर धरे हरि भांमणि ।
 सुता जनक वप करि समताई ।
 इम दखि सुता छळण कजि^{११} आई ॥ ४३
 जिण^{१२} विलोकि कहियौ जगजामी ।
 सिव छै मुखी सिवा तो स्यामी^{१३} ।
 कहि इम प्रभु आतिथ-ध्रम कीधौ ।
 दखि प्रमाण आसण त्रण^{१४} दीधौ ॥ ४४
 करि वनफळ^{१५} जळ अग्र जोडि कर ।
 वदन^{१६} करि वन^{१७} हले स्त्रियावर^{१८} ।

१ ख. घ व्रत । ग व्रत । २ ख ग भमीयै । घ. भमियै । ३ ग ख दिव्य । घ. दव्य ।
 ४ ख. परब्रह्म । ग घ. ब्रह्म । ५ ख पराकृति । ग घ पराकृति । ६ ख ग घ सुमिरै ।
 ७ ख फवै । ८ ख ग घ यानू । ९ ग विचार । १० ग प्रेम । ११ ख. ग घ.
 हरि । १२ ख ग. घ जिणि । १३ ख स्वामी । ग घ सामी । १४ ख ग. घ त्रिण ।
 १५ ग वनफळ । १६ ग वंदण । घ वदण । १७ ख. वनि । ख ग वनि । १८ ख
 ग श्रीयावर ।

४१ त्रिय — स्त्री । इम — इस प्रकार ।

४२. दिव — दिव्य । परब्रह्म — परब्रह्म । पराकृती — प्राकृतिक, जन-साधारण । पेखे —
 देखा । सिमरै — स्मरण करते हैं । ज्यानू — जिनको ।

४३ कामणि — कामिनी, स्त्री । भांमणि — भामिनी, स्त्री । वप — शरीर । समताई —
 समानता । इम — इस प्रकार । दखि — राजा दक्ष । कजि — लिए, निमित्त ।

४४. जिण — जिस । विलोकि — देख कर । जगजामी — ईश्वर, श्रीरामचंद्र भगवान् । सिवा —
 पार्वती । तो — तेरा । स्यामी — स्वामी, पति । आतिथ-ध्रम — अतिथ्य धर्म । कीधौ —
 किया । दखि — कह कर । त्रण — तिनका । दीधौ — दिया ।

४५ अग्र — अगाडी । जोडि कर — करबद्ध होकर । स्त्रियावर — सीतावर, श्रीरामचंद्र ।

छलतां उमा एम नह छलिया^१ ।
 चित प्रणाम स्त्रिय राम न चलिया ॥ ४५
 औ मै तो प्रसताव दिखायौ ।
 ज तूं भूप उणहिज^२ कुळ^३ जायौ ।
 अवर घणा राजा प्रमअसी ।
 वनि^४ मुनि ह्वे वसिया^५ रघुवसी^६ ॥ ४६
 तप ज्यां कीध भरथ समतूले ।
 देखे तेज इद्रासण डूले^७ ।
 दुति ज्या विघन^८ करण तप दांमा ।
 विदा^९ कीध सुरपति सूरवामा^{१०} ॥ ४७
 ठाढी नृतत^{११} आय मुनि वन थित^{१२} ।
 रति अरु साथि काम बहुवै रति * ।
 जुत रगराग कटाच्छ^{१३} करै जुदि ।
 तरग समदन कीध खाली तदि ॥ ४८
 उरवसि^{१४} सची बाह^{१५} गळि आणै ।
 जिया रोख पाथर सम जाणै ।

१ घ छलीया । २ ख ग उणहीज । ३ ख ग घ कुळि । ४ ग बनि । ५ ग
 वसोया । ६ ग घ रघुवसी । ७ घ भूलै । ८ ख विघन । ९ ग विदा ।
 १० ग सुरवांमा । ११ ग घ नृतत । १२ ख ग घ. थिति ।

*ख ग औग घ के अनुमार—

रति अरु काम साथि छहुवै रिति ।

१३ ख ग घ कटाछि । १४ ख उरवसी । ग उरवसि । १५ ख बांह ।

४६. औ—यह । तो—तुम्हको । प्रसताव—प्रसंग, प्रकरण । उणहिज—उसी । कुळ जायौ—
कुलमे उत्पन्न हुआ । वनि—वनमे ।

४७. ज्यां—जिन, जिस । कीध—किया । भरथ—भरत । समतूले—समतुल्य, बराबर ।
डूले—कपायमान हो गया । विदा—रवाना । सुरपति—इन्द्र । सूर-वामा—अप्सरा ।

४८ ठाढी—खडी रही, ठहरी । नृतंत—नाचती हुई वेश्या, पतुरिया, नृत्तिका, अप्सरा ।
थित—स्थित । कटाच्छ—कटाक्ष । जुदि—जव । तदि—तव ।

४९ उरवसी—उर्वशी नामक अप्सरा । सची—इन्द्राणी । बाह—बाहु, भुजा । गळि—
कठमे, गर्दनमे । पाथर—पत्थर ।

डम करतां रभ कोड^१ इलाजा^२ ।
 रिख^३ व्रत^४ चित डिगियौ^५ नह राजा ॥ ४६
 सूरिज-कुळ^६ सुणि एह^७ रीत^८ सति ।
 प्रिया प्रिया^९ कहिबौ^{१०} तजि भूपति ।
 कथ इम सुणे वस^{११} कीरत्ती ।
 प्रोहितहू बोले^{१२} छत्रपत्ती ॥ ५०
 ध्रम सनेह कुळ मारग धारा ।
 प्राणहूत वधि^{१३} आप पियारा ।
 आप वचन^{१४} मै सोस अधारे ।
 वायक^{१५} प्रिया^{१६} कहण वीसारे^{१७} ॥ ५१
 जो मन^{१८} वसी^{१९} मोह फद जूटां ।
 छूटसि तिका प्राण प्यड छूटा ।
 धणी वचन प्रोहित सिर^{२०} धारिज ।
 कहियौ^{२१} प्रत-उत्तर^{२२} नृप^{२३} कारिज ॥ ५२
 आप इसी हित चित इकतारी ।
 नृपत्ती^{२४} कहौ आण^{२५} मुजि नारी ।

१ ख. ग घ कोडि । २ ख ग घ इलाजा । ३ ख ग घ रिखि । ४ ख व्रति ।
 ग व्रित्ति । घ व्रिति । ५ ग डिगीयौ । ६ ख सूरजकुल । ७ ख घ रीत । ग रीती ।
 ८ ख इह । ग ऐह । घ. एह । ९ ग प्रीय प्रीया । १० ख कहिबौ । ११ ग वस ।
 १२ ख बोले । १३ ग वधि । १४ ग वचन । १५ ग. वायक । १६ ख ग प्रीयग ।
 १७ ग वीसारे । १८ ग घ. मनि । १९ ग वसी । २० ख ग. और घ. इम ।
 २१ ख कहीयौ । ग कीयौ । २२ ख. ग घ प्रति-प्रत्तर । २३ ख ग घ. नृप । २४ ख
 ग घ नृपति । २५ ख. ग घ आणा ।

४६ इम — इस प्रकार । रभ — अप्सरा । कोड — प्रेम । इलाजा — उपाय, उपचार ।

५० सूरिज-कुळ — सूर्यवंश । एह — यह । सति — सत्य । छत्रपत्ती — राजा ।

५१ प्राणहूत — प्राणसे । वधि — विशेष, अधिक । पियारा — प्यारा । अधारे — धारणा
 किये । वायक — वचन । वीसारे — भूल गया ।

५२ तिका — वह । प्यड — शरीर । प्रत-उत्तर — प्रत्युत्तर । कारिज — कार्य, लिए ।

देतां द्रव^१ करता जुध^२ दावै ।
 आणौ जेण तेणि विधि^३ आवै ॥ ५३
 सुणि प्रोहित हित वात^४ मुहाई ।
 विध^५ श्रव^६ कहि नृप^७ दसा वताई^८ ।
 सोभा नाम रूप विसतारा^९ ।
 सुपन चिहन कहिया^{१०} नृप सारा ॥ ५४
 साभळि ध्यान धरे दुज साचौ ।
 तिणनू वर^{११} वाळा^{१२} त्रपुराचौ ।
 करता ध्यांन सकति इम कहियौ^{१३} ।
 लेख^{१४} प्रमाण सुपनि^{१५} नृप लहियौ^{१६} ॥ ५५
 अलहणपुर^{१७} पाटण आथाणा^{१८} ।
 चंद हमीर भूप चहुवांणां ।
 तिण^{१९} नृप^{२०} घरि लीलावति तूंवरि ।
 सुता जेणरै^{२१} कीरति^{२२} सुदरि^{२३} ॥ ५६
 जनमे नखत^{२४} करुरां जिणसू ।
 तिणनू वन^{२५} नांखे दुख तिणसू ।

१ ख द्रव । २ ख ग घ. जुधि । ३ ग विधि । ४ ग वात । ५ ग विधि । ख
 ग विधि । ६ ख श्रव । ग घ श्रव । ७ ख ग घ नृप । ८ ग वताई । ९ ग.
 विसतारा । १० ख ग. कहीया । ११ ग वर । १२ ख वाळा । १३ ख. ग कहीयौ ।
 १४ ख ग घ लेषि । १५ ख. ग. घ सुपन । १६ ख ग लहीयौ । १७ ख ग घ
 अणहलपुर । १८ ख. ग घ. आथाणा । १९ ख ग. घ. उण । २० ख ग घ. नृप ।
 २१ ख. ग घ जेणि । २२ घ कीरती । २३ घ सुदरी । २४ ख ग घ. नषित्र ।
 २५ ख घ वनि । ग वनि ।

५४ सुपन - स्वप्न । चिहन - चिन्ह ।

५५ सांभळि - सुन कर । दुज - द्विज, ब्राह्मण । साचौ - सत्य । इम - इस प्रकार ।
 कहियौ - कहा । सुपनि - स्वप्नमे ।

५६ आथाणा - स्थान, घर । सुता - पुत्री । जेण - जिस ।

५७ नखत - नक्षत्र । करुरा - क्रूर, भयकर । तिणनू - उसको । नांखे - डाल दिया ।

जिण^१ सुणि रुदन दया मनि जाणी
 आस्रम^२ रिख माया जित आंणी ॥ ५७
 रस वन^३ फळ बौह^४ पाय रसाळी ।
 पुत्रो हेत करै रिख^५ पाळी ।
 वणि ससिवेस रमै माभळ^६ वन^७ ।
 तै वळहतो^८ वेल^९ सोन्न^{१०} तन ॥ ५८
 वनि^{११} इक समे^{१२} रमै तिण^{१३} वेळा^{१४} ।
 मिळ^{१५} जखि सुता कुसुम हित^{१६} मेळा ।
 लखि तन प्रभा नयण सुख लीधौ ।
 कनिया^{१७} दहू^{१८} मिळै हित कीधौ ॥ ५९
 वात^{१९} करे हित चित वरताए^{२०} ।
 पुत्री जाण^{२१} नवै निध^{२२} पाए ।
 ऊमर^{२३} इम^{२४} वरसा^{२५} नव आई ।
 सुता जक्खि^{२६} जद^{२७} कथा सुणाई ॥ ६०
 मो कथ सखा^{२८} धारि निज मनया ।
 तू इण देसपती री तनया ।

१ ग घ. जिणि । २ ख ग घ आस्रम । ३ ग वन । ४ ख. घ बहौ । ग बहौ ।
 ५ ग घ रिषि । ६ ख ग घ माभळि । ७ ग वन । ८ ख ग घ उळहतो ।
 ९ ख घ वेलि । ग बेलि । १० ग. सोन्न । ११ ग वनि । १२ ख ग घ तमै ।
 १३ ख घ. तिणि । १४ ग वेळा । १५ ख ग घ मिलि । १६ ख ग घ कुसुम ।
 १७ ख. ग कनीया । १८ ख. वहुं । ग बिहू । घ विहू । १९ ग वात । २० ग
 वरताए । २१ ख ग घ. जाणि । २२ ख. ग घ. निधि । २३ ख ग घ उमर ।
 २४ ख घ एम । ग ऐम । २५ ग वरसा । २६ ख जष्य । ग जष्यि । घ जष्यि ।
 २७ ख ग घ जदि । २८ घ सखी ।

५७ रुदन - रोना, विलाप । मनि - मनमे ।

५८ बौह - बहुत । रसाळी - रसपूर्ण । रिख - ऋषि । पाळी - पालन-पोषण । ससिवेस -
 शिशुवयस, बाल्यावस्था । माभळ - मध्य, मे । सोन्न - सुवर्ण, सोना ।

५९ जखि - यक्ष । कुसुम - पुष्प, फूल । लीधौ - लिया । कनिया - कन्याएँ । दहू -
 दोनो । कीधौ - किया ।

६० सुता - पुत्री । जक्खि - यक्ष । जद - जव ।

६१. तनया - पुत्री, कन्या ।

देसी रिख पाछी चित दीजै ।
 तोनू आजहूत^१ दिन तीजै ॥ ६१
 पति विग्रह^२ तो ग्रह परठाणा ।
 लेख मिटे नह वेह^३ लिखाणा^४ ।
 इण दोखण^५ नूप^६ नह आदरसी ।
 भावी साखि मुनिद^७ तद भरसी ॥ ६२
 जोतिस रिख वायक^८ बिहु^९ जोडै ।
 तिया^{१०} अजाद प्रभू नहि^{११} तोडै ।
 जोतिस लिखै विग्रह पति जिणनू ।
 अमर सुहाग कहै ते इणनू ॥ ६३
 कहि रिख इम कहसी नूप कीजै ।
 लखि बिहु^{१२} वात^{१३} ऐह^{१४} पण लीजै ।
 चढि तोरणि सिव सीस चढावै ।
 ज्वै^{१५} नूप क्रीत^{१६} सुंदरि वरि^{१७} आवै ॥ ६४
 दिल मो ग्यान त्रिकाळग्य^{१८} दरसी ।
 वीरचंद्र राजा इण^{१९} वरसी^{२०} ।

१ ख ग घ लेख हात । २ ग विग्रह । ३ ग वेह । ४ ख लिखाणा । ५ ख ग घ
 इण । ६ ख ग घ नूप । ७ ख ग घ मुनिद । ८ ग वाइक । घ वाइक । ९ ख
 चिहु । १० ख ग तीया । ११ ख ग घ नह । १२ ख ग घ बिहु । १३ ग
 वात । १४ ख ग घ ऐह । १५ ख ग घ वो । १६ ख ऋत । घ कीत । १७ ग
 वरि । १८ ख ग घ त्रिकाळग्य । १९ ख ग इणि । २० ग वरसी ।

६१ आजहूत — आजमे । तीजै — तीसरे, तृतीय ।

६२ विग्रह — कवह । वेह — विधि, ब्रह्मा । लिखाणा — लिखे गये । इण — इन । दोखण —
 दोष । भावी — भविष्यता, भविष्य । साखि — साक्षी । भरसी — भरेंगे, कहेंगे ।

६३ जोतिस — ज्योतिषी । बिहु — दोनों । जोडै — समान, बराबर । सुहाग — मीभाग्य ।

६४ लखि — देख करे । बिहु — दोनों । ऐह — यह । पण — प्रण । क्रीत — कीर्ति । वरि —
 वरगु करके ।

६५ त्रिकाळग्य — भूत, वर्तमान और भविष्यकी जानने वाला, त्रिकालज्ञ, सर्वज्ञ । दरसी —
 दग्ने चाला ।

१. सै^१ सिव^२ सीस^३ चढासी आचा^४ ।
 सिव रीभसी देखि व्रत^५ साचा ॥ ६५
 क्रपा^६ करे सरजीवत करसी ।
 विध^७ इण^८ क्रीत सुदरी वरसी^९ ।
 इम दिन त्रती^{१०} सु^{११} सारिख^{१२} आणी ।
 जिम सब^{१३} कियौ कहै जिखयाणी^{१४} ॥ ६६
 १. जखि मुता-सुता नृप अहेही ।
 दिव्य धरि रूप अनूपम^{१५} देही ।
 इण नृपतणा^{१६} सुपन^{१७} मभि आए ।
 गई नेह औचाट लगाए ॥ ६७
 कहियौ^{१८} सकति जेम^{१९} दुज कहियौ ।
 अति रीभे छत्रपति ऊमहियौ^{२०} ।
 सूर^{२१} धरम परखण नृप^{२२} साखै ।
 इक सरजीव करण नह आखै ॥ ६८

१ ख. ग वो । घ दो । २ ख सीव । ग. घ सिव । ३ ख. सिस । ४ ख ग घ
 आछा । ५ ख पणि । ग घ. पण । ६ ख ग घ क्रिपा । ७ ख घ विधि । ग विधि ।
 ८ ख ग इणि । ९ ग वरसी । १० ख ग घ त्रिती । ११ ग. घ सुता । १२ ख
 सारिख । १३ ख ग श्रव । घ श्रव । १४ ख ग घ जियियांणी । १५ ग अनूप ।
 १६ ख ग घ. नृप । १७ ख सुपनि । १८ ख ग कहियौ । १९ ग जेसि । २० ख
 ग ऊमहियौ । २१ ग सुर । २२ ख ग घ. नृप ।

६५. आचा - हाथी । रीभसी - प्रसन्न होगा ।

६६ सरजीवत - जीवित । करसी - करेगा । विध - प्रकार, तरह । इण - इस । क्रीत -
 कीर्ति । वरसी - वरण करेगा । सारिख - समान । सब - सब । जिखयाणी -
 यक्षिणी ।

६७ जखि-सुता - यक्ष-पुत्री । दिव्य - मुन्दर । देही - शरीर । नृपतणा - नृपके । सुपन -
 स्वप्न । मभि - मध्य, मे । नेह - स्नेह, मोह । औचाट - चिंता ।

६८ जेम - जैसे । दुज - द्विज । रीभे - प्रसन्न होकर । छत्रपति - राजा । ऊमहियौ -
 उत्कण्ठित हुआ । परखण - परीक्षा करनेको । इक - एक । सरजीव - जीवित ।
 आखै - कहते हैं ।

सुणि दुजराज^१ वयण तिण सायत ।
 हरखे नृपत^२ दाखियौ^३ चित हित ।
 एक^४ वार^५ नयणा^६ ईखीजै ।
 दीठा पछै^७ ईस सिर दीजै ॥ ६६
 मुख लखि सीस तजेवा^८ सुर-मुख ।
 ससी हुवै सतलोक लहा सुख ।
 तेज इसौ दीठौ मै तिणरौ ।
 जळसी अरवसि सदेह न जिणरौ* ॥ ७०
 कथ सुण^९ दुजन गिणै तिल काचौ ।
 सूर-धरम जाणै नृप^{१०} साचौ ।
 वात^{११} सजीवत करण वताए^{१२} ।
 आप^{१३} करण सनमुधि^{१४} कजि आए^{१५} ॥ ७१
 आय पटण देखै रीधौ अति ।
 मिळियौ^{१६} चद हमीर महीपति ।
 कागळ दे^{१७} विध^{१८} कहै सकाजा ।
 रटै सीस चाढण^{१९} पण राजा ॥ ७२

१ ख ग घ द्विजराज । २ ख. ग घ नृपत । ३ ख ग. दाखीयो । ४ ग. ऐक ।
 ५ घ बार । ६ ग इखीज । ७ ख ग. घ पछौ । ८ ख तजा । ग घ तजा ।

*यह पक्ति ख प्रतिमे नहीं है ।

९ ख ग. घ. सुणि । १० ख ग घ नृप । ११ ग वात । १२ ग. वताए । १३ ख
 आय । १४ ख ग घ सनमघ । १५ ग आए । १६ ख मिलीयो । १७ ख देव ।
 १८ ख ग घ विधि । १९ ख वाटण ।

६६. सुणि - सुन कर । दुजराज - द्विजराज, ब्राह्मण । वयण - वचन । तिण - उस ।
 सायत - समय, क्षण । दाखियौ - कहा । ईखीजै - देखिए । दीठा - देखने पर ।
 पछै - पश्चात् । ईस - महादेव ।

७० लखि - देख कर । तजेबा - छोड़नेको । सुर-मुख - अग्नि, आग । दीठौ - देखा ।
 अरवसि - अवश्य । जिणरौ - जिसका ।

७१ कथ - कथा, वृत्तान्त । दुजन - (?) । सजीवत - जीवित । सनमुधि - सवध । कजि -
 लिए ।

७२. रीधौ - प्रसन्न हुआ, मोहित हुआ । मिळियौ - मिला । महीपति - राजा । कागळ -
 पत्र, कागज ।

लखि पण हसि माने भय^१ लहियौ^२ ।
 राजा होय अचभ्रम^३ रहियौ^४ ।
 सौस^५ दिवाय कहै नृप^६ सोहित ।
 पति सुण^७ विघन^८ हसै किम प्रोहित ॥ ७३
 सुपन वात^९ तदि^{१०} कहे सुणाई ।
 विध^{११} बाला^{१२} त्रपुर^{१३} जूवताई^{१४} ।
 इम कथ सुणि नृप^{१५} हुवौ^{१६} अणदित^{१७} ।
 वदे पाव फेर^{१८} दुज वंदित^{१९} ॥ ७४
 आतुर^{२०} लगन दीध दुज आए ।
 वीरचद्र अति हरख वधाए^{२१} ।
 सभ^{२२} पौसाक^{२३} सुरग दळ साजा ।
 राज पटण आए चद राजा ॥ ७५
 आय तोरण बदि^{२४} दीठ उछाहै ।
 मूरति सकर आरति^{२५} मांहै ।
 आछट^{२६} खग निज सीस उतारे ।
 धरि निज करि सिव ऊपर^{२७} धारे ॥ ७६

१ ख घ भय । ग मष । २ ख ग लहीयो । ३ ख अचभ्रम । ४ ख ग. रहीयो ।
 ५ क. सोस । ६ ख ग घ नृप । ७ ख ग. घ सुणि । ८ ग विघन । ९ ग वात ।
 १० ख तद । ११ ख घ विधि । ग विधि । १२ ख. बाला । १३ ख ग घ त्रिपुरा ।
 १४ ख युवताई । ग जुवताई । १५ ख ग घ. नृप । १६ ख. हूवो । १७ घ अनदित ।
 १८ ख. ग घ फेरि । १९ ग वदित । २० ख आतुर । ग आत्तर । २१ ग. वधाए ।
 २२ ख ग सभ्नि । २३ ख. यौसाक । २४ ख. वदि । २५ ख ग घ आरती ।
 २६ ख ग घ. आछटि । २७ ख. घ ऊपरि । ग. उपरि ।

७३. लखि - समझ कर । पण - प्रण । अचभ्रम - अचभित । रहियौ - रहा । सौस-
 शपथ । किम - कैसे, क्यों ।

७४ सुपन - स्वप्न । तदि - तब । इम - इस प्रकार । कथ - कथा, वृत्तान्त । सुणि - सुन
 कर । अणदित - आनदित । वदे - नमस्कार कर । पाव - चरण । दुज - द्विज,
 ब्राह्मण ।

७५ दीध - दिया । दुज - द्विज । सभ - धारण कर, सज्जित होकर । सुरग - सुदर, लाल ।

७६ दीठ - देखा । आछट - प्रहार कर ।

जोडि कपाळ सकर जीवाए ।
 कपाळिया^१ तिणहूत कहाए ।
 करि विध^२ वेद^३ उछाह नेह करि ।
 सुपह वरे इम कीरति सुदरि ॥ ७७
 जिण राणी चवदे^४ सुत जाए^५ ।
 सो पितहूता तेज सवाए^६ ।
 दक्खिण^७ लीघ जीपि खग दावै ।
 कपाळिया^८ भड तिके कहावै ॥ ७८

राजा पुजरा चौथा पुत्र अमर विजैरौ वरणण—

अमर विजै^९ छक तेज अमावौ ।
 चौथौ पुत्र पूजरौ^{१०} चावौ ।
 जिकौ सिकार गयौ सुभडा जुत ।
 सोभावती पंवारतणौ^{११} सुत ॥ ७९
 कमध साथ^{१२} असवार^{१३} करूरा ।
 सात हजार महाजुध^{१४} सूरा ।

१ ख ग कपाळिया । २ ख घ विधि । ग विधि । ३ ग वेद । ४ ग घ चवदह ।
 ५ ग. जाए । ६ ग सवाए । ७ ख ग घ दक्खिण । ८ ख ग कपाळिया । ९ ग
 विजै । १० ख घ पुज । ग पुज । ११ ख. ग. घ पमारि । १२ ख ग घ साथि ।
 १३ ख ग घ जोधार । १४ ख. ग घ महाजुधि ।

७७ जोडि—जोड़ कर । जीवाए—जीवित किया । कपाळिया—राठीडोके तेरह प्रमुख
 वशोमे मे एक वश । विध वेद—वैदिक विधि । उछाह—उत्साह । नेह—स्नेह । सुपह—
 राजा । वरे—वरण किया । इम—इस प्रकार ।

७८ जिण—जिम । चवदे—चौदह । सो—वह, वे । पितहूता—पितासे । सवाए—
 नवाया, विशेष । दक्खिण—दक्षिण । लीघ—ली, लेली । जीपि—जीन कर । खग
 दावै—नलवारके दलमे । भड—योद्धा । तिके—वे । कहावै—कहलाते हैं ।

७९ छक—प्रभाव, ऐश्वर्य । अमावौ—अपार । चावौ—प्रमिद्ध । जिकौ—वह । सुभडा जुत—
 सुभटो चर्हित । पवारतणौ—पवारका ।

८० करूरा—जबरदस्त, शक्तिशाली । सूरा—शूरी ।

रनवा^१ सहित सिकार रमाणै ।
 नकट^२ सथान^३ गयौ नांनाणै ॥ ८०
 मभि वन सघन सकति काळी मढ ।
 गगातीर प्रगट^४ कुरहैगढ़ ।
 अमरविजै^५ हित करि अधिकार्ई ।
 मद आमख^६ चाढै महमाई^७ ॥ ८१
 पान खान हित भाव सपूरति^८ ।
 मुख^९ बोलि^{१०} पाथर^{११} रची मूरति ।
 मोनू पुत्र सौ वरस^{१२} मभारार ।
 पूजा वळ^{१३} चाढै न पमारां ॥ ८२
 इण कारण^{१४} परमार उथप्ये^{१५} ।
 औ मै राज तूभनू अप्पे ।
 इम वर पाइ अमरगढ आए ।
 वाजित्र वजता^{१६} लीध वधाए^{१७} ॥ ८३
 जाणै भडा साथ^{१८} पहुचीजै ।
 बाला^{१९} किलै अटकिया^{२०} बीजै ।

१ ख ग. घ रनिवा । २ ख. ग न निकटि । ३ ग सथानि । ४ ख घ विकट ।
 ग विकट । ५ ग अमरविजै । ६ ख. ग घ आमिष । ७ ख घ महामाई ।
 ग माहामाई । ८ ख सपूरति । ९ ख ग घ मुषि । १० ग. घ बोली । ख बोलीया ।
 ११ ख ग घ. पथर । १२ ग वरस । १३ ग घ वलि । १४ ग घ कारणि ।
 १५ ख उथप्ये । १६ ख घ. वजत । ग. वजत । १७ ख घ वाधाए । ग. वधाए ।
 १८ ख ग घ साथि । १९ ख बाला । २० ख ग अटकीया ।

८०. रनवा सहित - राणियोसहित । रमाणै - खेलनेको । सथान - स्थान । नांनाणै -
 ननिहालके ।

८१. मभि - मध्य, मे । सघन - घना । सकति - शक्ति, देवी । काळी - कालिका देवी ।
 मढ - मठ, मंदिर । अधिकार्ई - विशेषता । मद - शराव । आमख - आमिष, मास ।
 महमाई - महामाया, दुर्गा, शक्ति ।

८२ पाथर - पथर । मभारार - मध्यमे ।

८३ इण - इस । उथप्ये - नाश किए, मिटा दिए । औ - यह । तूभनू - तुभको ।
 अप्पे - दिया । वाजित्र - वाद्य । लीध - लिए ।

८४ अटकिया - रोके ।

जोधा लियण^१ अमर जिण वारा^२ ।
 पुणियौ^३ बौह^४ न मने प्रतिहारा ॥ ८४
 अमर ताम भळ क्रोध^५ उठाई ।
 वीच^६ कुरहगढ^७ खाग वजाई^८ ।
 विध^९ भड एक^{१०} एक खग वागै^{११} ।
 लडतां खळा वीस^{१२} हुय^{१३} लागै ॥ ८५
 नवमौ^{१४} मैद^{१५} समौ नृप^{१६} नानौ ।
 छत्रपति पडे रहै नह छानौ ।
 भाण प्रताप पडे भूपत्ती ।
 विच^{१७} गढ कमधा आण वरत्ती^{१८} ॥ ८६
 सोळ हजार पमार सघारे^{१९} ।
 धरपत्ती^{२०} छत्र कुरगढ^{२१} धारे ।
 वस^{२२} कुरहगढ चढै वधावै^{२३} ।
 कुरहा कमधज जेणि^{२४} कहावै ॥ ८७
 भूपति पूंजतणै^{२५} दुति अदभुत ।
 राजा पुजरै पचम पुत्र सजणविनोदरौ वरणण
 सजणविनोद^{२६} नाम पचम सुत ।

१ ख ग. लीयण । २ ग वारा । ३ ख ग. पुणीयौ । ४ ख वहौ । ग घ. वहौ ।
 ५ ख क्रोध । ६ ग. वीच । ७ ख कुरगढ । ८ ख वजाई । ग. घ वजाई ।
 ९ ख वधि । ग. घ वधि । १० ग ऐक ऐक । ११ ग वागै । १२ ग वीस ।
 १३ ख. ग घ होइ । १४ ख ग. घ नवमां । १५ ख ग घ. मांद । १६ ख ग घ
 नृप । १७ ग विच । १८ ग. वस्ती । १९ ख संघारं । २० ख ग घ धरपति ।
 २१ ख ग घ. कुरहगढ । २२ ग वस । २३ ग वधावै । २४ ख जेण । २५ ख. घ
 पुजतणै । ग पूजतणै । २६ ग सजण विनोद । ख सजण बोध । घ सजण बोध ।

८४ जोधा - योद्धाओ । जिण वारां - जिस समय । पुणियौ - कहा ।

८५ भळ - ज्वाला, आग । खाग वजाई - तलवारें चलाई । खग वागै - तलवारोसे
वीर गतिको प्राप्त हुआ ।

८६ समौ - समान । नानौ - मातामह । छानौ - गुप्त, छिपा हुआ । पडे - अवसान
हुआ । भूपत्ती - राजा । कमधा - राठोडो । आण - आज्ञा ।

८७ मघारे - सहार किये । धरपत्ती - राजा । कुरहा - राठोडोके तेरह प्रमुख वशोमे से
एक वश । जेणि - जिसमे । कहावै - कहे जाते है ।

८८ पूंजतणै पृजके । दुति - काति ।

उग्र बोधि पितरै^३ अहिनाणै^३ ।
जोध जोध विदिया^३ स्रब^५ जाणै ॥ ८८
धरि वौह^५ मत्र जत्र चित धारणि ।
कर^६ इलाज देवी^७ वर^८ कारणि ।
चव^६ इम सुणी दियै^{१०} वर^{११} चाहै ।
माला देवी^{१२} विभ^{१३} गिर माहै ॥ ८९
दुत्री^{१४} नाम कुभला^{१५} वरदाता^{१६} ।
मेघना पूजै जदि^{१७} माता ।
लसकर डमर साथ^{१८} नह लीधौ ।
कमध पयाण^{१९} एकलै^{२०} कीधौ ॥ ९०
अस^{२१} इक चढण पच भ्रत आगळि ।
जुगति एणि^{२२} आए^{२३} वीभाजळि^{२४} ।
किनिया^{२५} पच वरस^{२६} धरि काया ।
मिळे आण^{२७} सनमुख महमाया^{२८} ॥ ९१

१ ख अस्त्रबुधि । २ ख अणिनाणं । ३ ख विदीया । ग विदीया । ४ ख अत्र ।
ग अत्र । घ. अत्र । ५ ख वहौ । ग घ वहौ । ६ ख ग घ करै । ७ ख ग घ
देव । ८ ग वर । ९ ख ग घ चवि । १० ख ग दीयै । ११ ग वर ।
१२ ख ग घ देवि । १३ ख. ग विभगिर । ग विभगि । १४ ख ग घ दुती ।
१५ ख ग. घ कुभिला । १६ ग. वरदाता । १७ ख ग घ सुजि । १८ ख ग. घ
साथि । १९ ख ग घ प्रयाण । २० ख ग घ हेकले । २१ ख. अस्त्र । ग अस्त्र ।
२२ ग ऐणि । २३ घ. आए । २४ ख विभाजळि । ग विभाजलि । २५ ख ग.
कनीया । २६ ख ग घ वरस । २७ ख ग आणि । २८ ग महामाया ।

८८ उग्र बोधि - तेज बुद्धिका । पितरै - पिताके । अहिनाणै - सूरत, शकल । जोध -
योद्धा । विदिया - विद्या । स्रब - सब ।

८९ चव - कह, कह कर । विभ गिर - विध्याचल पर्वत ।

९० कु भला - एक देवीका नाम । जदि - जब । लसकर - सेना । डमर - ठाठ ।
नह - नहीं । लीधौ - लिया । पयाण - प्रस्थान, रवाना । एकलै - अकेले ही ।
कीधौ - किया ।

९१ अस - घोडा । आगळि - अगाडी । जुगति - युक्ति । एणि - इस । वीभाजळि -
विध्याचल पर्वत । किनिया - कन्या । काया - शरीर । आण - आ कर । महमाया -
देवी, दुर्गा ।

कारज^१ सिद्ध^२ सिद्ध इम कहियौ^३ ।
 लख^४ कनिया^५ नृप^६ भेद न लहियौ^७ ।
 जदि हसि एम^८ जीव मभि जाणो ।
 पूजारीरी सुता पिछाणो ॥ ६२
 पाच महर^९ स्त्रीफळ नृप अप्पे ।
 जडसी घणौ आव मढि जप्पे ।
 कनिया हसे नृपति वायक^{१०} करि ।
 अंतरध्यान हुई तिण^{११} अवसरि^{१२} ॥ ६३
 चढि नृप गिर^{१३} वदण^{१४} करि चडै ।
 मूरततणी^{१५} पूज बहौ^{१६} मडै ।
 नव दिन रात^{१७} कीध पूजा नित ।
 चेटक लागि उदास हुवौ चित ॥ ६४
 उलटै नृप^{१८} आयौ चित ऊतरि ।
 गरमो नाम गामचे गिरउरि^{१९} ।
 अति चित सोच भाण आथमिये^{२०} ।
 सिध जाळधर^{२१} मिळ^{२२} तिण^{२३} समियै^{२४} ॥ ६५

१ ख ग कारिज । २ ग. सिध सिध । ३ ख ग कहियौ । ४ ख ग लखि । ५ ख ग कनिया । ६ ख ग नृप । ७ ख ग लहियौ । ८ ग प्रेम । ९ ख महौर । ग मौहौर । १० ग वायक । ११ ख तिण । ग. तिणि । १२ ख. ग औसरि । १३ ख ग गिरि । १४ ख वदण । १५ ख ग. मूरति । १६ ख वहौ । १७ ख. ग राति । १८ ख ग नृप । १९ ख ग गिरवरि । २० ख ग आथमीयै । २१ ख ग जळधरी । २२ ख ग मिले । २३ ख ग तिणि । २४ ख. ग. समीयै ।

६२ कारज - कार्य । इम - इस प्रकार । कहियौ - कहा । लख - देख कर, समझ कर । कनिया - कन्या । भेद - रहस्य । लहियौ - लिया । जदि - जब । हसि - हँस कर । मभि - मध्य, मे । पिछाणे - पहिचान लिया ।

६३ महर - मुहर, अशरफी । स्त्रीफळ - नारियल । अप्पे - दिए, अर्पण किए । वायक - वचन । करि - से । तिण - उस । अवसरि - अवसरमे, समयमे ।

६४ मूरततणी - मूर्तिकी । बहौ - बहुत । कीध - की । चेटक लागि - अन्तमे, आखिरमे ।

६५ गामचे - गाम के । गिरउरि - गिरिवर, पर्वत । भाण - सूर्य । आथमिये - अस्त होने पर । सिध जाळधर - जालधरनाथ नामक महात्मा । तिण - उस । समियै - समय पर ।

कहै सिध नृपत^१ सोच किम कीधौ ।
 दाखै नृप वर सकति न दीधौ ।
 वर^२ तो दियो^३ कहै सिध वाणी^४ ।
 पूजे तै देवी^५ न पिछाणी ॥ ६६
 स्वा^६ पच वरस^७ कन्यका आई ।
 मालादेवि तिका महमाई^८ ।
 तो सिध सिद्ध^९ कारज^{१०} कहियो^{११} तिण^{१२} ।
 जो सिधहू अभलाख^{१३} दखी^{१४} जिण^{१५} ॥ ६७
 पग वदि^{१६} हरखि भूप तदि पुणियो^{१७} ।
 सिध^{१८} मै पाव जळद्री^{१९} सुणियो^{२०} ।
 सुरग पताळि^{२१} समद सलितारौ ।
 सिध तो हुकम माहि जळ सारौ ॥ ६८
 आराधता^{२२} छौळ^{२३} ऊभाळै^{२४} ।
 चाहू^{२५} जठै तठै जळ चालं ।

१ ख. ग नृपत । २ ग वर । ३ ख. ग दीयो । ४ ग वाणी । ५ ग देवी ।
 ६ ख. ग. वा । ७ ग वरस । ८ ख. माहामाई । ग. महामाई । ९ ख ग सिध सिध ।
 १० ख कारिज । ११ ख. ग कहीयो । १२ ख तिणि । ग तणि । १३ ख ग अभिलाष ।
 १४ ख दाष । ग दापि । १५ ख. ग जिणि । १६ ग. वदि । १७ ख ग पुणियो ।
 १८ ख सिद्ध । १९ ख ग जलध्री । २० ख. ग. सुणियो । २१ ख पताल । ग
 पाताळ । २२ ख आराधना । २३ ख. ग छौल । २४ उभाळे । २५ ख न चाही ।

६६ किम - वयो, कैसे । कीधौ - किया । दाखै - कहता है । दीधौ - दिया । तो -
 तुझको । तै - तूने । पिछाणी - पहिचाना ।

६७ कन्यका - कन्या । तिका - वह । महमाई - देवी, दुर्गा । कहियो - कहा । तिण -
 उस । अभलाख - अभिलाषा । दखी - कही । जिण - जिस ।

६८. पग वदि - चरणोभे नमस्कार कर । हरखि - हर्षित हो कर । तदि - तव । पुणियो -
 कहा । पाव जळद्री - जलधर पाद, जलधरनाथ । सुरग - स्वर्ग । समद - समुद्र ।
 सलितारौ - सरिताका, नदीका । माहि - मे । सारौ - सब ।

६९. आराधता - आराधना करने पर । उभाळै - उमड जाय । जठै - जहा । तठै - तहा,
 वहा ।

दिल सुध नाथ अभै वर^१ दीजै ।
 अ^२ आराध मूळ आपीजै ॥ ९९
 ब्रवीयौ^३ सिध^४ आराध वडाळौ^५ ।
 असठी^६ अक्षर^७ मत्र जपऽवाळौ^८ ।
 अजमावण^९ कजि मत्र नृप^{१०} अक्खै^{११} ।
 दुगम पहाड फोडि इम दक्खै^{१२} ॥ १००
 जळ बडवानळ^{१३} जिकौ जळावै ।
 ऊन्हौ तिकौ समदचे^{१४} आवै ।
 वात एम कहता नृप^{१५} वाणी^{१६} ।
 पहाड फोडि वभकियौ^{१७} पाणी ॥ १०१
 सिध पूजे नृप तांम सिधाए^{१८} ।
 असहा मंड वर लख इम आए^{*} ।
 सजण^{१९} विनोद^{२०} विना^{२१} दळ^{२२} साजति ।
 गयौ विदेस^{२३} एकलौ^{२४} गढपति ॥ १०२

१ ग. दर । २ ख ग वो । ३ ख ब्रवीयौ । ग ब्रवीयो । ४ ख सिद्ध । ५ ग. वडालौ । ६ ख. ग. इकसठि । ७ ख ग अक्षर । ८ ख ग वाली । ९ ख अज-
 मावण । १० ख ग नृप । ११ ख ग अवे । १२ ख ग दधे । १३ ख बडवानल ।
 १४ ख समवचौ । १५ ख ग नृप । १६ वाणी । १७ ख वभकीयौ । ग वभकीयो ।
 १८ ग सिधाए ।

*ख. प्रतिके अनुसार यह पक्ति —

आ इसडा मड लिप वरि इम घाए ।

ग प्रतिके अनुसार यह पक्ति —

अम हामंड लिप वरि इम आए ।

१९ ख सजल विनोद । २० ग सजन विनोद । २१ ग विना । २२ ख ग दलि ।
 २३ ग विदेस । २४ ग. ऐकलौ ।

९९ मूळ — मुभको । आराध — आराध्य, मंत्र विशेष ।

१०० ब्रवीयो — कहा । आराध — मत्र । वडाळौ — वडा, महान । अजमावण — परीक्षा करनेको । कजि — लिए । अक्खै — उच्चारण करता है कहता है । दुगम — दुर्गम । इम — इम प्रकार । दक्खै — कहता है ।

१०१. बडवानळ — बडावाग्नि । ऊन्हौ — उष्ण, गर्म । तिकौ — वह । एम — इस प्रकार । वभकियौ — उमडा ।

१०२ सजण विनोद — राजा पूजके पाचवें पुत्रका नाम । विना दळ साजति — सेना आदि तैयार किये विना ही । एकलौ — अकेला । गढपति — राजा ।

सेवा^१ कवच तणा वधव^२ सुत ।
 जुडि पंच सहस अणिय^३ कढ^४ वख जुत ।
 कुळ स्रव^५ मिळ^६ मसलति^७ इम कीधी ।
 दइव फतै असमानी दीधी ॥ १०३
 रिण^८ तिण^९ हिणा^{१०} काड^{११} बदराळा^{१२} ।
 वैर कवच सेनाचौ वाळा^{१३} ।
 पाखर सिलह ससत्र भड पूरा^{१४} ।
 सभि सामान एण^{१५} विध^{१६} सूरा ॥ १०४
 खंग अलगहूता^{१७} निस^{१८} खडिया^{१९} ।
 ऊगै^{२०} दीह कमधहू अडिया^{२१} ।
 छज^{२२} करि गोळ चहूदिस^{२३} छागां ।
 मुणियौ^{२४} वैर^{२५} पिताचौ मागा ॥ १०५
 सुणि इम वैण^{२६} वीररस साजा ।
 रग मजोठ कीध मुख राजा ।

१ ख ग सेना । २ ख वधव । ३ ख ग अणी । ४ ख ग कट । ५ ख श्रव । ग श्रव । ६ ख ग मिलि । ७ ख मसल । ग. मसलमत । ८ ख. रिमि । ग रिम । ९ ख ग तिणि । १० ख ग हुणा । ११ ख ग काय । १२ ख बदिराला । ग. बदिराला । १३ ग वालां । १४ ख ग भरपूरा । १५ ग ऐणि । १६ ख विधि । ग विधि । १७ ख. ग हूत । १८ ख ग निधि । १९ ख. ग. षडीया । २० ख ऊगै । २१ ख ग. अडीया । २२ ख. ग छजि । २३ ख वळ । ग. वळ । २४ ख. ग मुणीयौ । २५ ग. वैर । २६ ख वयण । ग. वयण ।

१०३ अणिय - सेना । घख - क्रोध, आवेश । जुत - सहित । मसलति - विचार । कीधी - की । दीधी - दी ।

१०४. पाखर - घोडेका कवच । सिलह - अस्त्र-शस्त्र । ससत्र - शस्त्र । भड - योद्धा । एण - इस । विध - विधि, प्रकार । सूरा - योद्धा ।

१०५. खंग - घोडा । अलगहूता - दूरसे । निस - रात्रि । खडिया - चलाए हुए । उगै दीह - सूर्योदय । कमधहू - राठीहसे । अडिया - भिडे । छज करि गोळ - सेनामे सज्जीभूत होकर । चहूदिस - चारों ओर । छागा - काट डाले । मुणियौ - कहा ।

१०६. सुणि - सुन कर । इम - इस प्रकार । वैण - वचन । रंग मजोठ - लाल रंग । कीध - किया ।

अगन^१ नयण धिखि नजर अगारां ।
 भिडे^२ मूछ अणियां^३ भौहारा ॥ १०६
 दुरत^४ निळै^५ तसळै वळ^६ कीधौ ।
 कमधज धनख^७ टकारव कीधौ ।
 डम गणणियौ^८ नाद अविद्याटौ^९ ।
 फवि^{१०} नरसिघ जाण^{११} खभ फाटौ ॥ १०७
 दास पच^{१२} अग्र रहै^{१३} दुरती ।
 भारथ पाच पाडवां भती ।
 भटके क्रोध भाल घुवि^{१४} भूमौ (भौ) ।
 अरक उठै^{१५} थाभे रथ ऊभौ ॥ १०८
 छायाँ गयण रभ रथ छाजै ।
 विखमी^{१६} पाख^{१७} पाखणी^{१८} वाजै^{१९} ।

१ ख ग. अगनि । २ ख भीडे । ३ ख. ग अणीयां ४ ग दुरतिनि । ५ ख ग. लैत्रि । ६ ख वल । ७ ख ग घनुष । ८ ख ग गणणीयौ । ९ ख. अविद्याटौ ।
 १० ख फवि । ग फवी । ११ ख ग जाणि । १२ ख ग पाच । १३ ख. ग. तरह ।
 १४ ल ग घुवि । १५ ख ग तठै । १६ ग वीषमी । १७ ख पंष । ग षष ।
 १८ ख षषणी । ग पषणी । १९ ग वाजै ।

१०६ अगन - अग्नि । धिखि - प्रज्वलित होकर । भिड़े - स्पर्श कर । अणिया - नोके ।
 भौहारा - भौहो ।

१०७. धनख - धनुष । टकारव - धनुष चढानेसे होने वाली प्रत्यचाकी ध्वनि । कीधौ -
 किया । गणणियौ - गुजायमान हुआ । नाद - ध्वनि, आवाज । अविद्याटौ - युद्ध,
 समर, योद्धा, वीर । नरसिघ - नृसिंहावतार । जाण - मानो, जैसे । खभ - स्तम्भ ।
 फाटौ - फटा, विदीर्ण हुआ ।

१०८ अग्र - अगाड़ी । दुरती - दूर । भारथ - महाभारत । भती - प्रकार, भाति ।
 भटके क्रोध भाल - क्रोधाग्नि भडकी । घुवि - क्रोधपूर्ण होकर । भूमौ - पृथ्वी पर ।
 अरक - सूर्य । थाभे - रोक कर । ऊभौ - खडा ।

१०९ छायाँ - आच्छादित हो गया । गयण - आकाश । रभ - अप्सरा । विखमी - विषम,
 भयंकर । पाखणी - गिट्ट, चील आदि मासाहारी पक्षी ।

वावन^१ वीर^२ नचण^३ बहवहिया^४ ।
 डैरू जटी चंड डहडहिया^५ ॥ १०६
 घर अवर^६ रज डबर^७ अधारा ।
 जोगण^८ करि चवसठि^९ जैकारा ।
 आतसवाण^{१०} चिला मभि आणै ।
 तेज अमोघ स्रवण लगि^{११} ताणै ॥ ११०
 छोडे भूप दास खळ छोडै ।
 जजर निहाव वजरचै^{१२} जोडै ।
 छहुवा सर चहुवैवळ^{१३} छूटै ।
 तीड अनेक जाणि दळ तूटै ॥ १११
 वह^{१४} नीसरै सिलह घट वूडै^{१५} ।
 अहिवहौ^{१६} जाण^{१७} परा लग^{१८} ऊडै ।

१ ख वावन । २ ग. वीर । ३ ख नचह । ४ ख. बहवहिया । ग बहवहिया ।
 ५ ख महडहिया । ग डहडहिया । ६ ख अवर । ७ ख डबर । ८ ख ग जोगणि ।
 ९ ख चवसठ । १० ग. वाण । ११ ख लग । १२ ग वजरचौ । १३ ग चहुवे
 वळ । १४ ग वहौ । ख वहौ । १५ ख वूडै । १६ ख. वहौ । १७ ख ग जाणि ।
 १८ ख ग लगि ।

१०६ नचण - नाचनेको । बहवहिया - उमंगित हुए, हर्षित हुए, उत्कठित हुए । डैरू - डमरू
 नामक वाद्य । जटी - महादेव । चंड - चंडी, दुर्गा अथवा प्रचंड । डहडहिया -
 प्रसन्न हुए, हर्षित हुए ।

११० घर - पृथ्वी । अवर - आकाश । रज - घूलि । डबर - घना समूह, ढेर । जोगण -
 रणपिशाचिनी देवी, योगिनी । चवसठि - चौसठ । जैकारा - जय-ध्वनि । आतस-
 वाण - अग्नि-वाराण । चिला - प्रत्यचा । मभि - मध्य, मे । आणै - लेते है, लाते हैं ।
 अमोघ - निशाने पर ठीक पहुँचने वाला, अचूक, अव्यर्थ । स्रवण - श्रवण, कान ।
 ताणै - खींचते है ।

१११ जजर - यमराज, भयकर । निहाव - प्रहार । वजरचै - वज्रके । जोडै - समान,
 बराबर । सर - वाण । चहुवैवळ - चारो ओर । तीड - टिड्डी । जाणि - मानो ।
 दळ - समूह ।

११२ वह - बहुत । सिलह - शस्त्र, अस्त्र । घट - शरीर । वूडै - फूटते है, छिदते है ।
 अहि - सप । वहौ - बहुत । जाण - मानो । परा - पख ।

सर औसर^१, बूठौ^२ घण सारां ।
 हटके हेकण पाच^३ हजार ॥ ११२
 चलि हस कितां किता तह चाली ।
 खहता हुवा तँडी-रव^४ खाली ।
 आपहुता^५ नैडा खळ आया ।
 जिण वेळा^६ जळ मत्र जगाया ॥ ११३
 उभळे नीर पताळां^७ एहा^८ ।
 जळनिध^९ प्रबळ^{१०} घटा घण जेहा ।
 राजा दास कुसळहू रहिया^{११} ।
 वैरी^{१२} सकळ सुजळ महि^{१३} वहिया^{१४} ॥ ११४
 बौह^{१५} जळ खेडि तुवर^{१६} डूवाए^{१७} ।
 कमध तेणि जळखेडि कहाए^{१८} ।
 आयौ समर जीप^{१९} इम आरिख ।
 सभणविनोदहूत^{२०} पचम सख ॥ ११५

१ ख ग. वीसर । २ ख बूठौ । ३ ख ग पच । ४ ख ग नडी । ५ ग. आपहुते ।
 ख आपहुत । ६ ग. वेळा । ७ ग. पातालां । ८ ग. ऐहा । ९ ख ग जलनिधि ।
 १० ख प्रबल । ११ ख ग. रहिया । १२ ग बैरी । १३ ख ग. मभि । १४ ख
 वहीया । ग वहीया । १५ ख. वहौ । ग. वही । १६ ख तूवर । १७ ख डूवाए ।
 ग डूवाए । १८ ग कहाए । १९ ख ग जीपि । २० ख सजलविनोद । ग सभण
 विनोद ।

११२. औसर - वर्षना क्रिया या वर्षा । बूठौ - वर्षा । घण - बहुत । सारां - शस्त्रो,
 तलवारी ।

११३. हस - प्राण । किता - कितने । खहता - युद्ध करते हुए । तडी-रव - तरकश, तूणीर ।
 नैडा - निकट । खळ - शत्रु । जिण - जिस । वेळा - समय । जळ मत्र - जल
 वरमानेका मत्र ।

११४. उभळे - उमट कर । पताळां - पातालोसे । एहा - ऐसा । जळनिध - समुद्र, सागर ।
 घण - मेघ, बादल । जेहा - जैसा । महि - मे । वहिया - बह गये ।

११५. बौह - बहुत । खेडि - बहा कर । डूवाए - डूवो दिये । तेणि - तिससे । जळखेडि =
 जळखेडिया - राठीडोके प्रमुख तरह वशोमेने एक वश । समर - युद्ध । जीप - जात
 कर । आरिख - समान । सभणविनोदहूत - सजन विनोद नामक राजासे । पचम -
 पाचवी । सख - शाखा ।

राजा पुंजरा छठा पुत्र पदमरी वरणण

छठौ नरेस पूज सुत छाजै ।
 राजा पदम उडीसै राजै ।
 धरपति रूप इसौ प्रभु^१ धरियो^२ ।
 अनग जाण^३ दूजौ अवतरियो^४ ॥ ११६
 जिण हिज^५ वार^६ तेजमणि जादव ।
 धर बुगलाण^७ पुरी नव लाधव ।
 इम^८ निसि सुकळ वाग^९ नृप^{१०} आए^{११} ।
 विमळ^{१२} चद्रका^{१३} साज वणाए^{१४} ॥ ११७
 तर गुल डवर^{१५} रूपमै तारा ने
 विहद^{१६} सिंगार कोध जिणवारा^{१७} ।
 रूपे तंत पेच अनुरागी ।
 वेलि^{१८} रूपमे तरा विलागी^{१९} ॥ ११८
 *फळ बौह^{२०} फूल रूपमे फबिया^{२१} ।
 देखे प्रभा नखित्रगण दबिया^{२२} ।*
 तबू^{२३} अनेक रूपमे^{२४} तणिया^{२५} ।
 वसतणा वे रूपम वणिया ॥ ११९

१ ख प्रभु । २ ख ग धरियो । ३ ख ग जाणि । ४ ख ग अवतरियो । ५ ख ग हीज । ६ ख ग वार । ७ ख वृगलाण । ८ ख ग इक । ९ ग वाग । १० ख ग नृप । ११ ग आये । १२ ग विमल । १३ ख ग चद्रिका । १४ ग वणाये । १५ ख ग डमर । १६ ग विहद । १७ ग वारा । १८ ख वेल । ग वेल । १९ ग विलागी । २० ख वही । ग वही । २१ ख ग फबिया । २२ ग दबिया । २३ ग तबू ।

*ये दो पक्तिया ख प्रतिमे नही हैं ।

२४ ग मै । २५ ग तणीया ।

११६. छाजै — शोभा देते है । पदम — पूजका छटा पुत्र पदम । राजै — राज्य करता है, शोभा-यमान होता है । धरपति — राजा । इसौ — ऐसा । धरियो — धारण किया । अनग — कामदेव । जाण — मानो, जैसे । दूजौ — दूसरा । अवतरियो — अवतार लिया हो ।

११७ निसि — रात्रि । सुकळ — शुक्ल । विमळ — उज्ज्वळ । चद्रका — चादकी रोशनी, चद्रिका ।

११८ तर — तरु, वृक्ष । गुल — फूल, पुष्प । विहद — बहुत, अपार । कीध — किया । जिण-वारा — जिम समय । तरा — वृक्षो । विलागी — लिपट गई, छा गई ।

११९ बौह — बहुत । फबिया — शोभायमान हुए । प्रभा — कान्ति, शोभा । नखित्रगण — उडुगरण, तारासमूह ।

तास कनात अनेक तणाए^१ ।
 विमळ सिमान वितान^२ वणाए^३ ।
 चिग पड़दामू पाल चमकै ।
 दामण^४ जाण^५ सिळाउ^६ दमकै ॥ १२०
 छापा रोस जरीरौ सरसतां छजि* ।
 तारा धर ऊगा किर नभ^७ तजि ।
 दुति वहौ^८ सरू रूपमे डंमर^९ ।
 मदन फौज नीसाण मनोहर ॥ १२१
 तरि तरि तार रूप बौह^{१०} तुररा ।
 उदै उछाह जाण^{११} नृप^{१२} उररा ।
 छौगा ओप^{१३} दुती इम छांजै ।
 राजा^{१४} जाण^{१५} कोट^{१६} चद राजै ॥ १२२
 चौकी^{१७} रूप पिलग चढाए^{१८} ।
 विमळ^{१९} पुहप^{२०} घण सेज विछाए^{२१} ।

१ ग. तणाये । २ ग. वितान । ३ ग. वणाये । ४ ख. ग. दामिणि । ५ ख. ग. जाणि ।
 ६ ख. ग. सिळाव ।

*ख और ग प्रतियोमे यह पक्ति निम्न प्रकार है—

छापा जरीरौ सरस ता छजि ।

७ ख. ग. किरि । ८ ख. वहौ । ९ ख. डबर । १० ख. वहौ । ११ ख. ग. जाणि । १२ ख. ग. नृप । १३ ख. ग. वोप । १४ ग. राका । १५ ख. काजि ।
 १६ ख. ग. कोटि । १७ ख. ग. चवकी । १८ ग. चढाए । १९ ग. विमळ । २० ख. पहौ । ग. पहोप । २१ ग. विछाये ।

१२०. वितान - चदौग्रा । चिग - वाम या सरकडोकी तीलियोका वना परदा, चिलमन ।
 पड़दारू - मंजावट, सज्जा, चित्रकी महीन रेखाएँ आदि, पर्दाजि । पाल - तंबू, शामि-
 याना । दामण - दामिनी, विजली । जाण - मानो, जैमे । सिळाउ - विजलीकी
 दमक । दमकै - चमकते हो, दमकते हो ।

१२१ छापा - ठप्पे या मुहरमे दवा कर टाला हुआ चिन्ह । धर - पृथ्वी । किर - मानो,
 जैमे । नभ - आकाश । तजि - छोड़ कर । नीसाण - ऋडा, ध्वजा ।

१२२ छौगा - अवतंस । दुती - द्युति, काति । छांजै - शोभा देती है ।

१२३. विमळ - उज्ज्वल, न्यच्छ । पुहप - पुष्प, फूल । सेज - शय्या ।

सेभ पहुप प्रफुलित इम सोहै ।
 मदन वसत^१ इंद्र मन मोहै ॥ १२३
 विध^२ इण^३ सेभ अनेक विराजै^४ ।
 लखि दुति फेण खीरसर लाजै ।
 आगळि वहै^५ प्रवाह अथागा ।
 भळहळ सुजळ नदी चद्रभागा ॥ १२४
 हँस बोलै^६ खेलै ससि हसी ।
 विगसै^७ कमळ घणा चद्रवसी^८ ।
 जोत^९ वाग^{१०} भळकै मिळ^{११} नदि जळ ।
 चमकै मंगर^{१२} उछळै चचळ^{१३} ॥ १२५
 मल्हपै किर^{१४} गिर चढि हेमाळै ।
 चद्रकुमार^{१५} खेल्ह नह^{१६} चाळै ।
 तिण उपवनि^{१७} भोलै^{१८} नदि तीरां ।
 सीतळ मद सुगध समीरां ॥ १२६

१ ग वसंत । २ ख. विधि । ग विधि । ३ ग. इणि । ४ ग विराजै । ५ ग बहै ।
 ६ ख. बोलै । ७ ग विगसै । ८ ग चद्रवंसी । ९ ख. ग जोति । १० ग वाग ।
 ११ ख ग मिळि । १२ ख. ग मकर । १३ ख. वचळ । १४ ख ग किरि ।
 १५ ख. ग चद्रकुमार । १६ ख ग नट । १७ ग उपवनि । १८ ख भोल । ग
 भ

१२३ पहुप - पुष्प, फूल । इम - इस प्रकार । सोहै - शोभा देते हैं । मदन - कामदेव ।
 मन मोहै - मनको मोहित करते हैं ।

१२४. लखि - देख कर । दुति - द्युति । फेण - फेन । खीरसर - क्षीरसागर, क्षीरसमुद्र ।
 आगळि - अगाडी । अथागा - अप्पार । भळहळ - देदीप्यमान, उज्ज्वल । सुजळ -
 श्रेष्ठ जल । चद्रभागा - हिमालयके शिखर चद्रभागसे निकलने वाली एक नदी जिसका
 दूमरा नाम चिनाव भी है ।

१२५. विगसै - प्रफुल्लित होते है, विकसते हैं । जोत - ज्योति । भळकै - चमकता है ।
 मगर - घडियाल नामक प्रमिद्ध जलजतु । चचळ - मछली, मछी ।

१२६. मल्हपै - क्रुदते है, छलाग मारते है । किर - मानो । गिर - गिरि, पर्वत । चढि -
 चढ कर । हेमाळै - हिमालय पर्वत । खेल्ह - क्रीडा । चाळै - उमगमे । तिण -
 उम । उपवनि - वाग, वाटिका । भोलै - पवन-प्रवाह, बहार । तीरां - किनारा, तटो ।
 समीरा - पवन ।

चादर हौज फुहार नीर चलि ।
 अमृत नदी आय^१ किर^२ ऊभळि^३ ।
 रजत^४ सुजळ केइक अतरामै^५ ।
 केइक होद^६ भरचा^७ कुमकुम्मै^८ ॥ १२७
 जगमग जोति^९ उदोत उजासी ।
 अरध सरद निस^{१०} पूरण स्वासी^{११} ।
 राजै तठै तेजमणि राजा ।
 वाजै^{१२} तठै^{१३} अनोपम वाजा^{१४} ॥ १२८
 गायण^{१५} तठै करै^{१६} नृत^{१७} गावै ।
 लावण^{१८} बाणि^{१९} अनेक लगावै ।
 छक छौह^{२०} रूप जोवनां^{२१} छाका ।
 पुहपातणी^{२२} वणी^{२३} पीसाका ॥ १२९
 चचळ केक^{२४} करै नृत^{२५} चाळा ।
 वार^{२६} तेर^{२७} वरसा^{२८} मझि बाळा^{२९} ।

१ ख आई । ग आइ । २ ख ग किरि । ३ ख. ग उभळि । ४ ख ग रजित ।
 ५ ख. ग अंतरमै । ६ ख ग होद । ७ ख ग भरीया । ८ ख ग कुंमकुमै ।
 ९ ख ग जेति । १० ख. ग निसि । ११ ख. ग. वासी । १२ ख वाजै १३ ग.
 जठै । १४ ग वाजा । १५ ग. गायणी । १६ ख गयण । १७ ख. ग नृत ।
 १८ ख ग लावनि । १९ ख वाण । ग वाण । २० ख वहाँ । ग वहाँ । २१ ख.
 जोवना । २२ ख ग पहौपातणी । २३ ग वणी । २४ ख. केइक । ग केईक ।
 २५ ख ग नृत नृत चालै । २६ ख. ग वार । २७ ग वरसां । २८ ख वाला ।

१२७ चादर — जनकी चौडी धारा जो कुछ ऊपरसे गिरती हो । फुहार — पानी उछालनेका
 एक यंत्र या इस यंत्रसे उछलने वाले जलकण, फव्वारा । किर — मानो । ऊभळि —
 उमडी । रजत — शोभा देता है । केइक — कई । अंतरामै — छेदोमे, इत्रमे । कुमकुम्मै —
 केनर, कुमकुम, कुमकुमा ।

१२८ उदोत — उदय । उजासी — प्रकाश । निस — रात्रि । पूरण स्वासी — पूर्णमासी ।
 तठै — वहा । अनोपम — अनुपम । वाजा — वाद्य ।

१२९. गायण — गाने वाली, वेद्या । नृत — नृत्य, नाच । लावण — गायन विशेष । जोवनां —
 यौवन । छाकां — पूर्ण । पुहपातणी — पुष्पोकी, फूलोकी ।

१३०. चंचळ — स्त्री, नर्तकी । नृत चाळा — नृत्यके विविध भेद, नाच । वार' — वारह ।
 तेर' — तेरह । मझि — मे । बाळा — स्त्री ।

तन पवसाक^१ जरी महताबी^२ ।
 फवि चीरा किलगी^३ सिर^४ फावी^५ ॥ १३०
 चमकै रतन पेच चीरांरा ।
 हार मुकत भूखण हीरारा ।
 के उघटंत नचत के कामणि ।
 दमकै घटा उजळ जिम दामणि ॥ १३१
 अग सोलिमा^६ कनिक^७ उणहारै^८ ।
 सोळ वरस^९ वय^{१०} सोळ सिंगारै ।
 नूत^{११} पलंग^{१२} रुच लावै नूपर ।
 उरप तिरप जंग बाजी^{१३} ऊपर ॥ १३२
 हावभाव लावै^{१४} मद हासा ।
 त्रेवट आट^{१५} करंत तमासा ।
 सोभा रूप गांन नूत^{१६} सोहै ।
 महीप^{१७} किसू^{१८} इद्र मन मोहै ॥ १३३

१ ख ग पौसाक । २ ख महताबी । ३ ख. ग. कलगी । ४ ख ग. सिरि । ५ ख फावी । ६ ख ग. सोलिमां । ७ ख ग. कनक । ८ ख ग उणिहारे । ९ ख वरस । १० ख ग वय । ११ ख. ग नूत । १२ ख. ग पिलंग । १३ ख वाली । १४ ख ग लाव । १५ ख ग आड । १६ ख ग नूत । १७ ख. ग. पहपति । १८ ख ग किमु ।

१३०. तन—शरीर । पवसाक—पीशाक । जरी—सोने-चादीके तार जिन पर सुनहरा मुलम्मा हो । महताबी—सोने-चादीके तारोंसे बना हुआ कपडा, जरबपत । फवि—शोभायमान हो कर । चीरा—पगडी, उष्णीष । किलगी—सिरका आभूषण विशेष ।
 १३१. पेच—पगडीकी लपेट, पगडीका फेरा । चीरारा—पगडियोंके । मुकत—मोती । भूखण—आभूषण । उघटत—ताल देना, सम पर आना । नचत—नृत्य करते हैं । कामणि—कामिनी, स्त्री । दमकै—चमकता है । जिम—जैसे । दामणि—विजली ।
 १३२. सोलिमाँ कनिक—सोलह वार, तपा कर साफ किया हुआ स्वर्ण या सोना । उणहारै—अनुहार, समान । वय—आयु । पलंग—पैरोको इस तरह चलाना और घूघरोसे ऐसी आवाज निकालना मानो पानीका बहाव आ रहा हो, प्लावन हो रहा हो, प्लव-गति । उरप—नाचते-नाचते पद (पैर)को अरु (जाघ) पर लेना । इस अदा को उरप कहा जाता है, ऊरुपद् भगिमा । तिरप—पैरोको तिर्यक् (टढे कर के) खडे हो जाना जैसे श्रीकृष्ण खडे होते बताए जाते हैं, निर्यक् पद भगिमा ।
 १३३. त्रेवट—त्रिवट । आट—यह 'अड्डुस्खलति' कहलाती है—पैर को तिरछा फिसलाना । गांन—गायन । सोहै—शोभा देता है । महीप—राजा । किसू—क्या ।

दुति नृत^१ गान एम दरसावै ।
 परी तिया^२ समता नह पावै ।
 गुटका बळ^३ उडतै सिध गयणे ।
 निरखे एह^४ कतूहळ नयणे ॥ १३४
 छकि ऊतरे^५ मोह मन^६ छायाँ ।
 एकणि^७ कुसम सेभ पर^८ आयौ* ।
 पौह^९ नृत^{१०} गान चद्रका^{११} पेखे ।
 दिल^{१२} रीभियौ वाग^{१४} छिवि^{१५} देखे ॥ १३५
 जदि माया निद्राफद^{१६} जडियौ^{१७} ।
 पलक लगी गुटकौ धर पडियौ^{१८} ।
 उणहिज^{१९} सेभ ताम नृप^{२०} आए^{२१} ।
 पेखे सिध गुटकौ^{२२} धर पाए^{२३} ॥ १३६
 ओ^{२४} उठाय एकत^{२५} धरायौ ।
 जठा पछै नृप^{२६} सिद्ध जगायौ ।

१ ख. ग नृत । २ ख तीया । ३ ख वलि । ग वलि । ४ ख ग येह । ५ ग उत्तरे । ६ ग चित्त । ७ ग ऐकणि । ८ ग परि ।

*ये दो पक्तिया ख प्रतिमे नही है ।

९ ख. ग पौहौ । १० ख ग नृत । ११ ख ग चद्रिका । १२ ख ग दिल्ल ।
 १३ ख. ग रीभीयौ । १४ ख वाग । १५ ख ग छिवि । १६ ख ग निद्राफदि ।
 १७ ख ग जडियौ । १८ ख ग पडियौ । १९ ख. ग उणहीज । २० ख ग नृप ।
 २१ ग आए । २२ ख गुटिकौ । ग गुटिकौ । २३ ग पाए । २४ ख ग वो ।
 २५ ग ऐकंत । २६ ख ग नृप ।

१३४ परी - अम्परा । तिया - उन । समता - बराबर, सम्मानता । सिध - सिद्धियाप्राप्त महात्मा । गयणे - आकाशमे । निरखे - देख कर । एह - यह । कतूहळ - कौतूहल । नयणे - नेत्रोमे ।

१३५ पौह - नृप राजा । नृत - नृत्य । गान - गायन । चद्रका - चद्रिका, चादकी रोशनी । पेखे - देख कर । रीभियौ - मोहित हो गया । छिवि - शोभा, सुन्दरता ।

१३६. जदि - जब । निद्राफद - नीदरूपो जाल या फदा । जडियौ - बघनमे डाला, बाधा । पलक लगी - नौद आई । गुटकौ - एक मिद्धि जिसके अनुमार कोई सिद्ध गुटका मुहमे रख लेने पर योगी जहा चाहे वहा चला जा सकता है । उणहिज - उस ही । सेभ - शय्या, पलंग । ताम - वह । धर - भूमि, पृथ्वी । पाए - प्राप्त क्रिया ।

१३७ ओ - वह । जठा पछै - तत्पश्चात् ।

खितपति देख^१ ह्रवौ^२ सिध खीणौ ।
 हाथी जेम महामद हीणौ ॥ १३७
 सिध इम देखि नृपति^३ सुकचाणे^४ ।
 औ^५ गुटकौ दीधौ नृप^६ आणे ।
 सिध कहियौ^७ कहिवा^८ हस काजा ।
 रोभौ^९ हू मांगौ वर राजा ॥ १३८
 कहियौ नृप कारिज सिध कीजे ।
 दत वर मूझ पदमणी दीजे ।
 वदै^{१०} सिद्ध नृप विसवावीसां^{११} ।
 पदमण^{१२} आणू दीह पचीसा ॥ १३९
 ले मुख उडत नाग जिम लुडियौ^{१३} ।
 ओ^{१४} सिध सिंघल दीप दिस^{१५} उडियौ^{१६} ।
 दीप सिंघल पदमण^{१७} दरसाई ।
 आकरखण मत्र पढे उडाई ॥ १४०
 जोजन अरध सिद्ध आगै जिण^{१८} ।
 पाछै वहै^{१९} गयण मगि पदमण ।

१ ख ग देखि । २ ख. ह्रवौ । ३ ख ग नयण । ४ ख ग. सकुचाणे । ५ ख ग वो ।
 ६ ख ग नृप । ७ ख. ग कहियौ । ८ ख ग कहैवा । ९ ख ग रोधौ । १० ग.
 वदै । ११ ग वीसवावीसा । १२ ख ग पदमणि । १३ ख लुडियौ । १४ ख ग वो ।
 १५ ख ग दिसि । १६ ख ग उडियौ । १७ ख ग पदमणि । १८ ख ग. जिणि ।
 १९ ग बहै ।

१३७ खितपति - क्षितिपति, राजा । ह्रवौ सिध खीणौ - योगी हतप्रभ हो गया । हाथी जेम
 महामद हीणौ - जिस प्रकार महामदोन्मत्त हाथी मदहीन हो गया हो ।

१३८ इम - इस प्रकार । देखि - देख कर । नृपति सुकचाणे - राजा भी लज्जित हुआ ।
 दीधौ - दे दिया । आणे - ला कर । रोभौ - प्रसन्न हुआ । हूं - मैं ।

१३९. कारिज - कार्य, काम । मूझ - मुझको । वदै - कहता है । विसवावीसा - पूर्ण
 विश्वास युक्त । पदमण - पद्मिनी । आणू - ले आऊगा । दीह - दिन ।

१४० नाग - सर्प । जिम - जैसे । लुडियौ - मस्तामे शरीरको इधर-उधर हिलाया । दिस -
 तरफ, ओर । उडियौ - उडा । पदमण - पद्मिनी । दरसाई - दिखलाई दी ।
 आकरखण मत्र - आकर्षण मंत्र ।

१४१ जोजन - योजन । जिण - जिस-। पाछै - पीछे । गयण मगि - आकाश मार्गमे ।

जळक्रीडा नूप पदम रमै जदि ।
 तन पदमणि उडती देखे तदि ॥ १४१
 ईख^१ रूप मनि इम ठहराई ।
 भरता एह^२ अवर पित भाई ।
 उडती^३ काकण^४ खोल^५ चलाए^६ ।
 ओ^७ पडियौ^८ नूप^९ आगळ^{१०} आए^{११} ॥ १४२
 चमतकार जण^{१२} हुवौ^{१३} सचेळौ ।
 भाण हुवौ जाणै जळ भेळौ ।
 छत्रपत^{१४} लिये^{१५} काकण^{१६} इम छाजै ।
 वडवानळ^{१७} रवि चंद्र विराजै^{१८} ॥ १४३
 जुधि किणहिक जाता नूप^{१९} जाणै^{२०} ।
 परि^{२१} कंकण पडियौ^{२२} खुलि पाणै ।
 इम ही मन लखि तेज अभावा* ।
 राजा^{२३} अचभ अचभ उमरावां ॥ १४४

१ ग ईषि । २ ग. ऐह । ३ ख उडती । ४ ख ग कंकण । ५ ख. ग खोलि ।
 ६ ग चलाए । ७ ख ग वो । ८ ख ग पडीयो । ९ ख ग. नूप । १० ख ग.
 आगळि । ११ ग आए । १२ ख ग जिणि । १३ ख हुवौ । १४ ख. ग. छत्रपति ।
 १५ ख ग लीयो । १६ ख ग ककण । १७ ख वडवानळ । १८ ग विराजै ।
 १९ ख ग नूप । २० ग भाणै । २१ ख ग परी । २२ ख. ग. पडीयो ।

*ख. और ग प्रतिके अनुसार यह पक्ति निम्न प्रकार है—

इम हिम नग लाषि तेज अभावा ।

२३ ग राभा ।

१४१ रमै — खेलता है । जदि — जब । तदि — तब ।

१४२. ईख — देख कर । मनि — मनमे । भरता — पति । एह — यह । अवर — अन्य । पित — पिता । पडियौ — गिरा । आगळ — अगाडी । आए — आ कर ।

१४३ जण — जिस । सचेळौ — अद्भुत । भाण — सूर्य । जाणै — मानो, जैसे । जळ भेळौ — जलके शामिल । छत्रपत — राजा । काकण — कवन । इम छाजै — इस प्रकार शोभा देता है । वडवानळ — समुद्रकी अग्नि, वाडवाग्नि । रवि — सूर्य । चंद्र — चांद ।

१४४ जुधि — युद्धमे । किणहिक — किसी । परि — अप्सरा । पडियौ — गिरा । खुलि पाणै — हाथमे से खुल कर । अभावा — अपार । अचंभ — आश्चर्य ।

भूपति आयौ पुर विभ्रमियै* ।
 सारगविजै मिळे तिण^१ समियै^२ ।
 आस्त्रीवाद^३ करे इम अक्खौ^४ ।
 राजा किण^५ कारण^६ भ्रम रक्खौ^७ ॥ १४५
 दाखि पडण विध^८ ककण दिखाए^९ ।
 ईख^{१०} जती थानक^{११} निज आए^{१२} ।
 सुरा^{१३} अमी^{१४} तिलवट वळि^{१५} साधे ।
 आधी निस^{१६} भैरव आराधे ॥ १४६
 चाढि छाक मद भख ले चवियौ^{१७} ।
 तवि कथ मुज्झ^{१८} केम तेडवियौ^{१९} ।
 जिम ककण विध भूप जताई ।
 वीर अग्र^{२०} तिम जती वताई ॥ १४७

*ख. और ग. प्रतिके अनुसार यह पक्ति निम्न प्रकार है—

भूप अयो पुर वित वीभ्रमीयै ।

१ ख ग तिणि । २ ख. ग समीयै । ३ ख आश्रीवाद । ग आश्रीवाद । ४ ख. ग अक्खे । ५ ख ग किणि । ६ ग करणि । ७ ख ग रक्खे । ८ ख. ग विधि । ९ ग. दिखाए । १० ग ईषि । ११ ख ग थानिक । १२ ग. आए । १३ ख सुरां । १४ ख अमिष । ग. आमिष । १५ ख वधि । १६ ख. ग. निसि । १७ ख ग चवीयौ । १८ मुझ । ग मुझ । १९ ख ग. तेडवीयौ । २० ख ग अग्रि ।

१४५ पुर - नगर । विभ्रमियै - भ्रमित होकर, पागल । तिण - उस । समियै - समयमे । आस्त्रीवाद - आशीर्वाद । अक्खौ - कहा । किण - किस । भ्रम - भ्रम । रक्खौ - रखा ।

१४६. दाखि - कह कर । पडण - गिरनेको । विध - विधि, ढग, तरीका । ईख - देख कर । थानक - स्थान । सुरा - शराब । अमी - दूध । तिलवट - तिल । वळि - देव विशेषकी उत्सर्ग किया हुआ भक्ष्य पदार्थ । आधी निस - अर्द्ध रात्रि । आराधे - आराधना की ।

१४७. छाक - शराबका प्याला । मद - शराब । चवियौ - कहा । तवि - कह । कथ - दृष्टान्त । मुज्झ - मुझको । केम - कैसे । तेडवियौ - बुलाया । जताई - प्रकट की । वीर - भैरव देन । अग्र - अगाड़ी ।

कहियौ^१ सुणै वीर कुदरत्ती
 भेट^२ जती^३ चिता^४ महपत्ती ।
 जुगति^५ वात हूं कहू तूभ जिम ।
 तू नूप मुहरि^६ वान कहिजे^७ तिम ॥ १४८
 धर वुगलाण^८ तेज छत्रधारी ।
 समे^९ हेक चद्रिका सिंगारी ।
 उण दिन ले पदमणि सिध आंणी ।
 वात कही जिम जुगत^{१०} वखाणी ॥ १४९
 उण^{११} पदमण^{१२} उडती अवरखे ।
 पदम रूप क्रीला जळ पेखे ।
 राजा छवि^{१३} देखे अति रीधी ।
 करण^{१४} भ्रतार^{१५} प्रतग्या कीधी ॥ १५०
 जे विण^{१६} पदम^{१७} राणिया^{१८} जणियौ^{१९} ।
 भाई^{२०} पिता तिके^{२१} स्रव^{२२} भणियौ^{२३} ।
 सुजळि^{२४} तेण^{२५} राळे नूप^{२६} साथे ।
 हथळेवा मिस^{२७} ककण हाथ ॥ १५१

१ ख ग कहीयौ । २ ख ग भेट । ३ ग भती । ४ ख ग चित । ५ ख ग
 जुगति । ६ ख ग मोहरि । ७ ख ग कहजे । ८ ख वुगलाण । ९ ख ग समे ।
 १० ख ग अंथि । ११ ग. उणि । १२ ख ग पदमणि । १३ ख ग छिव ।
 १४ ख कर । १५ ग भरतार । १६ ख ग विणि । १७ ग पदमणि । १८ ख
 ग राणीयां । १९ जणीया । २० ग भाइ । २१ ख जिके । २२ ख श्रव । ग श्रव ।
 २३ ख ग. भणीया । २४ ख. सुजळ । २५ ख ग तेणि । २६ ख ग नूप । २७ ख
 ग मिसि ।

१४८ कहियौ - कहा । भेट - मिटा दे । महपत्ती - राजा । जुगति - युक्ति । हूं - मैं ।
 तूभ - तुभको । मुहरि - मुह, फिर ।

१४९ छत्रधारी - राजा । हेक - एक । चद्रिका - चद्रिका, चादकी रोगनी । सिंगारी -
 श्रु गारयुक्त की । जुगत - युक्ति । वखाणी - वखान की ।

१५०. अवरखे - देख कर । पदम - राजा पदम । क्रीला - क्रीडा । पेखे - देख कर । छवि -
 चुन्दरता, रूप । रीधी - मोहित हुई । भ्रतार - पति । प्रतग्या - प्रतिज्ञा ।
 कीधी - की ।

१५१ जणियौ - जना, जन्म दिया । तिके - वे । स्रव - सव । भणियौ - कहा । सुजळि -
 उम जनमे । तेण - उत । राळे - डाल कर । हथळेवा - पाणिग्रहण ।

लेगी^१ सिध वा त्रिय^१ बुगलाणे^२ ।
 उलट^३ गयी आस्रम^४ आपांणे ।
 सुदर^५ नृप^६ चित्रमहल^७ बसाई^८ ।
 वाग चडिका जेणि वणाई ॥ १५२
 पदमणि तठै तेजमणि भूपति ।
 आतुर गयी^९ मदन सुख आरति ।
 सुदरि दीठ स्त्रिगार^{१०} सोळ सभि ।
 मुरछा आय^{११} पडे उपवन मभि ॥ १५३
 करे कटाछिन नेह सकाजा ।
 रूप छाक^{१२} छकि पडियौ^{१३} राजा ।
 वपु सिर धार स्रोण मे' वूठे ।
 अक^{१४} पहर^{१५} वीतां नृप^{१६} ऊठे^{१७} ॥ १५४
 सुभ मभि असुभ^{१८} लेख विध^{१९} साखै ।
 असुभ सगुन^{२०} प्रथमी^{२१} सह^{२२} आखै ।
 जोतिस सगुन ब्रिहू^{२३} विध जाणै ।
 पोह^{२४} ज्या वरजै^{२५} लेख प्रमाणै ॥ १५५

१ ख ग त्रिय । २ ख बुगलाणै । ३ ग उलटि । ४ ख श्राम । ५ ख सुदरि ।
 ६ ख ग नृप । ७ ख ग. चित्रमदिर । ८ ख ग. वसाई । ९ ख अयो । ग आयौ ।
 १० ख. ग. श्रुगार । ११ ख ग. आइ । १२ ग छाकि । १३ ख ग पडियौ ।
 १४ ग ऐक । १५ ख ग पौहौर । १६ ख ग नृप । १७ ख. ग उठै । १८ ख
 असुर । १९ ख. ग विधि । २० ख ग सुगन । २१ ख ग प्रिथमी । २२ ख ग
 सह । २३ ख ग दुह । २४ ख ग. पहौ । २५ ग वरजे ।

१५२ लेगी - ले गया । वा - उस । त्रिय - स्त्री । आपांणै - अपने ।

१५३ पदमणि - पद्मिनी । तठै - वहा । आतुर - त्वरायुक्त । मदन - कामदेव । दीठ -
 देखी । पडे - गिर गया । उपवन - वाग । मभि - मध्य, मे ।

१५४ कटाछिन - कटाक्ष । नेह - स्नेह, प्रेम । सकाजा - लिए । छाक - मद्य पीनेका
 प्याला । छकि - मदोन्मत्त हो कर । पडियौ - गिर गया । वपु - शरीर । स्रोण मे' -
 रक्तका मेह । वूठे - बरसा । वीता - व्यतीत होने पर ।

१५५ मभि - मध्य, मे । लेख - प्राग्बध । विध - विधि, विवाता । प्रथमी - पृथ्वी, भूमि ।
 सह - सब । आखै - कहते हैं । ब्रिहू - दोनो । विध - प्रकार, तरह । पोह - नृप,
 राजा ।

वसतपचमी करौ^१ विमाहौ^२ ।
 सुध निरदोख वेद विध साहौ ।
 इम ठहराय^३ महल^४ नृप^५ आए^६ ।
 पदमणि तांम महासुख^७ पाए^८ ॥ १५६
 महिल रग पदमणि उदमहै ।
 चौकी जोध हजार चवहै ।
 आखौ वीर सरव^९ विध अहेही ।
 जती कहै नृपसू कथ जेही ॥ १५७
 सुणि कथ पदम सभे दळ साजा ।
 रिण परणण उच्छव^{१०} करि राजा ।
 जटी वीरभद्र घणा जगाया ।
 आठ हजार इसा भड आया ॥ १५८
 भुकती कळ दावानळ भालै ।
 च्यार हजार पायदळ चालै ।
 फवि^{११} अगि सिलह जोम ऊफणिया^{१२} ।
 वीस मयद^{१३} आरोहक वणिया ॥ १५९
 असि धुर जोपि तेज ऊडाणै^{१४} ।
 आगळि सहस रहकळा आणै ।

१ ख ग कीर्ज । २ ख ग वीमाहौ । ३ ख. ग ठहराइ । ४ ख ग महलि । ५ ख ग. नृप । ६ ग आए । ७ ग माहासुष । ८ ग पाए । ९ ख सख । १० ख उच्छव । ग. उच्छत्व । ११ ख फवि । १२ ग ऊफणीया । ख उफणीया । १३ ख ग मयद । १४ ख उडाणे ।

१५६. विमाहौ - विवाह । निरदोख - निर्दोष । वेद विध - वेद विधि । साहौ - लग्न, विवाह, मुहूर्त ।

१५७ उदमहै - आनन्द भोगते हैं । चौकी - रक्षा । जोध - योद्धा । चवहै - चौदह । वीर - भैरव देव । जेही - जमी ।

१५८ पदम - राजा पद्म । उच्छव - उत्सव । जटी - महादेव । इसा - ऐसे । भड - योद्धा ।

१५९. दावानळ - दावानि । भालै - पकडता है । पायदळ - पैदल योद्धाओंका दल । अगि - अर्गरमे । सिलह - अस्त्र-शस्त्र । जोम - जोग । मयद - हाथी, गज । आरोहक - मवार ।

१६०. अमि - घोडा । धुर - अगाही । आगळि - अगाही । रहकळा - घोडो या बैलो द्वारा नीचा जाने वाली तोप विशेष ।

इण तजबीज^१ चढी असवारी ।
 धर बुगलाण^२ धसे^३ छत्रधारी ॥ १६०
 नवलापुरी पुरी इंद्र नोखां ।
 जोए^४ वाग, नदी जळ जोखा^५ ।
 सुपह^६ भडा कथ कहै सनेही ।
 उत्तन करां राजस धर एही^७ ॥ १६१
 इम कहि विढण^८ दीध नूप आयस ।
 दळ हालिया वाग पदमणि दिस^९ ।
 रोस चढे विढिया^{१०} रखवाळा* ।
 अठ छ हजार तेजमिण वाळा ॥ १६२
 आतस दगि भड मंडे अगारा ।
 निहस^{११} पड़े रण तूर नगारा ।
 धर अवर रज धोम अधारे ।
 जोगणि चडी वीर^{१२} जैकारे ॥ १६३

१ ख. तजबीज । २ ख. बुगलाण । ३ ख. धरे । ४ ग. जोए । ५ ग. जोषा ।
 ६ ख ग सुपोहो । ७ ग. ऐही । ८ ग. विढण । ९ ग. दिसि । १० ग. विढीया ।

*ये दो पक्तिया ख प्रतिमे नही हैं ।

रोस चढे विढिया रखवाळा ।

अठ छ हजार तेजमिण वाळा ॥

११ ख निसह । ग निहस । १२ ग. वीर ।

१६०. धसे - प्रवेश किया ।

१६१ नवलापुरी - नवीनपुरी । नोखा - अद्भुत । जोखा - आनन्द, हर्ष । सुपह - राजा, योद्धा । सनेही - स्नेहपूर्ण । उत्तन - निवास, वास । राजस - राज्य । धर - भूमि । एही - ऐसी ।

१६२ विढण - युद्ध । दीध - दी । आयस - आज्ञा । दिस - तरफ । रोस - जोश । विढिया - भिडे, युद्ध किया । रखवाळा - रक्षक, योद्धा ।

१६३ आतस - तोप, बंदूक आदि । दगि - छूटी । भड - वर्षा । निहस - प्रहार, ध्वनि । अवर - आसमान । रज - धूलि । धोम - धुआ । जैकारे - जय-जयकी ध्वनि करते हैं ।

दगि वौह^१ कोहक-वाण^२ दायक्का^३ ।
 सोक कवाण चिला^४ सायक्का ।
 असि धुज सिलह^५ पखर^६ भिदि आवै ।
 पंखा जिका भीजण^७ नह पावै ॥ १६४
 छूटै प्राण पाव नह छूटै ।
 जाजुळि^८ एम^९ दहूं दळ जूटै ।
 वीस सहंस दळ रीस वधाए^{१०} ।
 आरणि जेणि तेजमणि आए ॥ १६५
 हाक निहाव अवर घर^{११} हुवियौ^{१२} ।
 धुवतौ^{१३} समर चौगुणौ धुवियौ^{१४} ।
 पदम हिलै^{१५} क छिलै^{१६} दध^{१७} पाजा ।
 राजाहंत सांमुहौ राजा ॥ १६६

१ ये दो पक्तिया ख. प्रतिमे नही हैं ।

दगि वौह कोहक-वाण दायक्कां ।

सोक कवाण चिला सायक्का ॥

१ ग वही । २ ग कोहक-वाण । ३ ग चिल्ला । ४ ख ग पखर । ५ ख ग सिलह ।
 ६ ग. भीजण । ७ ख जाजुळ । ८ ग एम । ९ ग. वधाए । १० ख. आरण ।
 ११ ग घुर । १२ ख ग. हुवीयौ । १३ ख धुवतौ । १४ ख धुवीयौ । १५ ख ग हलै ।
 १६ ख. ग. छिले । १७ ख ग. दधि ।

१६४ दगि - तोपें झूटी । वौह - बहुत । कोहक-वाण - एक प्रकारकी तोप । सोक - तीरोके
 तेज चलनेकी ध्वनि । कवाण - कमान । चिला - प्रत्यंचाये । सायक्कां - तीरो,
 वाणो । असि - घोडा । सिलह - शस्त्र, अस्त्र-शस्त्र । पखर - घोडेका कवच । भिदि -
 भेद कर, फोड कर । पंखा - तीरके ऊपरका पखोयुक्त वह भाग जो प्रत्यंचा पर चढाया
 जा कर तीर सींचा जाता है ।

१६५. पाव - पैर, चरण । जाजुळि - भयकर । एम - इस प्रकार । दहू - दोनो । दळ -
 नेना । जूटै - भिज्ते है । आरणि - युद्धमे । जेणि - जिसमे ।

१६६ निहाव - ध्वनि । हुवियौ - गुजायमान हुआ । धुवतौ - भयकर रूप धारण करता
 हुआ । समर - युद्ध । धुवियौ - भयकर रूपने हुआ । पदम - राठीड राजा पद ।
 छिलै - मर्यादाके बाहर होना । दध - उदधि, सागर, समुद्र । पाजा - मर्यादा ।
 राजाहंत - राजाने । सांमुहौ - सम्मुख, सामने ।

ऊपर^१ वीस सहस आखाडै^२ ।
 पाच सहंसहू वाग उपाडै ।
 जुटै वागि^३ रावत नृप^४ जौळा ।
 रौळा हेक माहि दो^५ रौळा ॥ १६७
 इम वागा लागा असमाणा ।
 कूता धमक भाट केवाणा ।
 जमदढ खजर अम्होसम्ह जडिया^६ ।
 लूथवथा^७ जेठी जिम लडिया^८ ॥ १६८
 खळ दस सहस अडे^९ दळ खूटा ।
 तीन सहस कमधज भड तूटा ।
 भभकै घाव तडफडै भूमै ।
 घायल हुवा^{१०} किता भड घूमै ॥ १६९
 जादव^{११} जाणि^{१२} कठीर जगायौ ।
 असि आफळे^{१३} तेजमणि आयौ ।
 साबळ जुडे^{१४} जोघ समराथै ।
 मसत पदम वीला^{१५} गज माथै ॥ १७०

१ ख. ग ऊपरि । २ ख आखाड़े । ३ ग वागि । ४ ख ग. नृप । ५ ख. ग. दोय । ६ ख ग जडीया । ७ ख जूथवथा । ग लुथवथा । ८ ख ग लडीया । ९ ख ग पड़े । १० ख हूवा । ११ ग भादवा । १२ ग भाणि । १३ ख ग आफालि । १४ ख ग. जडे । १५ ख ग वाला ।

- १६७ सहंस - सहस्र । आखाडै - युद्धमे, युद्धके मैदानमे । जुटै - भिडते हैं । रावत - योद्धा । जौळा - साथ, युक्त । हेक माहि - एकमे ही । रौळा - युद्ध ।
 १६८ वागा - युद्धमे भिड़े, वीर-गति प्राप्त हुए । असमाणा - आसमान । कूता - भालो । धमक - प्रहार, प्रहारकी ध्वनि । भाट - प्रहार । केवाणा - तलवारो । जमदढ - एक प्रकारकी कटार । खजर - शस्त्र विशेष । अम्होसम्ह - आम्हो-सामने । जडिया - प्रहार किये, वार किये । लूथवथा - गुथमगुथ, मल्लयुद्ध । जेठी - बडा, भीम ।
 १६९ खळ - शत्रु । अडे - भिड कर, लड कर । खूटा - समाप्त हो गये । तूटा - वीर गति प्राप्त हो गये, टूट गये । भभकै - उमडते है । तडफडे - तडफते हैं । भूमै - पृथ्वी पर । किता - कितने ।
 १७० जाणि - मानो । कठीर - सिंह । असि - घोडा । साबळ - शस्त्र विशेष । जुडे - प्रहार करते हैं । समराथै - समर्थ, शक्तिशाली । पदम - राठौड राजा पद्म । गज - हाथी । माथै - पर, ऊपर ।

मल्हपै देखि गयदहूं महपति ।
 गज पर^१ गिरद कठीरतणी गति ।
 ओपम^२ दुती मलैगिर^३ आणै ।
 जळ भूपियौ^४ हणू^५ कपि जाणै ॥ १७१
 जमदढ चच तेजमणि जडिघौ^६ ।
 अरि अहि जाणि गरुड उडि पडिघौ^७ ।
 राजा हणे तेजरा^८ रावत ।
 घण खग भाट पदम नूप^९ घावत ॥ १७२
 वाह पदम खळ पदम विहारै ।
 वाह पदम हथ पदम उचारै ।
 रिण^{१०} घण थाळ मग^{११} जिम रुळिया^{१२} ।
 पडिया^{१३} किता किता खळ पुळिया^{१४} ॥ १७३
 अछरि तेजमिण^{१५} भूप वराए^{१६} ।
 पदमणि पदम भूप वर पाए^{१७} ।

१ ग पर। २ ख. ग ओपम। ३ ख मिलै। ४ ख ग भापीयो। ५ ग हणु।
 ६ ख ग जडिघौ। ७ ख ग पडिघौ। ८ ख ग. तेजरा। ९ ख ग नूप। १० ख.
 ग रण। ११ ख मुग। १२ ख ग रुळिया। १३ ख ग पडिया। १४ ग
 पुलिया। १५ ख ग तेजमणि। १६ ग वराये। १७ ग पाए।

१७१. मल्हपै - छलाग भरता है। गयदहू - हाथीसे। महपति - राजा। गिरद - पर्वत।
 कठीरतणी - सिंहकी। गति - प्रकार। ओपम - उपमा। दुती - दूसरी। मलैगिर -
 मलियागिर। भूपियौ - कूदा, छलाग भरी। हणू - हनुमान। कपि - वानर
 जाणै - मानो।

१७२. जमदढ - कटार विशेष। जडिघौ - प्रहार किया। अरि - शत्रु। अहि - सर्प।
 जाणि - जान कर। हणे - महार कर दिये। तेजरा - राजा तेजमणिके। रावत -
 योद्धा। घण - बहुत। खग - तलवार। भाट - प्रहार। पदम - राठोड राजा पद्म।
 घावत - सहार करता है।

१७३. वाह - प्रहार, या धन्य-धन्यका शब्द। खळ - शत्रु। पदम - राजा पद्म। विहारै -
 संहार करता है। हथ - हाथ। रिण - युद्ध। घण - बहुत। रुळिया - इधर-उधर
 हो गये, बिखर गये। पडिया - वीर गति प्राप्त हुए। किता - कितने। पुळिया -
 भग गये।

१७४. अछरि - अप्सरा। वराए - वरण किया। पदमणि - पद्मिनी। पदम - राठोड राजा
 पद्म। वर - पति।

वधै^१ उच्छाह वजे^२ घण वाजा ।
 रण करि फतै परणियौ^३ राजा ॥ १७४
 धर करि अमल पदम छत्रधारे ।
 सुदरि^४ नवलापुरी सिंगारे ।
 रगमहलि^५ दपति दुति राजै ।
 छक मुसताकि^६ काम रुति छाजै ॥ १७५
 अमर सुजस दत खगि^७ अधिकाई ।
 साख पदमरी बधै^८ सवाई ।
 वास देस करि नाम वचाणा ।
 बुगलाणाहूता^९ बुगलाणा ॥ १७६
 राजा पुजरा सातमा पुत्र अहररौ वरणण—
 सपतम पुज सुजाव सकाजा ।
 राणी सकति अस सुत राजा ।
 अहर नाम कुळचै^{१०} उजवाळौ ।
 बहसै^{११} लीध देस बगाळौ^{१२} ॥ १७७
 पोह^{१३} जिण^{१४} साख नाम प्रगटाए^{१५} ।
 कमध^{१६} अहरहू अहर कहाए^{१७} ।

१ ग. वधे । २ ग वजे । ३ ख ग परणीयौ । ४ ख ग सुदर । ५ ख. रगमहल ।
 ग रगमहिल । ६ ख. ग मुसताक । ७ ख ग खग । ८ ख. वधे । ९ ख बुग-
 लाणाहूत । १० ख. ग कुलचौ । ११ ख ग बहसै । १२ वंगाळौ । १३ ख. ग.
 पहौ । १४ ख जिणि । १५ ख प्रगटाये । ग प्रगटाए । १६ ख ग कमध । १७ ग
 कहाए ।

- १७४ उच्छाह — उत्साह, उमग । घण — बहुत । वाजा — वाद्य । परणियौ — विवाह किया ।
 १७५ अमल — अधिकार । रंगमहलि — कामकेलि-भवन । दपति — पति-पत्नी । दुति —
 काति, दीप्ति । राजै — शोभा देती है । छक — आनद, हर्ष । मुसताकि — उत्कठित ।
 १७६ दत — दान । खगि — तलवार । अधिकाई — विशेषता । साख — शाखा । सवाई —
 विशेष । देस करि — देशसे । वचाणा — पढा गया । बुगलाणाहूत — बुगलाणा स्थानके
 कारण बुगला राठोकी शाखा हुई ।
 १७७ सुजाव — पुत्र । कुळचै — कुलका । उजवाळौ — प्रकाश, उज्ज्वल करने वाला । बगाळौ —
 वगाल देश ।
 १७८ पोह — राजा । प्रगटाए — प्रकट किए । अहरहू — राजा पुजके सातवें पुत्र अहरसे ।
 अहर — राठोडोके प्रसिद्ध तेरह वशोमे से एक वश ।

इणची साखि^१ रीत धरि^२ आदव ।
 जदु नृपहू^३ वागा जिम जादव* ॥ १७८
 राजा पुजरा आठमा पुत्र वासुदेवरो वरणण—
 असटम^४ पुत्र पुज^५ नृपवाळी^६ ।
 वासदेव भूपाल वडाळी ।
 पाट भगत नृप अतर पाखै ।
 राजा धरमवभ^७ हित राखै ॥ १७९
 एक^८ अग्र लखमण^९ अहिनाणै ।
 जेठी^{१०} वधव^{११} पिता जिम जाणै ।
 अग्रज परम प्रीति^{१२} अधिकार्ई^{१३} ।
 भगति करै नव धाम न भाई^{१४} ॥ १८०
 लघु भ्रत^{१५} जिम अभिलाख मु लाधै ।
 सम तेणि दासा तन साधै ।
 उतिम सिनांन^{१६} करावै आणै ।
 पीतावर^{१७} धोता^{१८} वर^{१९} पाणै ॥ १८१

१ ख साख । २ ख ग घर । ३ ग नृप ।

*यह पंक्ति ख प्रतिमे नही है—

जदु नृपहू वागा जिम जादव ।

४ ग अष्टम । ५ ख ग. पूज । ६ ख ग. नृप । ७ ख. धरमवभ । ग. धरमवभ ।
 ८ ख ग एकाग्र । ९ ख ग लखिमण । १० ख ग जेसट । ११ ख वधव ।
 १२ ख ग प्रीत । १३ ग अधिकार्ई । १४ ख. ग निभाई । १५ ख भृति । ग भृत ।
 १६ ख ग सनान । १७ ख. पीतंवर । १८ ख धोत । १९ ग वर ।

१७८ आदव — आदि कालकी । जदु — राजा यदु । नृपहू — नृपसे । वागा — प्रसिद्ध हुए ।
जिम — जैसे ।

१७९ असटम — अष्टम = आठवा । नृपवाळी — नृपका । भूपाल — राजा । वडाळी — बडा,
महान । पाट भगत — राज्य-सिंहासनका भक्त । धरमवभ — राजा पुजके प्रथम पुत्र
धर्मधुरका नाम ।

१८० लखमण — लक्ष्मण । अहिनाणै — समान । जेठी — जेठ । अग्रज — बडा भाई ।
अधिकार्ई — अधिकता ।

१८१ लघु — छोटा । भ्रत — भाई । अभिलाख — अभिलाषा । सम — समय । तेणि — उन ।
दासा तन — दासके नगन ।

१ ज्वे पहराय कनक अरघाणे^१ ।
 अरघण अरक गगजळ आणे ।
 पतंग अरघि नृप^२ सेव पघारे ।
 धाय उठाय खडाऊ^३ धारे ॥ १८२
 सामगरी^४ अग्र धरे सुचारा ।
 साजे^५ सब^६ साधन सोवारा ।
 हर^७ पूजिया^८ पछै^९ नृप चितहित ।
 खडग पात्र जळ पूर धरै खित ॥ १८३
 महिपति^{१०} करै त्रपण^{११} तिण^{१२} मोसरि ।
 कुस मुद्रिका वणाय धरै करि ।
 इम खट वरस कीध सेवा अति ।
 मन सुध ताम रीभियो^{१३} महिपति ॥ १८४
 की वह^{१४} सेव राज हव^{१५} कीजे ।
 मनसुध बधव^{१६} दुरग मागीजे ।
 लखि वड भ्रात वचन अभिलाखे ।
 आप वळे^{१७} प्रतउत्तर^{१८} आखे ॥ १८५

१ ख वरघाणे । २ ख ग नृप । ३ ग षडाऊ । ४ ग. सामग्री । ५ ख. ग सार्ध ।
 ६ ख अत्र । ग अत्र । ७ ख ग. हरि । ८ ग पूजिया । ९ ख ग. पछौ । १० ख.
 ग महिपति । ११ ख ग त्रिपण । १२ ख ग तिणि । १३ ख ग रीभियो ।
 १४ ख. वही । ग वही । १५ ग हव । १६ ख वधव । १७ ग वळे । १८ ख
 ग प्रतिउत्तर ।

१८२ कनक - सुवर्ण, सोना । अरघाणे - अर्घ देनेको । अरघण - अर्घ-पात्र, या अर्घ ।
 अरक - सूर्य, भानु । पतंग - सूर्य, भानु । अरघि - अर्घ देकर । धाय - दौड कर ।
 खडाऊ - काण्टकी पादुका ।

१८३ सामगरी - मामान । अग्र - अगाडी । खित - पृथ्वी ।

१८४. महिपति - राजा । त्रपण - तर्पण । तिण - उस । मोसरि - अरवसर । कुस - दाम ।
 मुद्रिका - वीटी । खट - षट छ । कीध - की । ताम - उस पर, उससे । रीभियो -
 प्रसन्न हुआ ।

१८५ वह - बहुत । सेव - सेवा । हव - अरव । बधव - भाई । दुरग - दुर्ग, गढ । लखि -
 समझ कर । वड - बडा । भ्रात - भाई । अभिलाखे - अभिलाषा की । वळे - फिर ।
 प्रतउत्तर - प्रत्युत्तर । आखे - कहा ।

करू न दरस अंतर इण^१ काया ।
 मो तो चरण सेव गढ माया ।
 भूप कहै धनि धनि धनि भाई ।
 कळजुग^२ मभू^३ सतजुग अधिकार्ई ॥ १८६
 वात इसी तूहीज विचारै ।
 धारण इसी अवर कुण धारै ।
 वधव^४ इक लखमण^५ तू बीजौ^६ ।
 तो सिरखौ^७ वधव नह तीजौ ॥ १८७
 ठहिया^८ तो पिण^९ राज ठिकारै ।
 जगत मूभू^{१०} दिल^{११} उजळ न जाणै ।
 मनि हव वचन लोपसी मोनू ।
 तन^{१२} प्रतवाय^{१३} लागसी तोनू ॥ १८८
 सुणि डम हुकम धारि लीधौ सिर ।
 मानै^{१४} अरज कीध तिण मोसरि ।
 कुळ सूरज^{१५} मो क्रिपा करीजे ।
 दाखू^{१६} जिकौ तिकौ पुर दीजे ॥ १८९

१^० ख ग इणि । २ ख ग कळिजुग । ३ ख ग. मभू । ४ ख वंधव । ५ ग लपमणि । ६ ख बीजौ । ७ ख सारिखौ । ग. सारिखौ । ८ ख ग ठहिया । ९ ख ग विणि । १० ग मुभू । ११ क दल । १२ ख ग. तनि । १३ ख ग प्रतिवाय । १४ ख ग मानै । १५ ख ग सूरज । १६ ग दाषु ।

१८६ मो - मेरे । तो - तेरे । सेव - सेवा । धनि धनि - धन्य-धन्य । मभू - मध्य, मे । अधिकार्ई - विशेषता ।

१८७ धारण - विचार, बुद्धि । अवर - ऊपर, और । वधव - भाई । इक - एक । लखमण - लक्ष्मण । बीजौ - दूसरा । तो - तेरे । सिरखौ - समान, तुल्य । नह - नहीं । तीजौ - तीनरा ।

१८८ ठहियां - ठहर्ने पर । तो - तेरे । ठिकारै - स्थान पर । मूभू - मेरा । मनि - मनमे । हव - अब । लोपसी - लोपेगा, उलघन करेगा । मोनू - मुभूको । प्रतवाय - वह पाप या दोष जो शास्त्रोमे बतलाए हुए कर्तव्योके या नित्य-कर्मके न करनेसे होता है, प्रत्यवाय, पाप ।

१८९ सुणि - सुन कर । लीधौ - लिया । कीध - की । तिण - उस । मोसरि - अबमर । मो - मुभू पर । क्रिपा - कृपा । दाखू - कहू । जिकौ - वह । तिकौ - वह ।

राज कनोज सहित^१ चौरासी ;
 किला पिराग अनै^२ घर कासी ।
 महपति कहै मूस^३ तो मानू ।
 तू मागेस दिऊं^३ गढ तोनू ॥ १६०
 ज्यां विण^४ दुवा राजरी आसा ।
 ह्वै मन मभि^५ तौ दाखि^५ हुलासा ।
 जतू कहै जिण नृप^६ परि जावा ।
 अरिधर मारि खगा अपणावा ॥ १६१
 चित पुर नवौ वसावण चाहै ।
 ओ^७ अभिलाख दाखि^८ ऊमाहै ।
 औ त्रहूवै^९ मै वात उचारी ।
 तहि^{१०} हवि^{११} तूभू रीभू इकतारी ॥ १६२
 अग्रज हूं तो सेव अभ्यासी ।
 पारकेत^{१२} सिवतणी उपासी ।
 इण कजि मूभू नवौ पुर आपौ ।
 सिव सथान^{१३} मो राजस^{१४} थापौ ॥ १६३

१ ख. सहत । २ ख ग सौंस । ३ ख ग दीयू । ४ ग विणि । ५ ख दाष ।
 ६ ख ग नृप । ७ ख ग वो । ८ ख ग दाख । ९ ख ग त्रिहुवै । १० ख ग.
 तवि । ११ ख. ग. हव । १२ ख ग पारकेस । १३ ख ग. सथानि । १४ ख.
 सजस । १५ ख थापौ ।

१६० पिराग - प्रयाग । अनै - और । मूस - शपथ । मागेस - मागेगा । तोनू - तुभूको ।

१६१. दुवा - दूसरे । मभि - मध्य, मे । दाखि - कह । हुलासा - इच्छा, उमग । अपणावां -
 अधिकारमे करें, अधिकारमे करू ।

१६२. नवौ - नवीन, नया । ओ - वह । अभिलाख - अभिलाषा । दाखि - कह कर ।
 ऊमाहै - उत्कण्ठित हुआ । हवि - श्रव । रीभू - पुरस्कार ।

१६३ अग्रज - बडा भाई । हू - मै । तो - तेरी । सेव - सेवा । पारकेत - शिवका एक
 नाम । सिवतणी - शिवका । उपासी - उपासना करने वाला । कजि - लिये ।
 नवौ - नवीन । आपौ - प्रदान करो । सथान - स्थान ।

बधव ग्ररिज^१ सुणै^२ अतुळीबळ^३ ।
 हुकम कीध खग तोलि भळाहळ ।
 दळ सभि लिया सिवपुरी^४ दाछटि^५ ।
 *आवूगिरी^६ पंवारा आछटि ॥ १६४
 स्वा^७ निहकट करे धर आपा ।
 वे सथान^८ तो राजस थापा ।
 अजुगति एह^९ मतौ ऊथपियौ^{१०} ।
 जेठीहूता^{११} कणैठि जपियौ^{१२} ॥ १६५
 कियौ निखेध देख औ^{१३} कूता ।
 हुवै वछ पद रस तो हूता* ।
 आवू गिरंद वडै अधिकावै ।
 इण^{१४} कारण मो चीत न आवै ॥ १६६
 सपत कोस कनवजहू सोहत ।
 मदन विनोद वाग मन मोहत ।
 असट वील^{१५} तर अवर अथाहै ।
 मूरत पारकेस तिण माहै ॥ १६७

१ ख ग अरज । २ ख सुणे । ग. सुणेह । ३ ख अतुळीबळ । ४ ख ग शिवपुरी ।
 ५ ख ग दावटि ।

*ये मात पक्तिया ख प्रतिमे नही हैं ।

६ ग गिरद । ७ ग वा । ८ ग सथानि । ९ ग ऐह । १० ग ऊथपीयो ।
 ११ ग जेठीहूत । १२ ग वीजपीयो । १३ ग इण । १४ ख ग इणि । १५ ख.
 वील ।

१६४ अरिज - प्रार्थना । अतुळीबळ - अतुल्य बलशाली । कीध - किया । भळाहळ -
 देदिप्यमान, चमकदार । सिवपुरी - सिरोही नगरका एक नाम, बनारस या काशीका
 एक नाम । आछटि - पछाड कर, पराजित कर ।

१६५ निहकट - निकटक । धर - भूमि । आपा - प्रदान करू । तो - तेरा । राजस -
 राज्य । थापा - स्थापन करू । जेठीहूत - वडे भाईसे । कणैठि - छोटा भाई ।
 जपियौ - कहा ।

१६७ सपत - मन्त, मात । कनवजहू - कनौजमे । मूरत - मूर्ति । पारकेस - महादेवका
 एक नाम । मोहत - मोहित करता है ।

पसरी मुकति वेल^१ रूपहरी ।
 गगा वहै^२ इसी छवि^३ गहरी ।
 उठै वसाय दीजिये^४ आतुर ।
 पारकेस नामै पारकपुर ॥ १९५
 कहियौ^५ बंधव^६ तेम^७ नृप^८ कीधौ ।
 दुति निज-नगर नगर रुचि^९ दीधौ ।
 वाग निवाण^{१०} अवास वणाए^{११} ।
 लार सहस दस^{१२} गाम^{१३} लगाए^{१४} ॥ १९६
 सुदन खाग उज्जळ जस सधियौ^{१५} ।
 वासुदेव^{१६} नृपरी^{१७} कुळ वधियौ^{१८} ।
 वसि^{१९} पारक सिव साखि^{२०} वधाए^{२१} ।
 कमधज पारक तेण^{२२} कहाए^{२३} ॥ २००

राजा पुजरा नवमा पुत्ररौ वरणण—

जिण नृप पूज^{२४} तणै रवि जोपै^{२५} ।
 उग्रप्रभा नवमौ सुत ओपै ।
 सो सेवै नृप सुबुध^{२६} प्रकासी ।
 सोमभारथी नाम सन्यासी ॥ २०१

१ ग बेलि । २ ख. तहै । ३ ख. ग छवि । ४ ख ग दीजीये । ५ ख ग कहीयो ।
 ६ ख वधव । ७ ख ते । ८ ख ग नृप । ९ ख. ग रुचि । १० ख निवास ।
 ११ ख. ग वणावै । १२ ख तृण । ग त्रण । १३ ख. ग गाव । १४ ग. लगाए ।
 १५ ख ग सधियो । १६ ख वासदेव । १७ ख ग नृप । १८ ख ग वधियो ।
 १९ ग वसि । २० ख ग. साष । २१ ग वधाए । २२ ग तेणि । २३ ग कहाए ।
 २४ ख ग पूज । २५ ग. जोपै । २६ ख सुबुधि । ग सुबुधि ।

१९६ कहियौ — कहा । बधव — भाई । तेम — वैसे । कीधौ — किया । वाग — वाग, वाटिका ।
 निवाण — जलाशय । अवास — भवन । लार — पीछे । सहस — सहस्र ।

२००. सुदन — श्रेष्ठ दिन, श्रेष्ठ समय । जस — यश । सधियो — सिद्ध हुआ । वधियो —
 वृद्धि हुई, बढा । पारक — पारकरा = राठौडोकी प्रमुख तेरह शाखाओमे से एक ।

२०१ उग्रप्रभा — राजा पुजके नवें पुत्रका नाम । ओपै — शोभा देता है । सोमभारथी —
 सोमभारती नामक सन्यासी ।

एक^१ अग्र चित सुध आराधे ।
 सेवा वरस दवादस साधे ।
 सिध^२ रीभे इम वयण कहे सति ।
 मभि गंगा करि^३ धार^४ महीपति ॥ २०२
 इम सुणि वचन नृपत^५ इकतारे ।
 धारा गग वीच कर धारे ।
 फोतकार फण जोर फवाए^६ ।
 अहि^७ पर धर छत्रधर कर आए^८ ॥ २०३
 राजा देखि तरह विकराळे ।
 अहि^९ चित भैचकि दीध उछाळे ।
 चंद्रप्रभा भळके अहि चंचळ ।
 मिळियौ वीच गगजळ निम्मळ^{१०} ॥ २०४
 सिध हसियौ नृप चख सकुचाणे ।
 आतमघात वात चित आणे ।
 आतमघात न करि सिध आखे ।
 राजा सुणि धीरज चित राखे ॥ २०५

१ ख. ग एका । २ ख. सिधि । ३ ख. ग कर । ४ ख. धर । ग. धारि । ५ ख. ग नृपत । ६ ख. फवाए । ग फवाए । ७ ख. ग. अहि । ८ ग. आए । ९ ग. अहि । १० ख. ग. नृमल ।

२०२ आराधे — आराधना की । दवादस — द्वादश = बारह । रीभे — प्रसन्न हो कर । वयण — वचन । सति — सत्य । मभि — मध्य । महीपति — राजा ।

२०३ इम — इस प्रकार । सुणि — सुन कर । नृपत — नृपति, राजा । इकतारे — एक समय । गग — गगा । वीच — मध्य, मे । कर — हाथ । फोतकार — सापके मुहसे निकलने वाली फूँक, फुफकार । अहि — सर्प ।

२०४ देखि — देख कर । तरह — प्रकार । विकराळे — भयकर । भैचकि — भयभीत हो कर । दीध उछाळे — फेंक दिया । चंद्रप्रभा — चादकी रोशनी । भळके — चमका, दमका । निम्मळ — निर्मल, स्वच्छ ।

२०५ चख — नेत्र । सकुचाणे — सकुचित । आतमघात — आत्महत्या । वात — विचार । सिध — सन्यासी । आखे — कहा । धीरज — धैर्य । राखे — रखा ।

धारण तूभ धड़ै नृप^१ धूकै ।
 चक्रिन भ्रम छळहूत^२ अचूकै^३ ।
 तजि^४ अपसोच राख^५ दिल ताजा ।
 रजवट धरम अडिग तू राजा ॥ २०६
 इम सिध वयण सुणे उदमदियौ^६ ।
 वदन^७ करे नरेसुर^८ वदियौ^९ ।
 औ हव वळे तक्षक हुय आवै ।
 पाणहूत तो जाण न पावै* ॥ २०७
 सिध दाखियो^{१०} भळाहळ सूरत ।
 पौरस नृपत^{११} तूभ भरपूरत
 राजा ज तू अवस ठहरावै ।
 अवै^{१२} समे विण^{१३} हाथ^{१४} न आवै ॥ २०८
 किसौ समै हव वेग कहीजे ।
 दाखै नृप^{१५} सिध उत्तर दीजे
 अकळ पथ मग दीह अढारा ।
 ऽवो लहलण^{१६} करि अलप अहारा^{१७} ॥ २०९

१ ख ग. नृप । २ ख ग छलहूत । ३ ग हचूकै । ४ ख तपि । ५ ग राषि ।
 ६ ख ग उदमादीयौ । ७ ग वंदन । ८ ख. सुष । ९ ख वदीयौ । ग वदीयौ ।

*ख. प्रतिमे यह पक्ति इस प्रकार है—

किसीहु संती जाण न पावै ।

१० ख ग दाखियो । ११ ख ग. नृपत । १२ ख अवै । १३ ख. विणि । ग विणि ।
 १४ ग हाथि । १५ ख ग नृप । १६ ग. वीणहलण । १७ ग. आहारा ।

२०६ चक्रिन — सर्प, साप । अपसोच — चिंता । रजवट — क्षत्रियत्व ।

२०७ इम — इस प्रकार । सिध — सन्यासी, महात्मा । वयण — वचन । उदमदियौ — हृषित
 हुआ, उमगयुक्त हुआ । वंदन — नमस्कार । वदियो — कहा । औ — यह । वळे —
 फिर । तक्षक — सर्प । पाणहूत — हाथसे ।

२०८. दाखियो — कहा । भळाहळ — देदीप्यमान, चमकदार । पौरस — शक्ति । अवस —
 अवश्य । ठहरावै — ठहरा देवें ।

२०९. किसौ — कौनसा । समै — समय । हव — अरव । वेग — शीघ्र । दाखै — कहता है ।
 सिध — महात्मा, सन्यासी । अकळ पंथ — अगम्य मार्ग, दुर्गम मार्ग । मग — मार्ग ।
 दीह — दिन ।

जोगणि हिंगळाज इम जोसी ।
 हली^१ चद्रकूप समै वळि होमी ।
 कहियौ^२ जिम जात्रा नृप कीधी ।
 दिठ चद्रकूपतणै मझि दीधी ॥ २१०
 भाळाधोम तेज भळहळियौ ।
 अगन^३ सरूप पनंग ऊछळियौ^४ ।
 जभके नही भयाणक जाणे ।
 पनग जिकौ ग्रहियौ^५ नृप पांणे^६ ॥ २११
 तिण ग्रहता अहिरौ वप^७ तजियौ^८ ।
 छत्रपति हाथि^९ खडग हुय^{१०} छजियौ^{११} ।
 रूप खडग अदभुत दुति राजै ।
 तडित सिळावत्र घोम^{१२} तराजै ॥ २१२
 ईस कडा सुद्रसण^{१३} चक्र ओपम^{१४} ।
 अरध चद्र आकार अनोपम ।
 करण प्रताप विजै जुध कांमौ ।
 नांम चदेल खडग पर नांमौ ॥ २१३

१ ग हलि । २ ख. ग कहीयो । ३ ख ग अगनि । ४ ख ग. उछळीयो ५ ख.
 ग ग्रहीयो । ६ ख जाणे । ७ ख. वत । ८ ख ग तजीयो । ९ ख हाथि ।
 १० ख ग होई । ११ ख. ग छजीयो । १२ ख. जोम । १३ ग सुद्रसण । १४ ख.
 ग वीपम ।

- २१० जोगणि - देवी, दुर्गा । जोसी - दर्शन करेगा । हली - चल कर । कहियो - कहा ।
 जात्रा - यात्रा । कीधी - की । दिठ - दृष्टि, नजर । मझि - मे, मध्य । दीधी - दी ।
 २११ भाळाधोम - अग्निकी ज्वाला, या लपट । भळहळियौ - देदीप्यमान हुआ, चमका ।
 अगन - अग्नि । सरूप - समान, तुल्य । पनग - मर्प । जभके नहीं भयाणक जाणे -
 भयानक समझ कर चौकना मत । जिकौ - वह । ग्रहियो - पकडा । पांणे - हाथमे ।
 २१२ तिण - उस । ग्रहता - पकडने पर । अहिरौ - सर्पका । वप - शरीर । तजियो -
 छोड दिया । छत्रपति - राजा । खडग - तलवार । छजियो - गोभित हुआ । दुति -
 द्युति, काति । राजै - गोमायमान होती है । तडित - विजली । सिळावत्र -
 विजलीकी दमक, दमकके समान । घोम - अग्नि, आग । तराजै - समान ।
 २१३ ईस - महादेव । कडा - बलय । सुद्रसण - सुदर्शन चक्र । ओपम - समान । अनोपम -
 अद्भुत । नांमौ - नाम ।

जिण वांचे^१ उच्छ्व^२ नृप^३ जांणे ।
 आरभ समर करण घख आणे ।
 मोसर उण चंद्रकूप मभारे ।
 आकसमात^४ बाणि^५ उच्चारे^६ ॥ २१४
 अदभुत गति हिंगळाज^७ अवाजा ।
 रटियौ इम सुणियौ^८ जिम राजा ।
 पर त्रिय गमण म्निखा^९ परकासी ।
 ज-दिन एह^{१०} खग ऊप्रमि जासी ॥ २१५
 लडि नृप^{११} दखिणतणी धर लीजै ।
 करण प्रतापहूत जुध कीजै ।
 वाणी^{१२} सकति एम सुणि वाचा ।
 सुपह धरे दुहुवै^{१३} पण साचा ॥ २१६
 आए^{१४} तठै तुरग ऊकढिया^{१५} ।
 चाढण खळा धकै जुध चढिया^{१६} ।
 जळनिध^{१७} तीर आविया^{१८} ज्यारा^{१९} ।
 करण प्रताप कहै हलकारां^{२०} ॥ २१७

१ ग. वांचे । २ ख. उच्छ्व । ग उच्छ्व । ३ ख ग नृप । ४ ख ग आकसमात्र ।
 ५ ख वाणि । ६ ख. उच्चारे । ग. ऊचारे । ७ ख. ग. हिंगुळाज । ८ ख ग. सुणीयौ ।
 ९ ख. ग मृषा । १० ग ऐह । ११ ख ग नृप । १२ ग. वाणी । १३ ख ग
 दुहुवै । १४ ग आऐ । १५ ख ग. ऊकढीया । १६ ख ग. चढीया । १७ ग जळ-
 निधि । १८ ख ग. आवीया । १९ ख ग जारा । २० ख हरकारा । ग हरललकारां ।

२१४ जिण - जिस । वांचे - पढता है । उच्छ्व - उत्सव, हर्ष । समर - युद्ध । घख -
 इच्छा । मोसर - श्रवसर । मभारे - मध्यमे । आकसमात - अकस्मात, अचानक ।
 २१५ अवाजा - आवाज, ध्वनि । रटियौ - कहा । सुणियौ - सुना । जिम - जैसे । पर त्रिय-
 गमण - पराई स्त्रीसे सभोग । म्निखा - असत्य, मृषा । परकासी - कहेगा । ज-दिन -
 जिस दिन । एह - यह । खग - तलवार । ऊप्रमि - ऊपर, आकाशमे । जासी -
 जायेगा ।

२१६ लडि - युद्ध कर । दखिणतणी - दक्षिण की । धर - भूमि । एम - इस प्रकार ।
 सुणि - सुन कर । सुपह - राजा, नृप । दुहुवै - दोनो । पण - प्रण । साचा - सत्य ।

२१७. तठै - वहा पर । तुरग - घोडा । ऊकढिया - निकले हुए (?) । जळनिध - समुद्र ।
 आवियौ - आया । ज्यारा - जद ।

करण प्रताप सुणे दळ^१ कीधा ।
 लडवा^२ कटक सांमुहा लीधा ।
 असी सहंस विकटां असवारां ।
 वाग उपाडि^३ लड़े जिण वारा ॥ २१८
 आतस-बाण^४ दगे नह इतरै ।
 जडिया सेल पमारां जितरै ।
 पाच सहंस कमधज दळ पूरा ।
 सकति प्रताप आहुडै सूरा ॥ २१९
 वीजळ सेल गुरज घण बाजै^५ ।
 गाज त्रवाळ^६ सघण घण गाजै ।
 अरण वभक कोपर धड उरिया^७ ।
 छकिया^८ घाव कटारा छुरियां^९ ॥ २२०
 घड रत वहै घाव^{१०} कर^{११} घूमै ।
 घायल पड़े हौफरै^{१२} घूमै ।
 हद ओपमा^{१३} तेण^{१४} रिख हासां^{१५} ।
 पवन भुलै किर^{१६} फुलै^{१७} पळासा^{१८} ॥ २२१

१ ग दळि । २ ख ग लडिवा । ३ ग उपाड । ४ आतस बाण । ५ ख बाजै ।
 ६ ख त्रवाळ । ७ ख ग उरीयां । ८ ख. ग छकीया । ९ ख ग. छुरीयां । १० ग.
 पाव । ११ ख तर । १२ ख होकरै । १३ ख. वोषमा । ग. वोपमा । १४ ख. ग.
 तेणि । १५ ख ग हास । १६ ख ग किरि । १७ ग फूलै । १८ ख ग पलासं ।

२१८ दळ - सेना, फौज । कीधा - किये । लडवा - युद्ध करनेको । कटक - सेना । सामुहा -
 सम्मुख, सामने । लीधा - लिया । सहंस - सहस्त्र । विकट - जवरदस्त । जिण वारा -
 जिम समय ।

२१९ आतस-बाण - अग्नि बाण । दगे - छूटे । जडिया - प्रहार किये । सेल - भाला ।
 जितरै - जब तक । आहुडै - भिडे, युद्ध किया । सूरा - वीर ।

२२० वीजळ - तलवार । सेल - भाला । गुरज - शस्त्र विशेष । घण - बहुत, मेघ ।
 गाज - गर्जन । त्रवाळ - नक्कारा । सघण - घना, वर्षा । अरण - युद्ध । वभक -
 भडकना । कोपर - कपाल, कोहनी ।

२२१ घड - घट = शरीर । रत - रक्त, खून । हौफरै - तेज या जोगपूर्णा आवाज करते हैं ।
 ओपमा - उपमा । तेण - उसमे । रिख - नारद ऋषि । किर - मानो, जैसे ।
 पळामां - टाकके वृक्षो ।

सहंस पड़े कमधज भड़ सारां ।
 पड़े इकीस सहंस परमारां ।
 चडी वर पाए^१ दळ चढिया^२ ।
 वीस गुणा दुसमण^३ तिण^४ वढिया ॥ २२२
 लटिया^५ अवर धरा नृप^६ लीधी ।
 करण प्रताप मार^७ जय कीधी ।
 पोह^८ सांमद्र खड़ग पाखाळे ।
 अरक वंस विरदा उजवाळे^९ ॥ २२३
 उण खग नाम खेत जुध आवर ।
 दुय पुर रचै चद्री^{१०} चद्रावर^{११} ।
 सामंद तट करि राज समाजा ।
 रिधू तपे तेरह ब्रख^{१२} राजा ॥ २२४
 वर चदेल खग वंस^{१३} वधाया^{१४} ।
 कमधज तेणि चदेल कहाया ।

राजा पुजरा दसमा पुत्र सुबुधिरो वरणण—

पुत्र दसमौ चित सुबुधि प्रकासी ।

भूप मुकट मिण^{१५} खळां^{१६} अमासी^{१७} ॥ २२५

१ ग पाए । २ ख ग चढीया । ३ ख दुसण । ४ ख ग. तिणि । ५ ख ग लटीया । ६ ख ग. नृप । ७ ख. ग मारि । ८ ख ग पोहौ । ९ ख ग अजुवाले । १० ख. ग चंदी । ११ ख. ग. चदावर । १२ ख ग ब्रधि । १३ ग. वस । १४ ग बधाया । १५ ख. ग. मणि । १६ ख. ग षेल । १७ ख. अभासी । ग. अभ्यासी ।

२२२. सहस - सहस्र, हजार । पड़े - वीर गति प्राप्त हुए । कमधज - राठौड । भड़ - योद्धा । सारा - सब, तलवारोंसे । तिण - उस । वढिया - वीर गति प्राप्त हुए, कट मरे ।
 २२३ लीधी - ले ली । जय - विजय । कीधी - की । पोह - राजा । सांमद्र - समुद्र । खड़ग - तलवार । पाखाळे - प्रक्षालन किया । अरक वस - सूर्यवश । विरदां - विरुदो, यश, कीर्ति । उजवाळे - उज्ज्वल की ।
 २२४ उण - उस । खग - तलवार । खेत जुध - युद्धस्थल, युद्ध-भूमि । दुय - दो । सामंद - समुद्र । रिधू - अटल, निश्चय । तपे - ऐश्वर्यका उपभोग किया, राज्य किया । ब्रख - वर्ष, साल ।
 २२५ चदेल - राठौडोके प्रमुख तेरह वशोंमे से एक वश । सुबुधि - राजा पुजके दशवें पुत्रका नाम । खळां - शत्रुओ । अमासी - असह्य ।

असि चढि विस^१ वनि^२ रमै अकेली ।
 चौकी दास खवास न चेली ।
 जळ वन जंतु रमता जोवै ।
 हरख उछाह ताम^३ चित होवै ॥ २२६
 सावर^४ सूर वाघ दरसाणा ।
 वहसै^५ तिया सघारे^६ वांणा ।
 प्रेतालुघ^७ माया भळ पेखे ।
 लखि आतसवाजी सम लेखे ॥ २२७
 विण^८ सिर धड् ऊठै विकराळा^९ ।
 चिरत गिणे बाळक जिम^{१०} चाळा ।
 रुख इम^{११} केक^{१२} दीह नृप^{१३} रमतां ।
 भैचकि^{१४} चित नभि देवनि^{१५} भमता^{१६} ॥ २२८
 इम इक निसा अमावस आधी ।
 लाल रुधिर सरिता^{१७} नृप^{१८} लाधी ।
 उभै तटा भळ रीठ अरावै^{१९} ।
 फाटा सीस कमळ बहु^{२०} फावै^{२१} ॥ २२९

१ ख ग. निसि । २ ख वन । ग. वन । ३ ख नाम । ४ ख. सावर । ५ ख ग
 वहसे । ६ ग सिघारै । ७ ग प्रेतालुघ । ८ ख ग. विणि । ९ ग. विकराळा ।
 १० ख. ग सम । ११ ख ग इणि । १२ ख. ग केइक । १३ ख ग. नृप ।
 १४ ग. भैचक । १५ ग देव । १६ ख. निरभता । १७ ख ग सलिता । १८ ख
 ग नृप । १९ ख अरावै । ग आरावै । २० ख वही । ग. वही । २१ ख फावै ।

२२६ असि - अश्व, घोडा । विस - विपम । वनि - वनमे । चौकी - रक्षा । चेली - सेवक ।
 रमता - खेलते हुए । जोवै - देखता है । हरख - हर्ष । उछाह - उत्साह । ताम - उस ।
 २२७ सावर - एक प्रकारका मृग, साभर । सूर - वराह, सूअर । दरसाणा - देखे गये ।
 वहसै - (?) । तिया - उनको । सघारे - सहार किये । प्रेतालुघ - प्रेतोयुक्त ।
 माया भळ - मायाकी अग्नि । पेखे - देख कर । लखि - देख कर । सम - बराबर,
 समान । लेखे - समझा ।
 २२८ विण - विना, रहिन । विकराळा - भयकर, भयावह । चिरत - चरित्र । गिणे -
 समझे । चाळा - खेल, कौतूहल । केक - कई । दीह - दिन । भैचकि - भयभीत
 होकर । नभि - आकाशमे ।
 २२९. इक - एक । निसा - रात्रि । रुधिर - खून, रक्त । सरिता - नदी । लाधी - मिली ।
 भळ - अग्नि । रीठ - प्रहार, युद्ध । अरावै - तोपें । बहु - बहुत ।

फल बहु^१ सेल मछ्रां दुति फावी^२ ।
 मभि जल ग्रीभ^३ तिरै मुरगावी^४ ।
 चच चच जिण^५ अगनि चमकै ।
 दामणि जाणि अनेक दमकै ॥ २३०
 लख लख नाव^६ महिख^७ धड लाधै ।
 सीकोतर तिण पर^८ नृत^९ साधै ।
 कटिया^{१०} सीस अनेक जियाकरि^{११} ।
 निहसै हसै भाळ मुख^{१२} नीसरि ॥ २३१
 सरप वाघ^{१३} गज रीछ सरीखा ।
 तुड कुदाळ मगर सम तीखा ।
 छिलती नदि इसडा वौह^{१४} छाजै ।
 राकस अतक^{१५} सतेसा राजे ॥ २३२
 डायण^{१६} चढी जिया परि^{१७} डकरै ।
 वाणी^{१८} विकट^{१९} भयंकर वकरै ।

१ ख वही । ग वही । २ ख ग फावी । ३ ख ग ग्रीध । ४ ख ग मुरगावी ।
 ५ ख. ग जिणि । ६ ख. ताव । ७ ख ग महष । ८ ग पूर । ९ ख ग नृत ।
 १० ख ग. कटीया । ११ ख जीया । १२ ख मुषि । १३ ग वाघ । १४ ख वही ।
 ग वही । १५ ख ग मृतक । १६ ख डायल । १७ ख ग पर । १८ ग वाणी ।
 १९ ग विकट ।

२३०. फल - शस्त्रकी नोक । सेल - भाला । मछ्रां - मत्स्यो, मछलिया । मभि - मध्य, मे ।
 ग्रीभ - गिद्ध । मुरगावी - मुर्गेकी जातिका एक पक्षी जो पानीमे तैरता है और
 मछलियो को पकड कर खाना है । यह पानीके भीतर बहुत समय तक गोता मार कर
 रह सकता है, जलमुर्गा । चच - चचु, चोच । जिण - जिस । दामणि - विजली,
 दामिनी । जाणि - मानो, जैसे । दमकै - चमकती है ।

२३१ महिख - महिष, भैंसा । सीकोतर - शीकोतरी । तिण - उस । नृत साधै - नृत्य
 करती है । जियाकरि - जिनसे । निहसै - सहार करते हैं । भाळ - आगकी लपट ।

२३२. वाघ - व्याघ्र । गज - हाथी । सरीखा - समान । तुड - मुख । कुदाळ - एक
 प्रकारका शस्त्र या कृषि उपकरण । छिलती नदि - उमडती हुई नदीमे । इसडा -
 ऐसे । वौह - बहुत । छाजै - शोभा देते हैं । राकस - राक्षस । अतक - मरा हुआ ।

२३३. डायण - डायनी, डाकिनी । जिया - जिन । डकरै - जोशपूर्ण या भयावनी आवाज
 करता या करती है । वाणी - आवाज । विकट - जवरदस्त । वकरै - क्रोध करता
 या करती है ।

Handwritten text, mostly illegible due to extreme fading and bleed-through from the reverse side of the page. Some faint characters and symbols are visible, but no clear words or sentences can be discerned.

Handwritten text, mostly illegible due to extreme fading and bleed-through from the reverse side of the page. Some faint characters and symbols are visible, but no clear words or sentences can be discerned.

रोम^१ जटा ऊभा विकराळा ।
 काळा रोम रोम अहि काळा ॥ २३७
 मिणघर फण कीधा चित मोहै ।
 सहस किरण^२ बारह घण सोहै ।
 सुजि पौचिया^३ भुजग दुय^४ सधिया^५ ।
 बाजूबंध^६ भुजग दुय बधिया^७ ॥ २३८
 पाच^८ माळ अहिरी^९ गळ पहरी^{१०} ।
 अविसवि दहू^{११} जनेऊ अहिरी ।
 कट^{१२} मेखळ अहि धरै सकाजै ।
 रिधू पाव^{१३} सांकळ^{१४} अहि राजै ॥ २३९
 अहि गज वाघ वदन उणिहारै ।
 जोगणि^{१५} असट छपन जयकारै ।
 गज अबराळ^{१६} हगा^{१७} अणगिनिया ।
 वाघवरा^{१८} चीर सिर वणिया^{१९} ॥ २४०
 रीछ खाल अगिया^{२०} विकराळी ।
 कसि^{२१} जिम^{२२} कसै भुजगम^{२३} काळी ।

१ ग. रोम । ४ ग किरणि । ३ ख ग पौंचीया । ४ ख ग दोय । ५ ख ग सधिया । ६ ख वाजूबंध । ७ ख बधीया । ग. बधीया । ८ ग पच । ९ ख अहरी । १० ख. ग पहिरी । ११ ख ग । १२ ख ग कटि । १३ ख ग पाय । १४ ख ग सकळ । १५ ग. जोगण । १६ ख अबराल । १७ हरप । १८ ख. वाघवंरां । १९ ख ग वणीया । २० ग अगीया । २१ ग. कस । २२ ख ग जिणि । २३ ख ग भुजगणि ।

२३७ रोम - बाल । ऊभा - खडा । विकराळा - भयकर । अहि - सर्प ।

२३८. मिणघर - मणिधारी सर्प । फण - फन । कीधा - किये हुए । घण - मेघ । सुजि पौचिया - कलाईका आभूषण विशेष । भुजग - सर्प । दुय - दो ।

२३९ अहिरी - सर्पकी । गळ - कंठ । कट - कटि, कमर । मेखळ - करवनी । अहि - सर्प । रिधू - निश्चय, अटल । राजै - शोभा देता है ।

२४० असट छपन - चौसठ । जयकारै - जय-जयकी ध्वनि । अणगिनिया - अपार, असीम । वाघवरा - व्याघ्रचर्म । चीर - ओढनेका वस्त्र ।

२४१ अंगिया - कचुक । विकराळी - भयकर । कसि - कचुक कसनेका फीता । भुजगम - सर्प ।

आभूखण^१ वज्रतणा अथाहै ।
 माथातणा हार गळिमाहै ॥ २४१
 ठहिया^२ भूखण सरव^३ ठिकाणे ।
 अहि कांकळि पुहपा^४ अहिनाणै ।
 चोळ रुधर^५ मद पियै^६ सचाळी ।
 विकट करै नाटक^७ विकराळी ॥ २४२
 पाय^८ गयद तूटा घण पावै ।
 जेणि^९ करे मरदग^{१०} वजावै ।
 मुरळी नळी सख धुनि माथा ।
 हाथी कान ताळ वजि^{११} हाथा ॥ २४३
 असि पग थडा^{१२} सहित उठावै ।
 लघु असता तोरणा^{१३} लगावै ।
 विकट अतकरि तत वजाणै^{१४} ।
 इसडा कडक^{१५} तबूरा^{१६} आणै ॥ २४४

१ ग आभूखणि । २ ख ठहिया । ग. ठहीया । ३ ख मरव । ४ ख ग पहीपा ।
 ५ ख ग रुधिर । ६ ख ग पीवै । ७ ख ग नाटिक । ८ ख ग पाव । ९ ख.
 ग जिणरी । १० ख ग. मृदंग । ११ ख ग. वज । १२ ख ग पीडा । १३ ख.
 ग मोरण । १४ ग वजाणै । १५ ख ग केडक । १६ ख. तबूरा ।

२४१ आभूखण — आभूषण, गहना । वज्रतणा — वज्रके, हीरोके, हीरो जटित । अथाहै —
 अपार । माथातणा — मस्तकके । गळि — कठ, गला ।

२४२. ठहिया — रहे । भूखण — आभूषण । ठिकाण — स्थान पर । अहि — सर्प । कांकळि —
 अस्थि-पजर । पुहपां — पुष्पो, फूलो । अहिनाणै — समान, बराबर, चिन्ह । चोळ —
 लाल । रुधर — रक्त, खून । मद — शराव । सचाळी — चंचल (देवि) । विकट —
 भयंकर । विकराळी — विकराल रूप धारण करने वाली ।

२४३. पाय — पैर । गयद — हाथी । जेणि — जिनको । मरदग — मृदंग । मुरळी — वशी ।
 नळी — पैरमे घुटनेके नीचेकी सीधी हड्डी । माथा — मस्तको । ताळ — वाद्य विशेष ।

२४४ असि — अश्व, घोडा । थडां — शरीर, बड । असता — अस्थिर्ये । अतकरि — आतकी ।
 तंत — तनु । वजाणै — वजाते हैं । इसडा — ऐसे । कडक — कई । तबूरा — वाद्य विशेष ।

तूटा गज सिर करै त्रवाका^१ ।
 दातूसळा वजावै डाका ।
 गत^२ नृत^३ करि सिधू सुर गावै ।
 वयड सूडची भेर^४ वजावै ॥ २४५
 भाव वताय^५ सामुही^६ भाळै ।
 अगनि भाळ विकराळ उछाळै ।
 वीर रीभ^७ इण विध^८ नृप^९ वामा ।
 अहि भूखण बगसत^{१०} इनामां ॥ २४६
 चवसठ मभि वावन^{११} चिरताळा ।
 मदळ्ळकिया^{१२} रमै मतवाळा^{१३} ।
 धड बह^{१४} जठै ऊठि नृत धारै ।
 ऊघट^{१५} सगीत सीस उचारै^{१६} ॥ २४७
 राजा देखि कतूहळ रीधौ ।
 दुगम जांणि चित सोच न दीधौ ।

१ ख त्रवाका । २ ख. ग गति । ३ ख ग नृत । ४ ख ग. भेरि । ५ ग. वताय । ६ ग सामुहां । ७ ख. ग. रीभि । ८ ख ग विधि । ९ ख ग नृत । १० ख ग. बगसत । ११ ख वावन । १२ ख ग छाकीया । १३ ख. ग. मतिवाला । १४ ख वहौ । ग वहौ । १५ ख ग उघट । १६ ख ग ऊचारै ।

२४५ त्रवाका - वाद्य विशेष, नगाडा । दातूसळां - हाथीके बाहर निकले हुए दात । डाका - नगाडा वजानेका डका । गत - नृत्यमे शरीरका सचालन विशेष और मुद्रा । नृत - नृत्य । सिधू - वीर रसका राग विशेष । सुर - स्वर । वयड - हाथी । भेर - भेरी नामक वाद्य विशेष ।

२४६ सामुही - सम्मुख । भाळै - देखते हैं । अगनि भाळ - आगकी लपट । विकराळ - भयकर, भयावह । वीर - भैरव । रीभ - प्रसन्न हो कर । बगसंत - प्रदान करते हैं ।

२४७ चवसठ - चौसठ योगिनियां । मभि - मध्य, मे । वावन - भैरव जिनकी सख्या राजस्थानीमे वावन ही मानी जाती है, यद्यपि सस्कृत साहित्यमे इनकी सख्या चौसठ मानी गई है । चिरताळा - चरित्र करने वाला । मदळ्ळकिया - मदोन्मत्त । रमै - खेलते हैं । मतवाळा - मस्त । बह - बहुत । जठै - जहा पर । नृत - नृत्य । ऊघट - ताल देना, सम पर आना ।

२४८. देखि - देख कर । कतूहळ - कौतुहल । रीधौ - प्रसन्न हुआ, खुश हुआ । दुगम - दुर्गम, भयकर । जाणि - जान कर । दीधौ - दिया ।

धारण वीर ताम इम धरियौ ।
 देखे मूभ भूप नह डरियौ ॥ २४८
 कीधी विगुण^१ भयाणक काया ।
 मायाहूत चौगुणी^२ माया ।
 पवन अगन^३ वाजै^४ परवाई ।
 अगनि सरूप घटा चढि आई ॥ २४९
 सघण ताम वूठौ समराथा ।
 मगळ प्रजळ अमगळ माथां ।
 वव^५ घोर पाहड़ वरडूकै^६ ।
 कोडि - कोडि वीजळ करडूकै^७ ॥ २५०
 धर अवर^८ गिर तरा धिकावै^९ ।
 अगनि विना अनि निजरि^{१०} न आवै ।
 भाळ^{११} देखि दहसत चित भालै ।
 हैवर धर पड़ियौ^{१२} हस हालै ॥ २५१
 तौ पण^{१३} नूप^{१४} नह डरै हेक तिल ।
 देखै हसै उछाह करै दिल ।

१ ख ग विगुण । २ ख चौगुणी । ३ ग अगनि । ४ ग वाजै । ५ ख. वव ।
 ६ ख. वरडूकै । ७ ग. करडूकै । ८ ख. अवर । ९ ख ग धिकावै ।
 १० ख ग नजरि । ११ ख भालि । १२ ख. ग. पडीयो । १३ ख ग पणि ।
 १४ ख ग नूप ।

२४८ देखे - देख कर । मूभ - मुभको । नह - नहीं । डरियौ - डरा, भयभीत हुआ ।
 २४९. कीधी - की । विगुण - द्विगुणित । भयाणक - भयानक, भयावह । काया - शरीर ।
 परवाई - पूर्व दिशाका ।
 २५० सघण - घना । वूठौ - वरसा । समराथां - समर्थ । मगळ - अग्नि । प्रजळ -
 प्रज्वलित हो कर । वं - ध्वनि, आवाज । घोर - भयकर । वरडूकै - वडकते हैं ।
 कोडि-कोडि - करोडो । वीजळ - विजली, तलवार । करडूकै - कडकती है ।
 २५१ धर - पृथ्वी । अवर - आकाश । गिर - पर्वत । तरां - वृक्षो । अनि - अन्य ।
 भाळ - आगकी लपट । देखि - देख कर । दहसत - भय, डर । भालै - धारण
 करता है । हैवर - घोडा । पड़ियौ - गिरा । हस - प्राण ।
 २५२ तौ पण - तो भी ।

१वौ^१ पल गिर नैडौ नृप आणै ;
 जपियौ^२ वीर वीरपण जाणै ॥ २५२
 थट औ सरब^३ तूभ कजि थटियौ^४ ।
 राजा आव वीर इम रटियौ^५ ।
 गह बळ^६ पूर कठीरतणी गति ।
 पळ गिर चढे आवियौ^७ भूपति^८ ॥ २५३
 रटियौ^९ वदण वीर तदि रीधौ ।
 देहित अरध सिंघासण दीधौ ।
 वाह वाह नृप^{१०} वीर उचारे ।
 नर तो सम मै नको निहारे ॥ २५४
 विच^{११} इम^{१२} छळ माया वरताणै ।
 इद्र कुमेर वरुण सक आणै ।
 सो ते गिणी नहि बळ^{१३} साजा ।
 रीधौ हू कारण^{१४} तिण^{१५} राजा ॥ २५५
 दीधौ नाम वीर वरदाई ।
 समर हुसी तौ^{१६} वीर सहाई ।

१ ख. ग वोपल । २ ख. ग जपीयौ । ३ ख सरब । ४ ख ग थटीयौ । ५ ख ग रटीयौ । ६ ख. वल । ७ ख ग आवीयौ । ८ ख ग. छत्रपति । ९ ख ग रटीयौ । १० ख ग नृप । ११ ख. ग. विधि । १२ ख. इण । ग इणि । १३ ख. वल । १४ ख ग कारणि । १५ ख ग. तिणि । १६ ख. सो ।

२५२ नैडौ - निरुद्ध । जपियौ - कहा । वीरपण - शौर्य ।

२५३ थट - वैभव, टाठ, समूह । औ - यह । तूभ - तेरे । कजि - लिये । थटियौ - एकत्रित हुआ । इम - इस प्रकार । रटियौ - कहा । कठीरतणी - सिंहकी । आवियौ - आया ।

२५४ रटियौ - कहा । वदण - नमस्कार । तदि - तब । रीधौ - प्रसन्न हुआ । सिंघासण - सिंहासन । दीधौ - दिया । वाह वाह - शाबास, धन्य-धन्य । तो - तेरे । सम - समान । निहारे - देखा ।

२५५ छळ - कपट । वरताणै - होने पर । संक - भय । हूं - मैं । तिण - उस ।

२५६ वरदाई - वरदान देने वाला । समर - युद्ध । हुसी - होंगे । वीर - भैरवदेव । सहाई - सहायक ।

इम वर दे माया ऊडाई^१ ।
 देस^२ भूमि भूपत^३ दरसाई ॥ २५६
 पोह^४ निज रंगमहल पधराए^५ ।
 ऊप्रमि वीर सथानक^६ आए ।
 वीर नूपत^७ दत खाग वदीतौ^८ ।
 जुडियौ^९ जिता तिता जुध जीतौ ॥ २५७
 भाण तुंवर हणि फौज भंजाई ।
 परवत^{१०} राजधरा अपणाई ।
 पोह^{११} इम वीर^{१२} विजै^{१३} वर पाया ।
 कमध वीर तिण हूत कहाया ॥ २५८

राजा पुजरा ग्यारसा पुत्र भरवरो वरणण—

सुतण पूज दत खाग सनेहौ ।
 एकादसम पुत्र रवि एहौ^{१४} ।
 भरथ नाम रवि कुळ ब्रद^{१५} भारे ।
 धर पूरव^{१६} पट्टण^{१७} छत्र धारे ॥ २५९
 इकसठ^{१८} वरस अवसता आई ।
 वैद^{१९} ताम इम जुगति वताई ।

१ ख उडाई । २ ग. देसि । ३ ख ग. भूपति । ४ ख. ग. पौहौ । ५ ख पवराये ।
 ग पधराए । ६ ख ग मथानिक । ७ ख. ग. नूपत । ८ ग. वदीतौ । ९ ख ग
 जुडीयो । १० ख. परवत । ११ ख. ग. पहौ । १२ ग वीर । १३ ग विजै ।
 १४ ग ऐहौ । १५ ग. ब्रद । १६ ख. पूरव । १७ ख पटण । १८ ख ग इकसठि ।
 १९ ख. वदई । ग. वदई ।

२५६ भूपत - राजा । दरसाई - दिखलाई ।

२५७. पोह - राजा । रंगमहल - रति-क्रीडा-भवन । पधराए - गये । ऊप्रमि - ऊपरसे ।
 सथानक - स्थान । दत - दान । वदीतौ - प्रसिद्ध । जुडियौ - भिडा, युद्ध किया ।
 २५८. हणि - संहार कर । अपणाई - अपने अविकारमे की । वीर - राठोड़ोंके तेरह प्रमुख
 वशोंमे से एक वंश ।

२५९. सुतण - सुत, पुत्र । दत - दान । खाग - तलवार । सनेहौ - स्नेह करने वाला ।
 रवि - सूर्य । एहौ - ऐसा । ब्रद - बिरुद । भारे - समूह ।

२६०. अवसता - आयु, अवस्था । वैद - वैद्य । ताम - उसको । इम - एक । जुगत - युक्ति ।

तत गुर वचन प्रताप सूज^१ तप ।
 वरस पचीस समान करू वप ॥ २६०
 सुणि इम उच्छव^२ करै सकाजा ।
 रटै हुकम स्त्रीमुख^३ इम राजा ।
 अरज तूभ नह^४ कहे^५ उथापू ।
 आघी राज तूभनू आपू ॥ २६१
 विध^६ सब^७ करि जिम ग्रथ वतावै ।
 ओखद^८ ज तू कहै सुजि आवै ।
 सुणे राज दत हुकम सनेही ।
 अरज वयद^९ कीधी फिर^{१०} एही^{११} ॥ २६३
 करण फतै जुध दाळिद^{१२} कापण ।
 अचिरज किसौ राज अधि^{१३} आपण ।
 वस तूभ रघुवर व्रद^{१४} वका^{१५} ।
 लियां^{१६} हूत पहली दिय^{१७} लका ॥ २६३
 जग कामना पूर जग जाहर ।
 धरमवत^{१८} तो बँधव^{१९} धुरधर ।

१ ख ग. तूभ । २ ख. उछव । ग उत्छव । ३ ख ग. श्रीमुखि । ४ ख ग. नद ।
 ५ ख ग कदे । ६ ख ग विधि । ७ ख ग श्रव । ८ ख ग वीषद । ९ ग वयद ।
 १० ग फिरि । ११ ग ऐही । १२ ग दाळिद्र । १३ ख अद । ग अध । १४ ग.
 व्रद । १५ ग वका । १६ ख. लीया । ग लयां । १७ ख. ग. दीय । १८ ग. धरम-
 वंभ । १९ ख वध ।

२६० वप - वपु, शरीर ।

२६१ उच्छव - उत्सव । तूभ - तेरी । उथापू - उल्लघन करू । तूभनू - तुभको । आपू -
 दे हू ।

२६२ ओखद - औषधि । सुजि - वह । वयद - वैद्य । कीधी - की । एही - ऐसी ।

२६३ दाळिद - दारिद्र्य । कापण - नाश करनेको, मिटानेको । अचिरज - आश्चर्य ।
 अधि - आघा । आपण - देनेको । तूभ - तेरा । व्रद - विरुद । वका - वाकुरे ।

२६४. कामना - इच्छा । तो - तेरा । बँधव - भाई ।

मुणै^१ सुजस इण वार लोक मुर^२ ।
 सुरग वाणि कहियौ^३ दानेसुर ॥ २६४
 अवर नकौ पूजै नृप^४ ओडै^५ ।
 जेठी भूप कणेठी जोडै ।
 मागू सुज दीजै चवि स्त्रीमुख ।
 सरब राज सम तूळ मूभ सुख ॥ २६५
 कथ मुणि नृप^६ दाखियौ^७ क्रिपा^८ करि ।
 हवि^९ तू माग कहै सुजि हाजरि^{१०} ।
 एक वार ओखद तत एहौ^{११} ।
 जपियौ^{१२} मै वेखाँ गुण जेहौ ॥ २६६
 दत मौ पछै अभै नृप^{१३} दीजे ।
 कासीवास सदाव्रत कीजे ।
 हरि करि भजन लहूँ पुर हरचौ ।
 पह^{१४} मो राज कोटि सुख परचौ ॥ २६७
 अत वार^{१५} कहि^{१६} अंत उधारसि ।
 तारग^{१७} मत्र समपि सिव तारसि ।

१ ख सुणे । २ ग मुर । ३ ख ग कहीयो । ४ ख ग. नृप । ५ ख. ग वोडै ।
 ६ ख ग नृप । ७ ख दाखियौ । ८ ख ग कृपा । ९ ख ग हव । १० ख हाभरि ।
 ११ ग. ऐहौ । १२ ख. ग. जपीयो । १३ ख ग नृप । १४ ख ग पौहौ । १५ ख.
 वारि । ग वार । १६ ख ग. करि । १७ ख तरिग । ग तारिग ।

२६४ मुणं - कहते हैं । इण - इस । वार - समय । लोक मुर - तीनो लोक । सुरग वाणि -
 आकाशवाणी । दानेसुर - राठौडोके प्रमुख तेरह वशोमे से एक वश ।

२६५ ओडै - समान, बराबर । जेठी - जेठ । कणेठी - कनिष्ठ । जोडै - बराबर । सुज -
 वह । दीजै चवि - कह दीजिये ।

२६६ दाखियौ - कहा । क्रिपा करि - कृपा करके । हवि - अरव । एहौ - ऐसा । जपियौ -
 कहा । वेखाँ - देख लू । जेहौ - जैमा ।

२६७ दत - दान । मौ - मुझको । अभै - अभय । हरचौ - महादेवका । पह - राजा ।

२६८ तारग मत्र - रामका पडाक्षर मत्र जिसे गुरु शिष्यको कानमे कहना है और जिसे
 मनुष्य तर जाता है, तारकमत्र । तारसि - उद्धार करेंगे ।

भिखुक^१ अरज भूपति मन भाए^२ ।
 पुर^३ हर वास सदाव्रत पाए^४ ॥ २६८
 दुज^५ दे आस्त्रिवाद विधि दक्खै^६ ।
 आणौ एह^७ सामग्री अक्खै^८ ।
 बाळ^९ जती दुज एक महाबळ^{१०} ।
 जोवन^{११} पूर क्रिया धम्म ऊजळ^{१२} ॥ २६९
 जप^{१३} गायत्री^{१४} आण^{१५} विध^{१६} जुती ।
 आ^{१७} अधसरद निसा रुद्रवती ।
 गंगा वसौ धार गयणाणी ।
 पतिवरता आणै भरि पाणी ॥ २७०
 जिती भोम^{१८} लीधा जळ जावै ।
 आनन^{१९} राम रटती आवै ।
 सो रुद्रवति जळ गग समाणै ।
 एकण^{२०} कनक कळस मन्नि आणै ॥ २७१

१ ग भेषज । २ ग भाए । ३ ख. पुरहार । ४ ग पाए । ५ ख द्विज । ६ ख
 ग दप्पे । ७ ग ऐह । ८ ख ग. अण्णे । ९ ख वालजती । १० ख महावल ।
 ११ ख ग जोवन । १२ ख ग. उद्धमल । १३ ख ग जपि । १४ ग गायत्रि ।
 १५ ख ग आणै । १६ ख ग विधि । १७ ख ग ओ । १८ ख ग भोमि ।
 १९ ख ग. आननि । २० ग ऐकण ।

२६८ भिखुक - भिखारी ।

२६९ दुज - द्विज = ब्राह्मण । आस्त्रिवाद - आशीर्वाद । विधि - ढग, तरीका । दक्खै -
 कहता है । आणौ - लाओ । एह - यह । सामग्री - सामान । अक्खै - कहता है ।
 बाळ जती - बाल्यावस्थासे ही समयशील, बाल्यावस्थासे ही जितेन्द्रिय । जोवन -
 यौवन । ऊजळ - उज्ज्वल ।

२७०. आण - लाओ । विध जुती - विधियुक्त, विधिपूर्वक । रुद्रवती - (?) ।
 गयणाणी - आकाशकी ।

२७१ आनन - मुख । रटती - रटती हुई । जळ गंग - गगाजल । एकण - एक । कनक -
 स्वर्ण, सोना । मन्नि - मे ।

अग्निहोत्र दिठ वरस इकीसा ।
 रहै निरत तिण^१ ग्रेह रिखीसा ।
 उण मगळ घट कनक अधारे^२ ।
 बाळै^३ चँदण काठ दिन बारै^४ ॥ २७२
 दीपक लोय आच सम दीजे ।
 दिन तेरमै खोल^५ देखीजे ।
 ओपम^६ काच भळक अधिकावौ ।
 मिल^७ जळ जड़ी बधै^८ तिण^९ मावौ ॥ २७३
 भाग त्रगुण^{१०} पंकज पर भेळै ।
 मघई पान छगुण रस मेळै ।
 पाव भाग धरि लवंग प्रमाणै ।
 आधै भाग मृगाअक^{११} आणै ॥ २७४
 इतरी^{१२} वसत कनक घट आणै ।
 सपुट दियै^{१३} कियै^{१४} सहनाणै ।
 बाळ जती पतिवरता वेवै^{१५} ।
 सपत निसा जाग्रण करि सेवै ॥ २७५

१ ख ग तिणि । २ ग आधारे । ३ ख वालै । ४ ख. वारै । ५ ख ग षोलि ।
 ६ ख ग वोपम । ७ ख ग मिलि । ८ ख वधै । ९ ख ग तिणि । १० ख ग
 त्रगुण । ११ ग मृगाक । १२ ख इतनी । १३ ख. दीयी । ग दीयै । १४ ख. ग.
 करै । १५ ख. ग वेवै ।

२७२ अग्निहोत्र - वेदोक्त मन्त्रोसे अग्निमे आहुति देनेकी क्रिया, अग्निहोत्र, एक यज्ञ ।
 निरत - नित्य । तिण - उस । ग्रेह - घर । रिखीसा - महर्षियो ।

२७३. दीपक लोय - दीपक-शिखा । आच - गर्मी, ताप । ओपम - समान । भळक - दमक,
 चमक । अधिकावौ - अधिकता प्रकट करे । तिण - उस । मावौ - मावा ।

२७४ त्रगुण - तिगुना । पंकज - कमल । भेळै - मिला देवे । अगा अक - मृगाक रस ।

२७५ कनक - स्वर्ण, मोना ; सपुट - कपडे और गीली मिट्टीमे लपेटा हुआ वर्तन जिसके
 भीतर कोई रस या औषधि फूकते हैं । सहनाणै - निशान, चिन्ह । बाळ जती -
 बाल्यावस्थासे ही जितेन्द्रिय हो । सपत - सात । निसा - रात्रि । जाग्रण - जागते
 गहनकी क्रिया ।

अनि नर नारि पसू पखि वाळी ।
 वप^१ छाया न पडै विगताळी ।
 करि सिनांन अस्टम^२ दिन काढै ।
 चचळ सोळ मास^३ मभि^४ चाढै ॥ २७६
 कचन^५ खभ^६ निरतर कीजै ।
 दीपक आच^७ फेरि तिम दीजै ।
 अस्ट^८ पहर^९ मभ^{१०} तेज अमावौ ।
 चक्राकार बधै^{११} दळ चावौ ॥ २७७
 सोम^{१२} धूप खेवै सतवारै ।
 एकमुखी रुद्राछ^{१३} अधारै ।
 बीजौ^{१४} धूप खेवि^{१५} तिण^{१६} बेलै^{१७} ।
 मभ^{१८} दाहिणा-वरत सख मेलै ॥ २७८
 मभि^{१९} तिण^{१९} कनक सकति धरि मूरति ।
 आसापुरी^{२०} धूप खेवै अति ।
 इण^{२१} विध^{२२} धूप अघट खेईजै ।
 ताम्रवरण चक्र ह्वै दिन तीजै ॥ २७९
 जदि द्विज पति निरत्र करि जोजन ।
 भूप समापै मनसा भोजन^{२३} ।

१ ग वप । २ ख अष्टम । ग अस्तम । ३ ग मासा । ४ ख चढि । ५ ग काचण ।
 ६ ख ग षाभ । ७ ख ग. आचि । ८ ख ग. अष्ट । ९ ख पौहोर । ग पहोर ।
 १० ख ग मभि । ११ ख वधै । १२ ग सोम । १३ ख ग रुद्राच । १४ ख बीजौ ।
 १५ ग खेवै । १६ ग तिणि । १७ ख ग बेलै । १८ ख ग. मभि । १९ ख ग.
 तिणि । २० ख ग आसावरी । २१ ग इणि । २२ ख ग. विधि । २३ ग भोजन ।

२७६ अनि - अन्य । वप - शरीर । विगताळी - (?) । चंचळ - पारा, पारद ।
 सोळ - सोलह । मास - माशा । मभि - मध्य, मे ।

२७७ कंचन - सुवर्ण, सोना । अमावौ - अपार, खूब ।

२७८ एकमुखी - एक मुखकी । रुद्राछ - रुद्राक्ष । दाहिणा-वरत सख - दक्षिणाव्रत शख ।

२८६. मभि - मध्य, मे । तिण - उस । कनक - सुवर्ण, सोना । आसापुरी - एक प्रकारका
 धूप विशेष । अघट - निरतर, लगातार । ताम्रवरण - ताम्बेके रंगका ।

२८० जदि - जब । द्विज - ब्राह्मण । पति - पक्ति । समापै - प्रदान करे, देवे ।

तोय भूप पग धोयत^१ तखिणा ।
 दस दस मौहर समापै^२ दखिणा ॥ २८०
 आस्त्रिवाद^३ द्विज रीभ उचारै ।
 राजकाज सिध ह्वौ^४ राजारै ।
 भणता इम ह्वै ताम्र बिनांभा^५ ।
 ओ^६ चक्र धरै रूप दुति आभा ॥ २८१
 तजि स्यामता जाणि वपि^७ ताजै^८ ।
 राकापति निकळक छवि^९ राजै^{१०} ।
 ओ^{११} चक्र एण^{१२} रूप वणि आवै ।
 आचहूत पतिव्रता उठावै ॥ २८२
 स्याम गऊचै दूधि^{१३} समोवै ।
 धोवै पछै^{१४} गगजळि^{१५} धोवै ।
 केसरि^{१६} कुकुम चदण चाढै करि ।
 अगार धूप खेवै तिण^{१७} औसरि ॥ २८३
 कोतूहळ नृत^{१८} गान^{१९} करावै ।
 वाजित्र घरि^{२०} घरि नगरि^{२१} वजावै ।

१ ख. घोइत । २ ख. समापौ । ३ ख. ग आश्रिवाद । ४ ग. हौ । ५ ख. ग विनाभा ।
 ६ ख. दो । ग. वो । ७ ख. ग वप । ८ ग. ताम्रे । ९ ख. विलक । १० ख. ग
 विराजै । ११ ख. वो । ग. वौ । १२ ख. एणि । ग. ऐणि । १३ ख. ग. दुधि ।
 १४ ग. पछौ । १५ ग. गगजल । १६ ख. केसर । १७ ग. तिणि । १८ ख. ग.
 नृत । १९ ग. ग्यान । २० ख. ग. घर घर । २१ ख. ग. नगर ।

२८०. तोय - जत्र । तखिणा - तत्क्षिणा । दखिणा - दक्षिणा ।

२८१. आस्त्रिवाद - आशीर्वाद । बिनांभा - काति-रहित । दुति - काति । आभा - चमक ।

२८२. स्यामता - कालापन । वपि - शरीर । राकापति - चद्रमा । छवि - शोभा । राजै -
 शोभायमान हो । आचहूत - हाथसे ।

२८३. गऊचै - गायका । दूधि - दूधमे । समोवै - भिगो देवे । तिण - उस । औसरि -
 अवसर ।

२८४. कोतूहळ - खेल, कुतूहल । नृत - नृत्य । गान - गायन । वाजित्र - वाद्य । घरि घरि -
 घर-घरमे ।

गढपति न्हाय^१ गगजळ^२ गहरै ।
 पीतावर^३ खीरोदक पहरै ॥ २८४
 सहस समपि कपिला इक साथै ।
 हळद दोब चदण दधि हाथै ।
 आवै चक्र निकट ऊमहतौ^४ ।
 किसन प्रदूमन^५ नाम कहतौ ॥ २८५
 वेखे चक्र करै नृप^६ वदण^७ ।
 चाढै हळद दोब दध^८ चदण ।
 पूजे इम दस दिन परमाणै ।
 आतमदिढ लछमण अहिनाणै ॥ २८६
 जो अरथी दस दिन मझि जाचै ।
 समपै तेणि सुदत चित साचै ।
 दसमै दिन चक्र दिये दिखाई ।
 तविया^९ कनक तणी समताई ॥ २८७
 अनग अस वरतै चक्र आए^{१०} ।
 जिणची जोत^{११} तिमर उडि^{१२} जाए^{१३} ।

१ ख ग न्हाइ । २ ख. ग गगजलि । ३ ख पीतवर । ४ ख ग उमहंतौ ।
 ५ ख. ग परदुमन । ६ ख. ग. नृप । ७ ग वदण । ८ ख ग दधि । ९ ख ग
 तवीया । १० ग आए । ११ ख ग. जोति । १२ ख पुजि । १३ ग जाए ।

२८४ गढपति - राजा । न्हाय - स्नान कर । खीरोदक - एक प्रकारका श्वेत वस्त्र विशेष ।

२८५. सहस - सहस्र, हजार । समपि - देकर । कपिला - एक प्रकारकी गाय, गाय ।
 दधि - दही । ऊमहतौ - उत्कृष्ट । कहंतौ - कहता हुआ ।

२८६. वेखे - देख कर । वदण - प्रणाम, नमस्कार । दध - दही । आतमदिढ - आत्मदृढ़ ।
 लछमण - लक्ष्मण । अहिनाणै - समान ।

२८७ अरथी - याचक । मझि - मध्य, मे । जाचै - याचना करे । समपै - देवे । तेणि -
 उसको । सुदत - श्रेष्ठ दान । साचै - सच्चे । तविया - कहा गया । कनक - स्वर्ण,
 सोना । समताई - समानता ।

२८८ अनग - कामदेव । जिणची - जिसकी । तिमर - अंधेरा ।

वज्र देवळ त्रण^१ हाथ वणावै ।
 जिण मभि धरि वज्र सिला जडावै ॥ २८८
 छरहै मास सेत गज छाया ।
 कारण^२ एण^३ कळप ह्वै काया ।
 पट देवळ भिदि जोत प्रकासै ।
 जिम भोडळ मभि दीप उजासै । २८९
 भिदि वज्र सिखर चकर इम भळकै ।
 भीण वदळ^४ मांभळ रवि भळकै ।
 ईख^५ सिला वज्र दूर करावै ।
 उणहिज^६ तरह^७ लियण^८ नृप^९ आवै ॥ २९०
 करि चक्र पूज हेत अधिकारै ।
 धरपति कनक थाळ मभि धारै ।
 उर^{१०} नदनंद प्रदुमन^{११} आराधै ।
 साधन एह^{१२} नखित्र^{१३} पुख साधै ॥ २९१
 सवा टाकि^{१४} जल जदि चक्र वरसै ।
 सो सवाद^{१५} अम्रतहू^{१६} सरसै ।

१ ख ग त्रिण । २ ग. कारणि । ३ ख एणि । ग ऐणि । ४ ग वदळ । ५ ग. ईषि । ६ ख ग उणहीज । ७ ख ग तरै । ८ ख ग लीयण । ९ ख ग नृप । १० ख. ग उरि । ११ ख. ग प्रदुमण । १२ ख एह । ग ऐह । १३ ख नषत्र । ग नक्षत्र । १४ ख ग टाकि । १५ ख सवादि । १६ ख. ग अमृत ।

२८८ देवळ - देवालय । त्रण - तीन । जिण - जिस । मभि - मध्य ।

२८९. सेत गज - श्वेत हाथी । एण - इस । भोडळ - अत्रक । मभि - मध्य, मे । दीप उजासै - प्रकाश करता है ।

२९०. भिदि - भेदन करके । भळकै - चमकता है । भीण - पतला, महीनतम । वदळ - वादल, वारिद । मांभळ - मध्य, मे । रवि - सूर्य । भळकै - चमकता है । ईख - देख कर । उणहिज तरह - उसी प्रकारमे ।

२९१ धरपति - राजा । नदनद - श्रीकृष्ण । आराधै - आराधना करता है । नखित्र - नक्षत्र । पुख - पुष्य नक्षत्र ।

सुजि जळ पियै^१ जरत^२ विण^३ मूरति ।
 मगर पचीस^४ हुवै दिब^५ मूरति ॥ २६२
 जोम अनंग सौ गुणौ जवानी ।
 वप ह्वै कनक सोळिमा वांनी^६ ।
 रवि उगता^७ जिसौ मुख^८ राजै ।
 वारिज प्रफुलति^९ नेत्र विराजै ॥ २६३
 उपर^{१०} जिया^{११} धनूख^{१२} उणिहारै ।
 भमर वंक^{१३} पकति भवहारै ।
 मौसर भमर अहर परवाळक ।
 बिहुवै^{१४} जुलफ जाण^{१५} अहि बाळक^{१६} ॥ २६४
 गिरदै उदै चहुर^{१७} गहराई ।
 अनग जाणि^{१८} परदाज वणाई ।
 चचळ नेत्र कटाछि चलावै ।
 अनंग वाण समता नह आवै ॥ २६५

१ ख ग पीयै । २ ख ग जरठ । ३ ख. विधि । ४ ग पचीसी । ५ ख ग. दिव्य ।
 ६ ग बानी । ७ ख उगता । ग उगतौ । ८ ख ग मुषि । ९ ख ग प्रफुलित ।
 १० ख. ऊपरि । ग. उपरि । ११ ख जीया । १२ ख ग धनुष । १३ ग वक ।
 १४ ख विहुवै । १५ ख ग. जाणि । १६ ख अहिवालक । १७ ग चिहुर ।
 १८ जाण ।

२६२. सुजि - वह । जरत - वृद्धावस्था । मगर पचीस - पूर्ण युवा । दिब - दिव्य ।

२६३ जोम - जोश, उमग । अनग - कामदेव । सौ गुणौ - सौ गुना । जवानी - युवास्वथा ।
 वप - शरीर । कनक - सुवर्ण, सोना । सोळिमा - सोलह वार तपाया हुआ सुवर्ण
 या सोना । वांनी - काति, दीप्ति । रवि - सूर्य । उगता - उदयका । जिसौ -
 जैसा । राजै - शोभा देता है । वारिज - कमल । विराजै - शोभा देते हैं ।

२६४ जियां - जिनके । धनूख - धनुष । उणिहारै - समान । भवहारै - भीहो । मौसर -
 मूछ । भमर - श्याम । अहर - होठें, अघर । परवाळक - प्रवाल, मूगा, विद्रुम ।
 बिहुवै - दोनो । जुलफ - कनपटीके पास वाले बाल, अलक, जुल्फ । अहि - सर्प ।
 गिरदै - गर्दनका पीछेका भाग ।

२६५. चहुर - बाल, केश । गहराई - घनापन । अनग - कामदेव । परदाज - सजावट,
 चित्रकी महीन रेखाएँ, पर्दाज । कटाछि - कटाक्ष । समता - समानता ।

आभा तेणि छांह मभि आवै ।
 दुति धर तिका कनक दरसावै ।
 सनमँध^१ पूजि ठौड़ विणसारी^२ ।
 निरखै सुजि वछै^३ वर नारी ॥ २६६
 इण सोभा वपु^४ तेज - उफाणै ।
 जोवन मसत कठीरव जाणै ।
 द्विज दिनकर जिम विधि कहि दीधी ।
 कायाकळप सौज नूप^५ कीधी ॥ २६७
 चर बहुवै^६ दिस नूपत^७ चलावै ।
 पटभर सेत रग नह पावै ।
 केइक^८ दिन फिरता हिक क्यकर ।
 जोए^९ जग कीधी नूप जाहर ॥ २६८
 उत्तर दिसि^{१०} गिरवर तर आवर ।
 रास्ट कनक सैहर^{११} वरियावर ।
 सुभट लाख दरगाह सकाजा ।
 रुद्रसेन वडगुजर^{१२} राजा ॥ २६९

१ ग सनिमध । २ ख. विधिसारी । ग. विणिसारी । ३ ग वछै । ४ ग वप ।
 ५ ख ग. नूप । ६ ख. ग. बहुवै । ७ ख ग नूपति । ८ ग केइक । ९ ग जोए ।
 १० व दिस । ११ ख. ग सहर । १२ ग वडगुजर ।

२६६ आभा - काति. दीप्ति । तेणि - उस । मभि - मध्य, मे । दुति - द्युति, काति ।
 तिका - वह । कनक - नुवर्ण, सोना । विणसारी - (?) । निरखै - देखता है,
 देखते हैं । वंछै - इच्छा करते हैं । वर - श्रेष्ठ ।

२६७ वपु - शरीर । उफाणै - जोशमे आता है, उमडता है । जोवन - यौवन, जवानी ।
 मसत - मन्त । कंठीरव - सिंह । जाणै - मानो, जैसे । द्विज - ब्राह्मण । दिनकर -
 सूर्य । विधि - ढंग । कहि दीधी - कह दिया ।

२६८ चर - दूत, राजदूत । बहुवै - दोनो । पटभर - हाथी । सेत रंग - श्वेत रंगका ।
 नह पावै - प्राप्त नहीं करता है । केइक - कई । हिक - एक । क्यकर - किकर, अनु-
 चर, दूत । जोए - देख कर । कीधी - किया । जाहर - प्रकट ।

२६९ सैहर - शहर । वरियावर - नगरका नाम । सुभट - योद्धा । दरगाह - दरवार ।
 वडगुजर - एक राजपूत वंश ।

धरिया^१ नृप^२ दत्त खाग विरद धज ।
 ग्रह तिणरै^३ इक रग सेत गज ।
 सुणि नृप सचिव मेल्लिया^४ साचा ।
 वित^५ बहु^६ दियण^७ कहे^८ तिण^९ वाचा ॥ ३००
 आय मिळै बहु^६ कीध इलाजा ।
 रुद्रसेन मानै नह राजा ।
 वाहुडि^{१०} आय मत्री इम वोलै^{११} ।
 तुलि^{१२} मेघा धरि धरि वौह^{१३} तोलै ॥ ३०१
 छळवळ^{१४} कीध प्रगट बहु^{१५} छांनै ।
 रुद्रसेन^{१६} गज दियण^{१७} न मानै ।
 कथ इम मुणे कोप नृप^{१८} कीधौ ।
 दावानळ जाणै घृत^{१९} दीधौ ॥ ३०२
 गाजै घण वाजै त्रवागळ^{२०} ।
 दुगम रूप विमरीर^{२१} सभै दळ ।
 हरख सनेह करे ध्रम हितनू ।
 पट्टण राज दीध प्रोहितनू ॥ ३०३

१ ख ग. धरीया । २ ख ग नृप । ३ ख ग. मेल्लीया । ४ ग वित । ५ ख वहाँ ।
 ग वहाँ । ६ ख ग दीयण । ७ ख. ग कहण । ८ ख ग हित । ९ ख वहाँ ।
 ग वहाँ । १० ख वाहुडि । ११ ख. वोलै । १२ ख. ग तुल । १३ ख वहाँ ।
 ग वहाँ । १४ ग छळवळ । १५ ख वहाँ । ग वहाँ । १६ ख ग रुद्रसेण । १७ ग.
 दीयण । १८ ख ग. नृप । १९ ख ग. घृत । २० ख त्रवागळ । ग त्रवागळ ।
 २१ ग विमरीर ।

३०० दत्त - दान । खाग - तलवार । विरद धज - विरुद-ध्वज । तिणरै - उसके । इक -
 एक । रग सेत - श्वेत रंग । गज - हाथी । सचिव - मत्री । मेल्लिया - भेजे ।
 वित - धन । बहु - बहुत । दियण - देनेको । तिण - उसकी । वाचा - वचन ।
 ३०१ कीध - किये, किया । इलाजा - उपाय । वाहुडि - वापिस । आय - आ कर ।
 ३०२ छांनै - गुप्त । मानै - मानता है । कथ - वृत्तान्त । कीधौ - किया । दावानळ -
 अग्नि, आग । जाणै - मानो । घृत - घृत, घी । दीधौ - दिया ।
 ३०३ घण - मेघ । त्रवागळ - नगाडा । दुगम - दुर्गम, भयकर, जवरदस्त । विमरीर -
 भयकर, जवरदस्त । दळ - सेना । दीध - दे दिया ।

उन्नम^१ तांम वंम उजवाळी^२ ।
 वेद^३-वरमची वंघव^४ वडाळी ।
 धरपति जेणि सीस छत्रधारै^५ ।
 एम^६ प्रतंग्या^७ करे उचारै^८ ॥ ३०४
 न्द्रमेण^९ उण गज मोहरि^{१०} त्याऊं^{११} ।
 वग्न्यावर निज राज वणाऊं ।
 कट्टि डम मिलह मन्त्र नृप^{१२} कमिया^{१३} ।
 यंत्र^{१४} छित्रण^{१५} भुजा ऊनसिया^{१६} ॥ ३०५
 वधि^{१७} भळ त्रोध नयण डम वणिया^{१८} ।
 अगनिहंडे चार्ण^{१९} ऊफणिया^{२०} ।
 मूळ भाह गिडिया^{२१} खळ मारण ।
 वणि उम तप चटे नृप^{२२} वाण ॥ ३०६
 मळहळ पखर मिलह अत्र भालै ।
 हय त्रगवार दीय लख हानै ।
 नीता तेज पराचम महर्न ।
 वरकदाज^{२३} दीय लग्न बहर्न^{२४} ॥ ३०७

१ उन्नम । २ उजवाळी । ३ वेद । ४ वंघव । ५ छत्रधार । ६ एम । ७ प्रतंग्या । ८ उचार ।
 ९ न्द्रमेण । १० गज मोहरि । ११ त्याऊं । १२ नृप । १३ कमिया । १४ यंत्र । १५ छित्रण । १६ भुजा । १७ वधि । १८ वणिया ।
 १९ चार्ण । २० ऊफणिया । २१ गिडिया । २२ नृप । २३ वरकदाज । २४ बहर्न ।

१ उन्नम - उन्नत । २ उजवाळी - उजवाळा । ३ वेद - वेद । ४ वंघव - वंघव । ५ धरपति - धरपति ।
 ६ एम - एम । ७ प्रतंग्या - प्रतंग्या । ८ उचार - उचार । ९ न्द्रमेण - न्द्रमेण । १० गज मोहरि - गज मोहरि । ११ त्याऊं - त्याऊं ।
 १२ नृप - नृप । १३ कमिया - कमिया । १४ यंत्र - यंत्र । १५ छित्रण - छित्रण । १६ भुजा - भुजा । १७ वधि - वधि । १८ वणिया - वणिया ।
 १९ चार्ण - चार्ण । २० ऊफणिया - ऊफणिया । २१ गिडिया - गिडिया । २२ नृप - नृप । २३ वरकदाज - वरकदाज । २४ बहर्न - बहर्न ।

भाथा^१ कटि करगां^२ भलि भाले ।
हेक लाख धानखर^३ हाले^४ ।
जँगी हवद जड़िया^५ जमजाळा ।
पाच हजार गयद पखराळा ॥ ३०८
ज्या पर सिलह ससत्र तन जडिया^६ ।
कळहण जोस चठठती^७ कडिया^८ ।
ओपम^९ नयण धिखतां आरण ।
दोय दोय चडिया^{१०} भड^{११} दारण ॥ ३०९
पच^{१२} एक^{१३} कर वाण^{१४} प्रचडै ।
च्यार च्यार तरकस चवडडै ।
कळहण विकट गिरा सँज कीधा ।
लारा तिण^{१५} आरवा^{१६} न लीधा ॥ ३१०
इम हालिया^{१७} थाट दिस^{१८} उत्तर ।
कमळा नभ रज चडै भयकर ।
एण^{१९} समूह मभ^{२०} अकुळावै ।
पंछी अहि उडता अत^{२१} पावै ॥ ३११

१ ख. गं भाता । २ ख. करणा । ३ ख. ग. धानवधर । ४ क. भाले । ५ ख. ग.
जडीयां । ६ ख. ग. जड़ीया । ७ ख. वठठती । ग. वठठती । ८ ख. ग. कडीया ।
९ ख. वोपम । ग. वीपम । १० ख. ग. चडीया । ११ ख. भय । १२ ख. ग. पाच ।
१३ ग. ऐक । १४ ख. वाण । १५ ख. ग. तिणि । १६ ख. आरवा । १७ ख.
हालिया । ग. हालीयो । १८ ख. ग. दिसि । १९ ग. ऐणि । ख. एणि । २० ख. ग.
सूक्ति । २१ ख. ग. नृत ।

३०८ भाथा - तर्कशो । कटि - कमर । करगा - हाथोमे । धानखर - धनुषधारी योद्धा ।
हवद - हीदा, हाथीका चारजामा । जमजाळा - एक प्रकारकी तोप विशेष, एक
प्रकारकी बडी बंदूक । गयद - हाथी । पखराळा - कवचधारी ।

३०९ कळहण - युद्ध । चठठती - तेज ध्वनि । कडिया - खाने हुए । धिखता आरण -
प्रज्वलित अग्निके समान, क्रोधपूर्ण नेत्र । भड - योद्धा । दारण - दारुण, जवरदस्त ।

३१० कर - हाथ । प्रचडै - प्रचंड । तरकस - तर्कश, भाथा । चवडडै - (?) । लारा -
साथ । आरवा - तोप, सेना ।

३११ थाट - सेना, दल । कमळा - भूमि । नभ - आकाश । रज - धूलि । एण - हिंग्गि ।
मभ - मध्य, मे । पंछी - पक्षी । अहि - सर्प ।

हाक डाक त्रबक^१ धमहमिया^२ ।
 भाखर विकट असटकुल^३ भ्रमिया^४ ।
 कमधज दळ हालता कराळा ।
 दहसत पडै दसै द्रगपाळां^५ ॥ ३१२
 इम गढ निकट विकट थट आया ।
 छपन कोडि जाणै घण छाया ।
 सुजळ^६ जाणि ऊभळै समराथै ।
 समद सात नवसै नदि साथै ॥ ३१३
 अनड^७ लोप तर भँगर अथागा ।
 लडण^८ दुरँग वरियावर लागा ।
 धरपति रुद्रसेन पाटोघर ।
 कियौ^९ विदा चूडामणि कूवर ॥ ३१४
 हाथी हणै वाहि खग हाथै ।
 साठ हजार इसा भड साथै ।
 उरडै थट पौरस अणथाहै ।
 मुहरि^{१०} अराव^{११} कोस त्रण^{१२} माहै ॥ ३१५

१ ख त्रावक । ग. त्रावक । २ ख. ग धमहमीया । ३ ग अष्टकुल । ४ ख ग भमीयां । ५ ख ग द्रिगपालां । ६ ग सुजलि । ७ ग अनडि । ८ ख उलड़ । ९ ख ग कीयो । १० ख ग मौहरि । ११ ख अराव । १२ ख ग तृण ।

३१२ हाक डाक - तेज आवाज । त्रबक - नगाडा । धमहमिया - ध्वनि हुई । असटकुल - अष्टकुल । कमधज - राठीड । हालता - चलने पर । कराळां - भयकर । दहसत - डर भय खौफ । दसै - दश ही । द्रगपाळां - दिक्पालो ।

३१३ थट - सेना, दल । घण - मेव । सुजळ - जलसहित श्रेष्ठ जल । ऊभळै - उमड गये । समराथै - समर्थ । समद - समुद्र ।

३१४ अनड - पर्वत । तर भँगर - घने वृक्ष, घनी भाडी । अथागा - अपार । दुरँग - दुर्ग, गढ । धरपति - राजा । पाटोघर - राज्यसिंहासनाधिकारी । विदा - रवाना । कूवर - कुमार ।

३१५ हणै - सहार करते हैं । खग - तलवार । हाथै - हाथसे । इसा - ऐसे । भड - थोड़ा । उरडै - बलात् शत्रु-समूहमें घँस जाते हैं । थट - समूह, दल, सेना । पौरस - वन, पौरुष । अणथाहै - अपार । मुहरि - अगोड़ी । अराव - तोप । त्रण - तीन ।

दगै अराव^१ तांम दइवाणा ।
 अगनि चढै धर गिर असमाणां ।
 दुगम रीठ गोळा दरसाई ।
 वीरभद्र जिम घटा वणाई ॥ ३१६
 सिलह पखर धारक समराथै ।
 सौ सौ उडै एकहिज^२ साथै ।
 उडतां जिकां ओप^३ कवि आणै ।
 अनळ दखिण वादळ अहिनाणै ॥ ३१७
 वहता घण गोळा विकराळा ।
 हाथी उडै जॅगी हवदाळा ।
 धोम दुरग^४ दारू धडहडिया^५ ।
 पाहड सिखर जाणि उडि पडिया^६ ॥ ३१८
 रौळी^७ दोय^८ पहर^९ इम रहियौ^{१०} ।
 क्रोधअनळ^{११} भटके नूप^{१२} कहियौ^{१३} ।
 जळ अचवू^{१४} तूटै गढ जारा ।
 धोम लोपि जूटै^{१५} खगधारा ॥ ३१९

१ ग. अरावां । २ ख ग ऐकही । ३ ख. ग वोप । ४ ख ग. सुरग । ५ ख ग
 घडहडीया । ६ ख ग पडीया । ७ क. रोळी । ८ ग. दोइ । ९ ख. पौहौर ।
 ग पहौर । १० ख ग रहियौ । ११ ख अल । १२ ख. ग नूप । १३ ख ग.
 कहीयौ । १४ ग अचवू । १५ ग जूटी ।

३१६ दगै - छूटती है । अराव - तोप । ताम - उन । दइवाणां - राजा । गिर - पर्वत ।
 असमाणां - आसमानमे । दुगम - दुर्गम, भयकर । रीठ - प्रहार, युद्ध । दरसाई -
 दिखलाई दी ।

३१७ सिलह - अस्त्र-शस्त्र । पखर - कवच । धारक - धारण करने वाला । समराथै -
 समर्थ । उडता - उडते हुए । जिका - जिनकी । ओप - उपमा । अनळ - अनिल =
 पवन, हवा । दखिण - दक्षिण । अहिनाणं - समान ।

३१८ वहतां - चलते हुए । घण - बहुत, मेघ-घटा । विकराळा - भयकर । जॅगी - बडा ।
 हवदाळा - अवारी या चारजामासहित (हाथी) । धोम - अग्नि, आग । दारू -
 वारूद । धडहडिया - प्रतिध्वनित हुए । जाणि - मानो, जैसे ।

३१९ रौळी - युद्ध । क्रोधअनळ - क्रोधाग्नि । भटके - भडक कर । कहियौ - कहा ।
 अचवू - आचमन करू । जारा - जव ।

वदतां एम^१ ऊपडै^२ वागां ।
 उदधि जाणि^३ जळ छिलै अथागा ।
 धेधीगर हू लै धुज धाखा ।
 पाहडि^४ जाणि उडै विण^५ पाखा ॥ ३२०
 भूट खग सकट जंजीरा जडिया^६ ।
 लोपि अराब^७ कमध थट लडिया^८ ।
 कमधा वडगूजरा कराळा ।
 पडै निहाव सोक पंखाळा ॥ ३२१
 असि धुज^९ गयद सिलह भिद^{१०} अगा ।
 तडफै पडै सुमारख तगा ।
 भूपट जाणि लीधी मछ भाखै ।
 नट बह^{११} जाण^{१२} दोवडी नाखै ॥ ३२२
 घण अम्हसम्हा सिलहवध^{१३} घाटा ।
 वजि साबळा^{१४} धमक अविपाटां^{१५} ।

१ ग ऐम । २ ग उपाडै । ३ ग जाण । ४ ख ग पाहड़ । ५ ख ग. लगि ।
 ६ ख ग भूडीया । ७ ख अराव । ८ ख ग लडिया । ९ ख ग धुज । १० ख.
 ग भिदि । ११ ख वही । ग वही । १२ ख. ग जाणि । १३ ख सिलहवध । १४ ख.
 ग सावळा । १५ ख. अविपाटां । ग अविपाटा ।

३२० उदधि - समुद्र । जाणि - मानो । छिलै - उमडता है, मर्यादाके बाहर होता है ।
 अथागां - अपार, असीम । धेधीगर - हाथी । पाहडि - पर्वत । विण - विना ।
 पांखां - पर, पख ।

३२१ भूट - शीघ्र । जडिया - बाघे । लोपि - उलघन कर । थट - मेना, दल । कमधा -
 राठीडा । वडगूजरां - वडगूजर नामक राजपूतवंशके व्यक्तियो । कराळा - भयकर,
 भयावह । निहाव - प्रहार । सोक - ध्वनि-विशेष । पंखाळा - पक्षियो, तीरो, बाणो ।

३२२ असि - अश्व, घोडा । गयद - हाथी । सिलह - शस्त्र । भिद - भेदन कर । जाणि -
 मानो । लीधी - ली । मछ - मछली । दोवडी - दुगुनी । नाखै - डालता है ।

३२३ घण - बहुत । अम्हसम्हा - आमने-सामने, एक दूसरेके सम्मुख । सिलहवध - योद्धा,
 मिल्हारी । वजि - प्रहार हो कर । साबळां - मालो, शस्त्र विशेष । धमक - प्रहार ।
 अविपाटा - तलवारो ।

अंग भिदि पड़ै एण^१ अहिनाणै^२ ।
 जुड़ि^३ जांमवंत भीच लक जाणै ॥ ३२३
 लोही घड वहि वहि फळ लोहां ।
 छड गहि गहि ऊठत छछोहां ।
 धडछै दुसह केइक^४ खगधारा ।
 केक^५ जड़ै इम खँजर कटारां ॥ ३२४
 इम वेभडा^६ लोह धुवि^७ आरण ।
 घाव जाणि वरसै^८ वारह^९ घण ।
 वीज^{१०} अनेक रूप खग वागी ।
 लाय जाणि सूकै वनि लागी ॥ ३२५
 वीर भरथवाळा विकराळा ।
 चूडामणिवाळा कळिचाळा ।
 कमधज वडगूजर^{११} भड केहा ।
 जुटै राम रावण भड जेहा ॥ ३२६
 कमधज भांण पाटवी कूवर ।
 गजहू गज मिळियौ^{१२} खत्री गुर ।

१ म ऐण । २ ख अणिताणे । ३ ख जुडी । ४ ग केईक । ५ ख केइक ।
 ६ ख वेभडा । ७ ख. धुवि । ८ ग. वूठ । ९ ख वारह । १० ग वीज ।
 ११ ग वडगूजर । १२ ख. ग. मेलीयौ ।

३२३ भिदि - भेदे जा कर, भेद कर । एण - इस । अहिनाणै - प्रकार, समान । भीच -
 योद्धा । लक - लका ।

३२४. घड - शरीर । वहि वहि - वह-वह कर । फळ - शस्त्रका नोकदार भाग, शस्त्रका
 पैना भाग । लोहां - शस्त्रो । छछोहां - शीघ्र, तेज । धडछै - काटे जाते हैं । दुसह -
 शत्रु । केक - कई । जड़ै - प्रहार करते हैं । खँजर - शस्त्र विशेष ।

३२५ वेभडा - दोनो ओर । धुवि - तेज हो कर । आरण - युद्ध । घाव - प्रहार । जाणि -
 मानो । घण - मेघ । वीज - विजली । वागी - प्रहार किया गया । लाय - दावाग्नि ।
 वनि - वनसे ।

३२६ भरथवाळा - भरतके । विकराळा - भयकर । चूडामणिवाळा - चूडामणिके ।
 कळिचाळा - योद्धा । भड - योद्धा । केहा - कैसे । जुटै - युद्ध करते हैं, भिडते हैं ।
 जेहा - जैसे ।

३२७. भांण - भानु । पाटवी कूवर - राज्याधिकारी कुमार, जेष्ठ कुमार ।

दमक^१ जंगी हवदा खग दांमणि ।
 मिळिया^२ लोह भाण चूडामणि ॥ ३२७
 सूरं विहू^३ काटि खगि^४ साही ।
 वदे^५ पहल चूडामणि वाही ।
 लागण^६ न दी ढाल परि^७ लीधी ।
 दूजी भाण भाट^८ खग दीधी ॥ ३२८
 भिलम टोप सूधौ सिर भडियौ^९ ।
 पटभरहू चूडामणि पडियौ^{१०} ।
 करि जय धसे नगर मभिलसकर ।
 अटके नह भिलियौ^{११} वरियावर^{१२} ॥ ३२९
 आयौ रुद्र महलहूं ऊतरि^{१३} ।
 बाला^{१४} किलाहंत नूप^{१५} बाहरि^{१६} ।
 वीस हजार साथि^{१७} भड वंका ।
 अटके दळ आवता अटका ॥ ३३०
 अति धख क्रोध दुहू दळ आणै ।
 जूटा खगा डडेहड^{१८} जाणै ।

१ ख ग दमकि । २ ख ग मिलीया । ३ ख. विहूं । ४ ख ग खग । ५ ख.
 वडे । ग वधे । ६ ख लाजागण । ७ ख ग पर । ८ ख. जाट । ९ ख. ग भडियौ ।
 १० ख ग पडियौ । ११ ख ग. भिलियौ । १२ ग वरियावर । १३ ख. उतर ।
 १४ ख बाला । १५ ख ग. नूप । १६ ख. बाहिर । ग बाहिर । १७ ग साथ ।
 १८ ख. डडहर ।

३२७ दमक - चमक कर । जंगी - वडा । हवदां - हाथियोंके चारजामो । खग - तलवार ।
 दांमणि - दामिनी, विजली ।

३२८ सूर - वीरो, वहादुरो । विहूं - दोनो । वदे - कहते हैं । पहल - प्रथम । वाही -
 प्रहार किया । भाट - प्रहार । खग - तलवार । दीधी - दी ।

३२९ भिलम टोप - युद्धके समय शिर पर धारण करनेका टोप । सूधौ - सहित । भडियौ -
 कट गया । पटभरहूं - हाथीसे । पडियौ - गिर गया, वीर गति प्राप्त हुआ । जय -
 विजय । धसे - प्रवेग किया । मभिल - मध्य, में । लसकर - सेना । भिलियौ -
 शत्रुओ द्वारा लूटा गया ।

३३०. बाहरि - बाहर । भड - योद्धा । वंका - वाकुरो । अटका - जबरदस्त ।

३३१ धख - क्रोधाग्नि । जूटा - भिडे । खगा - तलवारो । डडेहड - होलिका नृत्य विशेष,
 उच्चारण ।

घण खग गजरि^१ जाण^२ घडियाळां^३ ।
 वागी फजर कनोज^४ विचाळां ॥ ३३१
 वदि^५ रुद्र खाग स्त्रीहथां वाहै ।
 सूर थभि^६ रथ हाथि^७ सराहै ।
 सुपह^८ भरथ -सुहड़ां निज साखै ।
 अरि जीवतौ ग्रहौ इम आखै ॥ ३३२
 असि पटभराहूत ऊतरिया^९ ।
 धारां पछट सामुहा धरिया^{१०} ।
 आयस भरथ लड़े भड एहा^{११} ।
 जगि^{१२} दखितणै वीरभद्र जेहा ॥ ३३३
 चद्रहास भट धके चहोड़े ।
 तेर' हजार दुसह भड तोड़े ।
 हड़हड ताम जत्रधर हसिया^{१३} ।
 लडता सात सहस भड लसिया^{१४} ॥ ३३४

१ ख ग. गजर । २ ख ग जाणि । ३ ख ग घडीयाला । ४ ख ग कनौज ।
 ५ ख ग वधि । ६ ख ग थाभि । ७ ख. ग हाथ । ८ ग सुपह । ९ ख.
 उत्तरीया । ग ऊत्तरीया । १० ख ग धरीया । ११ ग ऐहा । १२ ख ग. जिगि ।
 १३ ख * हसीया । १४ ख ग लसीया ।

३३१ गजरि - आवाज, ध्वनि । वागी - वजी । फजर - प्रातःकाल ।

३३२ वदि - बढ कर । सूर - सूर्य । थभि - रोक कर । हाथि - हाथोसे । सराहै - प्रशसा
 करता है । सुपह - राजा । सुहड़ा - योद्धाओ । अरि - शत्रु । जीवतौ - जीवित ।
 ग्रहौ - पकड लो । आखै - कहता है ।

३३३ असि - घोडा । पटभराहूत - हाथियोसे । धारा - तलवारो । पछट - प्रहार कर ।
 सामुहा - सम्मुख, सामने । आयस - आज्ञा । भड - योद्धा । एहा - ऐसे । जगि -
 यज्ञमे । दखितणै - राजा दक्षके । जेहा - जैमा ।

३३४. चद्रहास - तनवार । भट - प्रहार । चहोड़े - काटते हैं । तेर' - तेरह । दुसह -
 शत्रु । तोड़े - सहार कर दिये । हड़हड - हँसनेकी ध्वनि । जत्रधर - नारद मुनि ।
 लसिया - शोभित हुए ।

करि ढालां भट ओट कजाकां ।
 होळी थंभ जेम करिं हाकां ।
 जरद घरा ऊंडळ बंध जकडे^१ ।
 पह^२ रुद्रसेन^३ जीवतौ पकडे ॥ ३३५
 तेरह लोह अग रातवर^४ ।
 पह^५ आणै अग्र सेत पटाभर ।
 पौहचि^६ तठै सिवका^७ पौढाणै ।
 इम पण पूर^८ भरथ अग्र आणै ॥ ३३६
 नौवत^९ वजै जैत सद नोखा ।
 जमै राज वरियावर^{१०} जोखा ।
 लड़ि इम देस दुरग गढ^{११} लीधौ ।
 कायाकळप^{१२} कहे जिम कीधौ ॥ ३३७
 आभा रूप जोम ऊफाणिक^{१३} ।
 वणियौ^{१४} अनग दूसरै वाणिक ।
 वीर तदिन^{१५} कीरति वाधारी ।
 भरथ साख वधियौ^{१६} कुळ भारी ॥ ३३८

१ ग भकड़े । २ ख ग. पौहौ । ३ ख सेन । ४ ख. रातंवर । ५ ख ग पौह ।
 ६ ख. ग पौहचि । ७ ग. सिविका । ८ ग पूरि । ९ ख नौवति । १० नौवति ।
 १० ख. ग वरीयावर । ११ ख गज । १२ ख कायाकल्प । १३ ग. ऊफाणिक ।
 १४ ख वणियौ । १५ ख ग तदिन । १६ ख वधियौ । ग वधियौ ।

३३५ कजाकां— एक प्रकारका कोट जिसमे कच्चा रेगम लपेटा जाता है । इम पर तलवारका प्रहार असर नहीं करता; कजाकद । हाकां—आवाज । जरद—कवच । जकड़े—वाध कर । पह—राजा । जीवतौ—जीवित । पकडे—पकड कर ।

३३६. लोह—शस्त्र-प्रहार । रातंवर—लाल । आणै—ला कर । अग्र—अगड़ी । सेत—श्वेत । पटाभर—हाथी । पौहचि—पहुँच कर । तठै—वहा । सिवका—शिविका । पौढाणै—अयन कराया गया । इम—इम प्रकार । पण—प्रण ।

३३७ जैत—विजय, जीत । सद—शब्द । नोखा—बढिया । जोखां—आनन्द, हर्ष । लीधौ—लिया । कीधौ—किया ।

३३८ आभा—चमक, दमक । जोम—जोश । वणियौ—बना, बन गया । वाणिक—सूरत । तदिन—उम दिन । कीरति—यश, कीर्ति । वाधारी—बढाई । साख—शाखा । वधियौ—बढा । भारी—बहुत ।

'गढ वरियावर विरद अथागा ।
वरियावर^१ कमधज^२ इम वागा ।

राजा पुजरं बारमा पुत्र कृपासिधुरो वरणण
वारमौ^३ सुत पूज^४ महाबळ ।
कृपासिधु^५ जिण^६ नाम अणकळ^७ ॥ ३३९
महपति धरमवभ^८ कुळ जगमिणि ।
तीरथराज राज दीधौ तिणि ।
ध्रमसासत्र^९ मारग दिढ धारै ।
सदावरत समपै जग सारै ॥ ३४०
आखै आय^{१०} क्षुधत^{११} निज आरत^{१२} ।
मनसा भोजन दियै^{१३} महामत ।
मनि^{१४} नवधा^{१५} पूजै परमेशुर ।
खट-रुत^{१६} धरम करै खत्रियागुर^{१७} ॥ ३४१
उपवन करि अति^{१८} ग्रेह उसीरा ।
नोख गुलाब छडक^{१९} घण नीरा ।
जळ गुलाब^{२०} वेळुका^{२१} जमावै ।
विमळ पटी सीतळ विछवावै । ३४२

१ ख. वरीयावरा । ग वरियावरा । २ ख. कमध । ग कमंध । ३ ख ग. वारहमौ ।
४ ख. ग पुज । ५ ख ग. कृपासिधु । ६ ख ग. जिणि । ७ ख अलकल । ८ ख
धरम वभ । ९ ख ध्रमससत्र । ग ध्रमसास्त्र । १० ख. ग. आइ । ११ ख ग क्षुधित ।
१२ ग आरति । १३ ख ग दीर्ये । १४ ख ग मन । १५ ख. वध । १६ ख
ग षट्कृतु । १७ ख ग पत्रीयागुरु । १८ ख वही । ग वही । १९ ख ग छडकि ।
२० ख गुलाव । २१ ग बेळुका ।

३३९. विरद - विरुद । अथागा - अपार, महान । वरियावर - राठीडोके प्रमुख तेरह वशोमे
से एक वश । वागा - प्रसिद्ध हुए ।

३४० अणकळ - वीर । महपति - राजा । जगमिणि - श्रेष्ठ । तीरथराज - प्रयाग ।
दीधौ - दिया । तिणि - उस । दिढ - दृढ । समपै - देता है ।

३४१ आखै - कहता है । आय - आकर । क्षुधत - भूखा । आरत - दुख । मनि - मनमे ।
नवधा - नौ प्रकार । खट-रुत - पङ्कतु । खत्रियागुर - क्षत्रियोमे श्रेष्ठ ।

३४२ उसीर - गाढर नामक घासकी जड, खस । नोख - श्रेष्ठ । घण - बहुत । नीरां - पानी ।

रसी उसीर पख ठहराणै ।
 उठै^१ प्रणांम करै रिख आणै ।
 आतम ग्यान समुद्र अथागी ।
 रमता परम हस वैरागी ॥ ३४३
 छत्रपति प्रेम भाव सुख छाजै ।
 विमळ इसा मुनि तठै विराजै ।
 थिर करि पाइ^२ मिस्ट^३ जळ थाटै ।
 चदणादि ले पर^४ वह^५ चाटै ॥ ३४४
 जीमण सिखरण भाथ जिमावै ।
 मेवा नूत अनेक मिळावै^६ ।
 पावै त्रिखत हुवै तद^७ तद त्रिप्त^८ ।
 हिम सर करां नीर अति चित हित ॥ ३४५
 त्रपति^९ होइ मुख विमळ करै तदि ।
 जुत मुखवास अग्र धारै जदि ।
 मिरच सीत एळच^{१०} मधि पावै^{११} ।
 खितपति पांन कपूर खुवावै ॥ ३४६

१ ख उभै । २ ख ग पाय । ३ ख मिष्ट । ग. मिसट । ४ ख. ग. लेपण । ५ ख
 वही । ग वही । ६ ग मिल्हावै । ७ ख तदि । ग तदि तदि । ८ ख ग प्रति ।
 ९ ख. त्रिप्त । ग त्रिपति । १० ग ऐळच । ११ ग मावै ।

३४३ अथागी—अपार, गहरा । रमता—भ्रमण करता हुआ ।

३४४ छत्रपति—राजा । छाजै—शोभित होता है । विमळ—पवित्र । इसा—ऐसे ।
 तठै—वहा । विराजै—शोभा देते हैं, बैठते है ।

३४५ जीमण—भोजन । सिखरण—दही और चीनीका बनाया हुआ एक प्रकारका मीठा
 पेय पदार्थ विशेष अथवा एक प्रकारका शर्बत्त जिसमे केसर कपूर तथा मेवे आदि डाले
 जाते है । भाथ—पकाये हुए चावल, भात । जिमावै—भोजन करवाते है ।
 त्रिखत—तृपित, प्यासा । तद—तब ।

३४६ त्रपति—तृप्ति । जुत—युक्त, सहित । मुखवास—अनेक प्रकारकी सुगंधित औषधियो
 आदिको मिला कर बनाया हुआ चूर्ण जिससे मुहकी दुर्गंध दूर होती है । जदि—
 जब । एळच—इलायची । मधि—मे । खितपति—राजा । खुवावै—खिलाते है ।

पौढै ताम उठावै ऊपरि ।
 केसर चदण भीण वसतरकरि ।
 पवन त्रिविध^१ भोला दे कर पह^२ ।
 वादग सत पाखा^३ हूँता बह^४ ॥ ३४७
 सुख इण^५ विध^६ बौह^७ भात^८ समाजा ।
 रित^९ ग्रीखम सेवै^{१०} मुनिराजा ।
 दारु रग चित्र मिदर^{११} दिपावै ।
 विहद जियां नवखंड वणावै ॥ ३४८
 ज्या मभि तखत नमद जमाता ।
 सबज^{१२} जिया ऊपरि सिकळाता ।
 कमळि पाइ बाजू^{१३} कोसीसा ।
 सैबळ फमधरै वोसीसा ॥ ३४९
 खीरकद मिश्रित हित खती ।
 भोजन अवर दियै^{१४} बह^{१५} भती^{१६} ।
 जुगत अरध भक्ष त्रिखा^{१७} जतावै ।
 अघर भेल पुक्कर^{१८} अचवावै ॥ ३५०

१ ख ग त्रिविधि । २ ख ग पौहौ । ३ ख. ग पषा । ४ ख. बौहौ । ग बौही ।
 ५ ख ग इणि । ६ ख ग विधि । ७ ख बहौ । ग बही । ८ ख ग भाति ।
 ९ ख रिति । १० ख वसै । ११ ख ग मदिर । १२ ख. ग सबज । १३ ख
 बाजू । १४ ख ग दीये । १५ ख बहौ । ग. बहु । १६ ग भाति । १७ ख ग
 तृषा । १८ ख. युकर ।

- ३४७ ताम - उनको । भीण - महीन । वसतरकरि - वस्त्रसे । त्रिविध - तीन प्रकारका ।
 भोला - प्रवाह । पह - राजा ।
 ३४८ रित - ऋतु । ग्रीखम - ग्रीष्म । दारु - काष्ठ । मिदर - भवन । दिपावै - शोभित
 करता है । विहद - बढ़िया, बहुत । जिया - जिन ।
 ३४९ ज्या - जिन । मभि - मध्य, मे । सबज - सब्ज, हरा । जिया - जिन । सिकळाता -
 विशेष प्रकारकी बहुमूल्य ऊनी वनातें, सिक्लातो । कमळि - एक प्रकारका पहननेका
 वस्तर, कम्बल ।
 ३५०. खीरकद = सीरकंद - क्षीर विदारी । मिश्रित - मिश्रित । अवर - अन्य, और । बह -
 बहुत । भती - भाति, प्रकार । त्रिखा - तृषा, प्यास । पुक्कर - पुष्कर, जल ।
 अचवावै - आचमन कराता है, पिलाता है ।

करि अचवन जळ चळू करावै ।
 भक्ष परपत्रक^१ चुरण^२ भुगतावै ।
 रस हरि कथा कथित मन रजण ।
 मुखवासादि दिवै^३ मुख मजण ॥ ३५१
 इण^४ आणद^५ निद्रा तदि आवै ।
 अरुण भीण सिकलाति^६ उढावै ।
 इण विधि^७ धरम प्रीति^८ तत आरति ।
 राजा रिख सेवै वरखा^९ रिति ॥ ३५२
 कपडकोट उज्जळ वह^{१०} कीजै ।
 वर वगळा^{११} रावटी वणीजे ।
 वणि त्रह^{१२} त्रह मडप विसतारा ।
 दुति^{१३} स्रव^{१४} उमर पभा दारां ॥ ३५३
 खडगह खभदार गदरा खित ।
 सीरख^{१५} भडप उसीस टोप सित ।
 चोळा चादर सेत चढावै ।
 भात मूग घृत कंद भुगतावै ॥ ३५४

१ ख ग. परपक । २ ख ग चुरण । ३ ख ग दिदीर्य । ४ ख ग. इणि । ५ ख
 आनंद । ६ ख ग सिकलात । ७ ख ग विधि । ८ ख प्रीत । ९ ख. वरिषा ।
 १० ख वही । ग वही । ११ ख. वंगला । १२ ख त्रह । ग त्रह त्रह । १३ ख
 दुजि । १४ ख श्रव । १५ ग सिरप ।

- ३५१ अचवन - आचमन, जलपान करना । चळू - भोजनके बाद हाथ-मुँह धोना । परपत्रक -
 पात्रक । मुखवासादि - मुखको मुगधित करनेके निमित्त अनेक प्रकारके सुगधित
 पदार्थो युक्त चूर्ण विशेष । मुख मंजण - मुखको स्वच्छ करनेकी औषधि विशेष ।
 ३५२ तदि - तव । सिकलाति - बहुमूल्य उनी वनात, सिकलात । रिख - ऋषि । वरखा -
 वर्षा । रिति - ऋतु ।
 ३५३ कपडकोट - खेमा, तवू । उज्जळ - उज्ज्वल । वह - बहुत । रावटी - भवन विशेष,
 एक प्रकारका छोटा तंबू विशेष । त्रह त्रह - तरह-तरह । दुति - काति, दीप्ति ।
 ३५४ खभदार - जरा वाका या तिरछा । गदरा - गद्दा । खित - पृथ्वी, भूमि । सीरख -
 ओढनेका वस्त्र विशेष । भडप - हवा करनेका वस्त्र विशेष । उसीस - तकिया ।
 चोळा - सन्यासियोंके पहिनेका वस्त्र विशेष । चादर - ओढनेका वस्त्र । सेत - श्वेत ।
 भात - पकाये हुए चावल । घृत - घृत, घी ।

मधि जळ नूमळ^१ पियै^२ हित मन्नै ।
 अनि भोजन बहुधा^३ अवअन्नै^४ ।
 नव अन्नादि^५ रसालू सकळ नव ।
 प्रपक साक बहुधा^६ नव पल्लव ॥ ३५५
 मोदकादि^७ बहु^८ चक्र मभारा ।
 पाक अन्नै अवलेह अपारा ।
 प्रति भोजन क्रत^९ पांन प्रफूलै ।
 तक्र मठा अन्नित^{१०} सम तूलै ॥ ३५६
 आनन विमळ मुखोप अपारा ।
 ताबूलादि दियै^{११} तिण वारा ।
 एहिज^{१२} सदन सिसर^{१३} हिमवता ।
 आसण पखी पसम अनता ॥ ३५७
 पैहरण घण ओटण^{१४} पसमीना ।
 नोख तोस घणमोल नवीना ।

१ ख ग नूमल । २ ख ग पीयै । ३ ख बहुधा । ग. बहुधा । ४ ग. नदअन्नै ।
 ५ ग अन्नादिक । ६ ख बहुधा । ७ ग मोदिकादि । ८ ख बहु । ९ ख ग कृत ।
 १० ख ग अमृत । ११ ख ग दीयै । १२ ग ऐहिज । १३ ख ग सिसर ।
 १४ ख वोटण । ग वोटण ।

३५५ मधि - बीचमे । नूमळ - निर्मल । अनि - अन्य । बहुधा - बहुत प्रकारके ।
 अ(न)वअन्नै - नवान्न । प्रपक - परिपक्व ।

३५६ मोदकादि - लड्डू आदि । बहु चक्र - जलेवी या फेनी । मभारा - मध्य, मे । पाक -
 पकवान । अन्नै - और । अवलेह - लेई जैसा लेसे पदार्थ जो न अधिक गाढा और न-
 अधिक पतला होता है और चाटा जाता है । तक्र - छाछ । अन्नित - अमृत । सम -
 समान ।

३५७. आनन - मुख । विमळ - स्वच्छ । मुखोप - मुखकी कान्ति । ताबूलादि - पान आदि ।
 तिण - उस । वारा - समय । एहिज - यही । सदन - भवन, घर । सिसर - शिशिर
 ऋतु । हिमवता - हेमन्त ऋतु । पखी - एक प्रकारका ऊनी कपडा जो पहाडोमे भेडके
 बालोसे बुना जाता है । पसम - बहुत मुलायम तथा बढ़िया ऊन जो प्राय कश्मीर,
 पजाब और तिब्बतकी भेडो परसे उतारा जाता है । इससे दुशाले तथा पश्मीने
 आदि बनते हैं ।

- ३५८. पसमीना - एक प्रकारका बहुत बढ़िया ऊनी कपडा जो बडा मुलायम और मजबूत
 होता है, पश्मीन । नोख - बढ़िया । तोस - कपडा, वस्त्र । घणमोल - बहुमूल्य,
 वेसकीमती । नवीनां - नया ।

सपत दसह भोजन घृत^१ सनिगध ।
 साग छतीसा^२ वान^३ वान सध ॥ ३५८
 तत मनसा^४ भोजन दिव^५ तिम तिम ।
 जळ मुखवास अगै कहिया जिम ।
 धोमपात्र कळिधूत धरावै^६ ।
 धूणी * चदण अगार धुकावै^७ ॥ ३५९
 महपति^८ करि^९ वदन^{१०} उज्जळ मन ।
 त्रण^{११} रित^{१२} इम साधे दासातन ।
 सर सरिता^{१३} बहु^{१४} वाग सडवर^{१५} ।
 मभि तिण^{१६} सिंगी काम चित्रमदिर ॥ ३६०
 जरदोजी कतिला कारीजर ।
 साइवान^{१७} पडदा चिग सुदर ।
 परदुज वर भरपूर प्रचडै ।
 मुखमलतणी विछायत मंडै ॥ ३६१

१ ख ग घृत । २ ख ग छतीम । ३ ख ग वन वन । ४ ख ग मनछा । ५ ख
 दिवै । ग दिव । ६ ग. करावै । ७ ख. ग धिपावै । ८ ग महिपति । ९ ग कर ।
 १० ग वदण । ११ ख. ग तृण । १२ ख ग रिति । १३ ख ग. सलिता । १४ ख
 वही । ग वही । १५ ख सडवर । १६ ग तिणि । १७ ख. ग साइवान ।

३५८ सपत - सात । दसह - दश । सनिगध - स्निग्ध । साग - शाक । वान वान - तरह-
 तरहके । सध - सद्य, ताजा ।

३५९ मनसा - इच्छा । दिव - दिव्य । मुखवास - मुखको सुगन्धित करनेका चूर्णविशेष ।
 अगै - पहिले । कहिया - कहे । जिम - जैसा । धोमपात्र - धूम पात्र, धूपदानी ।
 कळिधूत - कलघौत, मोने-चादीके । धूणी - सन्यासियोका अग्निकुण्ड जिसके पास बैठ
 कर वे तपस्या करते हैं ।

३६० महपति - राजा । वदन - नमस्कार । उज्जळ मन - स्वच्छ हृदय । त्रण रित - तीन
 ऋतु । दासातन - दासत्व । सर - तालाव । सरिता - नदी । सडवर - सघन घना ।
 सिंगी - श्रृंगी, योगियोका वजानेका सींगका बना वाद्य । चित्र मदिर - चित्रशाला ।

३६१ जरदोजी - कारचोवी, सल्मा-सितारा और जरीका काम । कतिला - एक प्रकारका
 बहुत महीन कपडा विशेष, वतान । कारीजर - ज़रकारी, ज़री कशीदा । साइवान -
 मकानका छज्जा । पडदा - पर्दा । चिग - बाँस या सरकडोकी तीलियोका बना
 भूकरीदार पर्दा चिलमन । परदुज - सजावट, पर्दाज । भरपूर - पूर्ण । मुखमलतणी -
 मुखमलकी । विछायत - विछानेका वस्त्र ।

अनि सब वसत विछाइत^१ आणै ।
 पौसाका राजसी प्रमाणै ।
 जिण उपगरै सुरंत चाहै जन ।
 भख तिम^२ दियै^३ राजसी भोजन ॥ ३६२
 अंब^४ हिम विध^५ सुस्रत^६ अचवावै^७ ।
 पूरण^८ हुय^९ चूरण सुध पावै ।
 सजुत^{१०} वसत वाणरस^{११} सोखा ।
 नागलता मघई पत्र नोखा^{१२} ॥ ३६३
 आरोगाइ^{१३} स्त्रीहथा अधपति ।
 सेवा वंदण^{१४} स्तूति^{१५} करै सति ।
 वनसपती पुहपति^{१६} विसतारै^{१७} ।
 भवर^{१८} गुजार करै सुर भारै ॥ ३६४
 कोकिल सोर मोर तडवि^{१९} क्रत^{२०} ।
 नटवर गांन^{२१} सगीत करै नृत^{२२} ।

१ ख ग. विछायत । २ ख तिन । ३ ख ग दीयै । ४ ख अब । ५ ख विधि ।
 ग विधि । ६ ख ग सुश्रित । ७ ख असवावै । ८ ख पूर । ९ ख होइ । ग होई ।
 १० ग संयुत । ११ ग वाण । १२ ख ग नौषा । १३ ख ग आरोगाय । १४ ख.
 वदण । १५ ख. ग सूति । १६ ख ग पहुँपति । १७ ग. विस्तारे । १८ ख.
 भविर । १९ ग तडव । २० ख ग कृत । २१ ग गुना । २२ ख ग नृत ।

३६२ अनि - अन्य । सब - सर्व, सब । वसत - वस्तु । विछाइत - बैठनेके कमरेमे
 विछानेका बडा वस्त्र विशेष, जाजम । राजसी - रजोगुरणी । जिण उपगरै चाहै जन -
 जिस भोजनका उपयोग करके मनुष्यकी सुरतेच्छा (कामवासना) जागृत हो ।

३६३ अब - पानी । हिम - बर्फ । सुस्रत = मुश्रत - गर्म, उष्ण, उत्तम नदी । अचवावै -
 आचमन कराता है । सजुत - सयुक्त, सहित । वाणरस - वाराणसीका । नागलता -
 पानकी लता । मघई - पानकी एक जातिविशेष जो अत्युत्तम मानी जाती है ।
 मतान्तरसे माघ मासमे होने वाला वनारसका पान । नोखा - श्रेष्ठ ।

३६४ आरोगाइ - भोजन करते है । स्त्रीहथा - अपने हाथसे । अधपति - राजा । वनसपती -
 वनस्पति । पुहपति - पुष्पपति । सुर - स्वर । भारै - बढिया ।

३६५ सोर - आवाज, ध्वनि । तडवि - नृत्य, नाच । नटवर - नाट्यकलामे प्रवीण ।
 गांन - गायन । नृत - नृत्य ।

गांन पान इम्रत^१ सम गावै ।
 ईस्वर विण^२ दुतिया^३ नह आवै ॥ ३६५
 तीरथराज राजवेता^४ तत ।
 सुख निज राज करै धरियां^५ सत ।
 सिध^६ मुनिराव^७ सेव इम^८ साधै ।
 इम रितराज समै आराधै ॥ ३६६
 धरपति बहु^९ सेवै^{१०} अवरधर^{११} ।
 वह^{१२} सेवै अवधूत^{१३} दिगवर^{१४} ।
 कोयक^{१५} दिन सेवा इम करता ।
 ध्यांन नरेस सियावर^{१६} धरता ॥ ३६७
 अटक पारहूता जोरावर ।
 आया गयद खरीदण आसुर ।
 विहुदूणां^{१७} सिरदार वहादर^{१८} ।
 लारां वार^{१९} हजार लसक्कर^{२०} ॥ ३६८

१ ख. ग अमृत । २ ग. विणि । ३ ख. ग दुतीया । ४ ख. ग राजवेता । ५ ख. ग घरीया । ६ ग. सिधि । ७ ख. ग मुनिराज । ८ ख. ग. अति । ९ ख. वही । ग वही । १० ख. वसै । ११ ख. अवरधर । १२ ख. वही । ग वही । १३ ख. ग. अवधूत । १४ ख. दिगवर । १५ ख. ग. कोइक । १६ ख. ग. श्रीयावर । १७ ख. विहुदूणा । १८ ख. वहादर । १९ ख. वार । २० ख. ग. लसक्कर ।

३६५. इम्रत - अमृत । सम - समान । ईस्वर^१ नह आवै - उनके गायनका विषय ईस्वरके अतिरिक्त दूसरा नहीं था अर्थात् देवकान्यका ही गायन करते थे ।

३६६ तीरथराज - तीर्थराज, प्रयाग । राजवेता - राजनीतिज्ञ । धरियां - धारण करने पर । सत - सत्य । मुनिराव - मुनिराज । सेव - सेवा । इम - इस प्रकार । रितराज - ऋतुराज वनत । आराधै - आराधना करता है ।

३६७ धरपति - राजा । बहु - बहुत । अवरधर - वस्त्र धारण करने वाला । अवधूत - महात्मा, ब्रह्मजानी । कोयक - कोई । सियावर - श्रीराम ।

३६८ अटक - मिथु नदी, मिथु नदी पर स्थित एक नगर । पारहूता - पारसे । जोरावर - शक्तिशाली । गयद - गज हाथी । खरीदण - खरीदनेके लिये । आसुर - असुर, स्त्रेच्छ । विहुदूणा - चार । लारा - पीछे । वार - वागू । लसक्कर - सेना, लश्कर ।

रवद पिराग देखि छिब^१ रीधा ।
 डेरा आय गग तदि^२ दीधा ।
 पहरै जवन सबज पौसाका ।
 असि चहुवै चढिया^३ एराका^४ ॥ ३७०
 केहिक^५ तर्णा^६ खडे केकाणा ।
 कुजर चाढै चिला कवाणां^७ ।
 दाणव त्रासत^८ मोर दवाया^९ ।
 एकणि^{१०} मुनि आस्रम^{११} मभि आया ॥ ३७१
 उपवन^{१२} मुनि मेलहै सिख इतरै ।
 जवन सक्रोध आविया^{१३} जितरै ।
 सभ्रम दिल आस्रमां^{१४} सिकारा ।
 पीडत^{१५} मुनि कीधा अणपारा ॥ ३७२
 मुनि सुणि त्रास धरम महिपत्ती^{१६} ।
 कीधी विदा कुवर कामत्ती^{१७} ।
 भिडणि^{१८} साथ^{१९} हालिया^{२०} भयकर ।
 दस हजार असवार बहादर^{२१} ॥ ३७३

१ ख ग. छवि । २ ख. नदि । ग तदि । ३ ख ग. चढीया । ४ ख ग. अंराका ।
 ५ ख. ग. केकीह । ६ ख ग. तण । ७ ख कवाणा । ८ ख सत्रासत । ग त्रास ।
 ९ ख दवाया । १० ख एकण । ग. ऐकण । ११ ख ग. आश्रम । १२ ख ग. उप-
 वनि । १३ ख ग. आवीया । १४ ग. आसिका । १५ ख ग. पीडित । १६ ख ग.
 महपती । १७ ख. ग. कामती । १८ ख भीडण । १९ ख ग. साथि । २० ख ग.
 हालीया । २१ ख बाहादर ।

३७० रवद - मुसलमान । पिराग - प्रयाग । छिब - सुन्दरता । रीधा - मोहित हो गये ।
 गग - गंगा नदी । तदि - तब । दीधा - दिये । जवन - यवन, मुसलमान । सबज -
 हरा, हरी घास या हरी घासके रगका । असि - घोडा । चहुवै - चारो । एराका -
 ईराक देशोत्पन्न घोडे ।
 ३७१ केकाणा - घोडो । कुंजर - हाथी । चिला - प्रत्यचा । एकणि - एक । मभि - मव्य, मे ।
 ३७२ सिख - शिष्य । इतरै - इतनेमे । जवन - यवन, मुसलमान । जितरै - जब तक ।
 सभ्रम - भ्रमित । पीडत - पीडित, कष्टपूरण । कीधा - किये । अणपारा - असीम ।
 ३७३ त्रास - सकट । महिपत्ती - राजा । कीधी - किया । विदा - प्रस्थान । कुवर -
 कुमार । कामत्ती - कातिवान । भिडणि - युद्ध करनेको ।

लाल वदन अंबर सिर लागौ ।
 विक्रमादित जवनाहू वागौ ।
 विखम धमक साबळ खग वाहै ।
 मुनि छुडाय लीधा पल माहै ॥ ३७४
 हुवै निहाव घाव भड हाका ।
 आगि भडै पडता ऐराका ।
 किलम हजार पाच अनि कटिया^१ ।
 अलीहुसेन खगा आछटिया^२ ॥ ३७५
 हर क्रत^३ हार मुनद^४ क्रत हासै ।
 पडिया^५ जुध कमधज पनरासै^६ ।
 सेर उवर^७ दारण घण सारा ।
 धुविया खिजे विगुण^८ खग धारा ॥ ३७६
 वव^९ नयण विक्रम गजवोहा^{१०} ।
 लागा लडै असीचत्र लोहां ।
 धारण चित सिरदार नजर धरि ।
 असि तौरियौ^{११} सेरखां ऊपरि ॥ ३७७

१ ख ग कटिया । २ ख ग. आछटिया । ३ ख. ग क्रत । ४ ख ग मुनद ।
 ५ ख ग पडिया । ६ ख पदरासै । ७ ग उवर । ८ ख विगुण । ९ ख वव ।
 १० ख गजवोहां । ११ ख तोरीयो । ग तोरीयो ।

३७४ अवर - आममान । जवनाहू - मुसलमानोसे । वागौ - जा भिडा । विखम - विपम,
 भयकर । धमक - प्रहार । साबळ - एक प्रकारका भाला । खग - तलवार । लीधा -
 लिये । पल माहै - क्षण भरमे ।

३७५ निहाव - प्रहार । भड - योद्धा । हाका - आवाज । आगि - अग्नि । ऐराका -
 घोडो । किलम - मुसलमान । अनि - अनी, सेना । कटिया - कट गये । खगा -
 तलवारो । आछटिया - प्रहार किया, वार किया ।

३७६ हर - महादेव । क्रत - छूते, लिपे । हार - यहा मुडमालाके लिये आया है । मुनद -
 मृनीन्द्र, मर्त्ति नाग्द । हासै - हंसा । धुविया - अत्यन्त क्रोधमे हुए । खिजे - क्रोध
 किया । विगुण - दुगना ।

३७७ वव - लाल, रक्तपूर्ण । गजवोहा - गज-व्यूह, हाथी-समूह । असीचत्र - चौरासी ।
 लोहा - शम्भो । तौरियौ - घोडेको भीका त्वरित गतिमे हमला किया ।

चढतां धकै बाण^१ कसि 'चदर'^२ ।
 ध्रुवियौ^३ असुर^३ सीस पडियौ^४ धर ।
 उतमग मार मार दाखै इम ।
 त्रिजड उरड वाहै^५ धड तिम तिम ॥ ३७८
 असि सेरराहूत भिडियौ^६ असि ।
 असमर^७ कमध आछटी^८ ऊससि ।
 भूट खग खान सीस असि भूडियौ^९ ।
 पमग सहेत सेरखां पडियौ^{१०} ॥ ३७९
 धर^{११} तदि^{१२} पडे^{१३} पछट खगधारा ।
 उतमग अग्रक्रम^{१४} सोळ अठारा ।
 सवा पहर राजा हरि सेवे ।
 दूजौ जितै अरज नह देवै ॥ ३८०
 वीता^{१५} पहर^{१६} कवर विग्रहियौ^{१७} ।
 करिवह^{१८} रुदन हेक भ्रत^{१९} कहियौ^{२०} ।

१ ख बाण । २ ख ग ध्रुवियौ । ३ ख असुरि । ४ ख ग पडीयो । ५ ग वाहै ।
 ६ ख ग भिडीयो । ७ ग असिमर । ८ ख ग आछटीयो । ९ ख ग भूडीयो ।
 १० ख ग पडीयो । ११ ख ग धड । १२ ख नदि । १३ ख पछे । १४ ख ग.
 अग्रिक्रम । १५ ग. वीता । १६ ख ग पहौर । १७ ग वीग्रहीयो । १८ ख.
 वहाँ । १९ ख ग भूत । २० ख ग कहियो ।

३७८. ध्रुवियौ - मारा, सहार किया । बाण कसि चदर - चन्द्रवाण कस कर । असुर -
 यवन । उतमंग = उत्तमाङ्ग - शिर, मस्तक । दाखै - कहता है । इम - इस प्रकार ।
 त्रिजड - तलवार । उरड - उलट-उलट कर दाए वाए । धड - विना शिरका शरीर ।
 तिम तिम - तैसे-तैसे ।

३७९ असि - घोडा । भिडियो - भिडा, टक्कर ली । असमर - तलवार । आछटी - वार
 किया । ऊससि - जोशमे आकर । भूडियो - वीरगति प्राप्त हुआ । पमग - घोडा ।
 सहेत - सहित । पडियो - वीर गति प्राप्त हुआ ।

३८० पछट - प्रहार कर । दूजौ - दूसरा । जितै - जब तक ।

३८१ वीता - व्यतीत होने पर । कवर - कुमार । विग्रहियो - युद्ध करता हुआ वीरगति
 प्राप्त हुआ । करि - कर के । वह - बहुत । रुदन - कष्टना-क्रन्दन, विलाप । हेक -
 एक । भ्रत - भृत्य, नौकर । कहियो - कहा ।

धरपति सुणि तिल सोच न धारै ।
 विध^१ करि^२ पाण^३ समस्या बारै ॥ ३८१
 दासातन अतराइ^४ न दीधी ।
 करतौ सदा सेव तिम कीधी ।
 सभि सेवा दळ सभे सकाजा ।
 रण^५ कजि सस्त्र कसे तन राजा ॥ ३८२
 हरचंद्र^६ वीर मुनंद^७ हडहडिया ।
 खेत समर साम्हा असि खडिया ।
 पुर बाहिर^८ इकवार वधूपुर^९ ।
 आया उठै नृपति^{१०} दळ आतुर ॥ ३८३
 घण जोवन^{११} धन रूप घरे^{१२} घरि ।
 स्रवचै सिरै चद्रमति सुदरि ।
 उण ग्रह अग्र^{१३} तन कनक अरोगी ।
 जाजुळमान^{१४} तपै इक जोगी ॥ ३८४
 भूपति हसै देखि सिध^{१५} भेसा^{१६} ।
 असि कसि वाग कीध आदेसा^{१७} ।

१ ख ग. विधि । २ ख ग कर । ३ ख ग पाणि । ४ ख ग अतराय । ५ ग
 रिण । ६ ग हरचद्र । ७ ख ग मुन्यद । ८ ख. वाहिर । ग वाहिरि । ९ ग
 वधूपुर । १० ख ग नृपति । ११ ख ग जोवन । १२ ख. घरि घरि । ग घर घरि ।
 १३ ख ग अग्रि । १४ ख ग जाजुल्यमान । १५ ख ग अघ । १६ ख ग. भेषं ।
 १७ ख आदेस । ग. आदेशं ।

३८१ धरपति - राजा ।

३८२ दासातन - दासत्व । अतराइ - विघ्न, बाधा । दीधी - दी । सदा - नित्य, सदैव ।
 सेव - सेवा । तिम - वैसे ही । कीधी - की । सभि सेवा - सेवा कर के । दळ -
 मेना । सभे - तैयार किया । रण - युद्ध । कजि - लिये ।

३८३ वीर - युद्धप्रिय भैरव । मुनद - मुनीन्द्र, नारद मुनि । हडहडिया - अट्टहास किया,
 हँसे । खेत - युद्धस्थल । समर - युद्ध । साम्हा - सम्मुख । असि - घोडा । खडिया -
 चलाये । आसुर - शीघ्र ।

३८४. स्रवचै - सवके । सिरै - श्रेष्ठ । उण - उमें । ग्रह - घर । अग्र - अगाडी । जाजुळ-
 मान - जाज्वल्यमान, तेजस्वी । तपै - तपस्या करता है ।

३८५ अमि - घोडा । कीध - किया । आदेसाँ - नमस्कार, प्रणाम ।

हसतौ नृप^१ देखे सिध हसियौ^२ ।
 विभ्रम^३ ताम नृपति^४ उर वसियौ^५ ॥ ३८५
 कहियौ^६ नृप सिधहू जोडे कर ।
 आयस^७ हसे चौक किण^८ ऊपर ।
 इम सुणि सिध नृपहूत उचारे ।
 पहल हसे नृप केणि प्रकारे ॥ ३८६
 सुणे हास्य विध^९ कहै नरेसुर ।
 गनिका ग्रहे आसण जोगेसुर ।
 वनखड गिर भगर नह वसियौ^{१०} ।
 हू औ देख^{११} कतूहळ हसियौ^{१२} ॥ ३८७
 धरि चित खिमा दोस मत धारौ ।
 आप हसणचौ ज्वाव उचारौ ।
 सुणे नृपति हित वात मुहाणी ।
 विधिवत कहण लगौ सिध वाणी ॥ ३८८
 सासत्र^{१३} विध सतसग समाजा ।
 राजनीति जाणै खब^{१४} राजा ।
 पह^{१५} तू सदा भेख पद^{१६} पूजै ।
 दडव^{१७} विना उपदेस न दूजै ॥ ३८९

१ ख ग नृप । २ ख. ग हसीयौ । ३ ग विभ्रम । ४ ख ग. नृपति । ५ ख ग वसीयौ । ६ ख ग कहीयौ । ७ ख ग आइस । ८ ख ग किणि । ९ ख ग. विधि । १० ख ग. वसीयौ । ११ ख ग देपि । १२ ख. ग हसीयौ । १३ ख सास्त्र । १४ ख सव । ग श्रव । १५ ख ग पही । १६ ख ग षट । १७ ख ग दईव ।

३८५ विभ्रम - भ्रम । ताम - उस ।

३८६ कहियौ - कहा । सिधहू - सिद्धसे । जोडे कर - करवद्ध हो कर । आयस - सिद्ध, सन्यासी । चौक - भूल चूक, आश्चर्य । नृपहूत - राजासे । केणि - किस ।

३८७ हास्य विध - हँसनेका कारण । नरेसुर - नरेश्वर, राजा । गनिका - वेश्या । ग्रहे - घर । गिर - पर्वत । भगर - भाडी । हू - मैं । औ - यह । कतूहळ - कौतूहल ।

३८८ खिमा - क्षमा । हसणचौ - हँसनेका । ज्वाव - जवाव, उत्तर । मुहाणी - सुहाई ।

३८९ खब - सब, सर्व । पह - राजा । भेख - सन्यास ।

रौद्रव दुख सुत विघन सुणे रिख^१ ।
 खडित^२ सेव कीध हेकणि^३ पख^४ ।
 इसौ वमेक सद्रढ^५ मत ऐहौ^६ ।
 जोगेसुरा^७ दुलभ अति जेहौ ॥ ३६०
 तू सब^८ जाण^९ राज प्रभुताई ।
 अजे अतीत परख नह आई ।
 दिव^{१०} नयणा चेतने^{११} दरसियौ^{१२} ।
 हू नृप^{१३} तूभ^{१४} देखि इम हसियौ^{१५} ॥ ३६१
 इम सुणि नृप छोडे अस्व आयौ ।
 लगि सिध पावा सोस लगायौ ।
 आयस गिणे भूप आपाणौ ।
 पावा^{१६} सोस ताम परवाणौ ॥ ३६२
 धू परि आड वभूत^{१७} तिलक धरि^{१८} ।
 कदळी पत्र दीध राजा करि ।
 जोय खेत्र^{१९} सिर घड जोडावौ ।
 डण पत्र छिवे^{२०} कुवर ऊठावौ^{२१} ॥ ३६३

१ ग रिण । २ ख ग षडित । ३ ख ग हेक । ४ ख. ग पिण । ५ ख ग सदिढ । ६ ख ऐहौ । ७ ख ग जोगेस्वरां । ८ ख सब । ९ ख जाणि । १० ख ग दिव्य । ११ ख चेत । ग चेतन । १२ ख ग दरसीयो । १३ ख ग नृप । १४ ख. तूभ । ग तुभ । १५ ग हसीयो । १६ ख पजौ । ग पंजो । १७ ख ग भभूति । १८ ख परि । १९ ख ग खेत । २० ख ग छिवे । २१ ग. उठावौ ।

३६०. रौद्रव - भयंकर । विघन - विघ्न, बाधा । सेव - सेवा, अर्चना । हेकणि - एक । इसौ - ऐसा । वमेक - विवेक । सद्रढ - सुदृढ, दृढ । मत - विचार । ऐहौ - ऐसा । जोगेसुरां - योगीश्वरो । दुलभ - दुर्लभ । जेहौ - जैसा ।

३६१ सब - सर्व, सब । जाण - जानने वाला । अजे - अभी तक । अतीत - सन्यासी । परख - परीक्षा । दिव - दिव्य । नयणा - नेत्रो । दरसियौ - दिखलाई दिया । हू - मैं । तूभ - तुम्हको । हसियौ - हँसा ।

३६२ अस्व - घोडा । आयस - महात्मा, सन्यासी । आपाणौ - अपना । पावा - चरणो ।

३६३ धू परि - शिर पर, मालमे । आड - आडा तिलक । वभूत - सन्यासीके अग्नि-कुडकी भस्मी, विभूति । कदळी - केला । पत्र - पान । दीध - दिया । करि - हाथमे । खेत्र - युद्ध-भूमि ।

इम कहि धरे गोळ घड आगै ।
 ले वभूत तिण^१ लोह न लागै ।
 तिलक आड जोधा सब^२ तांगै ।
 जोध सक्रोध वणे सिध जाणै ॥ ३६४
 साधि^३ अनेक जवन सत्रपतिनू ।
 छडी गुलाब दीध छत्रपतिनू ।
 जावौ विजै करी राजा जुध ।
 इण विध^४ मति भालौ अनि आवध ॥ ३६५
 इक धारण तो जिम चित आवै ।
 पूजै भेख जिकौ वर पावै ।
 सुणि नूप करे प्रणाम सकाजा ।
 रैवत चढि आए^५ जुधि राजा ॥ ३६६
 ऊमर ताम सामुहौ आए ।
 विखम सरां पावस वरसाए^६ ।
 छिवि छिवि सर तूटे इम छाजै ।
 भाखर सिखर काच जिम भाजै ॥ ३६७
 बहु^७ करि कोप लोप^८ भड बांणा^९ ।
 आडै लोह मिळै असुरांणा ।

१ ख ग तिणि । २ ख सब । ३ ग साध । ४ ख विधि । ग विणि । ५ ग
 आए । ६ ग. वरसाए । ७ ख. वहौ । ग वहौ । ८ ग लोपि । ९ ख वाणां ।

३६४. आड - आडा, त्रिपुण्ड्र तिलक विशेष ।

३६५ जवन - यवन, मुसलमान । दीध - दी । छत्रपतिनू - राजाको । भालौ - धारण
 करिये । अनि - अन्य । आवध - आयुध ।

३६६ रैवत - घोडा । जुधि - युद्धमे ।

३६७ सामुहौ - सम्मुख, सन्मुख । विखम - विषम, भयकर । सरां - बाणो । पावस -
 वर्षा । सर - बाण । भाखर - पर्वत । जिम - जैसे ।

३६८. भड - वर्षा । असुराणां - यवन, मुसलमान ।

कमधज लोह करै जवनां करि ।
 पड^१ वढि^२ पडै तांत^३ सावण^४ परि ॥ ३९८
 त्रजड^५ जवन वाहे^६ सुजि तूटै ।
 छांट^७ एक रततणी न छूटै ।
 घण खळ नूप^८ छटिका करि घावै ।
 इद्र वजर^९ जिमि^{१०} खळां उडावै ॥ ३९९
 उवर^{११} आदि राजा पाडे अरि ।
 किलम हजार गुलाब छड़ी करि ।
 भट खग जवन कवट धड़ भाड़े ।
 पाच हजार रावतां पाडे ॥ ४००
 एक सहस मुखि त्रिणा अधारै ।
 वचियो^{१२} जवन भूप भड वारे^{१३} ।
 रण करि फतै त्रवक डड रोड़े ।
 जोए कुवर सीस धड़ जोडे ॥ ४०१
 ले कदली पत्र अंगि लगाए^{१४} ।
 जिम ऊठे^{१५} तिम^{१६} नीद जगाए^{१७} ।

१ ख ग थड । २ ग वढि । ३ ख. तंत । ४ ग सावण । ५ ख ग त्रिजड । ६ ग वाहे । ७ ख छांण । ८ ख ग नूप । ९ ग. वज्र । १० ख ग जिम । ११ ग उंमर । १२ ख वचीया । ग वचीया । १३ ख ग वारे । १४ ग लगाए । १५ ख. ग उठे । १६ ख जिम । १७ ग जगाए ।

३९८ पंड - शरीर । वढि - कट कर । सावण - सावुत ।

३९९ त्रजड - तलवार । वाहे - प्रहार कर । सुजि - वह । छांट - छीटा । रततणी - खूनकी । घण - बहुत ।

४००. पाडे - सहार कर, मार कर । अरि - शत्रु । किलम - मुसलमान । भट - प्रहारा । खग - तलवार । कवट - (?) । भाड़े - काट दिये । रावतां - योद्धाओ । पाडे - गिरा दिये, मार दिये ।

४०१ मुखि - मुखमे । त्रिणा - तिनका । त्रवक - नगाड़ा । डड - डडा । रोड़े - वजा कर । जोडे - जोड कर ।

४०२ कदली - केला । अंगि - शरीर ।

वहता रगत देखि खळ वाढे^१ ।
 चंद्रप्रहास ग्रहै धक^२ चाढे ॥ ४०२
 - कवर^३ देखि खत्रवट^४ अधिकार्ई ।
 सुपह^५ रीभ^६ सब कथा सुणार्ई ।
 सुण^६ पित वात कुवर कहियौ^७ सति ।
 मो सिध दरस कराजे महपति^८ ॥ ४०३
 मिळ सुत सुभड जूथ जुत महपति ।
 सिध^९ आसण^{१०} आए^{११} तिण सायति ।
 असिहूं^{१२} क्रम चत्र^{१३} दस ऊतरिया^{१४} ।
 धू^{१५} नमाय पावा सिध धरिया^{१६} ॥ ४०४
 सुतपति^{१७} सिर सिध हाथ सधारे ।
 एम^{१८} प्रसन^{१९} ह्वै वचन^{२०} उचारे ।
 *असि तजि बिहू तठै ऊतरिया^{२१} ।
 भूमौ दरस हेत क्रम भरिया^{२२} ॥ ४०५

१ ग. वाढे । २ ख ग धष । ३ ख ग. कुवर । ४ ग. खत्रवटि । ५ ख रीभि ।
 ६ ख ग. सुणि । ७ ख ग. कहीयौ । ८ ख ग महपति । ९ ग सिधि । १० ख.
 ग. आश्रम । ११ ग आऐ । १२ ख. ग चक्र । १३ ख ग ऊतरीया । १४ ख.
 घूत । १५ ख ग घरीया । १६ ख ग सुरपति । १७ ख. एव । ग ऐम । १८ ख.
 ग वचन । १९ ख ग प्रसन ।

*ये चार पक्तिया ख प्रतिमे नही हैं ।

२० ग ऊतरीया । २१ ग भरीया ।

४०२ रगत - रक्त, खून । खळ - शत्रु । वाढे - काट दिये । चंद्रप्रहास - तलवार । धक - क्रोध, जोश ।

४०३ खत्रवट - क्षत्रियत्व, शौर्य । अधिकार्ई - विशेषता । सुपह - राजा । रीभ - प्रसन्न हो कर । पित - पिता । मो - मुझको । दरस - दर्शन । महपति - राजा ।

४०४ सुभड - योद्धा । जूथ - समूह, दल । जुत - युक्त । तिण - उस । सायति - समय । असिहू - घोड़ेसे । क्रम - पैर, चल कर । चत्र - चारो । धू - शिर । पावां - चरणोंमे ।

४०५. सुतपति - पिता पुत्र । प्रसन - प्रसन्न । ह्वै - हो कर । असि - घोडा । बिहू - दोनो । तठै - वहा । ऊतरिया - उतरे । भूमौ - भूमि पर । दरस - दर्शन । हेत - लिये । क्रम - कदम, चरण ।

नृप^१ होसी तो जोड नरेहण ।
 इता नृपति^२ तो वंस^३ अरेहण ।*
 वधसी^४ कुळ वह^५ कीत^६ वडाई^७ ।
 अस^८ मरदन खत्रवट^९ अधिकार्ड ॥ ४०६
 जवन अनेक वैर धक जुडसी ।
 मरसी तिकौ काय जुध मुडसी ।
 असुर अनेक लागि धक आसी ।
 जुधि जुधि तिकै प्रळै हुड जासी ॥ ४०७
 सहस गुणा लडसी घण^{१०} सारां ।
 भिडती^{११} पण^{१२} पडसी गज भारां ।
 चक्रवत^{१३} तो पीढी लग चवदा ।
 रवदां खय करसी खैरवदा ॥ ४०८
 गुजस तूभ वदसी^{१४} वह^{१५} साखै ।
 अह नाम गोरख इम^{१६} आखै ।
 जोए^{१७} नृप^{१८} वंदण^{१९} किय^{२०} जितरै ।
 अतरध्यांन हुवौ सिध इतरै ॥ ४०९

१ ग नृप । २ ग नृपत । ३ ख वंस । ४ ग वधसी । ५ ग वही । ६ ग कृत ।
 ७ ग वडाई । ८ ख ग असि । ९ ख ग खत्रवट । १० ख भड । ११ ख ग.
 भिडितौ । १२ ख षडग । १३ ख. ग चक्रवति । १४ ख वधसी । १५ वधसी ।
 १६ ख वही । १७ ग वही । १८ ग ईम । १९ ग. जोए । २० ख ग. नृप । २१ ग
 वदण । २२ ख. ग. कीय ।

४०६ नरेहण - पवित्र, निष्कलक, राजा । अरेहण - अरियोका नाश करने वाला, योद्धा,
 वीर । अस - घोडा । खत्रवट - क्षत्रियत्व, शौर्य । अधिकार्ड - अधिकता, आधिक्य ।
 ४०७ जवन - मुसलमान । धक - जोश, क्रोध । मरसी - मरेगा । तिकौ - वह । काय -
 या, अथवा । मुडसी - मुड जायेगा । जुधि - युद्धमें । प्रळै - नाश । जासी - जायेंगे ।
 ४०८ सारां - तलवारों । गज - हाथी । भारां - समूह । चक्रवत - चक्रवर्ती । पीढी -
 पुस्त । लग - तक । चवदा - चौदह । रवदां - मुसलमान । खय - नाश । करसी -
 करेगे । खैरवदा - यवनोका नाश करने वाले, राठौडोके प्रमुख तेरह वशोंमें एक वश ।
 ४०९ तूभ - तेरा । वदसी - वडेगा । वह - बहुत । अहं - मैं । आखै - कहता है । जोए -
 देव कर । वंदण - नमस्कार । जितरै - जब तक । हुवौ - हो गया । इतरै -
 इतनेमें ।

जपियौ^१ सिध जिण विध^२ जुध जीता ।
वधै^३ वस^४ खैरौद वदीता ।
असुर हणै^५ व्रद^६ वणै^७ अथागा ।
वर सिधकरि खैरोदा^८ वागा ॥ ४१०

राजा पुंजरै तेरमा पुत्र चदरी वरणण—

तेरहमौ^९ सुत पुज तवीजै^{१०} ।
वळ दत खग जिण^{११} जोड न बीजै^{१२} ।
उभै^{१३} गयद बळ^{१४} तेज अमावौ ।
चद नाम प्रथमी^{१५} जस चावौ ॥ ४११
धरम बभ^{१६} लघु भ्रात हेत धरि ।
कासीराज तेणि दीधौ करि ।
हित देखे नृप^{१७} राग हुलासी ।
करै विलास इद्र जिम कासी ॥ ४१२
दुतिय^{१८} अनग रूप दरसांणा ।
पाण पाच दीरघ निज पाणा ।
बाह^{१९} अजान^{२०} तेज अतुळीबळ ।
हर चख भळ मधि जेठ हळाहळ^{२१} ॥ ४१३

१ ख ग जपीयो । २ ग. विधि । ३ ग वधे । ४ ग वस । ५ ग व्रद । ६ ग वणे । ७ ख ग खैरवदा । ८ ख तेरहौ । ९ ख नवीजै । १० ख ग तिण । ११ ख नवीजै । ग नावजै । १२ ख वल । १३ ख ग प्रिथमी । १४ ख वभ । १५ ख ग नृप । १६ ख दुतीय । ग द्वतीय । १७ ख बाह । १८ ख ग आवन । १९ ख ग भळाहल ।

४१० खैरौद - राठीडोके तेरह प्रमुख वशोमि से एक वश । वदीता - प्रसिद्ध, विदित । हणै - नाश करते हैं, सहार करते है । व्रद - विरुद । अथागा - अपार । वर सिधकरि - सिद्धके वरदानसे । वागा - प्रसिद्ध हुए ।

४११ तवीजै - कहा जाता है । दत - दान । खग - तलवार । जिण - जिस । जोड - वरावर । बीजै - दूसरेके । अमावौ - अपार, असीम । प्रथमी - पृथ्वी । चावौ - प्रसिद्ध ।

४१२. राग - प्रेम ।

४१३ दुतिय - द्वितीय । अनग - कामदेव । दरसांणा - दिखाई दिया गया । बाह आजान - आजानुवाह । अतुळीबळ - अतुल्य बलशाली ।

वारण सिर तोड़ै खग वकी^१ ।
 ताणै स्रगणि^२ अढ़ारह^३ टंकी ।
 ताणै तठी जोम खळ तूटै ।
 फील पांच एकणि^४ सर^५ फूटै ॥ ४१४
 अठतालीस^६ तोड़े कर एकण^७ ।
 मुदगर अठतालीसतणा मण ।
 आगै जोम पराक्रम^८ इसडौ ।
 जुग^९ द्वापुरि^{१०} जोधां मभि जिसडौ ॥ ४१५
 जोगी नेमनाथ सेवै जिण^{११} ।
 तेरह रती दीध पारद तिण ।
 भखियौ^{१२} पत्र मधि^{१३} ईसम भारां ।
 सात दिवस सामल^{१४} घण सारा ॥ ४१६
 वपु दस गुणै जोर नृप^{१५} वधियौ^{१६} ।
 सौ गुण अनंत^{१७} पराक्रम सधियौ^{१८} ।
 आगाहूत^{१९} खुधा त्रीखण^{२०} अति ।
 भोजन करै दसगुणौ भूपति ॥ ४१७

१ ग वंकी । २ ख ग शृंगणि । ३ ग अढ़ार । ४ ग ऐकणि । ५ ग. सरि ।
 ६ ग अठतालिस । ७ ग ऐकण । ८ ख. क्रम । ९ ख ग जुगि । १० ख ग
 द्वापुर । ११ ख तिण । १२ ख ग भखीयो । १३ ग. मध । १४ ख सामिलवा ।
 ग सामिल । १५ ख ग. नृप । १६ ख वधियौ । ग वधियौ । १७ ख ग अनग ।
 १८ ख ग. सधियौ । १९ ख आगहूतु । २० ख ग त्रीखण ।

४१४ वारण - हाथी । तोड़ै - काटता है । वंकी - वाकुरी । ताणै - खीचता है । स्रगणि -
 घनुप । अढ़ारह टंकी - अठारह टंकी या टाकका घनुप । तठी - उस ओर । जोम -
 शक्ति, बल । तूटै - नाश होता है, टूटता है । फील - हाथी । एकणि - एक । सर -
 वारण ।

४१५. मुदगर - मुगदर । आगै - पहिले, पूर्व । जोम - जोश । इसडौ - ऐसा । मभि -
 मध्य, मे । जिसडौ - जैयो ।

४१६ भखियौ - खाया, भक्षण क्रिया । दिवस - दिन ।

४१७ वपु - शरीर । वधियौ - बढा । सधियौ - मिट्ट हुआ । आगाहूत - पहिलेमे । खुधा -
 भूख । त्रीखण - तीक्ष्ण, तेज, प्रदीप्त ।

आरुण^१ करणि^२ रूप अधिकारौ ।
 चरै महिख^३ गूदगिरी^४ चारौ ।
 मैदा घृत^५ मेवा मिसरीरा ।
 सौ महखिया^६ भखै नित सीरा ॥ ४१८
 ग्यारहसै डड करि^७ अवगाढौ ।
 थणकढ पियै^८ दोग्य मण थाढौ ।
 भख अधमण^९ अधमण घृत भोगै ।
 आमख^{१०} सेर चौतीस अरोगै ॥ ४१९
 पौढै तेण^{११} वखत^{१२} नृप^{१३} पावै ।
 महखी दूध सवामण मावै ।
 सौ सौ पांनतणा वीडा सब ।
 नित^{१४} जिण^{१५} माहि मुसाला जुगनव ॥ ४२०
 दे दे पान^{१६} पान तिण^{१७} दोळा ।
 तिण मभि वरक^{१८} वीसपंच^{१९} तोळा ।
 तार रहित^{२०} मघई पत्र ताजा ।
 रातिवबंध^{२१} भखै नित^{२२} राजा ॥ ४२१

१ ख आरण । ग आरणि । २ ख. करण । ३ ख ग महकि । ४ ख ग. गूंदगरी ।
 ५ ख ग घृत । ६ ख. सोमहखीयां । ग. सौमहीयां । ७ ग कर । ८ ख. ग पीवै ।
 ९ ग अनमण । १० ख ग अमख । ११ ख तेणि । १२ ग. वखत । १३ ख ग
 नृप । १४ ग निज । १५ ग तिण । १६ ख ग पानि पानि । १७ ख ग तह ।
 १८ ख वरक । १९ ग वीस । २० ख ग रहत । २१ ग. रातिववध । २२ ख.
 ग. निति ।

४१८. करणि — करण, मात्र । चरै — भोजन करता है, खाता है । महिख — भैंसा ।

गूदगिरी — एक प्रकार का गन्ना । चारौ — भोज्य पदार्थ ।

४१९ महखियां — भैंसों । अवगाढौ — शक्तिशाली, बलवान । थणकढ — धारोष्ण । थाढौ —
 खडा खडा । भख — भोजन । अधमण — आधा मन । घृत — घृत, घी । आमख — आमिप,
 मास । अरोगै — खाता है ।

४२० महखी — भैंस । मावै — खुराकमे । जुगनव — नी के दुगुने अट्टारह प्रकारके ।

४२१ दोळा — चारो ओर । तिण — उस । मभि — मध्य । मघई पत्र — जाति विगेषका
 पान । रातिवबंध — नित्यप्रतिका बधा हुआ साधारण भोजन, रातिव ।

तेज इसौ दीसै भळहळ तन ।
 किर^१ तावियौ^२ सोळमौ^३ कचन^४ ।
 जोता रूप जोड नह जितरै ।
 उदियाचळ^५ असताचळ इतरै ॥ ४२२
 तिणहिज वार दुतिय^६ छत्रपत्ती ।
 करै राज भळहळ क्रामत्ती ।
 एक^७ नगर अदभुत दिसि उत्तर ।
 पचसठि^८ कोस गिरद तारापुर ॥ ४२३
 महल निवाण वाग मन^९ मोहै ।
 सुरपति तिकर दुवौ पुर सोहै ।
 थटपति चाहुवांण^{१०} तिण थाहर ।
 जगत छत्रनामै जग^{११} जाहर ॥ ४२४
 कुळभूखण तिणरै मुर कम्मर ।
 अभैसेन वीरोचन अम्मर ।
 दिल मभि नृप^{१२} अभिलाख न दूजै ।
 पुत्री होण काज^{१३} सिव^{१४} पूजै ॥ ४२५

१ ख ग. किरि । २ ख. ग तावीयो । ३ ख ग सोळिमौ । ४ ग. कांचन । ५ ख.
 उदीयाचळ । ग. उदियाचळ । ६ ख. ग दुतीय । ७ ग ऐक । ८ पचिसठ । ९ ख
 ग चित । १० ग चहूवांण । ११ ख. ग. जगि । १२ ख ग. नृप । १३ ख. काजी ।
 ग. काजि । १४ ख शिव ।

४२२ इसौ—ऐसा । दीसै—दिखाई देता है । भळहळ—देदीप्यमान । तन—शरीर ।
 किर—मानो । तावियौ—तपाया हुआ । सोळमौ कंचन—सोलह वार तपाया हुआ
 शुद्ध सोना । जोतां—देखने पर । जोड—वरावर । जितरै—जितनी दूरीमे ।
 उदियाचळ—वह कल्पित पर्वत जिस तरफ सूर्य उदय होता है । असताचळ—वह
 कल्पित पर्वत जिस तरफ सूर्य अस्त होता है । इतरै—इतनी दूरीमे ।

४२३ तिणहिज—उस ही । वार—समय । दुतिय—द्वितीय । छत्रपत्ती—राजा । भळहळ—
 देदीप्यमान । क्रामत्ती—काति, दीप्ति । गिरद—पर्वत ।

४२४ निवाण—कुआ, तालावादि जलाशय । सुरपति—इन्द्र । दुवौ—दूसरा । पुर—नगर ।
 थटपति—वैभवशाली, राजा, नृप । थाहर—गढ, स्थान ।

४२५. मुर—तीन । कम्मर—कुमार । अभिलाख—अभिलाषा । काज—लिये ।

मधि खट मास अनै वासुर^१ मुर ।
 उमया सहित दीध वर ईसर^२ ।
 सकतिहूत कहियौ^३ हसि संकर^४ ।
 घरणि धरौ अवतार नृपति^५ घर^६ ॥ ४२६
 आखै सकति हसै प्रति - उत्तर ।
 हू^७ जामात आप घरि नृपहर ।*
 सिव^८ सेवै पुत्र हेत^९ सयाणी ।
 पुज नरेसतणी पटराणी ॥ ४२७
 अद्विती उवरि आप अस आवौ ।
 मो अमि^{१०} उद्र^{११} त्रिपुरा मेलावौ ।
 तथासतू कहियौ^{१२} सिव तारा ।
 तत दुहु हुवा^{१३} अस अवतारा ॥ ४२८
 निज दिनहूत मास इक नमै ।
 जादिन^{१४} अद्विती^{१५} चद जनमं ।

१ ग वासुर । २ ख. ग ईसुर । ३ ख ग कहीयो । ४ ग सकरि । ५ ख ग नृपति । ६ ख ग घरि । ७ ख ग हौ ।

*ख और ग. प्रतिमे यह पक्ति निम्न प्रकार हैं—

हौ जामात आप नृप घरि हर ।

८ ख सिवि । ९ ख ग हेति । १० ख ग. अस । ११ ख ग. उद्वि त्रिपुर । १२ ख. ग कहीयो । १३ ग हुआ । १४ ख जामद । ग जादमि । १५ ख. ग अद्विती ।

४२६ मधि—मध्य, मे । खट—छ । अनै—और । वासुर—दिन । मुर—तीन । उमया—उमा, पार्वती सहित । दीध—दिया । वर—वरदान । ईसर—शिव, महादेव । सकतिहूत—शक्तिसे, पार्वतीसे । कहियौ—कहा । हसि—हँस कर । घरणि—गृहिणी ।

४२७ आखै—कहती है । प्रति-उत्तर—प्रत्युत्तर । हू—मै । जामात—दामाद । नृपहर—राजा । सेवै—सेवा करता है । हेत—लिए । सयाणी—चतुर, सज्जन । नरेसतणी—पुज राजाकी । पटराणी—पट्ट महिषी ।

४२८. मो—मेरा । तथासतू—तथास्तु । तारा—तव ।

४२९ इक—एक । नमै—नववा ।

सकति रूप अदभुत^१ दुति सज्जे ।
 उद्र^२ त्रपुरा^३ परमार^४ उपज्जे^५ ॥ ४२६
 पहुप^६ भार दुख जननि न प्रमै ।
 जोगणि असटम^७ वरस जनमै ।
 अदभुत^८ तेज रूप ओपती^९ ।
 जुध होसी कहियौ^{१०} जनमती ॥ ४३०
 भय भ्रम^{११} सोच चकित^{१२} चित भारी ।
 निकटव्रती कहु ईसव - नारो^{१३} ।
 मालम हुई घडी तिण^{१४} माभळि ।
 इचरज वात जगत छत्र आगळि ॥ ४३१
 राजा सुणि तेडे राजस्सी^{१५} ।
 जोध मत्री समणी जोतस्सी^{१६} ।
 थटपति चहूहूत मत्र थपियौ^{१७} ।
 जनमती कनिया^{१८} जुध जपियौ^{१९} ॥ ४३२

१ ख अदभुति । ग अदभूत । २ ख अद्धि । ग उनि । ३ ख ग त्रिपुरा । ४ ख
 षटमारि । ग परमारि । ५ ग उपजे । ६ ख ग, पहूप । ७ ख अष्टम । ग. अष्टमि ।
 ८ ग अदभूत । ९ ख ग ओपती । १० ख ग कहीयी । ११ ख क्रम । १२ ख.
 ग चकित । १३ ख ईश्वतारी । क. इष्टवतारी । १४ ख ग तिणि । १५ ग
 राजसी । १६ ग जोतसी । १७ ख ग थपीयी । १८ ख ग कनीया । १९ ख.
 ग जपीयी ।

३२६ दुति - द्युति । उपज्जे - उत्पन्न हुआ ।

४३० पहूप - पुष्प, फूल । जोगणि - देवी, पार्वती । असटम - आठवाँ । ओपती - चमक-
 दमक करती हुई, शोभा देती हुई । जनमती - जन्म लेती हुई ।

४३१ भ्रम - शका, सदेह । चकित - चकित, आश्चर्ययुक्त । तिण - उस । माभळि -
 मध्यकी । इचरज - आश्चर्य । छत्र - राजा । आगळि - अगाडी ।

४३२ सुणि - सुन कर । तेडे - बुलाया । राजस्सी - राजषि । जोध - योद्धा, वीर । समणी -
 शकुन शास्त्रज्ञ । जोतस्सी - ज्योतिषी । थटपति - वैभवशाली राजा । चहूहूत -
 चारो ओर । थपियौ - स्थापित किया । जनमती - जन्म लेती हुई । कनिया -
 कन्या । जपियौ - कहा ।

कारण कवण^१ वयण लघु काया ।
 महमा प्रबळ ईस्वरी^२ माया ।
 पुणै भडा^३ विगपति धरि पौरस ।
 जुध होसी तो विजै हुसी जस ॥ ४३३
 कर जोडे महिमा^४ हित चित करि ।
 मत्रिया^५ अरज करि^६ तिण^७ मौसरि ।
 त्रिण जुध करि दूखण उतरावौ ।
 जेठी पायक^८ गयद जुटावौ ॥ ४३४
 धारण सबद^९ दिसा चित धारै ।
 अरज त्रितिय^{१०} सवणिया^{११} उचारै ।
 दिस पूरब^{१२} कनिया^{१३} जुध दाखै ।
 भाण उगाण टळै नह भाखै^{१४} ॥ ४३५
 पुणै निजूम अरज मत प्राजौ^{१५} ।
 सनि रवि राह केत दन साजौ^{१६} ।

१ ख. ग कमण । २ ख ग ईसुर । ३ ख. पडा । ४ ख ग महमा । ५ ख ग. मत्रीया । ६ ख ग कीध । ७. ख ग तिणि । ८ ख पाय । ९ ख सबद । १० ख ग. त्रितीय । ११ ख सवणीया । ग सावणीया । १२ ख. पूरव । १३ ख ग कनीयां । १४ ख दाखै । १५ ख. प्राभौ । १६ ख ग साभौ ।

४३३ कवण - क्या, कौन । वयण - वचन । लघु - छोटी । काया - शरीर । महमा - महिमा । ईस्वरी माया - ईश्वरकी माया । पुणै - कहता है । भडा - योद्धाओ । विगपति - विज्ञप्ति, विज्ञापन । पौरस - बल, शक्ति । होसी - होगा । तो - तेरा । हुसी - होगी ।

४३४ कर जोडे - करवद्ध हो कर । तिण - उस । मौसरि - अवमर । दूखण - दोष । जेठी - बडा । पायक - सेवक । गयद - हाथी । जुटावौ - तैयार करो ।

४३५ अरज - प्रार्थना । त्रितिय - तृतीय । सवणिया - शकुन शास्त्रज्ञो । कनिया - कन्या, पुत्री । दाखै - कहती है । भाण उगाण - सूर्योदय । नह - नहीं । भाखै - कहती है ।

४३६ पुणै - कहते हैं । निजूम - ज्योतिष (नोट-अरबीमे नज्म तारोको कहते हैं । उसी नज्मसे निजूम, नुजूमदा, नुजुमी शब्द बनते हैं जिनका अर्थ क्रमशः तारा तथा ज्योतिषी होता है । इसीका अपभ्रंश शब्द निजूम कविने प्रयोग किया है ।) मत - राय । प्राजौ (भौ) - जवरदस्त । सनि - शनिश्चर । रवि - सूर्य । राह - राह । केत - केतु । साजौ - साथ, एकत्र ।

लिखिया^१ वडा ग्रंथ इम^२ लेखा ।
 विघन टळै पुनि किया विसेखां ॥ ४३६
 चहुवा इम चहुमत्र उचारै ।*
 पह^३ साभळि निज महल^४ पधारै ।
 वूमै^५ राजलोक मुर वीजै^६ ।
 करै अरज मन^७ ह्वै सुजि कीजै ॥ ४३७
 जदि नृप^८ कहै सुता ले जावौ ।
 उरवी^९ रध्र मगन करि आवौ ।
 कनिया^{१०} ग्रहे हालिया किकर^{११} ।
 वदै अरज प्रोहित मेधावर ॥ ४३८
 पूजै सिव वरहू नृप पाई ।^{१२}
 कनिया हतण अजोग्य कमाई ।
 अनुचित काज न कीजै ऐहौ^{१३} ।
 जुध नृप उचित काज तौ^{१४} जेहौ^{१५} ॥ ४३९

१ ख ग लिखीया । २ ग इण । *ख तथा ग प्रतियोके अनुसार यह पक्ति निम्न प्रकार है—

चहुवा इम मत्र चहू उचारे ।

३ ख ग पौहौ । ४ ख. महलि । ग महिल । ५ ख वूमै । ६ ख ग वीजै ।
 ७ ख. ग. मनि । ८ ख ग नृप । ९ ख ग उरवी । १० ख कनीया । ११ ख. ग
 क्यकर । १२ ख. प्रति यह पक्ति मे निम्न प्रकार है—

पूजे शिव नृप हू वर पाई ।

१३ ख ग. एहौ । १४ ग तौ । १५ ग जेहो ।

४३६ लिखिया — लिखे है । इम — डम । विघन — विघ्न । पुनि — फिर । विसेखा —
 विघेप बात ।

४३७ चहुवां — चारो ओर । पह — राजा । सांभळि — सुन कर । वूमै — पूछता है ।
 राजलोक — राणियो । मुर — तीन । सुजि — वह । कीजै — कीजिये ।

४३८ जदि — जब । सुता — पुत्री । उरवी — भूमि, पृथ्वी । रध्र — छेद, गढा । मगन
 करि आवौ — गाड कर आ जायो । कनिया — कन्या, पुत्री । हालिया — चले । किकर —
 दास । वदै — कहता है । मेधावर — बुद्धिमान, मेधावी ।

४३९ वरहू — वरदानमे । हतण — मारना । अजोग्य — अयोग्य । कमाई — कर्म, कार्य ।
 ऐहौ — ऐमा ।

पडिया^१ जुध प्रथमी^२ जस पावै ।
 कनिया हतण अजोग्य कहावै ।
 हद नृपनीति अरज किय^३ प्रोहित^४ ।
 भावी वस^५ मांती नहि भूपति ॥ ४४०
 कनिया^६ भोमि विवर^७ लघु काया ।
 आयस जेम दास धरि^८ आया ।
 वदियौ^९ वळि धर मगन^{१०} बाळ^{११} वय^{१२} ।
 जय मम घर, मम पिता पराजय ॥ ४४१
 कथ सुणि अचभ धाविया^{१३} किंकर^{१४} ।
 जोडे कर कीधी^{१५} नृप^{१६} जाहर ।
 भ्रमचित सोच वात अणभाई ।
 महपति^{१७} कनिया फेर^{१८} मगाई ॥ ४४२
 काढी धर खोदे मुळकंती ।
 भूलै कनक तणै भूलती ।
 आणी भूला सहित उठाए^{१९} ।
 परगह मत्री अचभ नृप^{२०} पाए^{२१} ॥ ४४३

१ ग पडिया । २ ख. ग प्रिथमी । ३ ख ग कीय । ४ ख. प्रोहिति । ग प्रीहित ।
 ५ ख वसि । ग वसि । ६ ख ग. कनीया । ७ ग विवर । ८ ग. धर । ९ ख
 वदीयौ । ग. वदीयौ । १० ख ममन । ११ ख. वाळ । १२ ख. वय । १३ ख ग
 धावीया । १४ ख ग क्यकर । १५ ख दीधी । १६ ख ग नृप । १७ ख महिपति ।
 १८ ख ग फेरि । १९ ग उटाए । २० ख ग नृप । २१ ग पाए ।

४४० पडिया जुध - युद्धमे वीर गति प्राप्त करने पर । प्रथमी - भूमि, ससार । हतण -
 हत्या करना, मारना । अजोग्य - अयोग्य ।

४४१ भोमि - भूमि । विवर - रघ्न, गद्दा । आयस - आज्ञा । जेम - जंसा । वदियौ -
 कहा । वळि - फिर । धर - भूमि । मगन - दफनाना क्रिया, या भाव । बाळ-वय -
 बाल्यावस्था । मम - मेरा । वर - पति ।

४४२ कथ - शब्द, वृत्तान्त । सुणि - सुन कर । अचभ - आश्चर्ययुक्त । धाविया - दौड़े ।
 किंकर - दास । जोडे कर - करवद्ध हो कर । कीधी - की । जाहर - प्रकट ।
 अणभाई - अप्रिय । महपति - राजा ।

४४३. मुळकती - हँसती हुई । भूलै - भूलेमे । कनक - सुवर्ण, सोना । भूलंती - भूलती
 हुई । अचंभ - आश्चर्य । परगह - परिगह, नौकर-चाकर ।

तदि स्रव छभा कहै नृप^१ तिणनू^२ ।
 अविवाहिता राखिजै इणनू^३ ।
 बोलै^४ कुवर मत्री पडित बुध^५ ।
 जो वर^६ हुसी त फतै हुसी^७ जुध ॥ ४४४
 अनि सुणि कोइक^८ वरण नृप आसी ।
 पांण - ग्रहण पहिला अत^९ पासी ।
 जिणसू लड़ण सीम धर जावां ।
 अस्त्र सस्त्र करि सीस उडावा ॥ ४४५
 खितपति सुणे अधिक हरखाणौ ।
 ठीक वात निहचौ^{१०} ठहराणौ ।
 *जपियौ^{११} मधि कनियो^{१२} ले जावौ ।
 करि रछिया^{१३} पय पान करावौ* ॥ ४४६
 उमर वरस^{१४} एकादस आई ।
 अठै सुणो नृप^{१५} चद्र अवाई ।
 सुणतां मात्र कूच नृप सधियौ^{१६} ।
 वेल समुद्र^{१७} जेम दळ वधियौ^{१८} ॥ ४४७

१ ख. ग. नृप । २ ख तिणनु । ३ ख इणनु । ४ ख बोले । ५ ख बुध । ६ ख.
 घर । ७ ख ग. होसी । ८ ख कोई । ९ ख ग. मृत । १० ग नहचौ । ११ ग
 जपीयो । १२ कनीयां ।

*ये पक्तिया ख. प्रतिमे नही है ।

१३ ग रछिया । १४ ग. वरस । १५ ख ग नृप । १६ ख सवीयो । ग सवीयो ।
 १७ ख ग समंद्र । १८ ग. वधीयो ।

४४४ तदि - तव । स्रव - सव । छभा - सभा । इणनू - इसको । बुध - विद्वान् । वर -
 पति, वरदान । हुसी - होगी ।

४४५ अनि - अन्य । वरण - पाणिग्रहण करनेको । पांण - पाणि । अत - मौत ।

४४६ खितपति - राजा । हरखाणौ - हर्षित हुआ । निहचौ - निश्चय । ठहराणौ -
 ठहराया गया । जपियौ - कहा । मधि - अन्त पुरमे । रछिया - रक्षा । पय पान -
 दूध पिलाना ।

४४७ अवाई - खबर, मन्देश । सधियौ - मजा, तैयारीकी । वेळ - तरंग, हिलोर । जेम -
 जेमे । वधियौ - बढा ।

केजिम सिलह सस्त्र^१ अग^२ कसिया^३ ।
 असी सहस आवध^४ ऊससिया^५ ।
 वपि केसरिया^६ साज वणाया ।
 उभै सहस सिधुर धुज^७ आया ॥ ४४८
 हुतभुक^८ सस्त्र धनुख धर हाथै ।
 सहस पचास पायदळ साथै ।
 फबि^९ विस^{१०} सहस^{११} गयद^{१२} धज फरहर ।
 धरै^{१३} महौरि वि सहस वजित्र^{१४} धर ॥ ४४९
 राजा सम गज धुज राजारै ।
 अडसठ^{१५} सुकवि विरद उच्चारै^{१६} ।
 वह^{१७} धुर धमळ जूट बहु^{१८} बेलै^{१९} ।
 पाच हजार तोप गज पेलै ॥ ४५०
 भिडज जूथ^{२०} विजई^{२१} भाराथै^{२२} ।
 सहस अठार रहकळा साथै ।
 धिख चख सुतर भार धारूदा ।
 वह^{२३} सामान सकट बारूदा ॥ ४५१

१ ग सस्त्र । २ ग अगि । ३ ग कसिया । ४ ख ग आवधुज । ५ ख ग ऊस-
 सीया । ६ ग केसरीया । ७ ख धुन । ८ हुतभुका । ९ ख फवि । १० ख ग
 विस । ११ ख ग सहस । १२ ख. ग गयदा । १३ ख ग घने । १४ ख ग.
 वाजित्र । १५ ख. ग अडसठि । १६ ख ऊचारे । ग उचारे । १७ ख वही । ग वही ।
 १८ ख. वही । ग वही । १९ ख वलै । २० ख ग जूप । २१ ख ग विजई ।
 २२ ख ग भाराथे । २३ ख वही ।

४४८. केजिम - (?) । सहस - सहस्र । ऊससिया - उत्साहित हुए, जोशमे रवाना हुए ।
 वपि - शरीर । साज - पहनावा, पोशाक । सिधुर - हाथी । धुज - घोडा, अगाडी ।
 ४४९ हुतभुक - अग्नि, आग । पायदळ - पदाति । फबि - शोभित हो कर । विस - वीस ।
 गयद - हाथी । धज - ध्वजा । महौरि - अगाडी । वि - दो । वाजित्र - वाद्य ।
 ४५० विरद - विरुद, कीर्ति । वह - बहुत । धुर - अगाडी । धमळ - बल । जूट - जुत
 कर । पेलै - खीचते हैं ।
 ४५१ भिडज - घोडा, योद्धा । जूथ - यूथ । भाराथै - युद्धमे । रहकळा - शकट विशेष ।
 धिख - क्रोध, क्रोधाग्नि । चख - नेत्र । सुतर - ऊँट । धारूदा - धारण करने
 वाला । सकट - रथ, छकडा । बारूदा - बारूदके ।

इळ धुकि लचक^१ सीस अहिवाळा ।
 चद कटक खडिया^२ कळचाळा^३ ।
 जगत छत्रदिस^४ लिखे^५ जवावां^६ ।
 सभौ विमाह कि समर सतावां^७ ॥ ४५२
 सुणि चहुवाण कटक सालळिया^८ ।
 महिसिर किर वारह^९ घण मिळिया^{१०} ।
 जडिअग^{११} सिलह सस्त्र^{१२} अग^{१३} जकडै ।
 कसे तंडीर^{१४} कवाणा^{१५} पकडै ॥ ४५३
 कर भाला वयभलै कराळा ।
 मभि कर सावळ^{१६} भूप^{१७} मुसाला ।
 ढहती कहू ढळकती ढाला ।
 चालै गज खुटहड जिम चाला ॥ ४५४
 वह^{१८} वायक सिंघ जिम वोलंता^{१९} ।
 तायक भुजा गयण तोलता^{२०} ।

१ ख. मचिकि । ग मचकि । २ ख. ग षडीया । ३ ख चलिकाला । ग कलिचाला ।
 ४ ख ग छत्रदिसि । ५ ख. लिख । ६ ख जवाव । ग जवावं । ७ ख सताव ।
 ग सतावं । ८ ख ग सालुलीया । ९ ख वाहर । १० ख ग मिळीया । ११ ख.
 ग. अगि । १२ ग सस्त्र । १३ ख ग अगि । १४ ख तवीर । ग तंडीर । १५ ख.
 कवाणा । १६ ख सावल । १७ ख. ग भूत । १८ ख वहाँ । ग वहाँ । १९ ख
 वोलत । २० ख तोलता ।

४५२. इळ - इला, पृथ्वी । धुकि - भुकी । अहिवाळा - शेषनागके । कळचाळा -
 युद्ध । सभौ - तैयार करो । विमाह - विवाह । कि - अथवा । समर - युद्ध ।
 सतावा - शीघ्र ।

४५३ कटक - मेना, दल । सालळिया - जोशपूर्ण चले । महि - पृथ्वी । सिर - ऊपर ।
 किर - मानो । घण - घटा, मेघ । तंडीर - तर्कश, तूणीर ।

४५४ कर - हाथ । वयभलै - चमकते है । कराळा - भयकर । मभि - मे । सावळ -
 एक प्रकारका भाला विशेष । मुसाला - (?) । कहू - कही । ढळकती -
 लुढकती हुई । खुटहड - (?)

४५५ वह - बहुत । वायक - वचन, वाक्य । तायक - (?) । गयण - आसमान ।
 तोलता - उठाने हुए ।

भेख तखिक खीजिया^१ भमगा ।
 दुरत रोस चख भडै दमगा ॥ ४५५
 वदन मजीठ रूप विकराळा ।
 पमगा चढे पूर पखराळा ।
 कहि^२ चहुवाणतणा भड केहो ।
 जमहू लडै चाळवध जेहा ॥ ४५६
 जुडि भड खडा धिखै चख ज्वाळा ।
 इकसठ^३ लाख जगत छत्रवाळा ।
 लख लख अरध जियां दळ लारै ।
 राजा छपन साथि राजारै ॥ ४५७
 बडौ^४ हरौळ बाजुवा^५ बिहुवै^६ ।
 त्रेसठि लाखहूत सुळ त्रिहुवै ।
 राजा छपन जगत छत्रराजा ।
 सिंधुर धज त्रिह^७ कुवर सकाजा ॥ ४५८
 सहस वार गज धुज अनि साथी ।
 हथनाळिया^८ मुहर^९ लख हाथी ।

१ ख ग खीजिया । २ ख ग कहै । ३ ख ग इकसठि । ४ ख ग वहो । ५ ख बाजुवा । ६ ख बिहुवै । ७ ख ग त्रिण्ह । ८ ख हथनाळियां । ग. हथनाळियां । ९ ख ग मुहरि ।

४५५ भेख - वेश । तखिक - तक्षक नाग । खीजिया - कुपित, क्रुद्ध । भमगा - सर्प । दुरत - (?) । चख - चक्षु, नेत्र । भडै - भडते हैं । दमगा - अग्निकरण ।

४५६. वदन - मुख । मजीठ - लाल, रक्त वर्ण । विकराळा - भयकर । पमगां - घोडो । पंखराळा - कवचधारियो । भड - योद्धा । केहा - कैमे । जमहू - यमराजसे । चाळवध - वस्त्र पकडने वाला । जेहा - जैसा ।

४५७ धिखै - प्रज्वलित होती है । चख - चक्षु, नेत्र । ज्वाळ - अग्नि । छत्रवाळा - राजा । जियां - जिन । लारै - पीछे ।

४५८. हरौळ - सेनाका अग्र-भाग, हरावल (यहाँ सेना अर्थ ठीक बैठता है) । बाजुवां - बाजू । बिहुवै - दोनो प्रोर । त्रिहुवै - तीनो । सिंधुर - हाथी । त्रिह - तीन ।

४५९ सहस - सहस्र । गज - हाथी । धुज - घोडा । अनि - गौर । हथनाळिया - वंदूको, तोपें । मुहर - अगाडी ।

जोड जबूर^१ रहकळा^२ जमला ।
 *इसी तरह दोहू दिस अमला ॥ ४५६
 धनख^३ बटूक^४ बीस^५ लख धारा ।
 अभि^६ नीसाण^७ हजार अठारा ।
 फवै अनेक रग रग फरहर ।
 भार अठार जाणि पुहपा^८ भर^९ ॥ ४६०
 दसत चाप अरु रास दसत्ता ।
 महा प्रबळ नदि सुजळ मसत्ता ।
 धरपति गोळ^{१०} हरोळ^{११} तोप^{१२} धुरि^{१३} ।
 पूठि पहाड दुरग तारापुरि^{१४} ॥ ४६१
 इम चहुवाण प्रबळ^{१५} दळ ओपै^{१६} ।
 लहरि^{१७} अजाद जाणि दध^{१८} लोपै ।
 जाणै छपन कोडि^{१९} जळ जाळा ।
 मडि उमडै वरसण^{२०} घणमाळां ॥ ४६२

१ ख जबूर । २ ख रहवाला ।

*नोट—(अ) यह पक्ति ख प्रतिमे नही है ।

(ब) इस पक्तिके स्थान पर ग प्रतिमे निम्न पक्ति है—

हालै तोप लाख गज हमला ।

३ ग धनुष । ४ ख बंदूष । ५ ख बीस । ६ ग अनि । ७ ख नीसार । ८ ख
 ग पहीपा । ९ ख नर । १० ग गौळ । ११ ग हरौल । १२ ग तोप । १३ ख.
 ग धुर । १४ ख. ग तारापुर । १५ ख प्रबल । १६ ख वीपै । ग वीपै । १७ ख.
 ग लहर । १८ ख ग दधि । १९ ख कोटि । ग कोट । २० ख. वरस ।

४५६ जंबूर — एक प्रकारकी वेडी बटूक । रहकळा — एक प्रकारका शकट या गाडी । दोहू —
 दोनो । दिस — ओर, तरफ । अमला — कार्याधिकारी वर्ग ।

४६० धनख — धनुष । जाणि — मानो । पुहपा — पुष्पो, फूलो ।

४६१ दसत — हाथ । चाप — धनुष । रास — (डोर ?) । धरपति — राजा । गोळ — सेना,
 फौज । हरोळ — हरावल । पूठि — पीछे । दुरग — गढ ।

४६२ लहरि — लहर, तरंग । अजाद — मर्यादा । दध — उदधि, समुद्र । जाणै — मानो ।
 जळ जाळा — मेघमाला, घन-घटा । उमडै — उमडा हो । घणमाळा — घनघटाएँ,
 मेघमाला ।

चद उठी दळ वेग चलाया^१ ।
 आई ठीक नजीक^२ सु आया ।
 प्रळैकाळ जिसडा दळ पावस ।
 दळपत^३ छत्रहूत कोसा दस ॥ ४६३
 महपति चँद उबटण^४ करि मजण ।
 कर डोरडौ कसे खग^५ ककण ।
 सभे सुरग पौसाक सकाजा ।
 राज धरे भूखण सब राजा ॥ ४६४
 वीर सिंगार^६ चढे रस वाना^७ ।
 पहरै^८ अतर अरोगै पाना^९ ।
 छौगा पाघ^{१०} जवाहर छाजै ।
 रवि सिर किर साजोति^{११} विराजै ॥ ४६५
 जोतवत कसि मोड जवाहर ।
 असमर^{१२} तौलि छिबै^{१३} सिर अमर^{१४} ।
 दळपति अमर विदा करि दीधा ।
 कूरम नृपति^{१५} हरोळा^{१६} कीधा ॥ ४६६

१ ख चलीया । २ ख नकी । ३ ख दल । ग. दळजग । ४ ख उटवण । ग उवटण ।
 ५ ख ग. पगि । ६ ख. सवार । ७ ख वान । ग वानं । ८ ख पहिरे । ९ ख.
 ग पान । १० ख पाग । ११ ख. साजेति । १२ ख ग असमर । १३ ख. विछे ।
 ग छिबे । १४ ख ग अमर । १५ ख ग नृपति । १६ ख. हरालो । ग हरोलां ।

४६३ दळ—सेना । वेग — शीघ्र । प्रळैकाळ—प्रलयका समय । जिसडा — जैसा । पावस — वर्षा ।

४६४. महपति — राजा, नृप । उबटण — मालिश । मजण — स्नान । कर डोरडौ —
 विवाहके समय दूल्हा-दुल्हनके हाथमे धारण करनेका ककण । कसे — वाँघ दिया ।
 खग — तलवार । ककण — कगन । सभे — धारण कर । सुरग — सुन्दर, लाल ।
 सकाजा — कायके निये । भूखण — आभूषण ।

४६५. सिंगार — श्रृ गार । छौगा — साफा या पगडी का छोर जो साफा धारण करते समय
 पीछे लटकता है या सिर पर खडा रहता है । पाघ — पगडी । जवाहर — जवाहरात,
 हीरा, पन्ना मोती आदि । छाजै — शोभा देते हैं । रवि — सूर्य । किर — मानो ।
 साजोति — ज्योतिसहित । विराजै — शोभा देता है ।

४६६ जोतवत — ज्योति सहित । कसि — कस कर । मोड — मोर । असमर — तलवार ।
 तौलि — उठा कर । छिबै — स्पर्श करता है । अमर — आसमान । दळपति — सेना-
 पति । विदा — प्रस्थान । दीधा — दिये । कूरस — कछवाह । हरोळां — हरावल,
 सेनाके अगाडी । कीधा — किये ।

बिहु^१ कूरमा साथ^२ विरदाळा ।
 जोध हजार वीस जरदाळा ।
 त्रिह^३ रावळ गहलोत भाण तड ।
 भीम हठी^४ उग्रसेन महाभड् ॥ ४६७
 काळा कीट^५ साथि दळ काजू ।
 वार^६ हजार दाहणी^७ बाजू ।
 जादम भाण पठाण जुमल्ला ।
 सैद रहीम सेख सादुल्लां ॥ ४६८
 वामै समदळ^८ दखिण वडाळौ ।
 हणमत राव वघेल^{१०} हठाळौ ।
 पछटण खळा समर जै पायत ।
 ऐ सिरदार पांच अडपायत ॥ ४६९
 च्यार पमार धार छत्र चमर^{११} ।
 धीर हमीर मुकद राजधर ।
 भूप चदोल ठहै भारायै ।
 सोळ हजार जरदबध् साथै ॥ ४७०

१ ख बिहुं । ग बिहू । २ ख ग. साथि । ३ ख ग त्रिह । ४ ख उठी । ५ ख. कीठ । ६ ख वार । ७ ख ग दाहिणी । ८ ख ग सादुल्लां । ९ ग सामंदळ । १० ग. वघेल । ११ ग. चम्मर ।

४६७ विरदाळा - विरदवारी, यशम्वी । जरदाळा - कवचवारी । जोध - योद्धा । तड - वश-दल ।

४६८ काळा कीट - अत्यन्त श्याम । काजू - वढिया, श्रेष्ठ । दाहणी - दाहिनी । बाजू - तरफ, ओर । जुमल्ला - जुमले एक साथ । सादुल्लां - मिह, वीरो, शार्दूलो ।

४६९ वामै - वाम पार्श्व । दखिण - दक्षिण । वडाळौ - महान, बहुत । वघेल - प्रसिद्ध राजपूत वंश । हठाळौ - हठ पर दृढ रहने वाला, हठी । पछटण - पछाडनेको । खळां - शत्रुशोको । समर - युद्ध । जै - जय । पायत - प्राप्त करने वाला । अडपायत - वीर, शक्तिशाली ।

४७० चदोल - मेनाके पीछेका भाग । ठहै - रहे । भारायै - युद्धमे । जरदबंध - कवच-धारी । साथै - साथमे ।

उभै सहस अठसठ^१ धुज ऊतग ।
 वीस सहंस हैमर धुज वैछग ।
 निज पौसाक^२ सु केसरि नौखा ।
 जवहर अतर म्रिगैमद^३ जौखा ॥ ४७१
 आवध कसि दुति^४ इद्र अदत्ती^५ ।
 मेघाडमर^६ चढै महिपत्ती^७ ।
 ओपै^८ फौज वीच सोभा अति ।
 गोळ कमळ केसरातणी गति ॥ ४७२
 आगै धरि वाजित्र धर^९ आतुर ।
 धज बहरखै^{१०} अरावा^{११} सिंधुर^{१२} ।
 धखि^{१३} दहकध सीस रघुपति धरि ।
 इम चद^{१४} खडे^{१५} जगत छत्र ऊपरि ॥ ४७३
 धोम तोप दहु दळ धडहडिया^{१६} ।
 खित पुडि जाणि गयण खडहडिया^{१७} ।
 धुवि^{१८} गोळा वरसतौ^{१९} अबर^{२०} धर ।
 ओळा किर वारह^{२१} घण^{२२} ओसर ॥ ४७४

१ ख ग अठसठि । २ ख पौसाष । ३ ख मृदगद । ग. मृगमद । ४ ख. ग दती ।
 ५ ख. ग अदुती । ६ ख मेघाडवरि । ग. मेघाडवरि । ७ ख महपती । ग महपत्ती ।
 ८ ख ग वोपै । ९ ख धरि । १० ख ग. बहरषा । ११ ख आरावा । १२ ख. ग
 सींधुर । १३ ख ग धष । १४ ख चद्र । १५ ख षडे । ग षडे । १६ ख ग घड-
 हडीया । १७ ख. ग. खडहडीया । १८ ख ग धुवि । १९ ग बरसतां । २० ख
 अवरधर । २१ ख वाहर । ग वारह । २२ ख घड ।

४७१ उभै - उभय, दो । धुज - झडा, ध्वजा । ऊतंग - उत्तुग, ऊंचा । हैमर - घोडा ।
 केसरि - केसरिया रंग । नौखां - बढिया । म्रिगैमद - मृगमद । जौखा - आनन्द ।
 ४७२ आवध - आयुद्ध, अस्त्र-शस्त्र । दुति - द्युति । अदत्ती - (?) । मेघाडमर -
 हाथीका नाम । महिपत्ती - राजा, नृप ।
 ४७३ वाजित्र - वाद्य । धज - ध्वजा । बहरखै - फहराते हुए, चमकती है । अरावा -
 तोप । सिंधुर - हाथी । धखि - कोप कर । दहकध - रावण । सीस - ऊपर ।
 ४७४ धोम - अग्नि, आग । दहु - दोनो । घडहडिया - ध्वनि की । खित पुडि - पृथ्वी-तल ।
 जाणि - मानो । गयण - आकाश । खडहडिया - गिरा । धुवि - आग उगल कर ।
 वरसतौ - वर्षा करता हुआ । अबर - आकाश । धर - पृथ्वी । ओळा - वर्षाके
 समय गिरने वाले हिम-पापाण । किर - मानो । घण - मेघ, घन । ओसर - अवसर ।

गुफा ध्यान लवलीन गिरोवर ।
 ताळी खुलि^१ ऊठिया^२ तपेसुर ।
 जाणै निसा अमावस^३ जळधर^४ ।
 भाद्रव मैमट^५ घटा भयकर ॥ ४७५
 अहि^६ खग म्रिग^७ दम हंस अळूभै^८ ।
 मुणै^९ न सवद गात नह सूभै^{१०} ।*
 दहू^६ दळा वळि हुवै दिखाई ।
 रँजक भळा गोळा रुसनाई ॥ ४७६
 कुहक^{१०} वाण^{११} भडवाण^{१२} भयकर ।
 औसर डद्र जाणि व्रज^{१३} ऊपर ।
 ह्वै घण रूप जगत छत्र हट्टै ।
 पौरस^{१४} गिरहर^{१५} चद परट्टै ॥ ४७७
 वागा लोप अराव^{१६} वीरवर^{१७} ।
 अभैसेन दळपति अर अमर^{१८} ।

१ ग पुत्ती । २ ख ग ऊठीया । ३ ख ग. अमावसि । ४ ख ग. जळहर । ५ ख मैघट । ग मैमत । ६ ख ग अह । ७ ख ग मृग । ८ ग. सूणै ।

*यह पक्ति स प्रति मे नही है ।

९ ग दहु । १० ख ग कहौ । ११ ख कवाण । १२ ग भडवाण । १३ ख वृज । ग व्रज । १४ ख ग पौरिस । १५ ख ग गिरहरि । १६ ख अराव । १७ ग वीरवर । १८ ख ग अम्मर ।

४७५ लवलीन—लीन मग्न । गिरोवर—पर्वत । ताळी—ध्यान, समाधि । तपेसुर—तपस्वी । जाणै—मानो । निसा—रात्रि । जळधर—वादल । भाद्रव—भादो मास । मैमट—वर्षा ।

४७६ अहि—सर्प । खग—पक्षी । म्रिग—मृग । दम—श्वास । हंस—प्राण । अळूभै—अमूभता है । दहू—दोनो । वळि—तरफ ओर । रँजक—वारुद । भळा—आगकी लपटो । रुसनाई—रोगनी, प्रकाश ।

४७७ कुहक वाण—एक प्रकारका वाण, अग्नि-वाण, एक प्रकारकी तोप । भडवाण—एक प्रकारकी तोप । औसर—अवसर । जाणि—मानो । व्रज—व्रज-भूमि । पौरस—वल, शक्ति । गिरहर—गिरिधर, श्रीकृष्ण । परट्टै—(?) ।

४७८ वागा—वजे, ध्वनित हुए ।

कळह बिहू^१ कूरमा कजाका ।
 हिणियौ^२ अभैसेन करि हाका ॥ ४७८
 करि धक^३ क्रोध हणै करि चाळा ।
 इक लख जोध जगत छत्रवाळा ।
 जगछत्र सुणै कुवर^४ जोखमिया^५ ।
 धैधीगर हूलै चख धमिया^६ ॥ ४७९
 उरडे दळ समहर उदमादा ।
 मूकी किर^७ सामदा^८ म्रजादा ।
 चूरे दुसह सहस पच चहुवै ।
 दळपति अमर विहडवा^९ दहुवै ॥ ४८०
 पेखे चद हरवळ खळ पाडे ।
 उरडै फौजा^{१०} वाग^{११} उपाडे^{१२} ।
 गजहू लिया^{१३} सक्रोध गरूरा ।
 पडता बाण^{१४} सघण भरपूरा ॥ ४८१

१ ख बिहू । २ ख ग हिणियौ । ३ ख ग धष । ४ ग. कुवरि । ५ ख. ग.
 जोषमीया । ६ ख ग धमिया । ७ ख ग किरि । ८ ग सामदा । ९ ख विहडिया ।
 ग बिहडिया । १० ख ग फौज । ११ ख वाम । ग वाग । १२ ख ग उपाडे ।
 १३ ख ग. लीया । १४ ख वाण ।

४७८ कळह - युद्ध । बिहू - दोनो । कूरमा - कछुवाहो । कजाका - गोद्धाओ । हिणियौ -
 महार किये ।

४७९ जोखमिया - सहार हो गया, मर गया । धैधीगर - हाथी ।

४८० उरडे - जवरदस्तीसे धँस गये । समहर - युद्ध । उदमादा - उन्मादित । मूकी -
 छोड़ दी । किर - मानो । सामदा - समुद्रो । म्रजादा - मर्यादा । चूरे - ध्वम कर
 दिये । दुसह - शत्रु । चहुवै - चारो ओर । दळपति - सेनापति । विहडवा - नाश
 करनेको, मारनेको । दहुवै - दोनो ओर ।

४८१ पेखे - देख कर । चद - राजाका नाम । हरवळ - सेनाका अग्र भाग । खळ - शत्रु ।
 पाडे - मार दिये, सहार किये, गिरा दिये । गजहू - हाथीसे । सघण - घना ।
 भरपूरा - पूर्ण, पूरा ।

बाजू^१ गोल^२ चदोळ^३ मराचळ^४ ।
 चळगळ^५ वीच^६ धमे^७ रवि^८ दमगळ ।
 धमक^९ भंग^{१०} शाछट^{११} गग^{१२} धारा ।
 हेमर^{१३} गज^{१४} गुज^{१५} पडे^{१६} टाजारा ॥ ४८२
 त्रिचल^{१७} शनेक^{१८} नियो^{१९} तिर^{२०} ताजा ।
 रव^{२१} धाम^{२२} भंग^{२३} महराजा ।
 पडे^{२४} रघिर^{२५} पन^{२६} भरे^{२७} प्रचडा ।
 चचमठ^{२८} गहिन^{२९} पिय^{३०} नामला ॥ ४८३
 भेदे^{३१} मडळ^{३२} सूर^{३३} गहु^{३४} भाणा ।
 वर^{३५} वह^{३६} चाटे^{३७} परी^{३८} विमाणा^{३९} ।
 भुके^{४०} वके^{४१} वही^{४२} गळि^{४३} भाने ।
 भेदे^{४४} लजर^{४५} पहरि^{४६} उर^{४७} भाने ॥ ४८४
 के^{४८} जमददा^{४९} जडे^{५०} कळिचाळा ।
 वर^{५१} वरमाळ^{५२} पगा^{५३} श्रनाळा ।

१ ल बाजू । २ ल गोल । ३ ल चोचि । ग चोचि । ४ ल सेन । ग मेळ ।
 ५ ल ग चवतठि । ६ ल ग पोर्व । ७ ल घट्टी । ग वट्टी । ८ ल विमाणा ।
 ९ ल भुके । १० ल ग वके । ११ ल चाट्टी । ग चाट्टा । १२ ल लजरि ।
 १३ ल जामददा । १४ ल ग. उरि । १५ ल पमा ।

४८२ बाजू - तरफ । गोल - सेना । चदोळ - तेजावे पीछेका भाग । चोच - मध्य, मे ।
 गळ - युद्ध । धमक - प्रहार । शाछट - प्रहार करके । हेमर - गोज । गज -
 हाथी । घुज - घना ।

४८३ त्रिचल - महादेव । सिर - मस्तक । ताजा - बढ़िया । धाम - रोकता है । महराजा -
 सूर्य । पडे - गिरता है । रघिर - रक्त, खून । प्रचडा - बडा । चचमठ - युद्धप्रिय
 योगिनियोना समूह जिनकी सरया चौमठ ही है ।

४८४ भेदे - भेदन करते हैं । मडळ सूर - सूर्यमंडल । वर - पति । परी - चम्पना ।
 विमाणा - वायुयान । वके - बकती है । वही - वाहु । भेदे - भेदन कर देती हैं ।
 लजर - एक प्रकारका शस्त्र विशेष ।

४८५. जमददां - एक प्रकारका कटार विशेष । जडे - प्रहार करते है । कळिचाळा - युद्ध,
 योद्धाओ । श्रनाळा - श्रान्तें ।

तडभड धड आथड गैतूळां ।
 भडफड^१ ग्रीध उरड़ रभ भूळा ॥ ४८५
 पुर तारा कासीपतिवाळा^२ ।
 मसत केइक^३ घूमै मतवाळा^४ ।
 चढि खग भटा जवन हस चालै^५ ।
 हूरा वरा वरे^६ बह^७ हालै ॥ ४८६
 उठै 'चद' गज दत उपाड़ै ।
 भुकत^८ गजां खळां सिर^९ भाड़ै ।
 थभ^{१०} सिर भज पडै अणथाहै ।
 मोती गज पडै जुध माहै ॥ ४८७
 जुध^{११} सिर कर ग्रहि ग्रहि जरदैता ।
 बह^{१२} गज धुजां^{१३} मूर बिरदैता^{१४} ।
 अरि गजघटा पीठि पछटै^{१५} इम ।
 जळ सिल तटा रजक^{१६} दुपटा जिम ॥ ४८८
 कमधज जुध^{१७} दूलह^{१८} केसरियौ^{१९} ।
 उठै चद गजहू ऊतरियौ^{२०} ।

१ ग भडपड़ । २ ख कासीपतिवाला । ३ ग केईक । ४ ग. मतिवाळा । ५ ख ग चालै । ६ ग. वरे । ७ ख. वाहौ । ग. बहौ । ८ ग भुकता । ९ ख ग सिरि । १० ख. ग अमि । ११ ख ग जुधि । १२ ख बहौ । ग बहौ । १३ ख घूसा । १४ ख. ग विरदैतां । १५ ख. पछमै । १६ ग रजिक । १७ ख जुधि । १८ ख. दूलहै । ग दुलह । १९ ख ग केसरीयौ । २० ख ग ऊतरीयौ ।

४८५ तडभड - ममान, वरावर । धड - सेना । आथड - भिडकर, टक्कर लेकर । गैतूळा - सेनाग्रो, समूहो । भडफड - पक्षियोंके परोके फडफडानेकी आवाज भडफडाहटकी आवाज ।

४८६. हस - प्राण । हूरां - अप्सराएँ, परियें । बह - बहृत । हालै - चलते है ।

४८७. उठै - वहाँ । गज - हाथी । दत - दांत । उपाड़ै - उखेडता है । खळा - शत्रुओ । सिर - ऊपर । भाड़ै - प्रहार करता है । अणथाहै - अपार । गज - ढेर, राशि ।

४८८ जरदैता - कवचधारी योद्धा । मूर - वीर । बिरदैता - विरुद्धधारी, यशस्वी । अरि - शत्रु । पछटै - प्रहार करता है, गिराता है । सिल - गिला । तट - ऊपर । रजक - घोवी । दुपटा - वस्त्र या वस्त्र विशेष । जिम - जैसे ।

४८९. दूलह - दूल्हा । उठै - वहाँ । गजहू - हाथीसे ।

अभि ओयण^१ ग्रहि^२ चद उलाळै^३ ।
 रत^४ दरियावतणै^५ मंभि राळै ॥ ४८९
 किर^६ रघु हुकम मतै विकराळै ।
 अगद^७ समद मभि गिरद उछाळै ।
 कवचधार गौडव^८ जुध केका ।
 ऊडावै पखरैत^९ अनेका ॥ ४९०
 ओपम तिका भमतां अच्छर ।
 पमगां जाण^{१०} फेर आई पर ।
 जंग छत्रदळां विधूसै चंद जुडि ।
 महि पुडि^{११} भार गया अहि फुण^{१२} मुडि ॥ ४९१
 ऊधम^{१३} किर^{१४} राळै धर^{१५} अदर^{१६} ।
 वाग असोक लागडै^{१७} वानर^{१८} ।
 दहुवै^{१९} जुवां भडां खळ दहिया^{२०} ।
 वीरोचन अमर^{२१} दळ^{२२} वहिया^{२३} ॥ ४९२

१ ख वीयणि । ग वीयण । २ ख ग ग्रहि ग्रहि । ३ ख ग. ऊलाळै । ४ ख रति ।
 ५ ग दरीपाव । ६ ख ग किरि । ७ ख ग अगिद । ८ ख ग गोडवि । ९ ख
 ग पतरैत । १० ख ग जाणि । ११ ख ग. पडि । १२ ख फडि । ग फण ।
 १३ ग ऊधमि । १४ ख ग किरि । १५ ख. धरि । १६ ख ग. अदरि । १७ ख.
 ग लागडै । १८ ख ग वदरि । १९ ख ग दहुवा । २० ख. ग दहीया । २१ ग
 अम्मर । २२ ख. षग । ग षगि । २३ ख. ग वहीया ।

४८९ अभि—उभय, दोनों । ओयण—पैर । उलाळै—उलटा फेंकता है । रत—रक्त, खून ।
 दरियावतणै—समुद्रके । मंभि—मध्य, मे । राळै—फेंकता है, गिराता है ।
 ४९० किर—मानो । रघु—श्रीरामचन्द्र । विकराळै—भयकर, भयावह । समद—समुद्र ।
 मभि—मध्य, मे । गिरद—पर्वत । उछाळै—फेंकता है, गिराता है । कवचधार—
 कवचधारी । केका—कई । ऊडावै—गिराता है, फेंकता है । पखरैत—योद्धा, वीर ।
 ४९१. ओपम—उपमा । तिकां—उनके । पमंगां—घोडो । जाण—मानो । पर—पख ।
 जंग—युद्ध । छत्रदळां—राजाका दल या सेना । विधूसै—विध्वंस करता है ।
 महि पुडि—पृथ्वीकी तह । अहि—शेपनाग ।
 ४९२ ऊधम—उत्पात । राळै—गिराता है । लागडै—हनुमान ने । दहुवै—दोनो । जुवां—
 ओर, तरफ । भडा—योद्धाओ । खळा—शत्रुओ । दहिया—नाश किये । वीरोचन—
 राजा वनिके पिताका नाम । अमर—देवता ।

सुत चहुवाण सुणे त्रहु^१ साभे ।
 दावानळ औरिस उर^२ दाभे ।
 फीलहूत जग छत्र फरहरियौ^३ ।
 इद्र किर उरसिहूत^४ ऊतरियौ^५ ॥ ४६३
 सुज^६ धर पडि ऊठै खग^७ साहै ।
 एक^८ खाग चद परि आवाहै^९ ।
 भट चद तिका गयद रद भेलै ।
 महिपति^{१०} गहि^{११} सिवका मभि^{१२} मेलै ॥ ४६४
 पह^{१३} चहुवाण खेत^{१४} परमाणै ।
 जाती^{१५} समर जगत छत्र जाणै ।
 दछि^{१६} अंस आप सुता दखियाणी ।
 जटधर अस चद विध^{१७} जाणो ॥ ४६५
 त्रखा^{१८} रहो जुध^{१९} अगै करण तिण ।
 जुध^{२०} कामना कीध पूरण जिण ।
 पेखे एम^{२१} जोडि दहु पाणा ।
 चँद पग वँदै^{२२} भूप चहुवाणा ॥ ४६६

१ ख. विहु । ग त्रिहं । २ ख ग उरि । ३ ख फरहरीया । ग फरहरीयो । ४ ख ग उरस । ५ ख ऊसरयीयो । ६ ख ग सुजि । ७ ख ग धष । ८ ग. ऐक । ९ ख आवाहे । ग आवाहै । १० ख. महपति । ११ ख ग्रह । ग. ग्रहि । १२ ख. मभि । १३ ख ग पही । १४ ख ग लेष । १५ ख जाति । ग ज्याती । १६ ख दवि । १७ ख विधि । ग. बिधि । १८ ख ग त्रिषा । १९ ख ग जुधि । २० ग जुधि । २१ ग ऐम । २२ ग वदे । -

४६२ औरिस - आकाशका ।

४६३ त्रहु - तीनो । साभे - महार किये । फीलहूत - हाथीसे । किर - मानो । उरसिहूत - आकाशसे ।

४६४. सुज - वह । ऊठै - उठता है । खग - तलवार । साहै - धारण करता है । खाग - तलवार । आवाहै - प्रहार करता है । भट - शीघ्र । तिका - वह । गयद - हाथी । रद - दांत । भेलै - पकडे । महिपति - राजा । सिवका - शिविका पालकी । मभि - मध्य, मे ।

४६५. पह - राजा । खेत - युद्धस्थल । समर - युद्ध । दछि - राजा दक्ष । दखियाणी - दक्षकी पुत्री, सती । जटधर - महादेव ।

४६६. त्रखा - तृष्णा, प्यास । अगै - पहिले, पूर्व । कामना - इच्छा । कीध - की । पेखे - देख कर । दहुं - दोनो ।

धारण सलज चखां चंद धारै ।
 आच उठाय^१ वडिम उच्चारै^२ ।
 विच^३ पुर धसे विजय^४ वजि^५ वाजा ।
 जगपत^६ सुता वरै^७ चंद^८ राजा ॥ ४६७
 राजस पुर देखे चंद रीधौ ।
 कनियादांन^९ जगत छत्र कीधौ ।
 वर कनिया गठजोड^{१०} वणाए ।
 आसापुरा^{११} दरस^{१२} चद आए^{१३} ॥ ४६८
 कहियौ^{१४} मूरति हसे क्रपा^{१५} करि^{१६} ।
 अखै कमध जयचद^{१७} उजागरि^{१८} ।
 प्राण - दांन जगछत्रनू आपै ।
 थिर राजस तारापुर^{१९} थापै ॥ ४६९
 इम चद कीरति जगत उजासी ।
 करि जुघ फतै आवियौ^{२०} कासी^{२१} ।
 कुळ चंद साख वधै इधकाई^{२२} ।
 दिनकरि^{२३} वस सकति वरदाई ॥ ५००

१ ग उठाइ । २ ख उचारे । ग ऊचारे । ३ ख विधि । ग विचि । ४ ख. वज ।
 ग वज । ५ ख ग विजय । ६ ख ग. जगछत्र । ७ ख वरे । ग वरे । ८ ग.
 चदि । ९ ख ग कनीयादान । १० ख. मठजोड । ११ ख आसापुर । १२ ख. ग
 दरसि । १३ ग आऐ । १४ ख ग. कहीयो । १५ ख क्रिया । ग कृपा । १६ ख
 कर । १७ ख ग जयवंत । १८ ख ऊजागर । ग उजागर । १९ ग तारापुर ।
 २० ख ग आवीधौ । २१ ख काशी । २२ ख ग अधिकाई । २३ ख दिनकर ।

४६७. सलज - लज्जापूर्वक । चखां - नेत्रो । आच - हाथ । वडिम - वडाई । विच -
 मध्य, मे । वरै - वरण करता है ।

४६८. राजस - राज्य-वैभव । रीधौ - प्रसन्न हुआ । कनियादान - कन्या का दान ।
 छत्र - राजा । कीधौ - किया । वर - पति । गठजोड - गठबंधन । आसापुरा -
 एक देवीका नाम । दरस - दर्शन ।

४६९. कहियो - कहा । अखै - कहता है, अक्षय । उजागरि - समर्थ, शक्तिशाली । जग-
 छत्रनू - राजाका नाम । थिर - स्थिर । राजस - राज्य ।

५००. उजासी - फँसी, प्रकाशित हुई । इधकाई - विधेयता । दिनकरि - सूर्य । सकति -
 शक्ति । वरदाई - विरुद्धधारी, यशस्वी ।

मिळि जुघ जय वर दत्त महमाया^१ ।
 कमध तेण^२ जयवत्त कहाया ।
 महि इम कुळ पैतीसह मौडां ।
 राज साख तेरह राठौडा ॥ ५०१
 अँ सुत पुज तेरह अग्रकारी^३ ।
 धरमबभ^४ जेठौ छत्रधारी ।
 चवि ध्रम बभ^५ जे सुतण अजैचद ।
 अपभड^६ जेण सुतण अति आणद ॥ ५०२
 विजयचद जे सुत वरदायक ।
 नृप^७ पूरब^८ धर कनवज नायक ।
 विजयचदरौ^९ राज वखाणे ।
 जग सिर^{१०} सुपह दुवी इद्र जाणे ॥ ५०३

कवित्त छप्पय^{११} पूरपक्ष वरणण^{१२}

कोइक^{१३} सुकवि^{१४} इम कहै, वरस बह^{१५} नृप^{१६} किम^{१७} वरणै ।
 वेदव्यास^{१८} वायकां, साख^{१९} भारथ^{२०} संभरणै ।

१ ख. ग माहामाया । २ ग. तेणि । ३ ग अग्रहकारी । ४ ख धरमवंत । ५ ख धरमवंभ । ६ ख अभपण । ७ ख ग नृप । ८ ख पूरव । ९ ग विजैचंदरौ । १० ख ग सिरि । ११ ख. छपै । ग छपै । १२ ख ग. वर्नन । १३ ग कोयक । १४ ग कुकवि । १५ ख ग वहाँ । १६ ख ग नृप । १७ ख. कमि । ग किमि । १८ ग वेदव्यास । १९ ग साषि । २० ग भारत्य ।

५०१ दत्त - दिया । महमाया - देवी, दुर्गा । जयवंत - राठौड वंशकी एक शाखा । महि - पृथ्वी । मौडां - मीर, अवतस ।

५०२ अग्रकारी - अग्रगण्य, तेजस्वी । जेठौ - जेष्ठ, बडा । छत्रधारी - राजा । चवि - कह, कह कर । सुतण - पुत्र । अपभड - वीर, वहादुर । जेण - जिस ।

५०३ वरदायक - ऐश्वर्यवान । कनवज - कनोज । वखाणै - प्रशंसा करते हैं । सिर - ऊपर, पर । सुपह - राजा । जाणै - मानो ।

५०४. किम - कैसे । साख - साक्षी । भारथ - महाभारत । संभरण - स्मरण कर के ।

सतजुग आव^१ सुलच्छि^२, आव त्रेताजुग ग्रैत^३ ।
 सहस वरस द्वापुरसु, कळू सत वीस कहैत^४ ।
 करि जोरि^५ सुवर राखी किता, अमर देह अग्रकारिया^६ ।
 सदेह तजौ कवि इम सुवस, रघुवसी छत्रधारिया^७ ॥५०४

दूहो^८— रामचद्ररा वस मभि, विजयचद सुत वीर ।

जग^९ राजा जयचद हुवौ^{१०}, सूर दतार सधीर ॥ ५०५

राजा पुंज तथा उणरा तेरै पुत्रारौ वरणण समाप्त ।

इति तृतीयो प्रकरण ।

+

अथ राजा जयचदरौ राज वरणण—

छप्पय— सिलह-पोस लख असी, पमग असवार सपक्खर^{११} ।
 कोडि तीन पायक्क^{१२}, धोम धानख फरसधर^{१३} ।
 दोय लाख दताळ, मसत गाजत^{१४} मदज्भर^{१५} ।
 सात लाख नीसाण, घुरै दुदभि^{१६} लख घुम्मर^{१७} ।
 नित^{१८} करैसेव दुय^{१९} सहस नूप^{२०}, कवि हजार दस गुण करै ।
 सिरताज इद्र सोभा सरस, राज भूप जैचदरै ॥ १

१ ख आवसि । २ ख सुलच्छि । ग. सुलषि । ३ ग अंतह । ४ ग कहतह । ५ ग जोग । ६ ख ग अग्रकारीया । ७ ख ग. छत्रधारिरीया । ८ ग दूहा । ९ ख जगि । १० ख. हूवौ । ११ ख ग सपप्पर । १२ ख. पायक । ग पाइक । १३ ग. धरसी-धर । १४ ख. जागत । १५ ख मदभर । ग मद्भर । १६ ख. दुंदुभि । १७ ख घुमार । ग. घुम्मर । १८ ग निति । १९ ख ग. दोय । २० ख. ग नूप ।

५०४ मभि— मध्य, मे । दतार— दानवीर, दातार । सधीर— धैर्यशाली ।

१ सिलह-पोस— शस्त्रधारी । लख— लाख । पमंग— घोडा । सपक्खर— कवचधारी । पायक्क— अनुचर, पदाति । धानख— धनुष । फरसधर— परशु नामक शस्त्रको धारण करने वाला । दताळ— हाथी । गाजत— गर्जना करते हैं । मदज्भर— हाथी । नीसाण— नगाडा विशेष । घुरै— व्वनि करते हैं, वजते हैं । सेव— सेवा । दुय— दो । सहस— सहस्र । गुण— कीर्ति । सरस— श्रेष्ठ ।

छन्द^१ नाराच

अनेक पद्मणी^२ अवास, रूप भोमि^३ रच्चए^४ ।
 अनेक रागरग ओप, नृत्तकार^५ नच्चए^६ ।
 भरै अनेक दड^७ भूप, केक वीनती करै ।
 करै अनेक दांन कोडि, पगराज भूपरै ॥ २
 छजत भूपती छभा^८, सलांम भूपती सजै ।
 कपूर पानदांन केक, राखि^९ भूपती रजै ।
 खडग^{१०} ढाल ले खडा, जळा^{११} सपात्र सजती ।
 भजै खवास पासवान, चौपदार भूपती ॥ ३

छंद कुसविचित्रा^{१२}

भूपती सकळ नमै^{१३} डंड भरै ।
 कुळ खट त्रीस^{१४} सेव सह^{१५} करै ।
 दस द्रगपाळ^{१६} देखि दळ डरै ।
 कमधज इण^{१७} विध राजस करै ॥ ४

छंद अमृतगति^{१८}

अनि नृप^{१९} कोय^{२०} न अहेही^{२१} । जग मभि जैचद जेहौ ।
 कुळ दळ बळ^{२२} अग्रकारी । धर पूरब^{२३} छत्रधारी ॥ ५

१ ख ग. छंद । २ ख पदमणी । ३ ग भौमि । ४ ग रच्चए । ५ ख ग नृत्य-
 कार । ६ ख नच्चये । ग नच्चए । ७ ख ग डड । ८ ख सभा । ९ ख राष ।
 १० ख षडग । ग षडग । ११ ख जल । ग जळ । १२ ख ग कुसुमविचित्र ।
 १३ ख. ग नमे । १४ ख ग. तीस । १५ ख सर्व । ग सर्व । १६ ख. ग द्रिगपाळ ।
 १७ ख इणि । ग ईणि । १८ ख ग अमृतगति । १९ ख ग नृप । २० ख कोइ ।
 २१ ग ऐहौ । २२ ख बल । २३ ख पूरव ।

२ पद्मणी - पद्मिनी । अवास - भवन । भोमि - भूमि । नृत्तकार - नृत्यक । पगराज -
 राजा जयचद । वि वि राजा जयचदकी सेना बहुत ही बडी थी । जब राजा जयचद
 अपने दल-बल सहित प्रस्थान करता तो योद्धाओंका लम्बा ताता बँध जाता था । इससे
 लोगोको ऐसा अनुभव होता था कि मानो सेना पगुवत् चल रही हो ।

३ छजत - सजता है । छभा - सभा । केक - कई । खवास - नौकर । पासवान -
 कृपापात्र, ए डी सी । चौपदार - छडी लेकर अगाडी चलने वाला, चोवदार ।

४ सकळ - सब । खट त्रीस - छत्तीस । सह - सब । द्रगपाळ - दिक्पाल । दळ - सेना ।
 राजस - राज्य ।

५ अनि - अन्य । अहेही - ऐसा । मभि - मध्य, मे । जेहौ - जैसा । अग्रकारी - अग्र-
 गण्य, अग्रगामी । छत्रधारी - राजा ।

छप्पय- दिवस एक जैचद, वीर' मिसलति' विचारी ।
 जीपि^३ किया' सव' जेर, धरा हिंदू^६ छत्रधारी ।
 अटक पार मो अगै, इळा^७ नहिं^८ नमै विलायति^९ ।
 जवन वसै^{१०} जिण^{११} माहि, आठ मगरूरा^{१२} असपति ।
 ज्या हणू काय पकडूं जिया^{१३}, प्रथी^{१४} वदै तद पांणरौ ।
 खग पांणि दड^{१५} ल्यां^{१६} तदि खत्री, खित^{१७} छ खड खुरसांणरौ ॥ ६

छन्द त्पमाळा

ताम जयचंद तेडिया^{१८}, परधांन बुद्ध^{१९} प्रकास^{२०} ।
 खग^{२१} भाट^{२२} ल्यू खुरसांण हू, जुध पूछि मिसलति^{२३} जास ।
 करि सलाम सजोडि कर इम, वोलिया^{२४} स वजीर^{२५} ।
 हुकम माफक होवसी, वरियांम हित चित वीर ॥ ७
 नववीस सात नमाविया^{२६}, परचद कुल खग पाण ।
 जुध आप दळ वळ^{२७} जोवता, खळ किसू^{२८} दळ खुरसाण ।

१ ख विर । २ ख ग मसलति । ३ ख जीप । ४ ख ग कीया । ५ ख ग सहू । ६ ख हींदू । ७ ख ग यळा । ८ ख ग नह । ९ ख विलाग्रति । ग विलाग्रति । १० ग वसै । ११ ख जिणि । १२ ख ग मगरूर । १३ ख ग जीयां । १४ ख ग प्रिथी । १५ ख ग डड । १६ ख ल्यू । ग लू । १७ ख क्षिति । ग क्षिति । १८ ख ग तेडीया । १९ ख बुद्धि । ग बुधि । २० ख ग परकास । २१ ख ग खाग । २२ ख ग भाट । २३ ख ग मसलति । २४ ख वोलीया । ग वोलीया । २५ ख ग उजीर । २६ ख ग नमावीया । २७ ख वळ । २८ ग किसू ।

६. मिसलति - ऐसी गुप्त युक्ति या विचार जिमका सहमा किमीको पता न चल सके, मसलहत । जीपि - जीत कर । जेर - बलहीन, अवीन, तावे । छत्रधारी - राजा । अटक - सिंधु नदी या सिंधु नदीके उस पार बसने वाला एक नगर । मो - मेरे । इळा - पृथ्वी । मगरूरा - गर्व वाले, अभिमानी । असपति - वादशाह । ज्यां - जिन । हणूं - सहार कर दू । काय - अथवा । जिया - जिन । प्रथी - पृथ्वी । वदै - कई । पांणरौ - बलका, शक्तिका । खग - तलवार । पांणि - बलसे । तदि - तब । खत्री - क्षत्रिय । खित - पृथ्वी । खुरसांणरौ - खुरासानका, मुसलमानोके ।

७ ताम - तब, उन । तेडिया - बुलाये । खग - तलवार । भाट - प्रहार । मिसलति - गुप्त मन्त्रणा । जास - जिमकी । सजोडि कर - करबद्ध हो कर । इम - इम प्रकार । वोलिया - बोले । वजीर - वजीर, मंत्री । माफक - अनुकूल । होवसी - होगा । वरियाम - श्रेष्ठ । ८ परचड - प्रचण्ड । खग पांण - तलवारके बलसे । दळ - सेना । वळ - शक्ति । जोवतां - देखने पर । किसूं - क्या । खुरसाण - वादशाह, यवन, खुरासान देश (?) ।

तौ वेग^१ लिखि फुरमाण तेडौ, सूर जोध सकाज ।
 करि त्रिण सलांम सताम कहियौ^२, जो हुकम महाराज^३ ॥ ८
 चौतरफ लिख^४ फुरमाण^५ चलवे, डाकदार उदार ।
 धाविया^६ बह^७ जूग - धारक, पैक वड^८ अणपार ।
 अधिक दसदिस^९ पैक आतुर, धरा पर इम धाय ।
 जोय ग्रीखम^{१०} सुजळ^{११} जाणिक^{१२}, जूथ म्रिग^{१३} वन^{१४} जाय ॥ ९

छन्द पद्वरी

दस दिसा एम^{१५} फुरमाण दीध ।
 लायका भडां सिर^{१६} चाढ^{१७} लीध ।
 जुध सराजाम सभि सभि ब्रजागि ।
 लौहमै^{१८} सरसि भुज उरसि^{१९} लागि ॥ १०
 चढि चढि गज भिडजां नयण चोळ^{२०} ।
 बह^{२१} हलै प्रघळ जळ दळा^{२२} बोळ ।
 निस^{२३} दिवस इसा बहु^{२४} बहु^{२५} नरेस ।
 परचड करत कनवज प्रवेस ॥ ११

१ ख ग वेगि । २ ख. ग कहियौ । ३ ख ग महाराज । ४ ख लिषि । ग लषि ।
 ५ ख फरमाण । ६ ख ग. धावीया । ७ ख ग बहौ । ८ ख वणि । ग वडि ।
 ९ ग दससीस । १० ग ग्रीष्म । ११ ख सुलज । १२ ख जाणिकै । १३ ख. ग
 मृग । १४ ख बौहौ । ग बौहौ । १५ ग ऐम । १६ ख सिरि । १७ ख चाढि ।
 ग. चाढि । १८ ख ग सरस । १९ ख ग उरस । २० ख. चोला । ग चौल ।
 २१ ख बौहौ । ग बहौ । २२ ख जवावोळ । ग जळावोळ । २३ ख निसि ।
 २४ ख. बौहौ । ग बौहौ । २५ ख दर । ग दळ ।

८. तौ - तव । वेग - शीघ्र । फुरमाण - फरमान । तेडौ - बुलाओ । त्रिण - उन ।
 ९ चौतरफ - चारो ओर । डाकदार - सदेशवाहक । धाविया - दौड़े । जूग धारक -
 शूतुरसवार, ऊँटसवार । पैक - दूत, चतुर । वड - वडा । अणपार - असीम ।
 जोय - देख कर । ग्रीखम - ग्रीष्म । सुजळ - श्रेष्ठ, जलयुक्त । जाणिक - मानो, जैसे ।
 जूथ - यूथ, समूह ।

१० एम - इस प्रकार । दीध - दिये । लायका - योग्य । भडा - योद्धाओ । सराजाम -
 प्रवध, सामग्री । सरसि - (?) । उरसि - आसमान ।

११ भिडजां - घोडो । चोळ - लाल, रक्त । बह - बहुत । हलै - चले, गतिमान हुए ।
 प्रघळ - बहुत । दळावोळ - अपार । निस - रात्रि । दिवस - दिन । कनवज - कनीज ।

चतुरंग मिलै दरगाह चंद ।
 सांभळै^१ जाणि घणि^२ नदि समंद ।
 पह^३ कर्म^४ हुकम^५ मिळि^६ समंद पूर ।
 सामिळे वस खटतीस सूर ॥ १२
 वाहरू सीत जाणै ब्रजागि ।
 लसकर कपि मिळिया^७ वेध^८ लागि ।
 जैचंद दळावळ^९ देखि जाम ।
 तोले खग बोले^{१०} एम^{११} ताम ॥ १३
 मंत्रियां^{१२} लिखी फुरमाण मेक ।
 असुराण तरफ करि मंत्रि एक ।
 जिण^{१३} मांभि^{१४} लिखी उमराव जेम ।
 तिण^{१५} सुणै खिजे मुरताण तेम ॥ १४
 पत्र जेण^{१६} लिखी इण विध^{१७} प्रियोग^{१८} ।
 भेजौ सताव^{१९} खुरसाण भोग ।
 मो पाटि बड्ढा^{२०} पछौ माल ।
 उपजेस सकळ भेजौ अपाल ॥ १५

१ ख ग सामिले । २ ख ग घण । ३ ख पौ । ग पही । ४ ख हुकमि । ५ ख ग. दळ । ६ ख. ग मिलीया । ७ ख. वेधि । ८ ख रलवळ । ग. दलवळ । ९ ख. बोले । १० ग. ऐम । ११ ख ग मत्रीयां । १२ ख ग जिणि । १३ ख ग. मांभि । १४ ख तिणि । १५ ग जेणि । १६ ख ग विधि । १७ ख ग प्रयोग । १८ ख. सताव । १९ ख बड्ढां । ग वंठा ।

१२ चतुरंग - चतुरगिनी सेना, सेना । दरगाह - दरवार । चंद - जयचंद । घणि - बहुत । समंद - समुद्र । पह - राजा । सामिळे - शामिल होते हैं । सूर - वीर ।

१३ वाहरू - रक्षक । सीत - नीता । ब्रजागि - ब्रजाग, हनुमान । लसकर - सेना । वेध - युद्ध । जाम - जव । ताम - उन, तव ।

१४ मेक - एक । असुराण - मुसलमान । मांभि - मध्य, मे । खिजे - कोप करे । सुरताण - वादशाह ।

१५ सताव - शीघ्र । भोग - राज्य-कर, दण्ड । पाटि - राज्यसिंहासन पर । बड्ढा - बैठने पर । उपजेस - जो उत्पन्न होता है । अपाल - बिना रक्षावट ।

दसकत^१ सिर^२ चाढौ करि अदाब^३ ।
 सभि फौज सेव आवौ सताब ।
 अठ तखत छत्र अठ चमर आंणि ।
 पहु^४ करौ निजर^५ मिळता प्रमाणि ॥ १६
 आविया^६ सेव पावौ उतन्न^७ ।
 धर सहत^८ वधारा बिगुण^९ धन्न^{१०} ।
 ज्यां हूत दूण कीमति उदार ।
 दे तखत चमर छत्र जिलहदार ॥ १७
 दे तखत चमर छत्र सीख देस ।
 निज कुरब^{११} सिरै बिसहस^{१२} नरेस ।
 इळ^{१३} रूम सामपति दळ अथाह ।
 सातसू वडौ पररेज साह ॥ १८
 उण तरफ लिखी फुरमाण एह^{१४} ।
 लसकरि^{१५} सभि^{१६} सामौ^{१७} आय लेह ।
 इण^{१८} माहि एक^{१९} न मनौ अदाब^{२०} ।
 सग्राम करण आवौ सताब^{२१} । १९

१ ख दसकति । २ ख ग सिरि । ३ ख. अदाव । ४ ख ग पौही । ५ ग. निज ।
 ६ ख. आवीयो । ग आवीया । ७ ख उतग । ग उभन । ८ ग सहित । ९ ख ग.
 विगुण । १० ख घन । ग धन । ११ ख. कुवर । १२ ख. विसहंस । ग विसहस ।
 १३ ख यल । ग थल । १४ ग ऐह । १५ ग लसकर । १६ ख ग सजि । १७ ख.
 ग सांम्हौ । १८ ख ग. यण । १९ ग ऐक । २० ख अदाव । २१ ख सताव ।

१६ दसकत - दस्तग, कर वसूल करनेका परवाना । अदाब - प्रतिष्ठा, इज्जत । सभि - सज
 कर । अठ - आठ । चमर - चँवर । आणि - ला कर । पहु - राजा, बादशाह ।

१७ आवियां - आने पर । सेव - सेवा । उतन्न - वतन । धर - भूमि, धरा । सहत -
 सहित । वधारा - वृद्धि, उन्नति । बिगुण - द्विगुण, दुगना । घन्न - द्रव्य, घन-दौलत ।
 हूणा - दुगने । जिलहदार - चमकदार ।

१८ कुरब - मान, प्रतिष्ठा । सिरै - श्रेष्ठ । बि - दो । सहस - हजार ।

१९ उण - उस । फुरमाण - फरमान, आज्ञापत्र । एह - यह । लसकरि - सेना, फौज ।
 सामौ - सम्मुख । सग्राम - युद्ध । सताब - शीघ्र ।

विध^१ सुणे वजीरां एम^२ वांणि^३ ।
 पग वदि^४ कहै आयस प्रमाणि^५ ।
 तत वीर लिखे फुरमाण ताम ।
 जगमुकट तेडियौ^६ मत्रि^७ जाम ॥ २०
 काबिल^८ किताव^९ मत्री कुलीण ।
 पारसी आरबी^{१०} मभि प्रवीण ।
 दळ पच^{११} सहस दळ^{१२} साथि^{१३} दीध ।
 किलमाण मुलक दिस^{१४} विदा कीध ॥ २१
 जगमुकट केक^{१५} दिन माहि जाय ।
 असपती रूम निजदीक^{१६} आय ।
 ऐ^{१७} समाचार तपसीलवार ।
 दीधा असपतनू^{१८} खबरदार^{१९} ॥ २२
 सुणि खबर^{२०} सभै दळवळ^{२१} सकाज ।
 रैवत सिणगारे गजां राज ।

१ ख. ग विधि । २ ख ग यम । ३ ख. ग. विनांण । ४ ग वदि । ५ ख ग प्रमाण । ६ ख ग तेडियौ । ७ ख ग षत्री । ८ ख काबिल । ९ ख किताव । १० ख अरब्बी । ११ ख ग पाच । १२ ख जिणि । ग जिण । १३ ख. ग साथ । १४ ख ग. दिसि । १५ ख ग केकि । १६ ख ग. नजदीक । १७ ख ग ये । १८ ख असपती । ग. असपति । १९ ख पवरदार । २० ख षवर । २१ ख ग दळवळ ।

२० विध - कार्यक्रम, विधि । वजीरां - मत्रियो । आयस - आज्ञा । प्रमाणि - अनुसार । तेडियौ - बुलाया । जाम - उस समय ।

२१ काबिल - विद्वान, कुशल, योग्य । कुलीण - श्रेष्ठ कुलवा, कुलीन । आरबी - अरबी भाषा । मभि - मध्य, मे । दळ - सेना । साथि - साथमे । दीध - दिया । किलमाण - मुसलमान, कलमा पढने वाला । दिस - तरफ । विदा - प्रस्थान । कीध - किये ।

२२. केक - कई, कुछ । असपती - बादशाह । निजदीक - निकट । तपसीलवार - व्योरे-वार, विस्तारपूर्वक । दीधा - दिये । असपतनू - बादशाहको । खबरदार - दूत, सदेशवाहक ।

२३. रैवत - घोडा । सिणगारे - सुमज्जित किये ।

जगमग करि दरगह नग जहूर^१ ।
 पुर करे चित्र औछाड पूर ॥ २३
 हवसी^२ करूर दसदस हजार ।
 मेले^३ दरवाजा दस्त मभार ।
 काळा जम रूपी उप^४ कराळ ।
 वाणी कराळ बोलै^५ विसाल ॥ २४
 जरदैत लोह मभि कडाजूड ।
 अवनानड भूप^६ गिडकंध अडूड ।
 जगमुकट आवियौ^७ वार जेण ।
 तत खबर दोध फुरमाण तेण ॥ २५
 इम सुणे रूम असपति अमान ।
 खूदालम^८ तेडे^९ खबर^{१०} खान ।
 सामले^{११} वबर पररेज साह ।
 इण भांति कीध मसलति अथाह ॥ २६
 ऐळचो^{१२} हिदसे इहा आय ।
 जिस पास करो रद वदळ जाय ।

१ ख हूर । २ ख हवसी । ३ ख मेल्हे । ग म्हेलै । ४ ख ग वप । ५ ख वोलै ।
 ६ ख. भूत । ७ ख ग आवीयौ । ८ ख ग षौदालम । ९ ख ग तेजै । १० ख
 वबर । ग बबर । ११ ख ग सामिले । १२ ख एलची ।

२३. जगमग - देदीप्यमान, चमकयुक्त । दरगह - दरवार । जहूर - प्रकाश, जुहूर ।
 औछाड - विस्मय (?) । पूर - पूर्ण, पूरा ।

२४ करूर - भयकर, जबरदस्त । मभार - मध्य, मे । उप - वपु, शरीर ।

२५ जरदैत - कवचधारी । लोह - अस्त्र-शस्त्र । कडाजूड - मुसज्जित, जडे हुए ।
 अवनानड - योद्धा । गिडकंध - जबरदस्त, गिरिस्कंध, विशालकाय । अडूड - श्रेष्ठ ।
 वार - समय । जेण - जिस । तत - सार, तत्व, तत्काल । दोध - दी । तेण - उस ।

२६ असपति - वादशाह । अमान - मानरहित । खूदालम - वादशाह, खुदा-ए-आलम ।
 तेडे - बुलाये । सामले - साथ, शामिल । वबर - एक वादशाहका नाम, जबरदस्त ।
 कीध - की । मसलति - मस्लहत, सलाह, विचार । अथाह - अपार ।

२७ ऐळची - राजदूत । हिदसे - हिन्दुस्तानसे । इहा - यहाँ ।

निज^१ रूप त्रिखायस^२ जलह^३ नूर ।
 जवरी^४ अकूफ^५ दी^६ जम^७ जहूर ॥ २७
 तहकीक करी जिस तळू वात^८ ।
 तारीफ मताळव^९ ईस तात ।
 सुणि एम ववर चाने राधीर ।
 महि द्विया साथि पेंच सहस^{१०} मीर ॥ २८
 विडरूप चले^{११} असि चडि कुवाणि^{१२} ।
 जागिया^{१३} प्रेत रणखेत जाणि^{१४} ।
 दरयाव^{१५} रूप^{१६} हू कोस दोय ।
 जगमुकट कीध डेरास^{१७} जोय^{१८} ॥ २९
 उण ठौड ववर^{१९} उजछक्क^{२०} आय ।
 ताजीम^{२१} न की जगमुकट ताय ।
 दौलत्त - नजर कह^{२२} चौपदार ।
 जोवियो^{२३} नीठ सांम्ही जियार ॥ ३०

१ ख ग नीज । २ ख. वरपायस । ग वरपायस । ३ ख जिलह । ४ ख जवरी ।
 ५ ग अकूफ । ६ ख ग. दीद । ७ ख ग मजहूर । ८ ख ग तलूवान । ९ ख. मता-
 लव । ग मातासव । १० ख ग सहस । ११ ख. ग. हले । १२ ख कुवाणि ।
 ग कुवाण । १३ ख ग. जागीया । १४ ख ग. जाणि । १५ ख. ग दरयाव । १६ ग
 रूप । १७ ख ग डेरा । १८ ख. ग सुजोय । १९ ख ववर । २० ख ग उज-
 छक्क । २१ ग. ताकी । २२ ख ग कह । २३ ग जोवीयो । ख जोवीयो ।

२७ त्रिखायस - (?) जलह - चमक । जवरी - (?) । जम - (?) । अकूफ - (?)
 जहूर - जुहर, प्रकट, जाहिर ।

२८ तहकीक - जाच, पडताल । मताळव - मतलव । मीर - अमीर, योद्धा, वीर ।

२९ विडरूप - भयकर । असि - घोडा । कुवाणि - वक्र, टेढे (?) । रणखेत - युद्धस्थल,
 युद्धभूमि । कीध - किया ।

३० ठौड - स्थान । ताजीम - सम्मान, सन्मान । दौलत्त नजर - बादशाहकी सवारीके
 अगाडी चलते समय चौपदारसे उच्चारण किये जाने वाले शब्द । चौपदार - चौपदार ।
 जोवियो - देखा । नीठ - मुश्किलसे । सांम्ही - सम्मुख, सामने । जियार - जब ।

उजबक^१ परजळियौ^२ अंग अग ।
 रवदाळ कीध चख चोळ^३ रग ।
 दळनाथ हुकम पर नजर^४ दीध ।
 कूवा सछांह जिम क्रोध कीध ॥ ३१
 चढि मसंद बैसि^५ इम कहै^६ चौज ।
 कुण देस नगर पूरव^७ कनौज ।
 निज धणी कमण जयचद नरेस ।
 दे भेजे कुछ फुरमाण देस ॥ ३२
 किस पर पररेजह नाम कोय ।
 है असपति इम^८ हां रैति होय^९ ।
 अयसे^{१०} कोई है उह^{११} अनेक ।
 कौ गजनी माडव आदि केक ॥ ३३
 सो भरत डड अरु करत सेव ।
 भटकियौ^{१२} बबर इम सुणे भेव ।
 मुणियौ^{१३} खिज^{१४} दै फुरमाण मूभ^{१५} ।
 तू नौकर न दियू^{१६} हाथ तूभ^{१७} ॥ ३४

१ ख उजबक । २ ख. ग. परजलीयो । ३ ख. ग घोम । ४ ग नजरि । ५ ख
 वैठि । ग. वैठि । ६ ग वाहै । ख. कहे । ७ ख. पूरव । ८ ख ग सोड । ९ ख
 होइ । ग हौय । १० ख ग. अइसे । ११ ख ग उर्हा । १२ ख ग भटकीयो ।
 १३ ख. ग. मुणीयो । १४ ख खिजै । ग खिजि । १५ ख ग मुभू । १६ ख ग
 दीयो । १७ ख. ग तुभू ।

३१ उजबक — यवन, वादशाह का नाम । परजळियौ — क्रोधित हुआ । रवदाळ — मुसलमान
 वादशाह । चख — नेत्र । चोळ — लाल । दीध — दी । कूवा — कुप । सछांह — छाया-
 सहित ।

३२ मसद — अमीरके बैठनेकी गद्दी, मसनद । बैसि — बैठ कर । चौज — रसकी वात,
 आनन्दकी वात, गर्वपूर्ण उक्ति । धणी — स्वामी, मालिक । कमण — कौन । दे — दे
 कर । फुरमाण — आज्ञापत्र ।

३३ असपति — वादशाह । रैति — प्रजा । उहं — वहाँ ।

३४ भरत — प्रदा करते हैं, देते हैं । भटकियौ — कुपित हुआ, भडका । बबर — यवन । भेव —
 भेद, रहस्य । मुणियौ — कहा । खिज — कुपति हो कर । मूभू — मुभूको । तूभू — तुभूको ।

असल तौ^१ दियूं जद साह आय ।
 विघ^२ नकल तास दीधी वणाय ।
 तजि नूर मांणले नकल तांम ।
 हालियौ^३ हीणमद तजे हांम ॥ ३५
 आवियौ^४ जठै पतिसाह आय ।
 तिण देखि^५ साह^६ वर^७ ववे^८ ताप ।
 क्रोधमे ववर^९ नह अरज कीध ।
 दसकत्त नकल फुरमांण दीध ॥ ३६
 जयचंद वचन वांचे ब्रजागि ।
 उर आखर^{१०} सुणियां^{११} लगी आगि ।
 पररेज धरे दाढ़ स पांण ।

*

कमधजां ग्रहूं गोसे^{१२} कवांण^{१३} ॥ ३७

१ ख असलि तौ । ग अस्तिलि तौ । २ ख. ग विवि । ३ ख ग. हालीयौ । ४ ख. ग. आवीयौ । ५ ख. देखि । ६ ख ग साहि । ७ ख. ग. उर । ८ ग. ववे । ९ ख. वरन । १० ख ग. अपिर अपिर । ११ ख ग. सुणि ।

*यहां पर निम्न पंक्तियां ख. तथा ग. प्रतियोंमें अधिक मिली हैं।—

बोलीयौ वयण किरि जहर बाण ।
 जंग करु पारसी लवज जाय ।
 मगरु हिंदू गरद हि मिलाय ।
 पेलेस दुदळ बल पाग प्राण ।

१२ ख गोसै । ग. गोसे । १३ ख कमाण ।

३५ जद — जव । साह — वादशाह । विघ — विधि । तास — उसकी । दीधी — दी । हीणमद — मदहीन हो कर । हांम — इच्छा ।

३६. आवियौ — आया । जठै — जहाँ पर । वर = उर — हृदय । ववे — बढ़ा । ताप — कोप । दसकत्त — हत्ताक्षर, अक्षर । दीध — दी, देदी । कीध — की ।

३७. वांचे — पढ़े । ब्रजागि — जवरदस्त । आगि — अग्नि । दाढ़ीस — ठुड़ी और दाढ़ पर के बाल, श्मश्रु । पांण — पाणि, हाथ । गोसे — धनुषकी कोटि ।

छप्पय— एक^१ कहै असपत्ति, लिखे खत हफत बिलायत^२ ।
 हफत नकल लिख^३ हफत, कमध फुरमाण^४ हकीकत ।
 हफत-हजारी^५ हफत^६, सभै हक सद^७ जै सायत ।
 आय हफत ईसफां^८, मिळी हफतम सभि हिम्मत^९ ।
 जव्वाव^{१०} साह^{११} जयचद दिसि, माड^{१२} दियौ^{१३} इम जगमुकट ।
 सताव^{१४} लेहु करि गुसल सब^{१५}, तेग आय^{१६} मेलाव^{१७} तट ॥३८

दोहा— फतै तुमै^{१८} कै हम फतै, मदत^{१९} जिसै रहमाण ।
 अरव^{२०} ह्वैगे घर एक ही, खुरासाण^{२१} हिंदवाण ॥ ३९
 इम^{२२} लिखि^{२३} मिळिया^{२४} साह अठ, करि इसफहा कटक्क^{२५} ।
 करण जग मसलति करे, उतरे पार^{२६} अटक्क^{२७} ॥ ४०
 महि कनवज महि^{२८} जगमुकट, आयी मंत्र^{२९} उदार ।
 छक चढियौ^{३०} चढियौ^{३१} छभा, जैचद करण गुहार ॥ ४१

१ ग. ऐम । २ ख ग विलायत । ३ ख ग. लिखि । ४ ख. ग हकीकत । ५ ख
 ग हजाराँ । ६ क. हफल । ७ ख. ग. रुक । ८ ख. ग इसफ । ९ ख हिंमत ।
 ग हिमत्त । १० ख जव्वाव । ग. जव्वाव । ११ ख ग साहि । १२ ख ग माडि ।
 १३ ख. ग दीयो । १४ ख साताव । ग. साताव । १५ ख सब । १६ ख. आवनी ।
 ग आवनी । १७ ग लाव । १८ ख ग तुमहै । १९ ख. ग तिजि । २० ख अरव ।
 २१ ग पुरसाण । २२ ख ग यम । २३ ख ग लिखि । २४ ख. ग. मिलिया ।
 २५ ख ग कटुक । २६ ख ग पारि । २७ ख ग अटुक । २८ ख ग सभि ।
 २९ ख. ग. मंत्री । ३० ख ग चढीयै । ३१ ख ग चढीयो ।

३८ असपत्ति— वादशाह । हफत— सात । बिलायत— देश । कमध— राठौड । फुरमाण—
 फरमान । हकीकत— यथार्थता, सच्चाई । हफत हजारी— सातहजारी, मुगलकालीन
 एक पदवी । हक— सत्य, यथार्थ । सद— आड, रुकावट, बाधा । जव्वाव— जवाव ।
 दिसि— तरफ, ओर । मांड— लिख कर । सायत— समय ।

३९. रहमाण— ईश्वर, रहीम ।

४० मसलति— गुप्त मन्त्रणा, मन्त्रणा, सलाह । अटक्क— सिंधु नदी ।

४१ महि— भूमि, मे । कनवज— कनौज । मंत्र— मन्त्री । छक— जोश । छभा— मभा ।
 जुहार— अभिवादन ।

धरपति जोवै धारणा, जगमुकटह^१ जैचंद^२ ।
 मेलत नह आणंद मन^३, अणमेलत आणंद ॥ ४२
 करि सलाम द्रव^४ नजरि^५ करि^६, समाचार कहि साह ।
 ब्रवे पत्र नृप^७ वाचियौ^८, उभळ्ळे क्रोध अथाह ॥ ४३
 तांण^९ मूछ^{१०} तोले तिजड^{११}, विसन सकति कर वद ।
 कूच नगरां हुय^{१२} कटक, चवै हुकम जयचंद ॥ ४४

छंद पद्वरी^{१३}

वजि^{१४} ध्रीह नगरां जेण^{१५} वार ।
 धर अवर थरहर जहर-धार ।
 अन्नक^{१६} भार भर कठठ^{१७} ऊठ ।
 जाजुळ^{१८} अनेक आराव^{१९} जूट ॥ ४५
 सिंधुरां मेघडंबर^{२०} सकाज ।
 सभि पाखर हौदा जंग साज ।
 वड^{२१} तुरी^{२२} जीण पाखर^{२३} वणाइ^{२४} ।
 भूलाळ भडां नख सिख भिलाइ ॥ ४६

१ ख. जगमुकटल । ग. जगमुकटह । २ ख. हैचद । ३ ख. ग. मनि । ४ ख. द्रव ।
 ५ ख. ग. निजर । ६ ख. कर । ७ ख. ग. नृप । ८ ख. वांचीयौ । ग. वांचीयौ । ९ ख.
 ग. तांणि । १० ग. मुछ । ११ ख. ग. षडग । १२ ख. ग. होय । १३ ख. पद्वडी ।
 १४ ग. वजि । १५ ख. ग. जेणि । १६ ख. अनेक । १७ ग. कठट । १८ ग. जाजुलि ।
 १९ ख. आराव । २० ख. मेघडंबर । २१ ख. ग. वड । २२ ख. ग. तुरा । २३ ग.
 पाखण । २४ ख. ग. वणाय ।

४२. धरपति - राजा । जोवै - देखता है । धारणा - विचार ।

४३. ब्रवे - दे कर । वाचियौ - पढ़ा । उभळ्ळे - उमडा । अथाह - बहुत ।

४४. तोले - उठा कर । तिजड - तलवार । विसन - विष्णु । सकति - शक्ति । वंद -
 नमस्कार । चवै - कहता है ।

४५. ध्रीह - नक्कारेकी ध्वनि । धर - पृथ्वी । अवर - आसमान । थरहर - कंपायमान ।
 जहर धार - शैपनाग । कठठ - ध्वनि विशेष करते चले । जाजुळ - ऊंट । आराव -
 तोप ।

४६. सिंधुरां - हाथी । मेघडंबर - मेघाडंबर । सभि - सज कर । पाखर - कवच (हाथी) ।
 हौदा - हाथीका चारजामा । जंग साज - युद्धका मामान । तुरी - घोडा । जीण -
 घोडेका चारजामा या चारजामा सबधी समान । भूलाळ - समूह । भिलाइ - सुशोभित
 कर, पहना कर । छतीस - छतीस ।

छहतीस^१ वस आयुध^२ छतीस ।
 सजि^३ काडाजूड^४ अड़ि उरस सीस ।
 काळा दळवळ^५ वळ^६ चडि^७ सक्रोध ।
 जोग्यद्र^८ रूप राज्यद्र^९ जोध ॥ ४७
 हुय^{१०} हूकळ कळहळ दळ अथाह ।
 दरगह चलि^{११} भळहळ मिलि दुवाह^{१२} ।*
 जडि सस्त्र सिलह करि सकति जाप ।
 इम चढे गयद जयचद^{१३} आप ॥ ४८
 हालिया^{१४} थाट रजडमर^{१५} होय^{१६} ।
 दळ जाणि हेक धर अवर दोय^{१७} ।
 आमूभ^{१८} पंखि^{१९} अहि अत^{२०} अनेक ।
 कुरंगाण जूथ आमूभ^{२१} केक ॥ ४९

१ ख छतीस । २ ख ग. आवध । ३ ख. ग सक्ति । ४ ग कड़ाजूड़ि । ५ ख. दळवळ । ६ ख. वळ । ७ ख चडि । ८ ख. जोगीन्द्र । ग जौगिन्द्र । ९ ख. राजिन्द्र । ग राजेंद्र । १० ख होय । ग हूय ।

*ख प्रतिभे यह पक्ति निम्न प्रकार है—

दरगह भळहळ मिलि भड दुवाह ।

११ ख. वल । १२ ख ग. दुवाह । १३ ख. जेचद । १४ ख. ग हालिया । १५ ग रजडमर । १६ ख. होइ । १७ ख ग दोई । १८ ग. आमूक्ति । १९ ख ग पंषी । २० ख ग मूत । २१ ख ग आमूक्ति ।

४७. सजि—सज कर । कडाजूड—कटिवद्ध । अड़ि—स्पर्श कर के । उरस—आसमान । जोगंद—योगीन्द्र, महादेव । राज्यद्र—राजेन्द्र, राजा । जोध—योद्धा ।

४८. हूंकळ कळळ—घोडो तथा सेनाका कोलाहल । दळ—सेना । अथाह—असीम । दरगह—दरवार । भळहळ—देदीप्यमान । दुवाह—योद्धा । जडि—धारण कर । जाप—जप, ध्यान । इम—इस प्रकार । गयद—हाथी ।

४९. हालिया—चले । थाट—सेना, दल । रजडमर—धूलि-समूह । धर—पृथ्वी । अवर—आकाश । आमूभ—अमूभ कर, घुट कर । पखि—पक्षी । अहि—सर्प । कुरंगाण—हरिण । जूथ—समूह । केक—कई ।

तूटा बह^१ जळ सर^२ नदि^३ तटाक ।
 हूकळ असि कळळ नकीव हाक ।
 ताळी खुलि ऊठे बहु^४ तपेस ।
 दळ धरा हले दहले द्रगेस^५ ॥ ५०
 ऊडंड नास सासा अपार ।
 क्रोधाळ पवन^६ छजि रौदकार ।
 घण नाळ तुरां अवघट्ट^७ घाट ।
 वढि गिरवर^८ भिंगर^९ हुवै^{१०} वाट ॥ ५१
 जयचदतणा दळ एण^{११} जात ।
 सामंद्र उभळिया^{१२} जाणि सात ।
 करि धरा वीच^{१३} केइक^{१४} मुकाम^{१५} ।
 जोजन मुर पुहुंता^{१६} कटक जामं ॥ ५२
 इण^{१७} हिज दळ समसर दळ उमंड ।
 पतिसाह आठ चढिया^{१८} प्रचड ।

१ ख. वही । ग वही । २ ख. भरित । ग. भर । ३ ख दित । ४ ख. वही । ग वही । ५ ख ग दिगेस । ६ ग पवण । ७ ख अवघट । ८ ग गिरवरि । ९ ख ग. भिंगर । १० ख. ग. हूवै । ११ ख एम । ग. ऐम । १२ ग उभळीया । १३ ग. विचि । १४ ग केयक । १५ ख. ग सुकाम । १६ ख. पहुता । १७ ख यण । ग पण । १८ ख चढीया ।

५० वह - बहुत । सर - तालाव । तटाक - तडाग, जलाशय । हूकळ - घोडोकी हिन-हिनाहट । असि - घोडा । कळळ - कोलाहल । नकीव - वह व्यक्ति जो किसी राजा-महाराजा बादशाहकी सवारीके आगे 'नजरे दौलत' आवाज करता चलता है । हाक - आवाज । ताळी - ध्यानावस्था । बहु - बहुत । तपेस - तपस्वी । दळ - सेना । धरा - पृथ्वी । हले - चले । दहले - कपायमान हुए । द्रगेस - दिक्पाल, दिग्गज ।

५१ ऊडंड - घोडा । नास - नाक । सासा - श्वाम । क्रोधाळ - क्रुद्ध । रौदकार - रुद्र-रूप, भयवर । घण - बहुत । नाळ - घाडेके सुमके नीचे लगाया जाने वाला लोहेका कड़ा । तुरा - घोडो । अवघट्ट - भयावह, जवरदस्त । घाट - स्थान । वढि - कट कर । गिरवर - पर्वत । भिंगर - भाडी-समूह । वाट - मार्ग ।

५२. एण - इस प्रकार । जात - चलते हैं । सामंद्र - समुद्र । उभळिया - उभड़े । जाणि - मानो । केइक - कई । मुकाम - पडाव, डेरा । जोजन - योजन । मुर - तीन । पुहुंता - पहुँच गये । कटक - सेना, दल । जामं - प्रहर ।

५३. समसर - समान । उमंड - उमड़ कर । पतिसाह - बादशाह । प्रचड - जवरदस्त ।

कठठिया^१ दहूं दळ काळ कीठ ।
 पनगेस कमळ भिडि कमठ पीठ ॥ ५३
 अपछरा हूर रथ आसमांण ।
 वजि सौक भांण थंभियौ^२ विमाण ।
 परि^३ सौक भौक रातळ अपार ।
 वजि सौक काळ चक्र विखम वार ॥ ५४
 काळिका डहक डमरू क्रहाक^४ ।
 हर^५ रिख^६ मिळि जोगणि^७ वीरहाक ।
 लख लक्ख^८ अरावा^९ धोम^{१०} लागि ।
 उछळिया^{११} गोळा चोळ आगि ॥ ५५
 जळधर अग्राज चढि धोम^{१२} जोर ।
 घण निसा अमावस तिमर घोर ।
 पखरैत भिडज^{१३} जरदैत पूर ।
 संघार हुवै अणपार सूर ॥ ५६

१ ख. ग. कठटीया । २ ग थंभीयौ । ३ ख ग. परसोक । ४ ग कहाक । ५ ग हरि । ६ ख. रिषि । ७ ग जोगणी । ८ ख लष । ग. लष्य । ९ ख. अरावां । १० ख. धोमि । ११ ख उछलीया । ग. उछळीया । १२ ख भिडज ।

५३. कठठिया - ध्वनि विशेष करते हुए चले । दहूं - दोनो । काळ कीठ - यमराजके समान । पनगेस - शेषनाग । कमळ - शिर, मस्तक । भिडि - टकराये । कमठ - कछप ।

५४ अपछरा - अप्सरा । हूर - परी । आसमांण - आकाश । सौक - ध्वनि विशेष । भांण - सूर्य । थंभियौ - रुका । विमाण - विमान । रातळ - पक्षी विशेष । काळ चक्र - यमराजका चक्र । विखम - भयकर, विषम । वार - समय ।

५५. डहक - हँसी । क्रहाक - ध्वनि विशेष । हर - महादेव । रिख - नारद ऋषि । वीर हाक - युद्धप्रिय भैरवदेवकी ध्वनि । अरावां - तोपो । धोम - अग्नि । उछळिया - उछले । चोळ - लाल, रक्तवर्ण । आगि - अग्नि ।

५६ जळधर - मेघ । घ म - धुंआ । निसा - रात्रि । तिमर - अन्वेरा । घोर - घना, पूर्ण, पूरा, भयकर । पखरैत - कवचधारी घोडे । भिडज - घोडा । जरदैत - कवचधारी योद्धा । संघार - सहार । अणपार - असीम । सूर - वीर ।

बह^१ छूट अम्हौसम्ह^२ कुहक्^३ बाण^४ ।
 पमगा^५ गज^६ सुभटां^७ उडै प्राण ।
 पग हाथ उडै घड सीस पाट ।
 आहुडै क्रोध पौरस^८ उपाट ॥ ५७
 हाकलै भडा जैचंद अथाह^{*} ।
 सुरताण सात पररेज साह ।
 ब्रह्म^९ जोध कसै करगां कवाण^{१०} ।
 पडि बाण^{११} सौक घण भोक^{१२} पाण ॥ ५८
 तन फूट^{१३} पड़त^{१४} तडफड़त ताइ ।
 लख हेक जाणि लौटण लुटाइ^{१५} ।
 पडि सौक भयकर उडि पखाळ ।
 काळमे जाणि घण प्रळयकाळ ॥ ५९
 सामिळै तुरक^{१६} हिंदू^{१७} सक्रोध ।
 जुध^{१८} दाणव देवा^{१९} जेम जोध ।

१ ख. वही । ग वही । २ ख. अम्होसम । ३ ख ग कौहीक । ४ ख वाण । ५ ख पमगां । ग पमगा । ६ ख मज । ७ ख ग सुभडा । ८ ख ग पौरिस ।

*ख प्रतिमे यह पक्ति निम्न प्रकार है—

हाकलै भडा जैचंद चद अथाह ।

९ ख. वही । ग वही । १० ख कवाण । ११ ख. वाण । १२ ख. छोक । १३ ख फूटि । ग. फुट । १४ ग पडै । १५ ख लुटाय । १६ ख तूरक । १७ ख ग हींदू । १८ ग. जुधि । १९ ख देवा ।

५७. बह - बहुत । अम्हौसम्ह - आमने-सामने । कुहक वाण - एक प्रकारकी तोप । पमंगां - घोड़ो । गज - हाथी । सुभट - योद्धा । आहुडै - भिड़ते हैं, युद्ध करते हैं । पौरस - बल, शक्ति । उपाट - अधिक, अपार ।

५८ हाकलै - जोश दिलाता है । भडा - योद्धाओ । अथाह - बहुत । करगां - हाथी । कवाण - कमान, घनुष ।

५९ तन - शरीर । तडफड़त - तडफडाते हैं । ताइ - शत्रु । लौटण - कवूतर । सौक - पक्षियोंके तेज उड़नेकी व्वनि । पखाळ - पक्षी ।

६०. सामिळै - भिड़ते हैं । सक्रोध - क्रोधपूर्ण । दाणव - दानव, असुर ।

धमरोळ पडै सेलां ध्रियाग^१ ।
 खागा^२ कर^३ नीछट वहै खाग ॥ ६०
 धड फूटत^४ तूटत सीस धार^५ ।
 पडनाळ स्रोण वभकै अपार ।
 चौसठी^६ पियै^७ भरि पत्र चंड ।
 सिर माळ सभै^८ आरोह सड ॥ ६१
 उड^९ रहियौ खागां गजर एम^{१०} ।
 जुधि फहर^{११} लक मझि गजर जेम ।
 हुव^{१२} करै विना धड़ धूहकार ।
 धू विना करै धड पछट धार ॥ ६२
 सामठा लडै धड^{१३} पडै मूर ।
 हरखंत वरै वह^{१४} रभ हूर ।
 पडि पेसकवज^{१५} खरडक अपार ।
 करडकक खाग भरडक^{१६} कटार ॥ ६३

१ ख ग ध्रियाग । २ ख. पाषा । ग पाषां । ३ ख ग करि । ४ ग फूटत ।
 ५ ग. धारि । ६ ख चौपटी । ग चौसटी । ७ ख ग. पीयै । ८ ख सभत । ९ ख
 ग उडि । १० ग ऐम । ११ ख ग फजर । १२ ख हुव । १३ ख ग धर ।
 १४ ख वीहौ । ग वीहौ । १५ ख पेसकवज १६ ख. भरडकक ।

६०. धमरोळ - प्रहारकी ध्वनि, हलचल । सेलां - भालो । ध्रियाग - बहुत, आकाश ।
 कर - हाथ । नीछट - निकल कर, छूट कर ।

६१. पडनाळ - जलकी नाली । स्रोण - खून, रक्त । वभकै - उमडता है । चौसठी - चीनठ
 युद्धप्रिय योगिनियां । चड - चडिका । सिरमाळ - मुडमाला । सभै - सजाते हैं । आरोह -
 सवार होकर । सड - वैल ।

६२ गजर - आवाज, प्रहार । हुव - भिड कर, युद्ध कर । धूहकार - आवाज विशेष, ज्वंस,
 नाश । धू - शिर । पछट - प्रहार । धार - तलवार ।

६३ सांमठा - बहुत, एक साथ । पडै - वीर गति प्राप्त होते है । हरखंत - हर्षित । वरै -
 वरण करती है । वह - बहुत । रभ - अप्नरा । हूर - परी । पेसकवज - पेशकवज ।
 खरडक - प्रहार । करडकक - शस्त्रका प्रहार या प्रहारकी ध्वनि । खाग - तलवार ।
 भरडक - शस्त्रका प्रहार या प्रहारकी ध्वनि ।

गजसीस पडै^१ घड पडै^२ गात ।
 पडिया^३ किर पाहड वज्र पात ।
 गिल^४ धापै पळचर मस गाळ ।
 खळकिया^५ घणा रुधराळ^६ खाळ ॥ ६४
 नदि नांम अगै कहता निलाव^७ ।
 सुरखाव^८ होय^९ उभळै^{१०} सताव ।
 असि गयद अनुर सुर कटि अपार^{११} ।
 पडिया^{१२} घण घायल घण अयर ॥ ६५
 डण भात^{१३} सात निस^{१४} दिन^{१५} अभग^{१६} ।
 जुडि जीती जैचद^{१७} भूप जग^{१८} ।
 सुरताण आठ डक दिवस साहि ।
 मेल्हविया^{१९} काराग्रेह माहि ॥ ६६

छप्पय— सिरै साह पररेज, रुमपति ग्रेहे वहादर^{२०} ।
 गौहरि^{२१} पारिज ग्रेह^{२२}, हठी फिरंगी वहु^{२३} हुन्नर ।
 हवसी^{२४} साह हुसेन, तरह मवला तूरानी ।
 सेरसाह इसफहा, अभग ग्रहियी^{२५} ईरानी^{२६} ।

१ ख ग भडै । २ ख ग पडीया । ३ ख ग गिलि । ४ ख ग कीया । ५ ख ग रुधिराळ । ६ ख नीलाव । ग. नीलाव । ७ ख सुरखाव । ८ ख होइ । ग होई । ९ ख उजले । १० ख. अपार । ११ ख ग पडीया । १२ ख ग भाति । १३ ख ग दिन । १४ ख ग निसि । १५ ख अनग । १६ ख ग जयचद । १७ ख भग । १८ ख ग मेल्हवीया । १९ ख वहादर । ग वाहादर । २० ख हर । ग र । २१ ख. ग्रेहे । ग ग्रहै । २२ ख वही । ग वहुं । २३ ख हवसी । २४ ख ग ग्रहीयो । २५ ग इरानी ।

६४ पाहड — पर्वत । गिल — निगल कर । पळचर — मासाहारी । मस — मास । गाळ — क र, निवाला । खळकिया — ध्वनि करते हुए द्रव पदार्थ (खून), वहा । रुधराळ — रक्त, खून । खाळ — नाला ।

६५ अगै — पहिले । निलाव — स्वच्छ, नीलाभ । सुरखाव — लाल । उभळै — उडम रही है । सताव — शीघ्र । असि — घोडा । गयद — हाथी । असुर — मुसलमान । सुर — हिंदू । अयर — शत्रु ।

६६. निस — रात्रि । अभग — निरन्तर । जुडि — भिड कर । जीती — विजयी हुआ । सुरताण — वादगाह । दिवस — दिन । साहि — पकड कर । मेल्हविया — भेजे । काराग्रेह — कैद ।

औराक साह सल्लैमवै, बलकी^१ बबर^२ महाबली^३ ।

पतसाह^४ आंठ जयचद^५ पकडि, इळ किय^६ किय^७की ऊझळी^८ ॥ ६७

दोहा^९-इम^{१०} जीते कनवज अयौ, अति छक वधे अनद ।

सुरच द रीत बहु^{११} कीध सुख, जगतजीत जयचद^{१२} ॥ ६८

बहु^{१३} खाटे जयचद विरद^{१४}, वधि खग दत^{१५} विणवार ।

आवै नहि^{१६} जे थाग अति, पावै नहि^{१७} को^{१८} पार ॥ ६९

दे गज असि सिरपाव दळ, स्रब^{१९} छोडै सुरताण ।

साह ग्रहण मोखण सुपह, पाया विरद प्रमाण ॥ ७०

करै राज इण विध^{२०} कमध, पय^{२१} वड ऊमर^{२२} पाय ।

सुपह पग कीरति सभे, एम^{२३} वसे^{२४} स्रगि आय ॥ ७१

इति जयचद वरणण ।

*

छद पद्धरी

वरदाय पगसुत सूरवीर ।

सुत तास सेन भळहळ सरीर ।

१ ख बलकी । २ ख बबर । ३ ख ग. महाबली । ४ ख ग पतिसाह । ५ ख जयचद । ६ ख ग. किय । ७ ख. ग कीरति । ८ ख. ऊझळी । ९ ग उझळी । १० ग दोहा । ११ ग. इन । १२ ख वही । ग वही । १३ ग जयचद । १४ ख वही । ग वही । १५ ख विरद । १६ ग दग । १७ ख ग नह । १८ ख ग नह । १९ ख ग कोय । २० ख श्रव । ग श्रव । २१ ख ग विधि । २२ ख ग यळ । २३ ख ग उम्मर । २४ ख येम । ग येमि । २५ ग वसे ।

६७. इळ - पृथ्वी । ऊझळी - उज्ज्वल ।

६८ अयौ - आया । छक - जोश । सुरच द - सुरेन्द्र, इन्द्र । कीध - किये ।

६९ खाटे - प्राप्त किये । विरद - विरुद । दत - दान । थाग - सीमा हद ।

७० साह - वादशाह । ग्रहण - पकडना । मोखण - छोडना । सुपह - राजा । पाया - प्राप्त किये । विरद - विरुद ।

७१ पग - राजा जयचदका विरुद । सभे - प्राप्त कर । स्रगि - स्वर्गमे ।

७२ वरदाय - वरदायीसेन । तास - उस । सेन - वर- दायीसेन । भळहळ - देदीप्यमान ।

नवखड दांन खग सुजस नांम^१ ।
राजंत सेन सुत सेतरांम^२ ॥ ७२

अथ राव सीहारौ वरणण

ते सुतन^३ सीह दन खाग तीख ।
साभाव सुपह जैचद सरीख ।
कनवज्जहूत सीहौ सकाज ।
सभि चलै^४ पूर दळवळ^५ समाज ॥ ७३
पह^६ चढे जाणि दध^७ छिले पाज ।
रिणछोड दरस कजि महाराज^८ ।
इळ पूरवहूता^९ पछिम आय ।
जात्रा द्वारावति^{१०} कीध जाय ॥ ७४
करि मदत चावड़ां अचड^{११} कीध ।
लखपत^{१२} फूलाणी मार^{१३} लीध ।
ओद्राव पड़े पच्छिम^{१४} अपार ।
सह^{१५} कहै एम^{१६} कीरति संसार ॥ ७५

१ ख मांम । २ ख. सेनराम । ३ ख ग सुतण । ४ ख ग चढे । ५ ख. दळवळ ।
६ ख. ग. पहौ । ७ ख. ग. दधि । ८ ख ग महाराज । ९ ख पूरव । १० ख ग
द्वारामति । ११ ख अचळ । १२ ख ग लखपति । १३ ख ग मारि । १४ ख
ग पछिम । १५ ख. ग. सीहौ । १६ ऐस ।

७२ राजत - शोभायमान होता है । सेन - वरदायीसेन ।

७३ ते - उस । सुतन - पुत्र । सीह - राव सीहा । दन - दान । तीख - विशेष, विशेषता ।
साभाव - स्वभाव । सुपह - राजा । सरीख - नमान । कनवज्जहूत - कनीजसे ।
सीहौ - राव सीहा । सभि - सुमज्जित हो कर ।

७४ पह - राजा । जाणि - मानो । दध - उदधि, समुद्र । छिले - उमड कर, छलक कर ।
पाज - सीमा, मर्यादा । दरस - दर्शन । कजि - लिए । इळ - पृथ्वी, भूमि । पूरवहूता -
पूर्वमे । जात्रा - यात्रा । द्वारावति - द्वाग्का । कीध - कीया ।

७५ अचड - महत्त्वपूर्ण कार्य । मार लीध - मार दिया । ओद्राव - भय, आतंक । सह -
सब ।

जिण लखै अवनि वह^१ थाट जीत ।
 कोड़ेस^२ बगसि^३ बहु^४ लीघ क्रीत ।
 सलिता सिणगारी जे सधीर ।
 वाहर^५ सूरजरी चढे वीर ॥ ७६
 गहकत^६ इसी लाखौ गरूर ।
 सीहौ इज^७ साभै महासूर^८ ।
 जात्रा सभि दारण^९ जिपै^{१०} जग^{११} ।
 आवियौ^{१२} नयर कनवज अभग ॥ ७७
 इम कहै वयण संदेस आय ।
 परदेस दवावौ^{१३} खळ पजाय^{१४} ।
 पर भोम^{१५} दवावौ^{१६} खगां पाण ।
 पर भोम जिकै वाजै पँच्चाण^{१७} ॥ ७८
 पुत्र सीहतणा बळ^{१८} सीह पूर ।
 समसेर पकड़िया^{१९} ऊठिया^{२०} सूर ।

१ ख. वहाँ । ग वहाँ । २ ख कोडेक । २ ख वडासि । ४ ख वीहौ । ग बीहो ।
 ५ ग वाहर । ६ ख ग. गहतंत । ७ ख. हीज । ग. इज । ८ ग महासूरि । ९ ख.
 ग. दारुण । १० ख ग जीपि । ११ ख जंग । ग. भग । १२ ख ग आवीयो ।
 १३ ख दवावौ । ग दवावौ । १४ ख. पजाय । ग. पंजाय । १५ ख ग परभोमि ।
 १६ ख दवावै । ग दवावै । १७ ख. पछाण ग. पचाण । १८ ख ग बळ ।
 १९ ख कडि । ग पकडि । २० ख ग ऊठीया ।

७६. लखै - लाखा फूलाणी । अवनि - पृथ्वी, भूमि । वह - बहुत । थाट - सेना । कोडेस -
 करोडो । बगसि - प्रदान कर, दान दे कर । लीघ - ली । क्रीत - कीर्ति, यश ।
 सलिता - नदी ।

७७ गहकत - गर्वपूर्व बोलता है, जोशपूर्ण बोलता है । इसी - ऐसा । लाखौ - लाखा फूलाणी-
 नामक यादव राजा । गरूर - गर्वीला, अभिमानी । सीहौ - राव सीहा । इज - ही ।
 साभै - सजा देता है, मारता है । जात्रा - यात्रा । दारण - दारुण, भयकर ।
 जिपै - जीतता है । नयर - नगर । कनवज - कनौज । अभग - वीर ।

७८ वयण - वचन । संदेस - स्वदेश । दवावौ - अधिकारभे करो । खळ - शत्रु, दुष्ट ।
 पजाय - पीट कर, वशमे कर । पर - शत्रु । भोम - भूमि, राज्य । खगां - तलवारो ।
 पांण - प्रभाव से । जिकै - जो । पँच्चाण - पचानन, सिंह ।

७९ सीहतणा - राव सीहाके । समसेर - तलवार । सूर - वीर ।

अथ आसथानरी वरणण

थट सभे महावळ^१ आसथान ।
 अज सोनग^२ चडिया भड अमान ॥ ७९
 ऊगमण धराहूँ^३ एम^४ आय ।
 जुघ कीघ आथमण धरा जाय ।
 वाहै^५ खग गोहिल दळ विभाड^६ ।
 इम^७ लीघ^८ खेड़ धर मारवाड^९ ॥ ८०
 विहडिया^{१०} सिवर मगरूर वाधि ।
 ससि नाम आदि अतरिख^{११} समाधि ।
 जुड़ि करै नास^{१२} मैवास जंग ।
 ईडरगढ लीघौ इम अभग ॥ ८१
 ईडरगढ सोनिग कर^{१३} अग्राज^{१४} ।
 रचियौ^{१५} अतुळीवळ^{१६} अडिग राज ।
 अज कमघ द्वारिका दिसी आय ।
 जिण मिळै चावडां मुहरि^{१७} जाय ॥ ८२

१ ख महावल । ग माहावळ । २ ख सोनिग । ग. सोनिग । ३ ग धराहु । ४ ग ऐम ।
 ५ ख वाहे । ६ ख ग विभाडि । ७ ख यम । ग येम । ८ ग. कीघ । ९ ख ग. मार-
 वाडि । १० ख ग विहडीयो । ११ ग अतरिष । १२ ख ग नाम । १३ ख ग करि ।
 १४ ख अग्राहज । १५ ख. रचियौ । ग. रचियो । १६ ख ग अतुळीवल । १७ ख.
 ग मोहीर ।

७९. थट - सेना । अज - राव सीहाके एक पुत्रका नाम । अमान - जवरदस्त, मजवूत, दूढ ।
 ८०. ऊगमण - पूर्व दिशा । धराहूँ - भूमिसे । आथमण - पश्चिम । वाहे - प्रहार कर ।
 खग - तलवार । विभाड - संहार कर । लीघ - ली ।
 ८१. विहडिया - सहार किये, मारे । मगरूर - गर्व । वाधि - विशेष । ससि नाम - यज्ञ ।
 अतरिख - आकाश, आसमान । समाधि - पूर्णता, पूर्ण । जुड़ि - भिड कर । मैवास -
 लूटेरा, डाकू । जग - युद्ध । लीघौ - लिया । अभंग - वीर ।
 ८२. अग्राज - गर्जना । अतुळीवळ - शक्तिशाली । अडिग - अटल । दिसी - तरफ, ओर ।
 मुहरि - अगाडी, प्रथम ।

माणक^१ च्यार^२ अस्व सर^३स मेक^४ ।
उभळी^५ दखिणाव्रत^६-सख एक ।
कटार^७ हीर नग जडित^८ कीध ।
दळनाथ कमधरी नजर दीध ॥ ८३
जळ देवी सप्रसन^९ हुई^{१०} जाम ।
तदि दीध^{११} सुपन अज सुतण ताम ।
वीकमसीहूता^{१२} एक^{१३} वाणि^{१४} ।
जळदेवि उचारै सूर जाणि ॥ ८४
धर दीध तूभनू^{१५} मूभ धाय ।
चावडांतणौ सिर मो चढाय ।
सकतिरौ पाय वर इम सधीर ।
वीकमसी वीकम^{१६} हणै वीर ॥ ८५
सत्रु^{१७} वाढि सोस पूजै सकति^{१८} ।
वाढेल^{१९} कहाया इण^{२०} विगति^{२१} ।
इम लीध मंडळ औखौ उदार ।
धर समंद^{२२} वीटि^{२३} गढ सखोधार ॥ ८६

१ ख माण्यक। ग. मांणक। २ ख ग च्यारि। ३ ख सरि। ग रस। ४ ख अमेक।
५ ख उज्जल। ग उझ्भळ। ६ ग दखिण। ७ ख ग कटार। ८ ख जडित।
९ ग. प्रसन। १० ख. हुइ। ग हूई। ११ ग दीद। १२ ख वीकसी। १३ ख. एम।
ग ऐम। १४ ख ग वाणि। १५ ख. ग. तूनू। १६ ग व्कम। १७ ख ग सत्र।
१८ ख ग सकति। १९ ख वढिल। २० ख तिणि। ग तिण। २१ ख ग
विगति। २२ ख ग समद। २३ ख ग विट।

८३ दखिणाव्रत-सख - एक प्रकारका मागलिक शख विशेष। दीध - दिया, दिये।
८४ सप्रसन - सुप्रसन्न। जाम - जब। तदि - तव। सुपन - स्वप्न। अज - वीर राठीड
आसथानके छोटे भाईका नाम। सुतण - पुत्र। वीकमसीहूता - चावडा राजा भोजके
पुत्र वीकमसी चावडा। सूर - वीर। जाणि - समझ कर, जान कर।
८५ धर - भूमि। तूभनू - तुभको। मूभ - मुभको। धाय - स्मरण कर, पूजा कर, ध्यान
कर। चावडातणौ - चावडोका। मो - मुभको। चढाय - भेंट कर दे, बलि दे दे।
८६ वाढि - काट कर। वाढेल - राठीड वशकी एक शाखा। विगति - वृत्तान्त। मंडळ
औखौ - ओखा मडल, द्वारका मडल। वीटि - घेर कर, आवेष्टित कर। सखोधार -
शखोद्वार, द्वारकाके पासका स्थान।

आए^१ पूरव^२ हूं पछिम एम^३ ।
जग कीध राज धुवराज जेम ।

अथ राव धूहड़री वरणण

असथांन पाट^४ धूहड़ अमान ।
सभि कटक लियौ^५ कनवज सथांन ॥ ८७
रचि समर बधवाहूत^६ रूठ ।
देवि चक्रेशुर^७ लीध दूठ ।
परठि^८ नागाणै सभि परेच ।
निज नाम हुवौ^९ जिण^{१०} नागणेच ॥ ८८
पड़हार^{११} घणा हणि सुजस पांमि ।
कमघज्ज^{१२} लेखवळि अयी कामि ।
रच^{१३} सीची महुरत इसै रैण ।
जिण ब्रधराज^{१४} धर^{१५} अडिग जेण ॥ ८९

१ ग आए। २ ख पूरव। ३ ग. ऐम। ४ ख. ग. पाटि। ५ ख. ग. गयी।
६ ख ग. वधवां। ७ ग चक्रेशुरि। ८ ख ग परठी। ९ ख. हूचो। ग. हुचो।
१० ख जिणि। ११ ख. ग पड़हार। १२ ग. कमघज। १३ ख रत। ग रत्त।
१४ ख ग वंसराज। १५ ग धरि।

८७ कीध - किया। धुवराज - राजा ध्रुव। जेम - जैसे। असथांन - राव आसथान।
पाट - राज्यसिंहासन। धूहड़ - राव आसथानके पुत्र व उत्तराधिकारी राजाका नाम।
अमान - महान, जवरदस्त। सभि - सज कर। कटक - सेना। कनवज - कनीज।
सथांन - स्थान।

८८ रचि - रच कर। समर - युद्ध। बधवाहूत - भाइयोसे। रूठ - नाराज हो कर।
चक्रेशुर - राठीडोकी कुलदेवी चक्रेश्वरी। दूठ - जवरदस्त। परठि - पूजा कर। परेच -
पर्दा। नागणेच - राठीडोकी कुलदेवी चक्रेश्वरीका नाम।
नोट - कहते हैं कि पूजाके समय चक्रेश्वरी देवीने राव धूहड़जीको नागके रूपमें दर्शन
दिये थे।

८९. पड़हार - पड़हार नामक राजपूत वंश। हणि - सहार कर, मार कर। पांमि - प्राप्त
कर। लेखवळि - प्रारब्धवश। अयी कामि - काम आया। महुरत - मुहूर्त। रैण -
भूमि रेणु।

अथ रायपाळवरणण

पह^१ धूहड सभ्रम^२ रायपाळ ।
 भाळाहळ पौरस^३ अगनिभाळ ।
 वीराधिवीर^४ पिततणै वैर ।
 निज दळ सभि घेरे दुसह नैर ॥ ६०
 दमगळ^५ रवि थाभै वाग दीठ ।
 रिम थटां दियौ^६ खग^७ भटा रोठ ।
 जाजुळि^८ पडिहारा^९ कुळ निजौडि^{१०} ।
 डम लियौ^{११} मडोवर गढ अरौडि^{१२} ॥ ६१
 सुत^{१३} रायपाळ कानड^{१४} सधीर^{१५} ।
 धरथभण 'जालण'^{१६} सूर धीर^{१७} ।
 सुत 'जालण' 'छाडौ'^{१८} वस सूर ।
 पाटोधर^{१९} 'तीडौ'^{२०} विरदपूर ॥ ६२

१ ख पहौ । ग पौहौ । २ ख. सभ्रम । ३ ख. ग पौरिस । ४ ख ग. वीराध ।
 ५ ख ग दमगळ । ६ ख ग दीयी । ७ क खट । ८ ख जाजुळ । ९ ख डिहारा ।
 १० ख निजोडि । ग निजोड । ११ ग लीयी । ख. ली । १२ ख अरोडि । ग. अरोड ।
 १३ ग. सुत । १४ ख. ग कान्हड । १५ ख ग सुधीर । १६ ख. ग जाल्हण ।
 १७ ख. धीर । १८ ख. ग. छाडौ । १९ ख. ग पाटोधर । २० ख तीरी ।
 ग. तीडौ ।

६० पह - राजा । सभ्रम - पुत्र । भाळाहळ - देदीप्यमान । पौरस - शक्ति, बल । अगनि -
 अग्नि, आग । भाळ - लपट । वीराधिवीर - महावीर । पिततणै - पिताके । दळ -
 सेना । नैर - नगर ।

६१ दमगळ - युद्ध । रवि - सूर्य । थाभै - रोकता है । वाग - लगाम । दीठ - देखा ।
 रिम - शत्रु । थटा - समूहो, दलो । खग - तलवार । भटा - प्रहारो । रोठ - प्रहार ।
 जाजुळि - जाज्वल्यमान, देदीप्यमान, तेजस्वी । निजौडि - काट कर, मार कर ।
 अरौडि - जवरदस्त ।

६२ कानड - राव रायपालका जेष्ठ पुत्र कनपाल । सधीर - वीर । धरथभण - भूमि-रक्षक,
 भूमिका सहारा, राजा, वीर । जालण - राव कनपालके उत्तराधिकारी राव जालणसी ।
 छाडौ - राव जालणसीका जेष्ठ पुत्र राव छाडा । सूर - सूर्य । पाटोधर - पट्टाधि-
 कारी । तीडौ - राव छाडाका जेष्ठ पुत्र तीडा । विरदपूर - यशस्वी ।

राव सलखारौ वरणण

तीडरौ सळख कुळ चाढ तोइ^१ ।
दन खगा^२ विरद अजवाळ^३ दोइ^४ ।

अथ वीरमरौ वरणण

'वीरम' सळखावत खगां वाग^५ ।
जोइया वाढि^६ बिढियौ^७ ब्रजाग^८ ॥ ६६

अथ राव चूडारौ वरणण

गाथा चौसरा

चविजै 'वीर' पाटि राव चौडौ ।
चहुवै जका करण जस चौडौ ।
चाढण सुजळ^९ उभै कुळ चौडौ ।
चरु सुकाळ विरदा^{१०} धर चौडौ ॥ ६७

१ ख ग तोय । २ ख ग. षाग । ३ ख. अजुवाल । ग. अजुवाल । ४ ख. ग. दोय ।
५ ख. ग वागि । ६ ख ग वाढि । ७ ख वढीयौ । ग बढीयौ । ८ ख ग. ब्रजाभि ।
९ ग सुज । १० ख ग विरद ।

६६. तीडरौ - राव तीडाका । सळख - राव मखला । तोइ - तोय, आव, काति, दीप्ति ।
दन - दान । खगां - तलवारो । अजवाळ - उज्ज्वल कर । दोइ - दोनो । वीरम -
राठोड राव वीरमदेव । सळखावत - राव सलखाका पुत्र । खगा वाग - तलवारें चलने
पर, युद्ध होने पर । जोइया - एक प्राचीन राजपूत वंश जो कालान्तरमे मुसलमान हो
गया था, यौद्धेय वंश । वाढि - काट कर, संहार कर । बिढियौ - कट गया, वीर गति
प्राप्त हुआ । ब्रजाग - वज्राग्नि, वीर, जवरदस्त ।

६७ चविजै - कहा जाता है, कहते हैं । वीर - राठोड राव वीरमदेव । पाटि - राज्य-
सिंहासन पर । राव चौडौ - राव चूडा राठोड । चहुवै - चारो । जकां - दिशाएँ ।
करण - करने वाला, दानवीर राजा कर्ण । चाढण - चढने वाला । सुजळ - काति,
दीप्ति । उभै - दोनो । चरु सुकाळ - वह दातार व उदारमना व्यक्ति जिसके दरवाजे
पर कोई भूखा नहीं जा सकता हो । वह उदार राजा जिसने भूखी प्रजाको भोजन
करानेका प्रण ले रखा हो ।

नोट - राठोड राव चूडाका चरु सुकाळ विरुद था । उसने भूखी प्रजाको भोजन करानेका
प्रण ले रखा था । उसके राज्यमे कोई भूखा नहीं रह सकता था ।

*छन्द^१ जात भपताळ

वरियाम चौड वखाणियै^२ ।
 जगजीत व्रद वर जाणियै^३ ।
 अमुराण हिण जुव अण्णियी^४ ।
 लडि फेर^५ मंडोवर^६ लियी^७ ॥ ९८
 पह^८ खानजादा पाछटे ।
 इळ नागपुर गढ ग्राछटे^९
 जस धरम व्रद^{१०} भुज^{१०} छाजिया^{११} ।
 दनि सात सांसण करि दिया^{१२} ॥ ९९
 प्रथमाद^{१३} सिर^{१४} व्रद^{१५} पावियी^{१६} ।
 कुळ भांण चौड कहावियी^{१७} ।
 चत्रदूण खट पुत्र चांडरै ।
 सभि^{१८} हुवा दनि खग^{१९} जग सिरै ॥ १००

१ ख ग छंद ।

*ख तथा ग प्रतियोमे—छंद कभताळ ।

२ ख. ग वषाणीयै । ३ ख ग जाणीयै ।

*ख. तथा ग. प्रतियोमे यह पक्ति निम्न प्रकार है—

अमुराण जुवि हणि वोपीयो । (ख वोपीयो । ग वोपीयो)

४ ख ग फेरि । ५ क मंडोवरि । ग मंडवरि । ६ ख ग लीयी । ७ ख ग पोही ।
 ८ ख ग ओहटे । ९ ख व्रत । १० ग मुझ । ११ ख ग छाजीया । १२ ख ग.
 दीया । १३ ख ग प्रियमादि । १४ ख ग सिरि । १५ ख व्रत । ग व्रद ।
 १६ ख ग पावीयो । १७ ख ग कहावीयो । १८ ख सुजि । १९ ख ग पगि ।

९८ वरियाम—श्रेष्ठ । चौड—राव चूडा । वखाणियै—यश वर्गान कीजिये । जगजीत—
 संसार विजयी । व्रद—विरुद । अमुराण—यवन, मुसलमान । हिण—मार कर ।

९९ पह—प्रभु, राजा, योद्धा, वीर । खानजादा—मुसलमान । पाछटे—पछाड । इळ—
 पृथ्वी । नागपुर—नागौर । ग्राछटे—पछाडा, जीता । व्रद—विरुद । छाजिया—
 शोभित हुए । दनि—दान । सांसण—राजा द्वारा दानमे दी गई भूमि या ग्राम,
 शानन ।

१०० प्रथमाद—पृथ्वी, भूमि । सिर—पर, ऊपर । पावियी—प्राप्त किया । भांण—सूर्य ।
 चौड—राव चूडा । कहावियी—कहलाया । चत्रदूण—आठ । खट—छ । दनि—
 दान । खग—तलवार । सिरै—श्रेष्ठ ।

दस च्यार रवि दरसाविया^१ ।
कुळ राव सकळ कहाविया^२ ।

अथ राव रणमलरी वरणण

ऽवा^३ माहि रणमल ऐहडौ^४ ।
जगि^५ सुरा सुरिइद^६ जेहडौ ॥ १०१
गहि^७ खाग जिण कणियागरा^८ ।
जुध हणे करि धमजागरा ।
नाडूळ दुरग नमावियौ^९ ।
इम फतै कर धर आवियौ^{*} ॥ १०२
अति भूळ गह मह आवळा ।
विमरीर^{१०} भड रिण वावळा ।
खग धार आछट दे^{११} खुरा ।
धर भोगवता^{१२} मुरधरा^{१३} ॥ १०३
चित^{१४} समद^{१५} थानिक 'चौडरै' ।
कमधज्ज^{१६} राजस इम करै ।

१ ख ग दरसावीया । २ ख ग कहावीया । ३ ख ग वा । ४ ख एहडौ ५ ख ग. जुगि । ६ ख ग सुरीयंद । ७ ख ग ग्रहि । ८ ख ग कणीयागरा । ९ ख ग. नमावीयी ।

*ख. तथा ग. प्रतियोमे यह पक्ति निम्न प्रकार है—
जगि अमल आप जमावीयी ।

१० ग वरवीर । ११ ख ग. है । १२ ख. भोगवत ।

१३ ग प्रतिमे यह पक्ति निम्न प्रकार है—

धर भोग पुहुचत मुरधरा ।

१४ ग. चित । १५ ख कमद । १६ ख ग कमधज ।

१०१ रवि—सूर्य । दरसाविया—दिखाई दिये । ऽवा—उन । माहि—मे । ऐहडौ—
ऐमा । जगि—ससारमे । सुरा—देवताओमे । सुरिइद—सुरेन्द्र, इन्द्र । जेहडौ—जैसा ।

१०२ गहि—घारण कर, पकड कर । कणियागरां—जालोरके शासक सोनगरा चौहाणोसे ।
जुध—योद्धा । हणे—महार किये । धमजागरा—युद्धो । दुरग—दुर्ग, किला ।
आवियौ—आया ।

१०३. भूळ—समूह । गह मह—भीड । आवळा—योद्धा, वीर । विमरीर—भयकर,
जवरदस्त । रिण वावळा—रणोन्मत, युद्धोन्मत । आछट—प्रहार ।

१०४ समद—समुद्र । थानिक—स्थान । राजस—राज्य ।

उण वार धर मेवाडमे ।
 मेरो'र^१ चाचौ^२ क्रोधमे ॥ १०५
 विष^३ वयण क्रोध^४ विचारियों^५ ।
 मिळ^६ राण मोकळ मारियों^७ ।
 थट सहित 'कूभौ'^८ थरहरै ।
 साहाय मामौ सभरै ॥ १०४
 पत्र एम लिख^९ निज पाणियै^{१०} ।
 जळग्राह जम^{११} जिम जाणियै^{१२} ।
 इळ^{१३} हंस प्रभु जिम उच्चरै^{१४} ।
 रणमाल ऊपरि राजरै ॥ १०६
 इण भाति कागद आवियों^{१५} ।
 विधहूंत^{१६} राव वचावियों^{१७} ।
 इम^{१८} सुणे क्रुध भळ ऊपडी ।
 इम लीघ रणमल आखडी ॥ १०७
 मेरो'र चाचौ मारऊ^{१९} ।
 घड सीस पर पग धारऊ^{२०} ।

१ ख मेरैर । ग मेरैर । २ ख ग. चाचै । ३ ख ग विष । ४ ख. ग ध्रोह ।
 ५ ख ग. विचारियों । ६ ख. ग मिलि । ७ ख ग मारियों । ८ ख. ग. कुभौ ।
 ९ ख. ग लिखि । १० ख ग. पाणियै । ११ ख ग गज । १२ ख. ग जांणीयै ।
 १३ ख. ग यळ । १४ ख ऊचरै । ग. उच्चरै । १५ ख. ग आवियों । १६ ख ग
 विधि । १७ ख ग वचावियों । १८ ख ग यम । १९ ख. ग. मारवूं । २० ख ग
 धारवू ।

१०४. वार—समय । धर—भूमि, घरा । मेरो'र चाचौ—ये महाराणा जाखाकी रखल
 स्त्रीके पुत्र थे । इन्होने ही महाराणा मोकलका वध किया था ।

१०५ थट—सेना, दल । थरहरै—कपायमान होता है । साहाय—मदद, सहायता । मामौ—
 मामा । सभरै—याद करता है, स्मरण करता है ।

१०६ पाणियै—हाथसे । जम—जंसे । इळ—पृथ्वी । हंस—राव चूडाकी पुत्री हँसावाई
 जो रणमलकी बहन थी और महाराणा मोकलकी महाराणी थी ।

१०७ इण भांति—इस प्रकार । आवियों—आया । क्रुध भळ—क्रोधकी ज्वाला । ऊपडी—
 चठी । लीघ—ली । आखडी—प्रण, प्रतिज्ञा ।

१०८. घड—विना शिरका शरीर ।

जळ दियू^१ 'मोकळ' जंगमै ।
 सभि खाग बांधू^२ तिण समै^३ ॥ १०८
 इम कहे पौरस^४ ऊफणै^५ ।
 विमरीर^६ भळहळ दळ वणै ।
 चढि तुरग^७ थाट^८ चलाविया^९ ।
 इम^{१०} पही गढ पुर आविया^{११} ॥ १०९
 सीसोद^{१२} कमधां सैफळा ।
 वहि सेल भळहळ बीजळा^{१३} ।
 हुय^{१४} लूथवाथ^{१५} हकारिया^{१६} ।
 कर खजर वाह^{१७} कटारिया^{१८} ॥ ११०
 दईवाण^{१९} उद्दम^{२०} दामणौ^{२१} ।
 इम करे^{२२} जुध अधियामणौ^{२३} ।
 मेरो'र^{२४} चाचौ मारिया^{२५} ।
 सह^{२६} अवर दुसह सघारिया^{२७} ॥ १११

१ ख. ग दीयो । २ ख वाधू । ३ ख समै । ग समै । ४ ख ग पौरस । ५ ग. उफणे । ६ ग बिमरीर । ७ ग तुरग । ८ ग. थाटि । ९ ख चलावीया । १० ख ग. यम । ११ ख. ग आवीया । १२ ख सीतौदि । ग. सीसोद । १३ ग बीजळा । १४ ख ग होय । १५ ख. जूथवाथ । ग लूथवाथ । १६ ख हकारीयो । ग हकारीयां । १७ ख ग घाव । १८ ख ग कटारीया । १९ ख ग दईवाण । २० ख ग ऊदम । २१ ख दासणौ । ग दामणौ । २२ ख ग. करै । २३ ख ग. अधीयामणौ । २४ ख ग मेरोर । २५ ग मारीया । २६ ख. सोहौ । ग सीहा । २७ ख ग सघारीया ।

१०८. समै - समय ।

१०९. पौरस - शक्ति, बल । ऊफणै - उवाल खाता है । विमरीर - भयकर, जवरदस्त । भळहळ - जाज्वल्यमान । दळ - सेना । चढि - चढ कर । तुरग - घोडा । थाट - सेना ।

११०. सीसोद - सीसोदिया वंश या सीसोदिया वंशका व्यक्ति । कमधां - राठोडो । सैफळा - अस्त्रसे शस्त्रत मुसज्जि । सेल - भाला । भळहळ - जाज्वल्यमान, देदीप्यमान । बीजळा - तलवार । लूथवाथ - गुथमगुथ्या । खंजर - शस्त्र विशेष ।

१११. दईवाण - वीर, महान । उद्दम - विना वधनका । दामणौ - वाघने वाला । अधिया-मणौ - भयकर, जवरदस्त । सह - सब । अवर - अन्य । दुसह - शत्रु । सघारिया - सहार किये ।

धड सीस पग धरि खग^१ धरै ।
 कमधज्ज^२ साची पण करै ।
 तन पड़े^३ दुहुवै^४ खळ तठै ।
 जळ दीध मोकलनू^५ जठै ॥ ११२
 पर छती^६ जगि रिण^७ जीपियौ^८ ।
 दससहस^९ रच्छिक^{१०} दीपियौ^{११} ।
 सत्र^{१२} सुता गहि^{१३} सीसोदिया^{१४} ।
 वह^{१५} करै चोरी^{१६} वरछिया^{१७} ॥ ११३
 कळि^{१८} रुधिर केसरिया^{१९} किया^{२०} ।
 वीजळा^{२१} तोरण वादियां^{२२} ।
 जुध जीत^{२३} त्रंबक^{२४} वाजिया^{२५} ।
 पह^{२६} कमध^{२७} वह^{२८} परणाविया^{२९} ॥ ११४

१ ग. षगि । २ ग. कमधज । ३ ख. पड़े । ४ ख ग. दहुवै । ५ ख. मोकाल ।
 ६ ख ग. परछठी । ७ ख ग. रण । ८ ख. ग. जीपीयो । ९ ख. दससहंस । १० ख
 ग. रच्छिक । ११ ख ग. दीपीयो । १२ ग. सत्रु । १३ ख ग. ग्रहि । १४ ख. ग.
 सीसोदीयां । १५ ख ग. वही । १६ क. चोरी । ग. चोरी । १७ ख. वरछिया ।
 ग. वरछीया । १८ ख ग. कल । १९ ख ग. केसरीया । २० ख ग. कीया ।
 २१ ग. वीजला । २२ ख. चादीया । ग. वादीया । २३ ग. जीति । २४ ख. त्रवक ।
 ग. त्रवक । २५ ख ग. वजावीया । २६ ख ग. पहौ । २७ ख. ग. कमध ।
 २८ ख. वही । ग. वही । २९ ख ग. परणावीया ।

११२ कमधज्ज - राठीड । साची - सत्य । पण - प्रण, प्रतिज्ञा । दुहुवै - दोनो । खळ -
 शत्रु । तठै - वहाँ । जठै - जहाँ ।

११३. पर - दूमरोकी । छती - क्षिति, भूमि । जगि - ससारमे । रिण - युद्ध । जीपियौ -
 जीता, विजयी हुआ । दससहस - सीसोदिया वशका विरुद्ध, सीसोदिया वश ।
 रच्छिक - रक्षक । दीपियौ - देदीप्यमान हुआ । सत्र - शत्रु । गहि - पकड़ कर ।
 नोट - राव रणमलजीने मेरा और चाचाको मार कर विपक्षी सीसोदिया वशके
 क्षत्रियोकी कन्याओके साथ अपने साथके राठीड वीरोका विवाह कर दिया ।
 चोरी - विवाह मडप, विवाह मडपका यज्ञ कुण्ड । वरछिया - एक प्रकारके भाले
 विशेष ।

११४ कळि - युद्ध । रुधिर - रक्त, खून । वीजळां - तलवारो । त्रवक - नगाडा । पह -
 योद्धा, वीर । परणाविया - विवाह किये ।

महि कुभराज जमावियौ^१ ।

यम एम चित्रगढ आवियौ^२ ॥ ११५

कवित्त छप्पे

कुभराण^३ बाळक्क^४, जुगत^५ राज ऊ^६ न जाणै ।

राव जतन कजि रहे, रछिक^७ चीतौड^८ घराणै ।

मारि खळा 'रिणमाल', एक^९ हुकमह^{१०} धर आणी

सीह गाय इक^{११} साथ^{१२}, पियै^{१३} इक ठाहर पाणी ।

इम देखि अमल जळिया^{१४} असह, धरा लियै^{१५} इम धारियौ^{१६} ।

जुध करण न ह्वै आसग जदि^{१७}, विग्रह चूक विचारियौ^{१८} ॥ ११६

भय^{१९} दिखाय कूभेण, जीव धर ध्रोह जणाये ।

करण चूक कमधज्ज^{२०}, ठीक मसलति^{२१} ठहराये ।

निद्रा वसि^{२२} पोह^{२३} निरखि, पिलग^{२४} बध^{२५} कसे अपारा ।

जडी विखम जमदाढ, एक^{२६} साथे ज अठारा ।

१ ख ग जमावियौ । २ ख ग आवियौ । ३ ख कुभराव । ४ ग बालक । ५ ग जुगति । ६ ख ग री । ७ ग रछक । ८ ख. चित्तौड । ग चीतौड । ९ ग एक । १० ग हुकम । ११ ग. एक । १२ ग साथि । १३ ख ग पीयै । १४ ख जलीया । ग जलीयां । १५ ख ग लीयै । १६ ख ग धारियौ । १७ ग जरै । १८ ग. विचारियौ । १९ ख भव । ग भवि । २० ख ग कमधज । २१ ख ग. मसलत । २२ ग वसि । २३ ख ग पौहौ । २४ ख ग पलग । २५ ख वधक । २६ ग ऐक ।

११५ महि - पृथ्वी । चित्रगढ - चित्तौड ।

११६ जतन - रक्षा । कजि - लिए, निमित्त । रछिक - रक्षक । चीतौड - चित्तौडके अधिपति । घराणै - वशके । ठाहर - स्थान, जगह । अमल - अधिकार, शासन, हुकूमत । जळिया - जल गये । असह - शत्रु । आसग - शक्ति, साहस । जदि - जब । विग्रह - युद्ध । चूक - धोखा, कपट, षडयंत्र ।

११७ कूभेण - महाराणा कुभा । ध्रोह - द्रोह । मसलति - ऐसी गुप्त युक्ति या मंत्रणा जो सहसा न जानी जा सके, मसलहत । ठहराये - स्थिर की । निद्रा वसि - नीदके वशीभूत । पोह - राजा, वीर । निरखि - देख कर । पिलग - पर्यंक, पलग । जडी - प्रहार की । विखम - भयकर, विषम । जमदाढ - एक प्रकारका कटार विशेष ।

‘रिणमाल’, ऊठि नरसिंघ रुख, पय ग्रहि लात^१ पछाडिया^२ ।
लोहाळ अठारहि^३ पिड लगा, पिसण^४ अठारह पाडिया^५ ॥ ११७
अत^६ इम करि ‘रिणमाल’^७, मिळे सग लोक मभारा ।
सुणे चूक नवसहस, जोध आवियौ^८ जिवारा^९ ।
धरा करे^{१०} धौखळा, करे दमगळा कराळा ।
वैर^{११} पिता^{१२} वीजळा^{१३}, हणे खळ हणे^{१४} हठाळां ।
राणरा थाट रिणमालरै, भिड^{१५} बहु^{१६} वार भजाविया^{१७} ।
कूभेण राण भागौ^{१८} कळह, पीछोले^{१९} असि पाविया^{२०} ॥ ११८

अथ राव जोधारौ वरणण

धरा सहरि^{२१} ऊधमे, जोध खिजिया^{२२} जमजाळा ।
कूभराण^{२३} औदके^{२४}, वीच^{२५} फेरै^{२६} विसटाळा ।

१ ख ग सिया । २ ख ग पछडोया । ३ ख ग अठारह । ४ ख ग प्रिसण ।
५ ख ग पाडोया । ६ ख. अत । ७ ख रणमाल । ८ ख. ग आवीयौ ।
९ ख ग. जियारां । १० ख गा काजि । ११ ख ग वैरि । १२ ग पिपीता ।
१३ ग वीभळां । १४ ख हला । ग दळा । १५ ग भिडि । १६ ख वही । ग.
वही । १७ ख ग भजावीया । १८ ख ग भगौ । १९ ग पीछोले । २० ख. ग
पावीया । २१ ख ग सहर । २२ ख विजियौ । ग विजियौ । २३ ग कुभराण ।
२४ ख औदके । २५ ख ग वीचि । २६ ग फेरे ।

११७ ऊठि — उठ कर । नरसिंघ — नृसिंहावतार । रुख — प्रकार, तुल्य । पय — पैर, चरण ।
लात — पदाघात । पछाडिया — प्रहार किये, गिराये गये । लोहाळ — शस्त्र, तलवार,
शस्त्र प्रहारोसे युक्त । पिसण — शत्रु । पाडिया — गिरा दिये, मार दिये ।

११८ अत — मृत्यु, मौत । सग — स्वर्ग । मभारा — मध्य, मे । नवसहस — राठीड ।
जोध — राव जोधा । जिवारा — जिस समय । धौखळां — युद्धो । दमगळ — युद्ध,
उत्पात । कराळां — भयकर । वीजळा — तलवारो । हणे — सहार कर, मार कर ।
खळ — शत्रु । हठाळा — हठी, वीर । राण — महाराणा । थाट — सेना । भिड —
युद्ध कर । भजाविया — भगा दिये । कूभेण राण — महाराणा कुभा । भागौ — भग
गया । कळह — युद्ध । पीछोले — एक भीलका नाम जिस पर उदयपुर नगर बसा
हुआ है । असि — घोडा ।

११९ धरा — पृथ्वी । सहरि — शहर, नगर । ऊधमे — नाश कर । जोध — योद्धा, वीर,
राव जोधा । खिजिया — कोप किया, क्रुद्ध हुए । जमजाळा — यमराज तुल्य, यम-
राज । कूभराण — महाराणा कुभा । औदके — भयभीत हो गया । वीच — मध्य ।
विसटाळा — वीच-बचाव करने वाले, मध्यस्थ ।

गज^१ भिड़ज्ज पड़गनां, पेस धन करै^२ अपारा ।
 आडै-वळै अभंग, सीम कीधी सिरदारा ।
 महि भरे डड बूदी^३ मऊ, दळ तपतेज दुभाळरै ।
 सांसण पसाव कीधा सतरि^४, राव जोध रिणमालरै* ॥ ११९
 सूत दियण^५ नग^६सिरै मिळै जोधौ भड मेळा ।
 सुभ मुहरत^७ सुभ सगुन^८, वणै^९ चित्र^{१०}सू^{११} सुभ वेळा ।
 सास्त्र^{१२} सिलप सजोय, सिलावट्टा^{१३} स सधीरा^{१४} ।
 सीस^{१५} असम समेल, नीम परठी^{१६} मभि नीरा ।
 पनरसै^{१७} समत(१५१५)पनरोतडै^{१८}, सुदी^{१९} जेठ ग्यारस^{२०} सनढ ।
 अवगाढ जोध रचियौ^{२१} इसौ, गाढपूर जोधाण गढ ॥ १२०
 नग सीसा गळ^{२२} नीम, गरक असमां चूनागळ ।
 वीभाभळ सिर वणे, विखम^{२३} भुरजां वीजाभळ^{२४} ।

१ ख ग गज्ज । २ ख. ग करे । ३ ख बूदी । ४ ग सितर ।

*यह पक्ति ख प्रतिमे नही है ।

० यह अश ख प्रतिमे नही है ।

५ ख ग. दीयण । ६ ग महुरत । ७ ग सुगन । ८ ग वणे । ९ ख ग. चित ।
 १० ख ग सुध । ११ ख ग सास्त्र । १२ ख मिलावटा । ग सिलपचढा । १३ ख.
 ससधीरा । ग समधीरां । १४ ख ग सीसा । १५ ख ग परठि । १६ ख ग
 पनरसै । १७ ख ग पनरोतरै । १८ ख सुद्धि । ग सुदि । १९ ख ग ग्यारसि । २० ख.
 ग रचियौ । २१ ख नग । २२ ग विषम । २३ ख वीभाजल । ग वीभाभळ ।

११९ गज - हाथी । भिड़ज्ज - घोडा । पड़गना - तहसील । पेस - भेंट, नजर । अपारां -
 अपार, बहुत । आडै-वळै - अरावली पर्वत । अभग - वीर । सीम - सीमा, हद ।
 कीधी - की । महि - पृथ्वी । डड - दण्ड । सांसण पसाव - दानमे जागीरके गाँव
 दिये ।

१२०. सास्त्र सिलप - शिल्प-शास्त्र । सजोय - अलकृत करके, सज्जित कर । सिलावट्टा -
 शिल्पकारो । स सधीरा - दृढ । सीस - शीशा नामक धातु । समेल - मिला
 कर । नीम - नीव । परठी - रखी, लगाई । मभि - मध्य, मे । पनरोतडै -
 पन्द्रहकी सख्याका वर्ष । सनढ - दृढ । अवगाढ - वीर, वहादुर । जोध - राव
 जोधा । गाढपूर - मजबूत, सुदृढ । जोधाण - जोधपुर ।

१२१. नग - पर्वत । सीसा - शीशा नामक धातु । गळ - गला कर । गरक - परिपूर्ण,
 पूरा । असमा - बहुत । चूनागळ - गला हुआ चूना । वीभाभळ - विध्याचल पर्वत ।
 भुरजा - बुर्जो । वीजाभळ - विध्याचल पर्वत ।

कोट^१ सेस आकार, वणे कागुरा चहूवळ^२ ।
 वडी^३ अवारति^४ वणे, जोख^५ घण नौख छिल्ले जळ ।
 सब^६ लोक वसै^७ धनवत सुपह^८, सोहै रूप सुघाटरौ ।
 गहतत्त विकट जोधाण^९ गढ, वणे मुकट वैराटरौ^{१०} ॥ १२१

अथ राव सूरजरौ वरणण

जोधपाट^{११} जगजीत, सूर दाता राव^{१२} सूजौ ।
 जिण प्रताप जोवता, देसपति जोड न दूजौ ।
 जेण वार^{१३} इक जवन, अयौ अयुता^{१४} असवारा ।
 सातवीस तीजणी, जेणि ग्रहि^{१५} लीधि^{१६} जियारा ।
 जिणहूंत राव सूजौ जुडे, भाजे^{१७} खळ दळ^{१८} भारियौ^{१९} ।
 सातसै भडां मुगला सहित, मुगल घडूकौ मारियौ^{२०} ॥ १२२

१ ख कोटि । २ ख चौहूवल । ३ ख वणडी । ४ ख अमारत । ५ ख ग. जौष ।
 ६ ख श्रव । श्रव । ७ ग वसे । ८ ख सुपौहो । ग सुपौह । ९ ख जोधान । १० ख
 वैरागरी । ११ ग जोधपाटि । १२ क रव । १३ ग. जेणवा । १४ ख ग. अयता ।
 १५ ख ग्रह । १६ ख ग लीध । १७ क भाजे । १८ ग. वळ । १९ ख ग
 भारीयौ । २० ख ग मारीयौ ।

१२१ चहूवळ - चारो ओर । अवारति - इमारत, भवन । जोख - आनन्द, हर्ष । नौख -
 श्रेष्ठ । सब - सब । धनवत - धनाढ्य । सुपह - राजा । सोहै - शोभा देता है ।
 सुघाटरौ - सुन्दरताका । गहतत्त - गहरा, गभीर ।

१२२ जोधपाट - राव जोधाका राज्यसिंहासन । जगजीत - ससार-विजयी । सूर - वीर ।
 दाता - दातार । प्रताप - ऐश्वर्य । देसपति - राजा । जोड - वरावर । दूजौ -
 दूमरा । जेण वार - जिस समय । अयौ - आया । अयुता - दस हजार । सातवीस -
 एक सौ चालीस । तीजणी - युवती, सौभाग्यवती युवतियाँ । जेणि - जिस । ग्रहि -
 पकड़ कर । लीधि - ली । जियारा - जव । जिणहूत - जिससे । जुडे - भिड़ कर,
 युद्ध कर । भाजे - तोड़ कर । खळ - शत्रु । दळ - सेना । भारियौ - भारी, विशाल ।
 भडा - योद्धाओ । मुगल - मुसलमान, यवन । घडूकौ - वि स १५५८ चंद्र कृष्ण
 प्रतिपदा शुक्रवार तारीख २५ फरवरी सन् १४६२ मत्तान्तरसे वि स १५५८ (चैत्रादि
 १५५६) चंद्र सुदि ३ (ई स १४६२ ता० १ मार्च) को मारवाड राज्यके गाव
 कोमानाकी बहुत-मी हिन्दू तीजणिएँ तालाव पर गौरी पूजन करनेको गई थी । मौका
 पा कर अजमेरका सूवेदार मल्लूखा उनमेसे १४१ तीजणियोको पकड़ कर ले गया ।
 जोधपुरके तत्कालीन नरेश राव सातलजीको इसका सदेश मिला । सदेश प्राप्त होते ही
 राव सातलजीने यवनोका त्वरित पीछा किया । उन्होंने उन १४१ तीजणियोको
 यवनोके बन्धनमे वापिस छुड़ा लिया और लौटते समय अपने साथ मल्लूखाकी रूपवती
 पुत्री और २ अमीरगदियोको भी पकड़ कर ले आये । इसके लिये राव सातलजीको
 सूवेदारके साथ भयकर युद्ध करना पडा । इस युद्धमे सूवेदार मल्लूखा तथा उसका साथी
 घुडमेवा, जो सिवका एक अमीर था, रावजीके मेनापति सारंगदेवजी खीचीके तीरोसे
 छिद्र कर मारा गया । अथकर्ता कविराजा करणीदानजीने उपर्युक्त घटनाको राव
 सूजाके राज्यकालमे लिखी है परन्तु नवीन शोधसे यह घटना राव सातलजीके राज्य-
 कालकी मानी गई है । देखो - महामहोपाध्याय डॉ० गौरीशंकर हीराचंद
 श्रीभा वृत्त जोधपुर राज्यका इतिहास, प्रथम भाग, पृ० २६२ ।

करे फतै कमधज्ज^१, करे बह^२ रीभ कवेसां ।
 करि गुण परख सकाज, देसदेसां परदेसां ।
 मौज कड़ा मोतियां^३, कनक नग जडत^४ कटारा ।
 अणपारा^५ सिरपाव, पमग वगसिया^६ अपारां ।
 हमाला दरब थेला^७ वरन^८, उरड वरन^९ खट आविया^{१०} ।
 जो धरै^{११} राव सूजै जदिन, सांसण तीन समापिया^{१२} ॥ १२३

कुवर वाघै

सूजा पाट^{१३} सकाज, वाघ कमधज वरदाई ।
 कर^{१४} दन खग बह^{१५} कवर^{१६} पिता पहिला^{१७} अत^{१८} पाई ।

राव गांगारौ वरणण

वाघ सुतण गगवीर, खाग दन प्रथी^{१९} वखाणै ।
 वैठौ^{२०} पाट^{२१} बहाळ^{२२}, दुभल थानिक दादाणै ।

१ ख ग कमधज । २ ख वहाँ । ग. वहाँ । ३ ख ग मोतीया । ४ ख ग जड़ित ।
 ५ ख. अणधारा । ६ ख वगसीय । ग वगसीया । ७ ख ग थेला । ८ ख. ग
 हरन । ९ ग वरन । १० ख. ग आपीया । ११ ख धारै । १२ ख समीपीया ।
 ग समापीया । १३ ख ग पाटि । १४ ख. ग. करि । १५ ख वहाँ । ग वहाँ ।
 १६ ख ग. कवर । १७ ग पहला । १८ ख ग मृत । १९ ख ग. प्रिथी । २० ख
 वैठौ । २१ ख ग पाटि । २२ ख वाहाल । ग गहाल ।

१२३ वह - बहुत । रीभ - दान । कवेसां - कवीशो, कवियो । परख - परीक्षा । मौज -
 दान । कनक - स्वर्ण, सोना । जडत - जटित । अणपारा - अपार, बहुत । पमग -
 घोडा । वगसिया - वखशीश किये अपारा - अपार, असीम । हमालां - बोभा
 ढोने वालो, भारवाहको, हम्मालो । दरब - द्रव्य, घन-दौलत । उरड - आगे वढ कर ।
 वरन खट = पटवर्ण - याचक वृत्ति करने वाली राजस्थानकी ६ जातियाँ । जदिन -
 जिम दिन । सासण - राजाकी दान की हुई भूमि या दान किया हुआ गांव ।
 समापिया - समर्पण किये, दिये ।

१२४ सूजा - राव सूजा । पाट - राज्यसिंहासन । वाघ - कुमार वाघा । कमधज -
 राठौडा । वरदाई - यशस्वी । दन - दान । खग - तलवार । बह - बहुत ।
 कवर - कुमार । अत - मृत्यु, मौत । पाई - प्राप्त की । सुतण - सुत, पुत्र ।
 गगवीर - राव गागा । खाग - तलवार । प्रथी - पृथ्वी, भूमि, ससार । वखाणै -
 प्रशसा करते है । बंहाळ = वाहाळ - आजानवाह, शक्तिशाली । दुभल - दो तलवार
 एक साथ रखने वाला, वीर । थानिक - स्थान । दादाणै - पिताके ननिहाल या
 पिताके पूर्वजोका निवास-स्थान ।

वळवळा अजस सयणां वधे, भडां खळां छक भाजियौ^१ ।
सुत वाघतणौ^२ उछरंग सभे^३, गगराव अग्राजियौ ॥ १२४

उरड जोस ऊफणै^४, वणै गहमह भड वका ।
तेज घणै खगतणै^५, सत्रा सिर^६ हणै निसंकां ।
भट चारण गुण भणै, तिका रीभणौ^७ सतीखौ ।
माया ऊधामणै, सघण वरसणै सरीखौ ।
रमणा^८ सिकार गागौ^९ रमै, तदि सरणै खळ गिर तणै ।
तिलमात^{१०} गिणै मरणै^{११} तपै, इसै तेज अधियामणै^{१२} ॥ १२५

ईख राजछक इसौ, अडर^{१३} गांगौ वाघावत ।
काकै सभिया^{१४} कटक, सूर सेखै सूजावत ।

१ ख ग भाजीयौ । २ ख ग वाघ (वाघ, वाघ) । ३ ख ग सभि । ४ ख. उफणै ।
५ ख. तणै । ६ ख ग रिण । ७ ख ग रीभणै । ८ ख. रमणै । ग रणमं ।
९ ख ग गागी । १० ख. तिणमात । ग भिलमात । ११ ग सरणै । १२ ख.
ग अधीयामणै । १३ ग अरड । १४ ख ग. सभिया ।

१२४ वळवळा - चारो ओर । अजस - गर्व, गौरव । सयणां - सज्जनो मित्रो । वधे -
वधा वृद्धि हृत्वा । भडां - योद्धाओ । खळां - शत्रुओ । छक - जोश गर्व । भाजियौ -
मिट गया । सुत - पुत्र । वाघतणौ - वाघाका कुमार । उछरंग - उत्सव, हर्ष ।
गगराव - राव गागा । अग्राजियौ - गर्जना की ।

१२५. उरड - आवेग । ऊफणै - उमडता है, वढता है । गहमह - समूह, भीड । भड -
योद्धा । वकां - वाकुरो, वीरो । खगतणै - तलवारके । सत्रा - शत्रुओ । हणै -
प्रहार करते हैं । गुण - यश, कीर्ति । भणै - वर्णन करते हैं । तिकां - उन । रीभणौ -
प्रसन्न होने वाला, खुश होने वाला । सतीखौ - विशेष, अधिक । माया - धन-दौलत ।
ऊधामणै - दानादिमे व्यय करता है । सघण - घना । वरसणै - वर्षा । सरीखौ -
समान । रमणां - शिकार खेलनेका मैदान । रमै - शिकार करता है । तदि - तब ।
सरणै - शरणमे । खळ - शत्रु । गिर तणै - गिरिके, पर्वतके । तिलमात - किंचित्,
तिनमात्र । गिणै - समझना है । अधियामणै - भयकर, जबरदस्त ।

१२६ ईख - देख कर । राजछक - राज्यवर्भव । इसौ - ऐसा । सभिया - सज्जित किये ।
कटक - सेना, दल । सूर - वीर । सेखै - राव गांगाका चाचा शेखा ।

नाग दुरग पति जवन, साह दौलत दळ सब्बळ^१ ।
 सेखै सुज^३ पतिसाह, मदित^३ आणियौ^५ महाबळ^५ ।
 सभि राव गंग दळबळ^६ सकळ, दुभल तेज दरसावियौ^७ ।
 अरुणमै वदन छिबतै^८ उरस, इण विध^९ सामौ^{१०} आवियौ ॥ १२६
 विढे एम वेखियौ^{११}, इता एकण^{१२} घरवाळा ।
 वड वड भडा विचारि, वीच^{१३} फेरै विसटाळा ।
 'सेख' तजौ दळ समर, रेण^{१४} वट^{१५} कर्हिक^{१६} रखावौ^{१७} ।
 तजे^{१८} विद्ध^{१९} कुळतणौ, मिळौ चित खत^{२०} मिटावौ ।
 मेलिया^{२१} लोह सहदा^{२२} मुहा, कटै दहू दळ धर कजै ।
 कुळ विहडि^{२३} राज लीजै तिकौ^{२४}, एह^{२५} धरम नह ऊपजै^{२६} ॥ १२७

१ ख. सबल । ग सबल । २ ख ग सुजि । ३ ख ग मदति । ४ ख ग आणियौ ।
 ५ ख. महावल । ६ ख दळबळ । ७ ख ग दरसावियौ । ८ ख ग छिबतौ ।
 ९ ख ग विधि । १० ख साम्हौ आवियौ । ११ ख ग. वेखियौ । १२ ग ऐकण ।
 १३ ख ग वीचि । १४ ख ग रेण । १५ ग वट । १६ ख. ग कर्हिक । १७ ग
 रखावौ । १८ ख ग तजौ । १९ ख ग वेध । २० ख ग घाति । २१ ख. मिलिया ।
 ग. मेलिया । २२ ख सहदा । ग. सहदा । २३ ख विहड । २४ ख. तिकौ ।
 २५ ग ऐह । २६ ख. उपजै ।

१२६ नाग—नागौर । दुरग—दुर्ग, किला । जवन—यवन, मुसलमान ।

नोट—वि स १५८५ (ई० सन् १५२६)में राव गागाके चाचा शेखाने नागौरके शासक खाजादा दौलतखाकी मददसे जोधपुर पर चढाई की थी । इस चढाईमें शेखा मारा गया और दौलतखा युद्ध-भूमिको छोड़ कर भग गया ।

देखो—पं. विश्वेश्वरनाथ रेड्ढ कृत, मारवाडका इतिहास, प्रथम भाग, पृ १२३ ।

साह दौलत—दौलतखा, नागौरका शासक । दळ—सेना । सब्बळ—शक्तिशाली ।
 सुजि—वह । पतिसाह—वादशाह । मदति—सहायता । आणियौ—लाया । सभि—
 सज्जित कर के । राव गंग—राव गागा । दुभल—वीर, योद्धा । दरसावियौ—
 दिखाया । अरुणमै—लाल । वदन—मुख । छिबतै—स्पर्श करता हुआ । उरस—
 आकाश । इण विध—इस प्रकार । सामौ—सम्मुख, सामने । आवियौ—आया ।

१२७. विढे—भिड करके, युद्ध कर वीर गति प्राप्त हो कर । वेखियौ—देखा । एकण—एक ।
 वड वट—वडा-वडा । भडां—योद्धाओ । वीच—मध्य । विसटाळा—वीच-वचाव
 करने या कराने वाले, मध्यस्थ । सेख—राव सूजाका द्वितीय पुत्र शेखा । दळ—
 सेना । समर—युद्ध । रेण—भूमि । वट—हिस्सा । कर्हिक—कुछ । विद्ध—
 कलह । कुळतणौ—वशका । खत—भेद, भिन्नता, विरोध । धर—भूमि । कजै—
 लिये । विहडि—नाश कर । तिकौ—वह । एह—यह । धरम—कर्तव्य ।

सेखै इम^१ साभळे^२, धुरा लिखियौ^३ कमधज्जां^४ ।
 कुळ धरि^५ कारिण कटै, सदा कुळ धरम सकाजा ।
 जोवै ज्या^६ धर राज, मुवा सुरराज मिळै मन ।
 किसन थका हिज^७ कियौ^८, जूभ^९ जुजथिर दरजोधन* ।
 कथ एम^{१०} हरौ ऊहड^{११} कहै, इळ वाटा नह आवसी ।
 जुध करे^{१२} फतै जावसि^{१३} जिकौ, इळ सारी अपणावसी^{१४} ॥ १२८

१ ग यम । २ ग साभलै । ३ ख ग लिषीयो । ४ ख कमधजां । ग कमधुजां ।
 ५ ख धार । ग धर । ६ ख ग जा । ७ ख ग इज । ८ ग कीयो । ९ ख
 जुज । ग जुघ ।

*ख प्रतिके अनुसार—

किसन थका इज कीयो, जुजस धरहर दुरजोधन ।

ग प्रतिके अनुमार—

किसन थका इज कीयो, जुघस धरहर दुरजोधन ।

१० ग ऐम । ११ ग ऊजड । १२ ग करै । १३ ग जीसी ।

१४ ख प्रतिमे यह पक्ति नही है ।

१२८ सेखै - शेखाने । साभळे - सुन कर । धुरां - प्रथम, पहिले । कमधज्जा - राठीडों ।
 धरि कारिण - धरतीके लिये । सकाजां - लिए । ज्यां - जिन । धर - भूमि ।
 सुरराज - स्वर्ग । किसन - कृष्ण । थका - होते हुए । हिज - निश्चयार्थक अव्यय,
 ही । जूभ - युद्ध । जुजथिर - युधिष्ठिर । दरजोधन - दुर्योधन । कथ - वृत्तान्त ।
 हरौ ऊहड - ऊहड हरदाम ।

नोट - स्यातोमे लिखा है कि महाराज कुमार वाघाजीके देहावसानके समय उनके
 छोटे भाई शेखाने अपना हक छोड कर अपने भतीजे, वाघाजीके जेठ पुत्र वीरमको
 राज्यका उत्तराधिकारी बनानेकी अनुमति दी थी परन्तु वीरमकी अनुपस्थितिमे सर-
 दारोने गागाजीको राज्यसिंहासन पर बैठा दिया । इसीसे शेखा राव गागाजीसे अप्रसन्न
 था । हमरा वीरमके पक्ष वालोको यदा-कदा अवसर मिलता था, तब-तब वे उसे राव
 गागाजीके विरुद्ध उबसाते थे । किमी किसी स्यातमे मिरोहीके राव अखैरोजकी शिकायत
 पर शेखाकी जागीर पीपाडके एक गाँवको ज्वल करने पर और किसीमे ऊहडहरदासके
 उकसानेके कारण इम युद्धका होना लिखा गया है । यहा सूरजप्रकास भी ऊहड हर-
 दासको उकसानेका उल्लेख करता है ।

देखो—प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत मारवाडका इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ११३ ।

इळ - पृथ्वी । वांटा - विभागो, हिस्सो । नह आवसी - नही आवेगी । सारी -
 समस्त, सब । अपणावमी - अपने अधिकारमे करेगे ।

इम सुणि चढिया^१ उभै, कटक कमधज कळिचाळा ।
 नित असपति नागौर^२, दुभल चढिया रवदाळा ।
 दगै^३ तोप^४ बळ^५ दहू^६, उडै गोळा भळ आतस ।
 धोम^७ वाण^८ धडहडै, पडै सायक भड^९ पावस ।
 रथ ताम^{१०} थाम^{११} देखत^{१२} रवि, उडै^{१३} रीठ तरवारिया^{१४} ।
 घण करै पार जरदा घटा, करदा छुरा कटारिया^{१५} ॥ १२६
 ऊला केक^{१६} अपार, पडै^{१७} पल्ला^{१८} अणपारा ।
 धारा लडिया^{१९} धाप^{२०}, करद खजरा कटारा ।
 मडळावति^{२१} लडि अमर, चौथ^{२२} वाघरौ खगा चडि^{२३} ।
 सुत मोकल^{२४} हरदास^{२५}, अधिक लड^{२६} पडियौ^{२७} ऊहडि^{२८} ।

१ ख. ग चढीया । २ ग. नागौर । ३ ख दगे । ४ ग तौ । ५ ख वळ । ग प्रबळ ।
 ६ ग दहु । ७ ग धोम । ८ ख वाण । ९ ख भल । १० ख ग. थाभि । ११ ख.
 ग. ताम । १२ ग देषत । १३ ख उडे । १४ ख ग. तरवारीया । १५ ख. ग.
 कटारीया । १६ ग कैक । १७ ख पडे । १८ ख ग पंला । १९ ग लडियां ।
 २० ख ग धापि । २१ ख मडिलावत । ग मडलावत । २२ ख. चौहथ । ग चौहथ ।
 २३ ख. ग चडि । २४ ख मोकल । २५ ख दरदास । २६ ख ग. लडि । २७ ख.
 ग. पडियौ । २८ ख ग. ऊहड ।

१२६ इम - इस प्रकार । उभै - दोनो । कटक - सेना, दल । कळिचाळा - योद्धा वीर ।
 नित - नित्य । असपति - अश्वपति, वादशाह । दुभल - वीर । रवदाळा - यवन,
 म्लेच्छ । दगै - तोप दागते हैं । बळ - सेना, फौज, तरफ, ओर । दहू - दोनो ।
 भळ - आगकी लपट । आतस - आग, अग्नि । धोम वाण - तोप । धडहडै -
 गुजायमान होती है, आवाज करती है । सायक - तीर, बाण । भड - अविरोध वर्षा ।
 पावस - वर्षा ऋतु । ताम - उस समय । थाम - रोक कर । रवि - सूर्य । रीठ -
 प्रहार, प्रहारकी ध्वनि । तरवारिया - तलवारें । जरदा - कचो । घटां - शरीर ।
 करदा - एक प्रकारका शस्त्र, हाथ ।

१३० ऊला - इस ओरके । केक - कई । पडै - गिरते हैं । पल्ला - उस ओरके । अणपारा -
 अपार, असीम । धारा - तलवारो । पडियौ - वीरगति प्राप्त हुआ । ऊहडि -
 राठौडोकी ऊहड शाखाका व्यक्ति हरदास ।

ववहाय घणी घण खग वही^१, सेखराव पडियौ^२ समर ।
 दौलत्तिड पाव तजि गौ^४ जदिन^५, गगाराव धरियौ^६ गुमर^७ ॥ १३०
 इम जीपे आवियौ^८, 'गग' वाजता नगारां ।
 सुजस वधे धर सिरै, उछक^९ छक वधे अपारा ।
 विहद लीध जिण वार, रैण^{१०} प्रथ^{११} भूप जही^{१२} रस ।
 जस ध्रम कजि जगजीत, दिया^{१३} तवपत्र^{१४} दवादस ।
 करि राज एम^{१५} कमधांतिलक, वसे अमरपुर क्रीतवरि^{१६} ।
 तिण पाट^{१७} माल बैठी^{१८} तखत, धर मुरधर सिर^{१९} छत्र धरि^{२०} ॥ १३१

राव मालदेवरौ वरणण

'माल' चढै दळ मेलि, घुरे नौवति घण घुम्मर ।
 इक लख असी हजार, भिडज असवार^{२१} भयकर ।
 सीधुर दळवळ^{२२} सवळ^{२३}, पूर पैदल अणपारां ।
 नदि सर दूटै^{२४} निवाणा^{२५}, भाण ढके रज भारां ।

१ ख. वहि । ग बहि । २ ख ग पडीयौ । ३ ख ग दौलत । ४ ख ग गौ ।
 ५ ख जदित । ६ ख ग धरीयौ । ७ ग. गुंमर । ८ ख ग आवीयौ । ९ ख ग
 उछव । १० ख ग रेण । ११ ख ग प्रिय । १२ ख जहींरज । ग जहारस ।
 १३ ख. ग दीया । १४ ख त्रवपत्र । १५ ख ऐम । १६ ख ग क्रीतिवर । १७ ख.
 ग पाटि । १८ ख बैठी । १९ ग सिव । २० ख ग छत्रधर । २१ ख सवार ।
 २२ ख दळवळ । २३ ख सवळ । २४ ख तुटै २५ ख निवाण ।

१३० ववहाय — चला कर, प्रहार कर । घण — प्रधिक । समर — युद्ध । दौलति — खानजादा
 दौलतखा । तजि — छोड कर । गौ — गया । जदिन — जिम दिन । धरियौ — धारण
 किया । गुमर — गर्व ।

१३१ जीपे — जीत कर । आवीयौ — आया । गग — राव गागा । सुजस — सुयश । उछक —
 उत्साह । छक — जोश । वधे — वधा । अपारा — अपार, असीम । विहद — अपार ।
 लीध — ली । जिण वार — जिस समय । रैण — भूमि । प्रथ भूप — राजा पृथु । ध्रम —
 धर्म । कजि — लिए । तवपत्र — ताम्र-पत्र । दवादस — द्वादश, बारह ।

१३२ माल — राव मालदेव । घुरे — प्रतिध्वनित हुए । घुम्मर — (गर्व ?) । इक —
 एक । लख — लाख । भिडज — घोडा । सीधुर — हाथी । पूर — पूर्ण ।
 अणपारा — अपार । नदि — नदी । सर — तालाव । निवाणां — जलाशय । भाण —
 सूर्य । ढके — आच्छादित हो गया । रज — धूलि । भारा — समूह ।

जगहत्थ जगत सिर जळहळै, दस द्रिगपाळ दहक्कवै ।
महि माल^१ छहा जिहा^२ सातमौ, चौथै पहौरै चक्कवै ॥ १३२

छद निसिपालका^३

जेण 'रावमाल' बहौ वार जुधि^४ जीपिया ।
दान^५ रावमाल बहौ गयद सासण दीया ।
सात अर वीस मुरधरतण^६ समपीया ।
अनि घणा गाव अनि देस मभि अप्पीया ॥ १३३
लोहि हणि 'जैत' वीकाणगढ^७ जै लीयौ ।
दहुडि^८ खुरसाण अजमेर गढ दावीयौ^९ ।
खाग भड^{१०} राण खुरसाण दळ जिण खडे ।
डीडवाणा सहित सहर साभरि डडे ॥ १३४
राणरौ लीध गुढवाड^{११} समहर रतौ ।
माल गढ वासि जिणि लीध गढ मेडतौ ।
दूठ वधणौर गढ लीध हणि खळ दळा ।
थाट माडिळ पुरा^{१२} सहत^{१३} कोसी थला^{१४} ॥ १३५
भाण मति ममूदौ जाजपूर^{१५} भाखरा ।
सहर सावर^{१६} लीयौ रतन हर साखरा^{१७} ।

१ ख पाल । २ ख. जिम । ३ ख निसिपालिका । ४ ख जुध । ५ ख दानि ।
६ ख. मुधर । ७ ख वीकाणगढ । ८ ख दहुडि । ९ ख दावीयौ । १० ख भट ।
११ ख. गुडवाड । १२ ख पुरा । १३ ख सहित । १४ ख थळा । १५ ख जाजपुर ।
१६ ख सावर । १७ ख सीषरा ।

१३२ जगहत्थ - सूर्य । जळहळै - जाज्वल्यमान होता है, चमकता है । दहक्कवै - डोलाय-
मान होते है । छहा - छ । जिहा - जैसे । चक्कवै - चक्रवर्ती ।

१३३ जेण - जिस । बहौ - बहुत । जुधि - युद्ध, युद्धमे । जीपिया - जीते, विजय किये ।
गयद - हाथी । सासण - राजाकी दानमे दी हुई भूमि या जागीर । सात अर वीस -
सताईस । मुरधरतण - मारवाडके । समपीया - अर्पण किये, दान दिये । अनि-
अन्य । अप्पीया - अर्पण किये, दान या पुरस्कारमे दिये ।

१३५ राणरौ - महाराणाका । लीध - लिया । गुढवाड - गोढवाड प्रान्त समहर -
युद्ध । रतौ - लीन । दूठ - जवरदस्त । हणि - सहार करा

लूटि चाळक हणे दुरंग तौ^१ डोलीयी ।
 दुभल गवडां ग्रने^२ डड हाडा दीयी ॥ १३६
 दावि^३ रैवास खाटू जिकण^४ दावटी^५ ।
 सहर काळा डहर सहत सेखावटी ।
 पवारा हणे लीधी जिकणि मालपुर^६ ।
 कहर गति चढे आवेर^७ पर धर^८ कसर ॥ १३७
 धर चवद चाळ भड लसे तजि धारणा ।
 मुलक वौलीस^९ हत लीध मल्हारणा ।
 लडि सहर चाटसू ग्रने दिव सालीयी^{१०} ।
 कमधपि^{११} अमल लघाणि^{१२} माहे कीयी ॥ १३८
 सरद करि धरा ढूढाड^{१३} खाटे सुजस ।
 आवीयी जीपि राव माल छिवती उरस ।
 दसै दिस^{१४} माहि पौही जोड न हुवै दुवै ।
 हाक जिण आण सुणि हिरण खोडा हुवै ॥ १३९
 जवनपति परातप भाण ग्रीखम^{१५} जिसी ।
 आगि कहता खलां वदन दाभै इसी ॥

. १४०

१ ख तो । २ ख ग्रने । ३ ख. दावि । ४ ख जिकणि । ५ ख दावटी । ६ ख
 मालपुर । ७ ख. आवेर । ८ ख धर । ९ ख वौलीस । १० ख सालीयी ।
 ११ ख कमधपि । १२ ख लच्छाई । १३ ख ढूढाड । १४ ख. दिसि । १५ ख
 ग्रीष्म ।

१३६ चाळक - चालुक्यवंश । हणे - सहार किया । दुरंग - दुर्ग, गढ । दुभल - वीर ।
 गवडां - गौड राजपूतो । ग्रने - और । हाडां - चौहानवंशी हाडा शाखाके व्यक्तियो ।
 १३७ कहर - कोप ।
 १३८ चाळ - वस्ती । धर चवद धारणा - उसकी भूमिमे वीरोकी चौदह वस्तिर्यां थी ।
 वे अपने शरीरका मोह नही करते थे ।
 १३९- सरद - आधीन । खाटे - प्राप्त कर । जीपि - जीत कर । छिवती - स्पर्श करता है ।
 पौही - राजा । जोड - बराबर, समान । दुवै - दूसरा । हाक - आवाज, दहाड ।
 १४०. जवनपति - वादशाह । परताप - प्रताप, रोव । भाण - सूर्य । ग्रीखम - ग्रीष्म ।
 वदन - शरीर । दाभै - जलता है ।

कवित्त—इळा राज करि एम^१, माल स्रगि वसे महावळ^२ ।
 जीत समर दन जजण, अमर रहीयौ जस उद्भळ^३ ।
 'माल' पाटि महपती, निडर 'उदळ' नर नाहर ।
 गई भौमि गहतत^४, जेण^५ वाली जग^६ जाहर ।
 वरीयांम राज चत्र वरस, करि वसीयौ स्रुग^७ क्रांमती ।
 सूरजसिंघ^८ लहरी समद, पाट विराजै छत्रपती ॥ १४१

महाराजा सूरसिंहरी वरणण

छन्द^९ चचळी^९

सोहियौ^{१०} सूरजसिंघ^{११}, नवकोटी^{१२} तणौ^{१३} नाह ।
 सपेखे भळ्ळाळ स्रुज^{१४}, पूजै^{१५} भुजा पातिसाह ।
 दिलीहूंत धर^{१६} दावौ, ऊससे^{१७} पठाण एक^{१८} ।
 राखिया^{१९} कराळ रूप, काळ रूप भूल केक ॥ १४२
 कोटवास^{२०} नास कीध, जास नाथ दास जैत^{२१} ।
 तोडवे^{२२} मेवास^{२३} तास, रास कीध खास रैत^{२४} ।

१ ग ऐम । २ ख महावल । ३ ख. गहतत । ४ ख जेणि । ५ ख जर । ६ ख. श्रगि । ७ ख. सूरजसिंघ । ८ ख ग छद । ९ ग चंचला । १० ख ग. सोहीयौ । ११ ख सूरजसिंघ । १२ ख ग नवकोटी । १३ ख तणो । १४ ख ग स्रुज । १५ ख ग पूजे । १६ ख ग धरे । १७ ख ग वसमे । १८ ग ऐक । १९ ख ग. राषीया । २० ग कोटवास । २१ ख ग जैति । २२ ख ग तोडवे । २३ ग मेवास । २४ ख. ग रैति ।

१४१ इळा—पृथ्वी । स्रगि—स्वर्ग । समर—युद्ध । दन—दान । जजण—यजन । उद्भळ—उज्ज्वल । माल—राव मालदेव । महपति—राजा । उदळ—मोटा राजा उदर्यासिंह । भौमि—भूमि । गहतत—वीर । जेण—जिस । वरीयांम—श्रेष्ठ । स्रुग—स्वर्ग । क्रांमती—तेजस्वी । लहरी समद—लहरोयुक्त समुद्र, उदार । पाट—राज्यसिंहासन । छत्रपती—राजा, नृप ।

१४२. सोहियौ—सुशोभित हुआ । नवकोटी तणौ—मारवाडका । नाह—नाथ, स्वामी, राजा । सपेख—संप्रेक्ष्य, देख कर । भळ्ळाळ—जाज्वल्यमान । दावौ—वाद, नालिश, हक । ऊससे—जोशमे आया, आवेगमे आया । कराळ—भयकर । भूल—समूह ।

१४३ कोटवास—बड़े-बड़े गढीमे रहने वाले । तोडवे—तोड दिये । मेवास—बड़े-बड़े लुटेरोके रहनेके या पनाहके स्थान । रास कीध खास रैत—उन लुटेरो आदिको सीधी राह पर चलने वाली अपनी प्रजा के समान कर दिये ।

वापरै^१ तखत वैठी^२, धारि छत्र जोम धारि ।
 वीजळा दिलेस^३ देस, मारि कीध थाळ वारि ॥ १४३
 आकळे^४ पुकार एह^५, जोगणेस द्वार^६ जाइ^७ ।
 साभळेस पातिसाह, आम-खास कीध आड^८ ।
 मीर खान की सलाम, रज्ज^९ इद्र राव राय ।
 देखियौ^{१०} सराह दोय^{११}, थाट नाथ क्रोध श्रम्य ॥ १४४
 आवियौ^{१२} कमध एसि^{१३}, वोम लागि जेण वार^{१४} ।
 जोम^{१५} हूत कीध जोध, जाय साहहू जह्वार ।
 हो^{१६} चगे नरेस साह, पेखि^{१७} दाखि लीध पेस ।
 'सूर' जाव^{१८} दीध साह, देत हू चगेस^{१९} मेस ॥ १४५
 'सूररौ' कुरव्व^{२०} साह, भाति भाति कीध भाव* ।
 देखता स राह दोइ^{२१}, रौद खान भूप राव ।

१ ख वावरै । क वावरै । २ ख वैठि । ग वैठि । ३ ग दिसेस । ४ ख. आकला ।
 ग आकली । ५ ग ऐह । ६ ख ग द्वारि । ७ ख ग. जाय । ८ ख ग आय ।
 ९ ख ग राज । १० ख वेधीयौ । ग दैधीयौ । ११ ख दोइ । ग दोई । १२ ख ग.
 आवीयौ । १३ ख इस । ग ईस । १४ ख ग जेणिवार । १५ ख ग जोम । १६ ख
 ग ही । १७ क पेचि । १८ ख जाव । १९ ख ग चगेह । २० ग. कुरव ।
 *ख प्रतिकी इस पक्तिमे 'कुरव्व' शब्द नहीं है ।
 २१ ग दोई ।

- १४३ वीजळा - तलवारे, तलवारो । दिलेस - दिल्लीश, वादशाह । वारि - जल, पानी ।
 १४४ आकळे - व्याकुल हुए, व्याकुल हो कर, पवरा कर । एह - यह । जोगणेस - योगिनी-
 पुरका ईश वादशाह । द्वार - दरवाजा । जाइ - जा कर । साभळेस - सुन कर ।
 कीध - किया । आड - आ कर ।
 १४५ आवियो - आया । एसि - इस प्रकार । वोम - व्योम, आकाश । लागि - लग कर ।
 जेण - जिस । वार - समय । जोम हूत - जोगसे, जोशपूर्वक । कीध - किया ।
 जोध - योद्धा, वीर । साहहू - वादशाहमे । जह्वार - अभिवादन, सलाम । चगे -
 कुशल । नरेस - राजा । साह - वादशाह । पेखि - प्रेक्ष्य, देख कर । दाखि -
 कहा, कह कर । लीध - ली । पेस - पेस, सम्मुख, सामने, भेंट, नजर । सूर -
 सवाई राजा सूरसिंहका । जाव - जवाव, प्रश्नका उत्तर । दीध - दिया । चगेस -
 वादशाह अकबर जो चगेजखान वगज था ।
 १४६ सूररौ - सवाई राजा सूरसिंहका । कुरव्व - कुर्व, सम्मान, मान, प्रतिष्ठा । कीध -
 किया । भाव - इज्जत, मान । रुह - धर्म । दोइ - दो, दोनो । रौद खान - सभव है
 यह शब्द मुजफ्फरके लिये प्रयोग कियागया हो ।

मेलियौ^१ तुजक्क^२ मीर, दीध हाथ पानदान ।

आखियौ^३ दिलेस^४ एम^५, पातिहूत फेरि पान ॥ १४६

कवित्त-उभा सोह उमराव, अब^६ दीवाण^७ अनाही^८ ।

मीर त्रुजक^९ ज्या माहि, पान फेरे पतिसाही ।

सब^{१०} नटिया^{११} तिण समै, अवर उमराव^{१२} अकाजा ।

'सूर' पान साहरा, जुडण लीधा महाराजा^{१३} ।

ग्रहि पान एम^{१४} कहियौ^{१५} अगज, भट खग बौह^{१६} बाहू^{१७} भलू ।

मोकळू पकडि मदफर^{१८} मिलक, मुदफररौ सिर मोकलू ॥ १४७

गाथा

जमदढ खग जमहार^{१९}, गज सिर पाउ^{२०} तुरग(जै) धर गुज्जर ।

व्रवि^{२१} असपति जिण वार, कहियौ^{२२} तखत लाज तो कमधज ॥ १४८

१ ख ग मेलीयौ । २ ख ग तुजक्क । ३ ख ग आषीयौ । ४ ख. दिलेस ।
५ ख ग येम । ६ ख. अब । ग अब । ७ ख दीवा । ८ ख ग अनाही । ९ ग
तुजकं । १० ख श्रव । ग श्रव । ११ ख ग नटीया । १२ ख ऊवरा । ग ऊवरा ।
१३ ख महारा । ग. माहाराजा । १४ ख ग येम । १५ ख कहियौ । ग कहियौ ।
१६ ख बहौ । ग बहौ । १७ ख बाहू । ग बाहू । १८ ख मुदफिर । ग मुदफर ।
१९ ख ग जवाहार । २० ख ग. पाव । २१ ख व्रव । २२ ख ग कहियौ ।

१४६ आखियौ - कहा । दिलेस - दिल्लीश, वादशाह । एम - इस प्रकार । पातिहूत-पक्तिसे,
कतारसे । पान-पानका बीडा । तुजक मीर-राज सभाकी व्यवस्था करने वाला अफमर ।

१४७ उभा - खडा । सोह - सब । उमराव - अमीर, राजा । अब दीवाण - आम दरवार ।
ज्यां - जिन । माहि - मे । पान - पानका बीडा । पतिसाही - वादशाहका । सब -
सब । नटिया - इन्कार कर दिया । तिण - उस । समै - समय । अवर - अपर,
अन्य । अकाजा - अकारण, विना कारण । सूर - सवाई राजा सूरसिंह । साहरा -
वादशाहके । जुडण - युद्ध करनेके लिये, भिडनेके लिये । लीधा - लिये । ग्रहि -
पकड कर ले, कर । अगज - अजेय, विजयी । भट - शीघ्र । खग - तलवार ।
बौह - (?) । बाहू - भुजासे । भलू - धारण करू । मोकळू - भेज देऊ । पकडि -
पकड कर । मदफर - मुजफफर । मिलक - मलीक, स्वामी, मालिक । मुदफररौ -
मुजफफरका, इसके पुत्र बहादुरशाहने वादशाह अकबरके शामनकालमे गुजरातमे लूट-
खसोट व उपद्रव खडा कर दिया था । इसको पराजित करने हेतु वादशाह अकबरने
सवाई राजा सूरसिंहको गुजरातकी तरफ भेजा था ।

१४८ जमदढ - एक प्रकारका कटार । खग - तलवार । जमहारं - जवाहरात । गज -
हाथी । सिर पाउ - शिरोपाव । तुरंग - घोडा । धर गुज्जर - गुजरात राज्य ।
व्रवि - देकर । असपति - अश्वपति, वादशाह । जिण वारं - जिन समय । कहियौ -
कहा । तखत - राज्यमिहासन । तो - तुम्हे । कमधज - राठीड ।

छंद पद्धती

सुणि साह हुकम इम सूरसाह ।
 ऊससे^१ जोम पौरस^२ अथाह ।
 तिण वार तोलि खग मूछ ताणि ।
 असपतिहू कहियौ^३ छौह^४ आणि ॥ १४९
 विडि हणू बहादर^५ खाग वाहि ।
 ग्रहि जडू जजीरा थाट गाहि ।
 दळ बळ^६ खळ न वचै कोडि दाय ।
 जो वचै राज तजि भाजि जाय ॥ १५०
 हव देखौ असपति मूभ हाथ ।
 निहचत करा सुख दिली राज^७ ।
 इम कहे^८ हालियौ^९ कमधईस^{१०} ।
 सूरापण छिवतै^{११} उरस सीस ॥ १५१

१ ख उससे । ग ऊससे । २ ख. ग पौरिस । ३ ख ग कहीयौ । ४ ख. छौह ।
 ५ ख. बहादर । ग बाहादर । ६ ख वल । ७ ख ग नाथ । ८ ग कहे । ९ ख.
 ग हालीयौ । १० ग कमधइस । ११ ख. ग छिवतै ।

१४९ साह - वादशाह । इम - इम प्रकार । सूरसाह - सवाई राजा सूरसिंह । ऊससे -
 जोशमे आया । जोम - जोश । पौरस - शक्ति, बल । अथाह - अपार । तिण -
 उस । वार - समय । तोलि - उठा कर । खग - तलवार । मूछ ताणि - मूछो पर
 ताव दे कर । असपतिहू - वादशाहसे । कहियौ - कहा । छौह - जोश । आणि -
 ला कर ।

१५० विडि - युद्ध कर, भिड कर । हणू - सहार कर दूँ, मार दूँ । बहादर - मुजपफरके
 पुत्र बहादुरशाहको । खग - तलवार । वाहि - प्रहार कर । ग्रहि - पकड कर ।
 जडू - बघनमे डाल दू । थाट - सेना, दल । गाहि - ध्वश कर, नाश कर । खळ -
 शत्रु । न वचै कोडि दाय - करोडो उपाय करने पर भी नहीं वचेगा ।

१५१ हव - अथ । असपति - वादशाह । मूभ - मेरे, मेरा । निहचत - निश्चित । हालियौ -
 चला, प्रस्थान किया, कूच किया । कमध ईस - राठौडोका स्वामी, सवाई राजा सूर-
 सिंह । सूरापण - शौर्य । छिवतै - स्पर्श करते हुए । उरस - आसमान, आकाश ।

गजराज चढे कमधज गरूर ।

सूरिमा मौड महाराज^१ 'सूर' ।

जाजुळ^२ मुदफरहू थापि जग ।

आवियौ^३ एम^४ डेरा^५ अभग ॥ १५२

सोरठा^६—उमरावा^७ उण वार^८, मसळति पूछै^९ महपती ।

सुणे हुकम सिरदार, आलोचण लागा उठै ॥ १५३

सह^{१०} बोलिया^{११} सकाज, मतौ करे^{१२} बिहुवै^{१३} मिसल ।

मन वछित^{१४} महाराज^{१५}, ऐ^{१६} मोहमदीय असपती ॥ १५४

कौ^{१७} मन वछित केम, जाव^{१८} भडा दीजे^{१९} जकौ^{२०} ।

इम सुणि कहियौ^{२१} एम^{२२}, सका^{२३} भडा महाराजसू^{२४} ॥ १५५

१ ख ग माहाराज । २ ख ग जाजुलि । ३ ख ग आवीयौ । ४ ग ऐम । ५ ख ग डेरै । ६ ख ग दौहा सोरठा । ७ ख ग उवरावा । ८ ग. उण वार । ९ ख ग पूछे । १० ख. ग सहौ । ११ ख बोलीया । ग बोलीया । १२ ग करै । १३ ख ग बिहुवै । १४ ग वछित । १५ ग माहाराज । १६ ख ग. एह । १७ ख ग. कहौ । १८ ख जाव । १९ ख. ग दीजे । २० ख जीकौ । ग जिकौ । २१ ख ग. कहियौ । २२ ग. इम । २३ ख सकौ । ग. सकौ । २४ ग माहाराजासू ।

१५२. गजराज—हाथी । कमधज—राठीड । गरूर—गभीर । सूरिमा—सूरमा, वीर । मौड—श्रेष्ठ, मीर । महाराज सूर—महाराजा सूरसिंह । जाजुळ—जाज्वल्यमान । मुदफरहू—मुजफरसे । थापि—निश्चय कर के । जग—युद्ध । आवियौ—आया । अभग—वीर ।

१५३. उण वार—उस समय । मसळति—मस्तहत्, परामर्श, सलाह । महपती—राजा । आलोचण—विचार । उठै—वहाँ ।

१५४. सह—सब । बोलिया—बोले । सकाज—कार्य सहित, लिए । मतौ—विचार । बिहुवै—दोनो । मिसल—पक्ति । मन वछित—अभीष्ट । मोहमदीय—मुहम्मदका । असपती—वादशाह ।

१५५. कौ—कहो । केम—कैसे । जाव—जवाब । भडा—योद्धाओ । जकौ—वह । सुणि—सुन कर । कहियौ—कहा । एम—ऐसे । सकां—सब ।

कवित्त-जाइ^१ करा^२ जोधाण, जूथ केजम जरदाळां ।
 दीध^३ गुजर^४ धर दुगम, चढां मंडण धकचाळा^५ ।
 आवू^६ धर ऊधमां, लाय सिवपुरी लगावां ।
 दुजड भडा देवडां, भाजि ग्रह^७ डड^८ भरावा ।
 सुरताण मरै का नीसरै, गिर अढार हुय^९ गाहणौ ।
 पाधरै खेत काढा पछटि, ताय वैर^{१०} 'रासा'तणौ ॥ १५६

स्यांम काज^{११} साजिजे^{१२}, वैर^{१३} इण विध^{१४} वाळीजे ।
 भर लीजै धर भोग, कळह मुदफरहू^{१५} कीजे ।
 साह हणा सग्रहा^{१६}, काय लूटे दिल^{१७} काढां ।
 काय आय जुध^{१८} काम^{१९}, चुरस मुरधर जळ चाढा ।

१ ख ग जाय । २ ख ग करो । ३ ख ग दिसि । ४ ख ग गुज्जर । ५ ख
 घपवाला । ग घपचाळा । ६ ख आवू । ७ ख ग ग्रहि । ८ ग दंड । ९ ख होय ।
 ग होय । १० ग वैर । ११ ख ग काम । १२ ख ग साभिजै । १३ ख वैरि ।
 १४ ख विधि । १५ ख. मुदफुर । १६ ग. सग्रही । १७ ख ग दळ । १८ ग जुधि ।
 १९ ख ग कामि ।

१५६ जाइ-जा कर । जूथ-यूथ, समूह । जरदाळां-कवचधारी योद्धाग्रो । दीध-
 दी, दिया । गुजर धर-गुजरात । दुगम-दुर्गम । मंडण-रचनेको । धक-
 चाळां-युद्धो । ऊधमां-तहस-नहस कर डाले । लाय-आग, अग्नि । सिव-
 पुरी-सिरोही । दुजड-तलवार । भडा-प्रहार । देवडा-चौहानवशकी देवडा
 शाखाके व्यक्तियो । डंड भरावा-दण्ड वसूल करेंगे । सुरताण-सिरोहीका राव
 सुल्तान । का-या, अथवा । गिर अढार-आवू पर्वत । गाहणौ-नाश, ध्वश ।
 पाधरै खेत-खुले मैदान, खुले युद्धम्यल । पछटि-पछाड कर । ताय-आततायी,
 शत्रु । रासा-रायसिंह राठौड ।

१५७ स्यांम-स्वामी, मालिक । काज-कार्य, काम । साजिजे-सफल करिये । वैर इण
 विध वाळजे-इम प्रकार प्रतिशोव लीजिये । भर लीजै-वसूल कीजिये । धर-भूमि ।
 भोग-कृषिकी उपजका वह भाग जो जागीरदार या राज्य सरकार वसूल करती थी ।
 कळह-युद्ध । मुदफरहू-मुजपफरसे । हणा-सहार कर दूं, या मार दूं । सग्रहा-
 युद्ध करू । काय लूटे दिल काढा-या लूट कर दिलकी उमग पूरी करें । चुरस-
 श्रेष्ठ । मुरधर-मारवाड । जळ-तेज, कात्ति, प्रतिष्ठा ।

सरव^१ ही वात दाखै सुभट, कुळ अजसै सुण^२ कीरती ।
 धुर मुहमु^३ एम^४ गुजरात धर, इम^५ मन वछत^६ अधपती ॥ १५७
 एक^७ वात ऊवरा^८, सुणे रीभियौ^९ नरेसुर ।
 वाह वाह अक्खियौ^{१०}, तोल^{११} खग लगे^{१२} अधतर ।
 पूजि वधारा पटा, एम^{१३} कहियौ^{१४} उण वारा ।
 मूभ वसे^{१५} मन मही^{१६}, सोइज^{१७} दाखै^{१८} सिरदारा ।
 करि इम^{१९} सलाह दळ वळ^{२०} करे^{२१}, तूर भेर वाजे^{२२} तवल^{२३} ।
 नृप^{२४} 'सूर' एम^{२५} दिस सहस^{२६} नव, दिलीहूत^{२७} चढियौ^{२८} दुभल ॥ १५८

छद मत्त मात्तंग लीला करदडक

हालिया^{२९} एहडा^{३०} घेर वकी घडा ,
 रज्ज^{३१} उड्डै^{३२} रवी धोमतै धूधळै ।

१ ख सरव । २ ख ग सुणि । ३ ख मोहम । ग मोहम । ४ ग ऐह । ५ ख. ग. यम । ६ ख ग वद्धित । ७ ग ऐह । ८ ग ऊवरा । ख ऊवरा । ९ ख ग. रीभीयौ । १० ख ग आपीयौ । ११ ख ग तोलि । १२ ग लगे । १३ ग ऐम । १४ ख ग कहीयौ । १५ ग वसे । १६ ख ग माहि । १७ ख सोइज । ग सोइज । १८ ख. दाखे । १९ ग यम । २० ख वळ । २१ ख कर । ग करे । २२ ग. वाजे । २३ ख तवल । २४ ख ग नृप । २५ ग ऐम । २६ ख ग सहस । २७ ख हूत । २८ ख. ग चढीयौ । २९ ख य. हालिया । ३० ख. ग ऐहडा । ३१ ख ग. रज । ३२ ख ग उडे ।

१५७ दाखै - कहते हैं । सुभट - योद्धा । कुळ - वश । अजसै - गर्व करे, गर्व करेगा । धुर - प्रथम, अगाडी । मुहमु - मुहिम, महान कार्य, बडा काम, युद्ध, संग्राम । अधपति - राजा, नृप ।

१५८ ऊवरा - अमीरो, सरदारो । रीभियौ - प्रसन्न हुआ । नरेसुर - नरेश्वर, राजा । वाह वाह - धन्य-धन्य । अक्खियौ - कहा । तोल - उठा कर । अधतर - आसमान, आसमानके मध्यमे । वधारा - बढावेगे । पटा - पट्टो । मूभ - मेरे । मन मही - मनमे । सोइज - वही । दाखै - कहा, कहते हो । करि - कर के । तूर - वाद्य विशेष । भेर - भेरी नामक वाद्य । तवल - वाद्य विशेष । नृप सूर - महाराजा सूरसिंहजी । एम - इस प्रकार । दिस - ओर, तरफ । सहस नव - मारवाड । दिलहूत - दिल्लीसे । चढियौ - चढा । दुभल - वीर, योद्धा ।

१५९ हालिया - कूच किये, चले । एहडा - ऐमे । वकी - बाकुरी । घडा - सेना । रज्ज - घूलि । रवी - सूर्य । धोमतै - धुआसे । धूधळै - घूलिसे आच्छादित होती है ।

वोल^१ नक्कीवरां^२ हीसवै हैमरां ,
 धज्ज^३ धैधीगरा^४ ऊपरा ऊछळै^५ ।
 सीस धांमस मे^६ नाग वाळा नमै ,
 कीध मुक्काम^७ को^८ मध्य^९ भूळा^{१०} मिळा ।
 वव^{११} ह्वै ववरा^{१२} इद्र आडवरा^{१३} ,
 आवियौ^{१४} 'सूर' यू^{१५} आपवाळी इळा ॥ १५६

छद तारक

मिळिया^{१६} वह^{१७} साजण उच्छव^{१८} मेळा ।
 चद्राणण^{१९} राग करत सचेळा ।
 अवछाड जरी चित्र हाट अपारां ।
 वर वधिय^{२०} कुभ घण तिण वारां ॥ १६०
 निछरावळ^{२१} द्रव्व^{२२} उडत अनेकां^{२३} ।
 करि उच्छव^{२४} हास नचंत अनेकां ।
 मिळिया^{२५} भ्रत^{२६} सज्जण राज मभारे ।
 पह^{२७} सूरज^{२८} एम^{२९} अवास^{३०} पधारे^{३१} ॥ १६१

१ ख वोल । ग वोल । २ ख नक्कीव । ग. नकीवरा । ३ ख ग धज्ज । ४ ख ग धैधीगरा । ५ ख ग ऊछले । ६ ख ग मै । ७ ग. मुक्काम । ८ ख ग के । ९ ख ग मध्य । १० ग भूली । ११ ख वव । १२ ख ववरा । १३ ख. आडवरां । ग आववरा । १४ ख ग आवीयो । १५ ख ग सूरयो । १६ ख ग मिलीया । १७ ख ग ववौ । १८ ख उछव । ग ऊछव । १९ ख ग चद्राणणि । २० ख ग वधीय । २१ ग निछरावाळि । २२ ख द्रव्व । ग द्रव । २३ ख. ग. अनेक । २४ ख उछव । ग उच्छव । २५ ख ग मिलीया । २६ ख ग भूत । २७ ख ग पौहौ । २८ ख ग सूरिज । २९ ग ऐम । ३० ग आवास । ३१ ग पधारे ।

१५६ नक्कीवरा - नकीवोके । हींसवै - हिनहिनाहट करते हैं । हैमरा - हयवरो, घोडो । धज्ज - ध्वजा । धैधीगरा - हाथियो । ऊपरां - ऊपर । ऊछळै - फहराती है । धामस - धमक । नागवाळा - शेषनागके । वव - नगरा । ह्वै - होते हैं । आवियो - आया । सूर - सवाई राजा सूरसिंह । यू - इस प्रकार । आपवाळी - अपनी । इळा - भूमि ।

१६० मिळिया - मिले । साजण - मज्जन । उच्छव - उत्सव । चद्राणण - चद्रमुखी । सचेळा - सुन्दर । अवछाड - वस्त्र ।

१६१. निछरावळ - न्योछावर । द्रव्व - द्रव्य । मिळिया - मिले । भ्रत - भ्रत्य, नौकर । सज्जण - मज्जन । मभारे - मध्य, मे । पह - राजा । अवास - भवन । पधारे - पदार्पण किया ।

सुकिया मिळ^१ जूथ अनेक करै सुख ।
 रवि नाम नरद^२ सुरचद तणी रुख ।
 चत्र जाम वितीत उदोत जगा चख ।
 सभि रीभ विदा किय^३ तीस छहै^४ सख^५ ॥ १६२
 अठ दीह करार^६ करे^७ भड आया ।
 माहमा सज मत्रिया^८ फुरमाया ।

॥ १६३

कवित्त-असट दीह नरइद^९, इद^{१०} जिम रहै अमासा^{११} ।
 डेरा वाहिर दिया^{१२}, परठि महुरत^{१३} परगासा^{१४} ।
 पह^{१५} निज हुकम प्रमाण^{१६}, दीह नवमै विरदाळा ।
 सराजांम करि समर, सकौ^{१७} भड मिळै^{१८} सचाळा^{१९} ।

१ ख ग मिलि । २ ख करचद । ३ ख. ग कीया । ४ ख. छहे । ५ ख. सख ।
 ६ ग करारि । ७ ग. करे । ८ ख ग जमत्रवीया । ९ ख ग. नरियद । १० ग
 इद्र । ११ ख ग अवासा । १२ ख. ग. दीया । १३ ग महुरत । १४ ख ग पर-
 कासां । १५ ख ग. पौहौ । १६ ख ग प्रमाणि । १७ क. सकौ । १८ ख ग मिले ।
 १९ ख ग सिघाला ।

१६२. सुकिया - स्वकिया, पतिव्रता । जूथ - यूथ, समूह । रवि नाम - प्रभाव, ऐश्वर्य ।
 सुरचद - इन्द्र । रुख - समान । चत्र जाम - चार पहर । वितीत - व्यतीत ।
 उदोत - उद्योत । जगा चख = जगद्चक्षु - सूर्य । सभि - सुसज्जित हो कर ।
 रीभ - पुरस्कार । विदा - कूच । तीस छहै सख - क्षत्रियोंके प्रसिद्ध छतीसही
 वश ।

१६३ अठ - आठ । दीह - दिन । करार - वायदा, वादा । भड - योद्धा । माहमां -
 परस्पर । संज - उपकरण, सामान ।

१६४ असट - अष्ट, आठ । नरइद - नरेन्द्र, राजा । इद - इन्द्र । अमासां - आवासों,
 भवनो । वाहिर - बाहर । परठि - देख कर । महुरत - मुहूर्त । परगासां -
 प्रकट, प्रकाश । पह - राजा । प्रमाण - अनुसार । विरदाळा - यशस्वी, विरुद्धधारी ।
 सराजाम - तैयारी, सामान, सामग्री । समर - युद्ध । सकौ - सब । सचाळा -
 वीर ।

ऊधमत्^१ देस एम^२, ज्याग^३ दक्ष^४ वीर जेम ।
 तांम थाट पूर ताव, रीस धारि सोढ राव ॥ १७२
 वाजता त्रंवाळ^५ वीर, सामुहौ आयौ सधीर ।
 वीर ते त्रवाळ वाज, गोम धोम वोम गाज^६ ॥ १७३
 ऊफणै^७ कमध ईस, रौद्र रूप जोग^८ रीस ।
 आरवा^९ दगै अपार, काळ रूप अधकार ॥ १७४
 ऊछळै^{१०} गोळा अथाह, वूठ^{११} बाण^{१२} वाण वाह^{१३} ।
 'सूर' ताम रूप सोह, हाकलै भडां अवीह^{१४} ॥ १७५
 मारुवा तुरग मेलि, चाहुवाण वीर चेलि ।
 घाट सेल वार घोळ, हूचकै^{१५} गजा हरोळ ॥ १७६

१ ग उधमंत । २ ग ऐम । ३ ख वाग । ४ ख. ग दक्षि । ५ ग. त्रवाल । ग. त्रवाळ ।

*ख प्रतिके अनुमार यह पंक्ति—

वीर ते त्रवाल वाज, गोम वोस धौम काज ।

ग. प्रतिके अनुमार यह पंक्ति—

वीर ते त्रवाल वाज, गौम धौम धौम गाज ।

६ ख ऊपणे । ग ऊपणे । ७ ख ग जोस । ८ ख आरवाद । ग आरवाद । ९ ख ग. उछळै । १० ग वूठ । ११ ख वाण । १२ ख वाह । १३ ख अवीह । १४ ग. हूचकै ।

१७२ ऊधमंत - ध्वश करते हैं । एम - इस प्रकार । ज्याग - यज्ञ । दक्ष - राजा दक्ष ।

वीर - महादेवका गण वीरभद्र । जेम - जैसे । ताम - उन । थाट - दल, सेना ।

१७३ वाजतां - वजने पर । त्रवाळ - नगाडा । सामुहौ - सम्मुख, सामने । सधीर - वीर्यवान, वीर । गोम - पृथ्वी । धोम - धुआ । वोम - व्योम, आकाश । गाज - गर्जित हुआ ।

१७४ ऊफणै - उवालमे आता है । कमध ईस - राठीडोंका राजा सूरसिंह । रौद्र रूप - भयकर, भयावह । जोग - योगी, महादेव । रीस - कोप । आरवां - तोपो, तोपे । दगै - दागे जाते हैं । काळ - यमराज ।

१७५ ऊछळै - नछलते हैं, गिरते हैं । अथाह - अपार, असीम । वूठ - वर्षा । बाण - तीर । वाह - प्रहार । सूर - सवाई राजा सूरसिंह । ताम - उस । हाकलै - जोश दिलाता है, उत्साहित करता है । भडां - योद्धाओ । अवीह - निर्भय ।

१७६ मारुवां - राठीडो । तुरग - घोडा । चेलि - (?) । घाट - शस्त्रका पैना या नोकदार भाग । वार - प्रहार । हूचकै - भिडते हैं । हरोळ - हरावल, सेनाके आगे ।

‘सूरराव’^१ हाथ^२ सेल, उछळै^३ रता^४ उभेळ ।
 रग^५ माट घाट रत्र, ते^६ भरै^७ चौसट्ट^८ पत्र ॥ १७७
 तोय^९ ज्यू^{१०} पीवत^{११} ताम, ज्वाळ त्रक्ख^{१२} मेट^{१३} जाम ।
 भाळ रूप खाग भाट, घूमरा कटक्क^{१४} घाट ॥ १७८
 ऊछळत हाथ पाव, घाट सीस दाव घाव ।
 मड ईस रुंडमाळ, वीर नित्त^{१५} विक्कराळ^{१६} ॥ १७९
 रीभवै हसै रिखेस^{१७}, देखवै रजै^{१८} दिनेस ।
 ऊमि^{१९} लोह धार इद^{२०}, वारगा वरत व्यद^{२१} ॥ १८०
 मूरवीर दोइ^{२२} साथ, वोळ^{२३} चोळ^{२४} लूथ वाथ^{२५} ।
 वावरत रूप वीज^{२६}, खंजरा कटार खीज ॥ १८१

१ ख ग सौरराव । २ ख ग हत । ३ ख ग उछळै । ४ ख ग रता । ५ ख. रम । ६ ख ग. तै । ७ ग. भरौ । ८ ख ग चौसठि । ९ ग तौय । १० ग. ड्यू । ११ ख. पिवंत । १२ ख ग. तृष । १३ ख. ग मेटि । १४ ख ग. कटत । १५ ख ग. नृत । १६ ग विकराळ । १७ ग. रिखेस । १८ ग रिजै । १९ ख ग ऊडि । २० ख ग ईद । २१ ख ग वीद । २२ ख ग. दीय । २३ ख वोल । क वौळ । २४ क चोळ । २५ ख वाथ । २६ ग. वीज ।

१७७ सूरराव - सवाई राजा सूरसिंह । सेल - भाला । ऊछळै - उछलता है । रता - रक्त, खून । उभेळ - तरग, हिलोर । घाट - घडा । रत्र - खून, रक्त । चौसट्ट - चौसठ योगिनियोके समूह । पत्र - देवीका खप्पर ।

१७८. तोय - जल । ज्यू - जैसे । पीवत - पीते हैं । ताम - उस । ज्वाळ त्रक्ख - तृषाकी ज्वाला । जाम - जो अथवा प्याला ? । भाळ - ज्वाला । रूप - समान । खाग - तलवार । भाट - प्रहार । घूमरा - समूहो । कटक्क - सेना, दल । घाट - युद्ध भूमि ? ।

१७९. ऊछळत - उछलते है । पाव - पैर, पाद । घाट - शरीर । सीस - शिर । दाव - वार, प्रहार । मंड - वनाता है । ईस - महादेव । रुंडमाळ - मुण्डमाला । वीर - युद्धप्रिय भैरवदेव । नित्त - नृत्य । विक्कराळ - विकराल, भयकर ।

१८०. रीभवै - प्रसन्न होते है । रिखेस - ऋषीश, नारद मुनि । देखवै - देखता है । रजै - प्रसन्न होता है । दिनेस - सूर्य । ऊमि - उमड कर ? । लोह - रक्त, लोह । इद - इन्द्र ।

१८१ वोळ चोळ - लाल, रक्ताभपूर्ण । लूथ वाथ - गुत्यमगुत्या । वावरत - प्रयोग करते हैं । वीज - बिजली, तलवार । खीज - कोप ।

तदि वणै साज गयदां तुरां, वीर त्रवाळा^१ द्रीह वजि ।
 सुरताण साह मुदफर दिसी, 'सूर' चढे^२ दळ पूरि सजि ॥ १६४
 वाजि धमस^३ ऊडड^४, वाजि त्रवाळ^५ चहूँवळ ।
 द्रोण वाजि है खुरा, वाजि दळ सौक^६ वळोवळ ।
 सूर वीर साथिया^७, लियां^८ बौह^९ पूर लकाळां ।
 मतिवाळा जौमरा^{१०}, काळ रूपी कळिचाळा ।
 कैजमां^{११} भळक सिलहा खळक, भळळ तेज अणियां^{१२} भमर ।
 देवडां चूर करिवा दुभल, 'सूर' चढे आरभ समर ॥ १६५

छद मळिका^{१३}

एहडा^{१४} दळ^{१५} अथाह, सूरवीर सूर साह ।
 भूप हालियो^{१६} अभग, जोम पूर काजि^{१७} जग ॥ १६६

१ ख त्रवागळ । ग त्रंवागळ । २ ग चढे । ३ ख ग धमस । ४ ख ग ऊडंडा ।
 ५ ख ग त्रवाळ । ६ ख ग सोक । ७ ख ग साथीया । ८ ख ग लीयां । ९ ख
 ग वही । १० ख ग. जोमरां । ११ ख कैजमा । ग केजमां । १२ ख ग अणीया ।
 १३ ख ग मल्लिका । १४ ग ऐहडा । १५ ख ग दळां । १६ ख. ग. हालीयो ।
 १७ ख ग. काज ।

१६४ तदि - तव । साज - उपकरण, सामान । गयदा - हाथियो । तुरा - घोडो ।
 त्रवाळा - नगाडा । द्रीह - भयकर । सुरताण - सिरोहीका राव सुलतान । साह -
 बादशाह । मुदफर - मुजफ्फर । दिसी - ओर, तरफ । सूर - सवाई राजा सूरसिंह ।
 पूरि - पूर्ण । सजि - मज्जित कर के ।

१६५ वाजि - ध्वनि हुई । धमस - घोडोके मुमोंके आहटकी ध्वनि । ऊडंड - घोडा । त्रवाळ -
 नगाडा । चहूँवळ - चारो ओर । द्रोण - भयकर, भयावह । है - हय, घोडा । सौक -
 ध्वनि विशेष । वळोवळ - चारो ओर । बौह - बहुत । पूर - पूर्ण । लकाळा -
 वीरो, योद्धाओ । मतिवाळा - बुद्धिमानो । जौमरां - जोशीलो । काळ रूपी -
 यमराजके ममान, रूपका । कळिचाळा - योद्धाओ । कैजमां - (?) । भळक -
 चमक, दमक । सिलहा - अस्त्र-शस्त्रो । खळक - ध्वनि विगेष । भळळ - देदीप्य-
 मान । अणियां भमर - सेनाके अग्रगण्य । देवडां - चौहानवशकी देवडा शाखाके
 व्यक्तियो । चूर - नाश, ध्वश । दुभल - वीर, योद्धा । सूर - सवाई राजा सूरसिंह ।
 समर - युद्ध ।

१६६ एहडा - ऐने । दळ - नेना, फीज । अथाह - अपार, असीम । सूरवीर - बहादुर ।
 सूर साह - सवाई राजा सूरसिंह । हालियो - चना, कूच किया । अभग - वीर ।
 जोम - जोश । पूर - पूर्ण । काजि - लिए । जग - युद्ध ।

घट गै घमक घोर, जगमांण^१ नाळ जोर^२ ।
 भूम धूज थाट भार, कोम कध जै प्रकार ॥ १६७
 धूधळै^३ रजैस^४ धोम^५, वैल माग ढक^६ व्यौम ।
 ॥ १६८
 तूटये^७ नदी तटाक, हीस वाजि^८ वीर हाक ।
 पेखि एम^९ थाट पूर, साजिया^{१०} मुकाम 'सूर' ॥ १६९
 दोय^{११} एक^{१२} वीच^{१३} दीह, आवियौ^{१४} खड़े^{१५} अवीह^{१६} ।
 औदके पवै अढार, भारही^{१७} अढार भार ॥ १७०
 जामि^{१८} लोक भाजि जाय, थाट नैर नास थाय ।
 लूटजै^{१९} दरब्ब^{२०} लाख, सच माल भूम साख ॥ १७१

१ ग. मांणु । २ ग जोर । ३ ख ग धूधळे । ४ ख ग. रजेस । ५ ग धोम ।
 ६ ख ग ढकि । ७ ख तूटीए । ग तूटीऐ । ८ ख वाज । ग वाज । ९ ग ऐम ।
 १० ख ग साभिया । ११ ख ग दोइ । १२ ख ग हेक । १३ ख ग वीचि ।
 १४ ख ग. आवीयो । १५ ग षडे । १६ ख. अवीह । १७ ख भाहरी । ग भाहरा ।
 १८ ख ग जाम । १९ ख लूटजे । ग लूटजै । २० ख दरब । ग दरब ।

१६७ घट - घटा । गै - गज, हाथी । जगमाण - घोडा । घमक - ध्वनि विशेष । घोर -
 भयकर । नाळ - घाडेके सुमके नीचे लगाया जाने वाला अर्द्ध चद्राकार लोहेका खड
 विशेष । भूम - भूमि पृथ्वी । धूज - कपायमान होनेकी क्रिया । थाट - सेना, दल ।
 कोम - कुर्म, कच्छप । कध - स्कध ।

१६८ धूधळै - धूलि-आच्छादित । रजैस - रज, धूलि । धोम - धुआ । ढक - आच्छादित
 करते हैं । व्यौम - आकाश ।

१६९ तूटये - टूट जाता है । तटाक - तालाव । हींस - हिनहिनाहट । वाजि - घोड़ा ।
 वीर हाक - युद्धप्रिय भैरवदेवकी दहाड, वीर-ध्वनि । पेखि - प्रेक्ष्य, देख कर । एम -
 इस प्रकार । थाट - सेना, दल । पूर - पूर्ण । साजिया - सजाये । मुकाम -
 स्थान, डेरा, पडाव । सूर - सवाई राजा सूरसिंहजी ।

१७० वीच - मध्य, मे । दीह - दिन । आवियौ - आया । खड़े - चल कर । अवीह -
 निर्भय । औदके - भयभीत होते हैं, कपायमान होते हैं । पवै - पर्वत । अढार -
 आवू पर्वत । अढार भार - अष्टादश भार वनस्पति ।

१७१ जामि - याम, प्रहर । थाट - सेना । नैर - नगर । नास थाय - विध्वंस
 होते हैं । दरब्ब - द्रव्य । सच - सग्रह । भूम - भूमि ।

काळरूप भाल क्रोध, जेठियां^१ सरूप जोध ।
 डोरिया करंत डाव, घाटमे^२ दुसार घाव ॥ १८२
 देवडा मुक्त दाम, तूटिया^३ अनेक तांम ।
 'सूररा'^४ केईक^५ सूर, रूक घाइ^६ मगरूर^७ ॥ १८३
 वाकडा कमध वीर, सांकडा आया^८ सधीर ।
 ताम सोढि देखि ताव, पालटै कुरंग पाव ॥ १८४
 त्रवि^९ वाजि^{१०} भेर^{११} तूर^{१२}, 'सूर' जैत^{१३} कीधि^{१४} सूर ।
 लूटिवै^{१५} सिरोह^{१६} लीध, कोटमे^{१७} मुकाम कीध ॥ १८५
 कवित्त- राव सहित राणियां^{१८}, भ्रमै वनि^{१९} वनि चित भगं^{२०} ।
 सुवै^{२१} राव सुरताण, पथर साथरा पिलंग^{२२} ।
 पवै तरा पालणा, रुदन बाळक मछरीकां ।
 सुण^{२३} चमकै सुरताण, हियै^{२४} सालै दुख हीकां ।

१ ख जेठियां । ग भेठिया । २ ख ग. घाटमै । ३ ख ग तूटिया । ४ ग सुरग । ५ ग केइक । ६ ख ग घाय । ७ ग मगरूर । ८ ख अया । ९ ख तूव । ग तूव । १० ग वाजि । ११ ख ग. भेरि । १२ ग तूरि । १३ ख ग जैति । १४ ख ग. कीध । १५ ख लूटवे । १६ ग सिरोहि । १७ ख कोटवै । ग कोटमै । १८ ख ग. राणीयां । १९ ग. वनि । २० ग. भंगा । २१ ख सुवै । २२ ख ग पिलगा । २३ ख ग. सुणि । २४ ख ग हीयै ।

१८२. भाल - ज्वाला, आग । जेठियां - बडो, भीम । सरूप - समान । जोध - योद्धा । डोरिया - (?) । करत - करते है । डाव - दाव । घाट - शरीर । दुसार - भाला ।
१८३. मुक्त - मुक्त । सूररा - सवाई राजा सूरसिंहके । केईक - कई । सूर - वीर । रूक - तलवार । घाइ - प्रहार । मगरूर - गर्वयुक्त, उन्मत्त ।
१८४. वांकडा - वाकुरे । कमध - राठौड । सांकडा - संकट, नजदीक । सधीर - धैर्यवान । कुरंग - घोडा ।
१८५. त्रवि - नगाडा । भेर - भेरी नामक वाद्य । तूर - वाद्य विशेष । सूर - सवाई राजा सूरसिंह । जैत - विजय । कीधि - की । सूर - वीर । लूटिवै - लूटनेको । सिरोह - मिरोही । कोट - गढ । मुकाम - डेरा, पडाव । कीधि - किया ।
१८६. राव सुरताण - मिरोहीका राव । भ्रमै - भ्रमण करती है । वनि वनि - वन-वनमे । चित भग - पागल । पथर - प्रस्तर । साथरा - संस्तर, विछौना, शय्या । पिलग - पर्यको । पवै - पवंत । तरा - वृक्षो, तरुओ । मछरीकां - चीहानो । चमकै - चोक्ता है । हियै - हृदयमे । सालै - शल्य रूप होते हैं । हीका - दर्द, टमक, चीस ।

त्रिय थकित^१ महल^२ चढतां तिकै^३, तिकै^४ चढै गिर तरवरा^५ ।
 भवि 'सूरतणै' मछरीक भड, एम^६ हुवा थरहर उरां ॥ १८६
 त्रासमाण सुरताण^७, माण पौरस^८ बळ^९ मूकै^{१०} ।
 करै निजर केवाण^{११}, चित्तवै^{१२} राण^{१३} स^{१४} चूकै^{१५} ।
 गज^{१६} भिडज्ज^{१७} गढ^{१८} गाम, करा द्रब^{१९} दीध पेसिकस^{२०} ।
 हू^{२१} चाकर हुकमरौ, एम^{२२} कहियौ^{२३} तजि^{२४} अजस ।
 ईहगां^{२५} घणौ^{२६} विरदावियौ^{२७}, मारू अमली^{२८} माणनू^{२९} ।
 आपरौ करे^{३०} दीधी उतन, तरै राव सुरताणनू ॥ १८७
 ताम^{३१} खवरि^{३२} बहु^{३३} तेज, अई गुजर^{३४} धरवाळी ।
 कीध बहादर^{३५} किलम, करण जुध फौज कराळी ।

१ ग. थकित । २ ख मलहि । ग महलि । ३ ख तिके । ग निके । ४ ग तिके ।
 ५ ख. वरतरां । ६ ग ऐम । ७ ग सूरतांण । ८ ख पौरिस । ग. पौरिस । ९ ग.
 वल । १० ख मुक्के । ग मूक्के । ११ ख ग केवाण । १२ ख ग चीतवै । १३ ख
 राण । १४ ख सु।ग सुं । १५ ख ग चुक्के । १६ ख गज्ज । १७ ख ग भिडज्ज ।
 १८ ख वलि । ग वलि । १९ ख द्रव । २० ख ग पेसकस । २१ ख हूं । २२ ग
 ऐम । २३ ख ग कहियौ । २४ ग तज । २५ ख एहगा । ग ऐहगा । २६ ख ग.
 घणा । २७ ख ग विरदावियौ । २८ ग अवली । २९ ख. माणनू । ३० ग करै ।
 ३१ ग ताम । ३२ ख खवरि । ३३ ख बहु । ३४ ख ग गुज्जर । ३५ ख वाहर ।
 ग. बाहादर ।

१८६ त्रिय — स्त्रिणँ । थकित — थक जाती है । तिकै — वे । गिर — पर्वत । तरवरा —
 तरवरो, वृक्षो । भवि — भय । सूरतणै — सवाई राजा सूरसिंहके । मछरीक — चौहान ।
 एम — इस प्रकार । थरहर — कपायमान । उरा — हृदयमे ।

१८७ त्रासमाण — आतकित । मांण — गर्व, मान । पौरस — शक्ति, बल । मूकै — छोडते हैं ।
 केवाण = कृपाण — तलवार । चित्तवै — विचार करते हैं । गज — हाथी । भिडज्ज —
 घोड़ा । करा — हाथो । द्रब — द्रव्य । दीध — दिया । पेसिकस — नजराना, भेंट ।
 कहियौ — कहा । तजि — छोड कर । अजस — गर्व, अभिमान । ईहगां — चारण
 कवियो । विरदावियौ — उत्साहित किया, जोश बधाया । मारू — मारवाडका
 अधिपति, राठौड । अमली माणनू — ऐश्वर्य या अधिकारोका उपभोग करने वालोको ।
 दीधी — दिया । उतन — वतन, जन्मभूमि । तरै — तब ।

१८८ ताम — उस, उन । खवरि — सदेश । अई — आई । गुजर धरवाळी — गुजरातकी ।
 कीध — किया । बहादर — मुजपफरका पुत्र बहादुर । किलम — यवन, मुसलमान ।
 करण — करनेके लिए । जुध — युद्ध । कराळी — भयकर, जवरदस्त ।

सभे कूच तिण समे^१, दळा आवळां वहादर^२ ।
 ज्वाळा मभ^३ घत जेम, क्रोध ऊफणे^४ भयकर ।
 इम^५ 'सूर'^६ जीत^७ दूजौ अभग, आरंभ^८ दळ हालै^९ इसी ।
 ऊभळ^{१०} छौळ पौरस उभळि^{११}, जळावोळ^{१२} सामद^{१३} जिसी ॥ १८८
 करै^{१४} केईक मुकाम^{१५}, अधिक आतुर दळ प्राया ।
 मुणे वहादर^{१६} साह, चढे सांमुहा^{१७} चलाया ।
 वहै थाट दहुं^{१८} वळा^{१९}, सरा नदिया^{२०} जळ सूकै ।
 चाकै दहुं^{२१} दळ चढै, घरा^{२२} गुजरात धधूकै^{२३} ।
 नीसाण भडा^{२४} डेरा निजर^{२५}, दळां वळां^{२६} दरसाविया^{२७} ।
 कळिचाळ कमध^{२८} दारण^{२९} किलम, आरण कारण आविया^{३०} ॥ १८९

१ ख ग समे । २ ख वाहादर । ग वाहादर । ३ ख ग मभ । ४ ख ग उफणे ।
 ५ ख ग इम । ६ ख ग सूर । ७ ख ग जीत । ८ ख ग आरंभ । ९ ख ग हालै ।
 १० ख ग ऊभळ । ११ ख ग उभळि । १२ ख ग जळावोळ । ग जळावोळ ।
 १३ ख ग सामद । १४ ख ग करै । १५ ख ग मुकाम । १६ ख ग वाहादर ।
 १७ ख ग सामुहा । १८ ख ग दहुं । १९ ख ग वळा । २० ख ग नदियां । २१ ख
 ग दहुं । २२ ख ग घरा । २३ ख ग धधूकै । २४ ख ग उडा । २५ ख ग नजर ।
 २६ ख ग वळां । २७ ख ग दरसाविया । २८ ख ग कमध । २९ ख ग दारण ।
 ३० ख ग आविया ।

१८८ सभे कूच - प्रस्थानकी तैयारी की । तिण समे - उम समय । दळां - फौजो, मेनाएँ ।
 आवळां - जवरदस्त मजबूत, दृढ । वहादर - वहादुरशाह । ज्वाळा - आग । मभ -
 मध्य । घत - घृत । जेम - जैसे । इम - इम प्रकार । सूर - सवाई राजा मूरमिह,
 वीर । दूजौ - दूमरा । अभग - वीर । आरंभ - युद्ध । दळ - सेना । हालै -
 चलता है । इसी - ऐसा । ऊभळ - छलकना, पानीका किनारोके उपर हो कर
 वहना । छौळ - तरग, हिलोर । पौरस - शक्ति, बल । उभळि - उमड़ कर ।
 जळावोळ - जल ही जलका फेंकाव । सांमुहा - ममुद्र । जिसी - जैसा ।

१८९. केईक - कई । मुकाम - पडाव, डेरा । आतुर - त्वरायुक्त । सांमुहा - सम्मुख,
 सामने । थाट - सेना, फौज । दहुं - दोनो । वळा - थोर, तरफ । सरा - तालावो ।
 चाकै दहुं दळ चढै - दोनो दल चक्रित हो जाते हैं । घरा - पृथ्वी, भूमि । धधूकै -
 कम्पायमान होती है । दळां - सेनाओ । वळां - तरफ, थोर । दरसाविया - दिखाई
 दिये । कळिचाळ - योद्धा, वीर युद्ध । दारण - दाखण, भयकर, जवरदस्त । किलम -
 मुसलमान । आरण - युद्ध । आविया - आये ।

झूहा^१— 'सूर' पांन ले साहरो, अर्यौ करण अखियात ।
 धर मुदफर सिर छत्र धर^२, विसटाळा^३री^४ वात ॥ १६०
 काळ रूप चड्ढी^५ किटक^६, सूरसाह पतिसाह ।
 दहुंव^७ दळा^८ नाळां दगै^९, गोळा भड गजगाह^{१०} ॥ १६१

छद कलहस

उड^{१०} रीठ गोळा^{११} नाळ भळपट ऊपडै^{१२} ।
 धड पडै अपहड घाट^{१३} धरपुड^{१४} धडहडै^{१५} ।
 अरडाव घोर^{१६} अधार रौद्रव रूपरा ।
 रवि ताम ग्रीखम रूप, भड सह^{१७} ऊपरा^{१८} ॥ १६२
 उडि वाण^{१९} तीर अपार, असि आफाळिया^{२०} ।
 मेलिया अरि घड माहि, लोहि^{२१} उलाळिया^{२२} ।
 घण धमक साबळि^{२३} घाट, नीछटि^{२४} नारगा ।
 हद वरै वर बहु^{२५} हूर, बधि^{२६} बधि वारगा^{२७} ॥ १६३

१ ख दोहा । ग झूहो । २ ख धरि । ग धरे । ३ ख ग विसटाळो । ४ ख ग की । ५ ख ग चढीया । ६ ख ग कटक । ७ ख ग दहू । ८ ख वळा । ग. वळां । ९ ख दगे । १० ख ग उडि । ११ ख गोला । १२ ख उपडै । १३ क घाट । १४ ख धरपुड । १५ ख ग घडहडै । १६ ग घोर । १७ ख साहै । ग सौहो । १८ ख ग. भूपरा । १९ ख वाण । ग वाण । २० ख ग आफाळीया । २१ ख ग लोह । २२ ख. ग उलालीया । २३ ख ग सावल । २४ ख ग नीछट । २५ ख वहो । ग. बहो । २६ ख. ग बधि बधि । २७ ख ग वारगा ।

१६० सूर - सवाई राजा सूरसिंह । पांन - पानका बीडा । साहरो - बादशाहका । अखियात - अद्भुत । धर - भूमि, राज्य । मुदफर - मुजफफर । विसटाळारी - मध्यस्थताकी ।

१६१ काळ - यमराज । चड्ढी - चढा । किटक - कटक, सेना । सूरसाह - सवाई राजा सूरसिंह । दहुव - दोनो । दळा - सेनाओ । नाळा - तोपो, तोपें । दगै - दगती है । भड - वर्षा । गजगाह - युद्ध ।

१६२ रीठ - प्रहार । भळपट - आगकी लपट । ऊपडै - उठती है । अपहड - चीर, योद्धा । धरपुड - पृथ्वीकी तह । घडहडै - ध्वनिमान होती है । अरडाव - ध्वनि, आवाज । रौद्रव - भयकर । रवि - सूर्य ।

१६३ असि - घोडा । आफाळिया - चलाये । अरि - शत्रु । घड - सेना । घण - बहुत । धमक - आवाज, ध्वनि । साबळ - भाला विशेष । घाट - शरीर । नीछटि - निकल कर, प्रहार कर । नारगा - तलवारो । हद - बहुत । वरै - वरण करती है । धर - पति । बहु - बहुत । हूर - अप्सरा । बधि बधि - बढ-बढ कर । वारगा - अप्सराएँ, स्वर्गकी वेश्याएँ ।

भूळ रूप वीह^१ भूट^२ भाट, दुगम डडेहडा^३ ।
 जुध^४ पड़े सूर ब्रजागि^५, वह^६ धड वेहडा^७ ।
 वीह^८ करै भड़ गळ वाह^९, रण मभि रोसहू^{१०} ।
 पिंड^{११} जड़े सूर अपार, जमदद जोसहू ॥ १६४
 'किसनेस' वधव^{१२} कणैठ, अरि खग श्रीभूडे^{१३} ।
 रघु^{१४} मोहरि^{१५} लका राडि, लखमण किर लड़े ।
 पित मोहरि^{१६} 'गजण' प्रचड, जग^{१७} चख जेहडौ ।
 तपवंत लड़े सतेज, 'अरिजण' एहडौ^{१८} ॥ १६५
 कमधज्ज लड़े कराळ, उरड अथाहरा ।
 सह^{१९} पड़े भड़ सिरदार, मुदफरसाहरा ।

१ ख वही। ग. वीही। २ ख ग घग। ३ ग डडेहडां। ४ ग. जुधि। ५ ख. ग
 ब्रजागि। ६ ख वही। ग वही। ७ ख वेहडा। ग वेहडा। ८ ख वही। ग वही।
 ९ ख. ग. वाह। १० ग पिंडि। ११ ख. वधव। १२ ख श्रीभूडे। १३ ग रघू।
 १४ ख ग महौरि। १५ ख. ग महौरि। १६ ख भग। १७ ग ऐहडौ। १८ ख
 सोही। ग सोही।

१६४ भूळ - आगकी लपट। वीह - बहुत। भूट - शीघ्र, प्रहार। भाट - प्रहार। दुगम -
 दुर्गम, कठिन। डडेहडा - डडा रास। पड़े - वीर गति प्राप्त होते हैं। सूर - शूर-
 वीर, वहादुर। ब्रजागि - जवग्दस्त, वज्राग्नि। वेहडा - एकके ऊपर एक इस क्रमसे।
 वीह - बहुत। भड़ - योद्धा। गळ - गर्दन, कठ। वाह - प्रहार। रण - युद्ध।
 मभि - मध्य, मे। रोसहू - जोशपूर्वक, क्रोधपूर्वक।

१६५ किसनेस - सवाई राजा सूरसिंहका छोटा भाई किशनसिंह राठौड जो किशनगढ
 राज्यका सस्थापक था। वधव - भाई। कणैठ - कनिष्ठ, छोटा। अरि - शत्रु।
 श्रीभूडे - काटता है, मारता है। रघु - श्रीरामचन्द्र भगवान। मोहरि - अगाडी।
 राडि - युद्ध, युद्धमे। लखमण - लक्ष्मण। पित - पिता। गजण - महाराज कुमार
 गजसिंह। जग चख - जगत्-चक्षु, सूर्य। जेहडौ - जंसा। तपवंत - ऐश्वर्यवान,
 तेजस्वी। सतेज - तेजपूर्वक। अरिजण - वीर अर्जुन। एहडौ - ऐसा।

१६६. कमधज्ज - राठौड। कराळ - भयंकर। उरड - साहस, पराक्रम। अथाहरा -
 अपारके। सह - सब। भड़ - योद्धा। मुदफरसाहरा - मुजफरशाहके।

आवादा^१ नर ईत^२, भिलै हंडुळाहट^३ भूलां ।
जमी नोख^४ गुलजार, फवै सुव्रण मय फूलां ।
ऊपजै दरव^५ वह^६ वह उडै, साह खजाना^७ सामले^८ ।
जोघाण नाथ जोघाणरै, कोडि दरव चाडै किले ॥ १९९

सोरठा^९

सग्रह धन करि 'सूर', कर^{१०} काठा पह^{११} नह^{१२} क्रिया^{१३} ।
पाता ब्रद जस पूर, उदक अठारह^{१४} अर्पिया^{१५} ॥ २००
असि सिरपाव अपार, करि जवहर मोती कडा ।
ब्रविया^{१६} पह^{१७} जिण वार, उच्छव^{१८} जस कजि 'ऊदउत'^{१९} ॥ २०१

*

कवित्त दोढी^{२०}

प्रथम लाख समपियौ^{२१}, कवी^{२२} वारट^{२३} 'सकर' कर ।
लखपति वारट^{२४} लाख, दीध दूजौ करि^{२५} डवर^{२६} ।

१ ग. आवादा । २ ख. न ईयत । ३ ख ग. हिमुलाहट । ४ क. नोख । ५ ख दरव ।
६ ख वही । ग. वही वही । ७ ख. खजाना । ग खजानां । ८ ख ग सामिले ।
९ ख. डूहा । ग डूहा सोरठा । १० ग करि । ११ ख पौही । ग पोही । १२ ग न ।
१३ ख ग कीया । १४ ख अवारह । ग अठार । १५ ख ग आपीया । १६ ख ग
ब्रवीया । १७ ख पौही । ग पही । १८ ख. ग उच्छव । १९ ख. ग ऊदऊद ।

*ख और ग. प्रतियोमे उक्त सोरठके अतिरिक्त निम्नलिखित मोरठा अधिक मिला ।

सूरज तेरह साख नायक सूरजसिंघ नृप ।

लहरि टैक खट लाख, एहगा दीधा ऊदऊत ॥ ३

२० ख ग दोढी । २१ ख ग समपियौ । २२ ग कवि । २३ ख वारट । ग वारहट ।
२४ ख ग वारट । २५ ग. कर । २६ ख डवर ।

१९९ नोख - श्रेष्ठ, उत्तम । गुलजार - उद्यान, वाग, वाटिका । फवै - शोभा देती है, शोभा
देने है । सुव्रण - सुवर्ण, सोना । मय - सहित । ऊपजै - उत्पन्न होते है । दरव -
द्रव्य । वह - बहूत । उडै - खर्च होता है । साह - वादगाह । सामले - शामिल ।
जोघाण - जोघपुर । कोडि - करोडो ।

२०० संग्रह - एकत्रित । सूर - सवाई राजा सूरसिंह । काठा - रोक । पह - प्रभु राजा ।
नह - नहीं । पाता - पात्रो, कवियो । ब्रद - विद्द । पूर - पूर्ण । उदक - जल-
मकल्पने दी जाने वाली दानकी भूमि या ग्राम । अर्पिया - अर्पण क्रिये, दान दिये ।

२०१ असि - घोडा । सिरपाव - शिरसे पैरो तकका पहनावा, शिरोपाव । करि - हाथी ।
जवहर - जवाहिगत । कडा - बलय । ब्रविया - दान दिये । उच्छव - उत्सव ।
कजि - लिए । ऊदउत - उदयसिंहका पुत्र राजा सूरसिंह ।

२०२ लाख - लक्ष रुपयेके मूल्यका पुरस्कार, लक्ष प्रसाद । समपियौ - समर्पण क्रिया, दान
दिया । सकर - शकर वारहठ जिसे बीकानेरके महाराजा रायसिंहने भी करोड पसावका
पुरस्कार दिया था । लखपति - लखा वारहठके नामके लिए प्रयोग किया गया है ।
दीध - दिया । दूजौ - दूमरा । डवर - उत्सव, हर्ष ।

तीजौ लख तिण वार, 'अजा' भादा कर^१ अर्प्यै^२ ।
 भण^३ ताराचद भाट, मौज लख चवथ समप्यै^४ ।
 पात नाम भट 'गोप'^५, करे जस प्रकट सकाजा ।
 मौज लाख पाचमौ, जेण बगसे^६ महाराजा^७ ।
 पह^८ 'सूर' करे^९ रूपक परख, वरे^{१०} कुरब^{११} बह^{१२} क्रीत वर^{१३} ।
 छत्रपती^{१४} लाख दीधौ^{१५} छठौ, कविया^{१६} भानीदान^{१७} कर^{१८} ॥ २०२

कवित्त छप्पै

करे^{१९} रीभ इम कमध, सूर उगतै^{२०} दळ सब्बळ^{२१} ।
 अमरचद^{२२} उण वार, दुद कीधौ दखिणी दळ ।
 साह तांम दिस 'सूर', मांडि^{२३} दीधौ फुरमाणौ^{२४} ।
 इम लिखियौ^{२५} नूप आप, दुद मेटौ दखिणाणौ^{२६} ।

१ ख ग करि । २ ख अर्प्ये । ३ ख ग भणि । ४ ख समप्ये । ५ ग. गोप्य ।
 ६ ख वगसे । ७ ख महाराजा । ८ ख ग पौहौ । ९ ग करै । १० ख
 ग ववे । ११ ख. कुरव । १२ ख ग वहौ । १३ ख ग वरि । १४ ग छत्रपति ।
 १५ ग दीधो । १६ ख. ग. कवीयां । १७ ख ग भानीदास । १८ ख ग करि ।
 १९ ख ग करै । २० ख ग भुगतै । २१ ख. सब्बल । २२ ख ग चपू । २३ ख
 माणि । २४ ख ग फुरमाण । २५ ख ग लिषीयो । २६ ख ग दिषणाण ।

२०२ तीजौ - तीसरा । लख - लाख पसाव, लक्ष प्रसाद । अर्प्ये - अर्पण किया, दान दिया ।
 भण - कहते हैं । मौज - दान, पुरस्कार । चवथ - चतुर्थ, चौथा । समप्ये - समर्पण
 किया, दिया, दान दिया । सूर - सवाई राजा सूरसिंह । रूपक - काव्य । परख -
 परीक्षा कर के । वरे - स्वीकार कर के । कुरब - सम्मान, मान । क्रीत - कीर्ति, दिया ।
 वर - प्राप्त कर । छत्रपती - राजा । दीधौ - दिया । छठौ - छठवाँ । कविया -
 चारण कुलका एक गोत्र विशेष । कर - हाथ ।

२०३. रीभ - पुरस्कार । इम - इम प्रकार । सूर - सूर्य । उगतै - उदय होते ही । सब्बळ -
 सबल, शक्तिशाली । अमरचद - निजामुल्मुल्क सेनाका सेनापति अवर चपू ।
 उण वार - उस समय । दुद - द्वन्द, उपद्रव, उत्पात । कीधौ - किया । दखिणी -
 दक्षिणी । दळ - सेना । साह - बादशाह । तांम - उस । दिस - तरफ, ओर । सूर -
 सवाई राजा सूरसिंह । मांडि - लिख कर । दीधौ - दिया । फुरमाणौ - राजकीय
 आज्ञा-पत्र, पत्र, फरमान । लिखियौ - लिखा । मेटौ - मिटा दो । दखिणाणौ -
 दक्षिणियोका ।

सुण^१ 'सूर साह' दळ वळ^२ सभे^३, राजा पौरस रूपरा ।
 रस^४ करे^५ घरा गुजरातरी^६, आयौ दक्खण^७ ऊपरा ॥ २०३
 सहस तेर' असवार, सीह सादूळ समोसर^८ ।
 वीस गयद वेछाड^९, निहस^{१०} पावस गिर नीभर^{११} ।
 वडी नाळ^{१२} दस विखम, घोम^{१३} सतपच मुहर^{१४} घर^{१५} ।
 तीन राडि^{१६} विच^{१७} जीत^{१८}, आयौ रेवा नदि उतर^{१९} ।
 आवियौ^{२०} 'सूर' साभळि^{२१} 'अमर', सभि दळ चाळी सैसहस ।
 पच सहस^{२२} घोम^{२३} गज वीस पंच, आयौ सभि छिवती^{२४} उरस ॥ २०४
 दानयार^{२५} दहलियौ^{२६}, हुती सभि^{२७} हफत हजारी ।
 तजि हरवळ तापहूं^{२८}, भिले^{२९} चंदवळ दळ भारी ।

१ ख ग सुणि । २ ख वळ । ३ ग सभे । ४ ख. ग रसि । ५ ग करे । ६ ग गुजराति । ७ ख दक्खण । ग दिक्खण । ८ क समोसर । ९ ग वेछाड । १० ख ग निहस । ११ ग नीभरि । १२ ख ग नाळि । १३ ग घोम । १४ ख मोहोर । ग मोहोरि । १५ ख ग घरि । १६ ग राडि । १७ ग वीचि । १८ ख ग जीति । १९ ख उतर । ग उत्तरि । २० ख ग आवीयो । २१ ग सांभळि । २२ ख सहस । ग सहसि । २३ ग घोम । २४ ख ग छिवती । २५ ग. दानियार । २६ ख ग दहलीयो । २७ सुणि । ग सुजि । २८ ग तापहु । २९ क भिले ।

२०३ सूर साह—सवाई राजा सूरसिंह । सभे—सज्जित कर के । पौरस—शक्ति, बल । रस—वशमे, अधीन । दक्खण—दक्षिण । ऊपरा—ऊपर ।

२०४ सहस तेर'—तेरह सहस्र, तेरह हजार । सीह सादूळ—शाहूँलसिंह । समोसर—समान, तुल्य । गयद—गजेन्द्र, हाथी । वेछाड—उदण्ड । निहस—नगाडेकी ध्वनि, ध्वनि । पावस—वर्षा । गिर नीभर—पर्वतका भरना, भरना । वडी नाळ—तोप । विखम—विषम, भयकर । घोम—तोप । मुहर—अगाडी । घर—रख कर । राडि—युद्ध । विच—मे । आवीयो—आया । सूर—सवाई राजा सूरसिंह । अमर—अम्वर चपू । पच—पाच । सभि—कटिबद्ध होकर । छिवती—स्पर्श करता हुआ । उरस—आसमान ।

२०५ दानयार—शाहजादा दानयार । दहलियौ—भयभीत हुआ, घबरा गया । हुती—था । हफत हजारी—सात हजारी । हरवळ—सेनाका अग्र भाग । तापहूं—भयसे, चंदवळ—सेनाका पीछेका भाग, चदावल ।

‘सूरसाह’ तिण समै, अडर^१ सामुहा^२ चलाया^३ ।
 वजि त्रवाळ^४ चहु^५ वळा^६, दुरम^७ आरवा^८ दगाया ।
 इक^९ पडै^{१०} रीठ गोळा अतर^{११}, देखि रूठा कमधज राडिया^{१२} ।
 भूखाळ वधै^{१३} जिम^{१४} देखि भख, आया वागा उपाडिया^{१५} ॥ २०५

अठी ‘सूर’ पह^{१६} अडर, उठी ‘अमर’^{१७} असपत्ती^{१८} ।
 मिळे लोह^{१९} मेलिया^{२०}, काळचाळा कुदरती^{२१} ।
 घमक सिलह वंध^{२२} घटा, भळळ सावळ^{२३} भालाळां ।
 गजर कराळां गजर^{२४}, काळ^{२५} भाळा किरमाळा^{२६} ।

१ ख अरड । २ ख सामुहा । ग सामुहां । ३ ख चलाया । ४ ख त्रवाळ ।
 ५ ख ग. डुहु । ६ ग वळां । ७ ख ग दुगम । ८ ख आरवा । ९ ख ग यक ।
 १० ख ग पडे । ११ ग अतर । १२ ख ग राडीया । १३ ख ग वाघ । १४ ख
 ग. जिम । १५ ख ग उपाडीयां । १६ ख ग पौहो । १७ ख ग अम्मर । १८ ख
 ग असपत्ती । १९ ग लोहि । २० ख मेलीया । ग मेठीया । २१ ख कुदरती ।
 २२ ख वंध । २३ ख. ग सावल । २४ ख ग गजा । २५ ग. काळा । २६ ख.
 करमाळां । ग करिमाला ।

२०५ सूरसाह—सवाई राजा सूरसिंह । तिण—उस । समै—समय । अडर—निशक,
 निर्भय । सामुहा—सम्मुख, सामने । वजि—वज कर । त्रवाळ—नक्कारा, नगाडा ।
 चहु, वळा—चारो ओर । दुरम—जवरदस्त, भयकर । आरवा—तोपे । दगाया—
 दागी गई, तोपें छोडी गई । इक—एक तरफ, एक । रीठ—प्रहार । अतर—
 भयकर । रूठा—कुपित हुए । राडिया—युद्धप्रिय, योद्धा, लडाई करने वाले ।
 भूखाळ—भूवा, वुभुक्षित । जिम—जैसे । देखि—देख कर । भख—भटय । आया
 वाग उपाडिया—घोडोकी वागें तेजीमे उठाते हुए आए ।

२०६ अठी—इस तरफ, इस ओर । सूर—सवाई राजा मूरसिंह । अडर—निर्भय, निशक ।
 उठी—उस ओर । अमर—अम्वर चपू । असपत्ती—यवन । मिळे लोह मेलिया—
 अस्त्र-शस्त्रोंसे युद्धार्थ भिड गये । काळचाळा—मौतसे छेड़छाड करने वाले, योद्धा ।
 कुदरती—स्वभावमे ही, प्राकृतिक । घमक—ध्वनि । सिलह—अस्त्र-शस्त्र । घटा—
 शरीरो । भळळ—चमक, दमक । सावळ—भाला विशेष । भालाळा—भालाधारी
 योद्धा । गजर—प्रहार या प्रहारकी ध्वनि । काळ भाळां—मौतकी आग । किरमाळा—
 तलवारो ।

जमदग्ना भचक त्रण पहर^१ जुडि, 'सूरसाह'^२ जीती समर ।
 लूटे अराव गज ढल लिया^{*}, आव^३ छडे^४ भागी 'अमर' ॥ २०६
 सका^५ गजा सिरपोस, मसत गज फतै^६ ममारख ।
 'सूरसाह' साहनू, पेस मेल्हे^७ करि पारख ।
 नाह फतै साभळे, जाम गज भिडज जवाहर ।
 ताम तेग^८ नय^९ वत्रि^{१०}, धूप समसेर^{११} जमंधर ।
 मोकळे^{१२} वधारा^{१३} मभिमूलक, दिल फुरमाण लिखे^{१४} दीयी^{१५} ।
 श्री^{१६} फतै^{१७} ममारख गज अनड, पेस राखि वळि आपियी^{१८} ॥ २०७
 दूहा^{१९}—धर गुज्जर^{२०} दक्षिण^{२१} धरा, करि जुध फतै अनेक ।
 'सूर' अमल दहुवै^{२२} दिसा, इळा^{२३} हुकम किय^{२४} एक^{२५} ॥ २०८

१ ख पौहोर । ग पौहीर । २ ग सूरसाह ।

*यह चरण ख और ग प्रतियोमे निम्न प्रकार है—

लूटे आरा बदल गज लीया । ३ ख ग आव । ४ ख ग छाडि ।
 ५ ख ग सको । ६ ग फते । ७ ख ग मेले । ८ ख तोग । ग तोप । ९ ख
 नव । ग नच । १० ख वति । ग वत्रि । ११ ग समसेर । १२ ग. मोकलै ।
 १३ ख ग वधारा । १४ ग लीखे । १५ ख ग दीयी । १६ ग श्री । १७ ख
 फते । १८ ख ग आपीयी । १९ ग दूहा । २० ख गुज्जर । ग गुजर । २१ ख.
 दक्षिण । ग दक्षिण । २२ ख. दहुवै । २३ ख ग यळा । २४ ख ग कीय । २५ ग ऐक ।

२०६ जमदग्ना—कटारो । भचक—प्रहार या प्रहारकी ध्वनि । त्रण—तीन । जुडि—
 भिड कर । सूरसाह—सवाई राजा सूरसिंह । जीती—जीता । समर—युद्ध । अराव—
 तोपादि । आव—काति, प्रतिष्ठा । भागी—भाग गया । अमर—अम्वर चपू ।

२०७ सका—सव । सिरपोस—शिरत्राण, शिरका टोप । मसत—मस्त । गज—हाथी ।
 फतै ममारख—हाथीका नाम । सूरसाह—सवाई राजा सूरसिंह । साहनू—वाद-
 शाहको । पेस—भेंट, नजर । मेल्हे—भेजे । पारख—परीक्षा । फतै—फनह, विजय ।
 साभळे—सुन कर । जाम—वस्त्र, कपडा । भिडज—घोडा । जवाहर—जवाहिरात ।
 ताम—उस । तेग—एक खास वनावटकी तलवार, तलवार । नय वत्रि—(?) ।
 धूप—एक खास वनावटकी तलवार । समसेर—तलवार । जमंधर—एक खास वना-
 घटकी कटार । मोकळे—भेज कर । वधारा—वृद्धि । मभिमूलक—मे, मध्य । फुरमाण—
 आज्ञा पत्र । श्री—यह । अनड—यहाँ हाथीके लिए अर्थ है परन्तु गजके साथ सह-
 चारी रूपसे प्रयोग है । पेस—भेंट । वळि—फिर, और । आपियी—दिया ।

२०८. गुज्जर—गुजरात । दक्षिण—दक्षिण । धरा—पृथ्वी । सूर—सवाई राजा सूर-
 सिंह । अमल—अधिकार, शासन । दहुवै—दोनो । इळा—पृथ्वी ।

अकबर^१ असपति आथमै^२, धर दिली छत्रधार ।
 पाट विराजे छत्रपती^३, जाहगीर^४ जिण वार ॥ २०६
 तेडे राजा 'सूर'^५ तदि, अए साह अजमेर ।
 'सूर' मिले^६ दे^७ कुरब^८ सजि, साह दीध समसेर ॥ २१०
 महिपति^९ कुवर मिळावियौ^{१०}, पाटोघर^{११} 'गजपत्ति'^{१२} ।
 रीधौ मिळता ही रवद^{१३}, पेख^{१४} जोम असपत्ति^{१५} ॥ २११
 परखण वळ^{१६} 'गजपत्ति'रौ, बकौ^{१७} धर^{१८} गढ^{१९} वीर ।
 दुभल जुदौ^{२०} मनसुब^{२१} दियौ, जाळधर जहगीर^{२२} ॥ २१२
 सोरठा^{२३}

प्रथम बगसि^{२४} सिरपाव, जमदढ खग जवहरत जडित ।

हाथी गढ हैराव, साह दीध 'गजसाहनू'^{२५} ॥ २१३

१ ख अकबर । २ ख आथमै । ३ ख ग असपती । ४ ख. जाहागीर । ग जाहां-
 गीर । ५ ख सुर । ६ ख मिले । ७ ख ग तदि । ८ ख कुवर । ९ ख ग.
 महपति । १० ख ग मिलावीयो । ११ ग पाटोघर । १२ ख ग गजपति । १३ ग.
 जरवद । १४ ख. ग पेधि । १५ ख ग असपति । १६ ख ग वळ । १७ ख ग.
 वकौ । १८ ख ग. गढ । १९ ख ग धर । २० ख ग. जुद । २१ ख ग सुषदीयो ।
 २२ ख ग जाहागीर । २३ ख. सोरठा दूहा । ग सोरठा दुहा । २४ ख. ग बगसि ।

२०६. असपति - बादशाह । आथमै - अवसान हो गया, अस्त हो गया । धर - राज्य ।
 छत्रधार - छत्रको धरने वाला, बादशाह, राजादि । पाट - राज्यसिंहासन । विराजे -
 सुशोभित हुआ, सिंहासनासीन हुआ, तखननसीन हुआ । जिण वार - जिस समय ।
 तेडे - बुलाये ।

२१०. सूर - सवाई राजा सूरसिंह । तदि - तव । अए - आये । साह - बादशाह । कुरब -
 मान, प्रतिष्ठा । दीध - दी । समसेर - तलवार ।

२११ महिपति - राजा, नृप । कुंवर - कुमार । मिळावियौ - मिलाया । पाटोघर - राज्य-
 सिंहासनाधिकारी, पदाधिकारी, युवराज । गजपत्ति - महाराजकुमार गजसिंह ।
 रीधौ - प्रसन्न हुआ । रवद - यवन, बादशाह । पेख - देख कर । जोम - जोश ।
 असपत्ति - बादशाह ।

२१२ परखण - परीक्षा करनेको । गजपत्तिरौ - महाराजकुमार गजसिंहका । बकौ - बाकुरा ।
 दुभल - योद्धा, वीर । मनसुब - पद, श्रोहदा, मनसब ।

२१३ बगसि - बरूश कर, पुरस्कार दे कर । सिरपाव - सिरपोपव । जमदढ - एक प्रकारका
 कटार विशेष । खग - तलवार । जवहर - जवाहिरात, रत्न । जडित - जडा हुआ ।
 हैराव - हयराज, घोडा । साह - बादशाह । दीध - दिये । गजसाहनू - महाराज-
 कुमार गजसिंहको ।

क्वचित्त- समपि^१ यतौ^२ पतिसाह, एम^३ 'गजपतिहू'^४ अक्खे^५ ।
 जाळधर करि जबति^६, खल^७ थाणा धर रक्खे^८ ।
 मुहम सिरोही मुलक, सरद करि लेहु पेसकस ।
 लेहु सलामी लडे^९, विखम मेवाड करे वस ।
 सुणि हुकम एम^{१०} पतिसाहरौ, उरस छिबे^{११} छक ऊमहै^{१२} ।
 आपरा हुकम माफक अमल, करू एम^{१३} 'गजबध'^{१४} कहै^{१५} ॥ २१४
 विदा होय तिण वार, मसत गज जेम मलप्पे ।
 आफ्रीवादह वाह^{१६} उभै, राहां कथ अप्पे ।
 जोम विखम^{१७} दी जती, भौम^{१८} मुख रग भळाहळ ।
 करण होम केविया^{१९}, भळळ रवि धोम^{२०} भळाहळ ।

१ ग. समप । २ ख ग. इतौ । ३ ग. ऐम । ४ ख. जगपति । ५ ख अण्णे । ग.
 अण्णै । ६ ख जबत । ग जबत । ७ ख. ग खिल । ८ ख रण्णे । ग रणे । ९ ख.
 लडे । १० ग. ऐम । ११ ख. छवे । ग छवै । १२ ख ऊमहे । १३ ख ग येम ।
 १४ ख गजबंध । १५ ख कहे । १६ क. वाह । १७ ख. दीष । ग वीण्ष । १८ क.
 भोम । १९ ख ग केवीया । २० ग. धौम ।

२१४ समपि - दे कर, प्रदान कर । यतौ - इतना । पतिसाह - वादगाह । एम - इस प्रकार ।
 गजपतिहू - महाराज कुमार गजसिंहसे । अक्खे - कहा । जाळधर - मारवाड राज्या-
 न्तर्गत जालोर नगर । जबति - ज्वेत । खळ - शत्रु । थाणा - चौकियो । मुहम -
 मुहिम, मडाई, युद्ध, आक्रमण । सरद - मर्द, वेरीनक, शिथिल, पराजित । पेसकस -
 वडोको दी जाने वाली भेंट, नजराना, दण्ड । विखम - विषम, जवरदस्त । उरस -
 आसमान, आकाश । छक - जोश । ऊमहै - उमगित होता है । माफक - माफिक,
 अनुकूल । अमल - अधिकार, शासन । गजबध - महाराज कुमार गजसिंह ।

२१५ विदा - प्रस्थान, कूच । तिण वार - उस समय । मसत - मस्त । गज - हाथी । जेम -
 जैमे । मलप्पे - चला । आफ्रीवादह - धन्यवाद, वाह-वाह । वाह - धन्य-धन्य,
 शाबास । उभै - उभय, दोनों । राहां - सप्रदायो, धर्मों । अप्पे - दिया । जोम -
 जोश । भौम मुख - लाल मुख, जोशमे लाल मुख, मगलग्रहके समान मुख्य । भळाहळ -
 देदीप्यमान, चमकयुक्त । होम - नाश, ध्वश । केवियां - शत्रुओं । भळळ - देदीप्य-
 मान, चमकयुक्त । रवि - सूर्य, भानु । धोम - अग्नि, आग उज्ज्वला । भळाहळ -
 चमकयुक्त, देदीप्यमान ।

गज चढे आय वारै^१ 'गजण', 'अजण' रूप दरसावियौ^२ ।
 तोलतौ करां असमर^३ तुरस, उरस छिबतौ^४ आवियौ^५ ॥ २१५
 मसलत^६ डेरा मडे, भडा विकराळ भुजाळा ।
 आपतणा परखिया^७, काळ^८ रूपी कळिचाळा ।
 केक^९ जोध इम कहै, चढौ इण वार चलावा ।
 केक^{१०} जोध इम कहै, आप पहला^{११} गढ^{१२} आवा ।
 के कहै खळा गढि चढि करा, करदा घाव कटारिया^{१३} ।
 इम कहै 'गजणहूं' ऊमरा^{१४}, विढवा 'सूर' विहारिया^{१५} ॥ २१६
 भडां वात सभळे^{१६}, एण^{१७} विधहूत^{१८} अकारा ।
 वहसि^{१९} 'गजण'^{२०} बोलियौ^{२१}, वधे^{२२} पौरस^{२३} जिणवारां ।
 वहसि जिसा बोलिया^{२४}, भडा मोहूत^{२५} भरोसौ ।
 पण अणचिता परा^{*}, सभा नह समर सरोसौ ।

१ ख. वारे । २ ख. ग. दरसावीयौ । ३ ख ग असमर । ४ ख. ग. छिबतौ ।
 ५ ख ग आवीयौ । ६ ग मसलति । ७ ख. ग. परषीया । ८ ख काळि । ९ ख.
 ग केइक । १० ख. केइक । ग केयक । ११ ख ग पहिला । १२ ग गढि । १३ ख.
 ग कटारीया । १४ ख उवरा । ग ऊवरा । १५ ख ग विहारीया । १६ ख ग.
 सांभले । १७ ग ऐण । १८ ख विधि । १९ ख ग वहसि । २० ख. गजण ।
 २१ ख बोलीयौ । ग बोलीयो । २२ ग वधे । २३ ख पौरस । २४ ख बोलीया ।
 २५ ख मोहुतौ । ग मोहुतौ । *ख प्रतिके अनुसार यह चरण—
 पण अण चीता चीता परा ।

२१५. वारै — बाहिर । गजण — महाराजकुमार गजसिंह । अजण — अर्जुन । दरसावियौ —
 दिखाई दिया । तोलता — उठाने पर । करा — हाथो । असमर — तलवार । तुरस —
 ढाल । उरस — आसमान । छिबतौ — स्पर्श करता हुआ ।

२१६. मसलत — मसलहत, परामर्श, सलाह । भडा — योद्धाओ । विकराळ — जबरदस्त ।
 भुजाळा — वीरो, बहादुरो । आपतणा — अपने । परखिया — परीक्षा की । काळ रूपी —
 यमराजके समान । कळिचाळा — योद्धा । केक — कई । जोध — योद्धा, वीर । के — कई ।
 करदा — तलवारो । गजणहूं — महाराजकुमार गजसिंहसे । ऊमरा — अमीर, सरदार ।
 विढवा — युद्ध करनेको, भिडनेको, टक्कर लेनेको ।

२१७ सभळे — सुन कर । एण — इस । विधहूत — प्रकारसे । अकारां — तेजस्वी, जोशपूर्वक ।
 वहसि — जोश कर, आवेगसे । बोलियौ — बोला । वधे — बढ़ा कर । पौरस — बल,
 शक्ति । जिण वारा — जिस समय । भडां — सुभटो । मोहूत — मुक्तसे । भरोसौ —
 विश्वास । पण — परन्तु । अणचिता — यकायक, चितारहित । सभां — तैयार करें ।
 समर — युद्ध । सरोसौ — रोषपूर्ण, क्रोधपूर्ण ।

पढि खत जाव^१ पठाण, भीच ऊससे भुजाळां ।
 वँछता^२ तिम हिज वणै^३, कहै इण विध^४ कळि चाळा^५ ।
 'जबदळ'^६ लिखे जवाव^७, 'गजण'^८ दिस^९ एम^{१०} धरे गहि^{११} ।
 सो नहि^{१२} असल^{१३} सिपाह, माण तजि मिलै दियै^{१४} महि ।
 आवाँ सताव^{१५} दळ सभि इहा, पेखौ हाथ सिपाहियां^{१६} ।
 गजसिध एम^{१७} जाळोर गढ, देता आया जिम^{१८} दिया^{१९} ॥ २२१
 इम कागद आवियौ^{२०}, पेखि वचे 'गजपत्ती' ।
 अग पौरस^{२१} ऊफणै^{२२}, भाहि घ्रित जेम विभत्ती ।
 कूच^{२३} होय इम कहै^{२४}, निहस तदि वजे नगारा ।
 पमग जीण^{२५} पाखरा, सभे सिलहा सिरदारा ।

१ ख जाव । २ ख वछिता । ३ ख ग वणे । ४ ग विधि । ५ ख ग चाळा ।
 ६ ख ग जबदल । ७ ख जवाव । ८ ख गंजण । ९ ख ग दिसि । १० ग ऐम ।
 ११ ख ग गह । १२ ख ग नह । १३ ख ग असलि । १४ ग दीयै । १५ ख.
 सताव । १६ ख ग सिपाहीया । १७ ख एह । ग ऐह । १८ ख तिम । १९ ख.
 ग दीया । २० ख ग आवीयौ । २१ ख ग पौरस । २२ ख ऊपणे । २३ ख कूच ।
 २४ ख. कहे । २५ ख जिम ।

२२१ जाव-जवाव । भीच-योद्धा । उससे-जोगमे हुए । भुजाळा-शक्तिशाली ।
 वछता-इच्छा करते हैं । तिम-वैसे ही । इण विध-इस प्रकार । कळिचाळा-
 योद्धाओ । गजण-महाराजकुमार गजसिंह । दिस-ओर, तरफ । सिपाह-
 योद्धा, वीर, सेना, दल, फौज । माण-गर्व । महि-भूमि । सताव-शीघ्र ।
 सभि-सज्जित हो कर । इहा-यहाँ । पेखौ-देखिये । सिपाहिया-योद्धाओ,
 वीगे । जिम-जैसे ।

२२२ आवियौ-आया । पेखि=प्रेक्ष्य-देख कर । वचे-पढ कर, पढे । गजपत्ती-
 महाराजकुमार गजसिंह । अग-शरीर । पौरस-शक्ति बल, जोश । ऊफणै-
 दवाल खाता है । भाहि-भट्टी । घ्रित-घृत, घी । जेम-जैसे । विभत्ती-
 (?) । निहस-ध्वनि, आवाज । तदि-तव । पमग-घोडा । जीण-
 घोड़ेकी पीठ पर बसी जाने वाली काठी । पाखरा-घोड़ेके कवचो । सिलहा-
 अस्त्र-शस्त्रो ।

बह^१ मडे^२ गजा मेघाडवर^३, कठठे^४ आरावा^५ सकळ ।
तन ससत्र^६ कसे चढिया^७ तुरा, दुगम सूर विमरीर दळ ॥ २२२
करे^८ ऊच^९ पौसाक, पहिर^{१०} बहु^{११} अतर परमळ^{१२} ।
कसि जमदढ खग कसे, जाप करि सकति जळाहळ ।
वडफर भुज वामग, सभे दक्खिण^{१३} भुज सावळ^{१४} ।
जाम^{१५} विक्ख^{१६} भरि जमी, वहसि असि चढे अतुळवल* ।
जमाति^{१७} जाति^{१८} वजि^{१९} त्रव^{२०} गजर, जोध जनेती उद्धव जिम ।
गढ लियण^{२१} एम^{२२} हल्ले 'गजण', तोरण वादण वीद तिम ॥ २२३

१ ख ग. वही । २ क मडे । ३ ख मेघाडवर । ४ ख ग. कठठे । ५ ख आरावा ।
६ ख ग ससत्र । ७ ख. ग चढीया । ८ ग. करे । ९ ख ग ऊच । १० ख परिर ।
ग पहिर । ११ ख. ग वीही । १२ ख. ग. परमळ । १३ ख ग दक्खिण । १४ ख ग
सावल । १५ ख जोम । १६ ग वीष ।

*यह पक्ति ख प्रतिमे नहीं है ।

१७ ख. ग जम्माति । १८ ख ग जान । १९ ख ग वजि । २० ख त्रव । ग त्रंब ।
२१ ख ग. लीयण । २२ ग ऐम ।

२२२. वह - बहुत । मडे - घोडे हाथी आदिकी पीठ पर चारजामा कसे गये । मेघाडवर -
एक प्रकारका वडा छत्र । कठठे - वोभके कारण गाडी तोप आदि चलने पर ध्वनि
निशेप हुई । आरावा - तोप, तोपो । तुरां - घोडो । दुगम - (दुगंम) जवरदस्त ।
सूर - शूरवीर । विमरीर - जवरदस्त, महान, भयकर ।

२२३ ऊच - वढिया, श्रेष्ठ । पहिर - पहन कर । अतर - इत्र । परमळ - सुगन्ध, खुशबू ।
जमदढ - एक प्रकारका कटार । जाप - स्मरण, जप । सकति - शक्ति । जळाहळ -
तेजस्वी, देदीप्यमान । वडफर - ढाल । वामग - वाया अग, वाम पार्श्व । सभे -
धारण कर के । दक्खिण - दक्षिण, दाहिना । सावळ - एक प्रकारका भाला विशेष ।
जाम - पहिनावा । वहसि - जोशमे आ कर । असि - घोडा । अतुळवल - शक्ति-
शाली । जमाति - जमात, समूह । त्रव - नगाडा । गजरि - आवाज, ध्वनि, निरतर
होने वाला प्रहार । जोध - योद्धा, वीर । जनेती - बरातमे जाने वाला बराती ।
उद्धव - उत्सव, हर्ष । जिम - जैसे । लियण - लेनेको । हल्ले - चले, कूच किया ।
गजण - गजसिंह । तोरण वादण वीद जिम - जिस प्रकार तोरण वाधनेके लिए
दूल्हा चलता है ।

तेवडा रीत^१ द्वापुरतणी, इळ राखा कीरत^२ अमर ।
 कहि समर वात पिसणा^३ करा, सराजामहूता समर ॥ २१७
 सुणि डम वोलै^४ सुभड, आप जिम कुण डम अवखै^५ ।
 कूतहू तौ जिम कहै^६, 'सुर(ह)' तेरह कुळ सवखै^७ ।
 वेगि लिखीजै विगति, रवद जिम सभै^८ दुरगा ।
 एक^९ उतन ऊपना, जुडा^{१०} द्वापुर जिम जगां ।
 ऊजळौ^{११} रिजक करि आपरौ, कुळ अजस मुरधर करां ।
 जुध करा महाभारथ जिसौ, आसमान आधोफरां^{१२} ॥ २१८
 सभे^{१३} एम मल्लीत^{१४}, प्रकट^{१५} डम लिखे पठाणां ।
 अम्हा उतन कर दियो^{१६}, सोनगिरि^{१७} वर सुरताणां ।
 तिकण^{१८} लियण^{१९} वासतै, अम्हे दळ वळ^{२०} सभि आवां ।
 तजि धर मिळौ सताव^{२१}, पाण^{२२} जोडे^{२३} निज पावा ।

१ ग रीति । २ ख ग कीरति । ३ ख ग प्रसणा । ४ ख वोलै । ग वोलै ।
 ५ ख. ग अर्ष्यं । ६ ख ग कहे । ७ ख ग सवखै । ८ ग ऐक । ९ ख ग जुडा ।
 १० ग उजळौ । ११ ख. आधोफरा । १२ ख सभे । १३ ख. मसलति । ग मस-
 लति । १४ ख प्रगट । ग परगट । १५ ख ग दीयो । १६ ख. ग सोनगिरि ।
 १७ ख तिलक । १८ ख ग लीयण । १९ ख वल । २० ख संतान । २१ ख
 पाणि । २२ ग जोडे ।

२१७ तेवडा - विचार करें, दृढ निश्चय करे, धारण करें । द्वापुरतणी - द्वापर युगकी ।
 इळ - पृथ्वी, ससार । पिसणा - शत्रुओ । सराजामहूता - सामानसे, सामग्रीसे,
 प्रवधसे । समर - युद्ध ।

२१८ सुभड - सुभट, योद्धा । जिम - जैसे । कुण - कौन । अवखै - कहे । कूतहू - बुद्धिसे ।
 तौ - तेरे । सुर(ह) - सवाई राजा मूरसिंह । तेरह कुळ सवखे - राठीडोकी प्रसिद्ध
 तेरह शाखाये जिसकी साक्षी देती हैं । वेगि - शीघ्र । विगति - वृत्तान्त, विज्ञप्ति ।
 रवद - यवन, मुसलमान । सभै - सज्जित कर देवे । दुरगा - दुर्ग, गढ़ । उतन -
 जन्मभूमि, वतन । ऊपनां - जन्मे दृष्टे । जुडां - भिड़ें, युद्ध करे, टक्कर लेवे । जगां -
 युद्धो । ऊजळौ - उज्ज्वल । रिजक - रिजक, जीविका, रोजी । अजस - गर्व । मुरधर -
 मारवाड । महाभारथ - महाभारत युद्ध । जिसौ - जैसा । आधोफरां - बीच, मध्य ।

२१९ सभे - सज्जित हो कर । एम - इस प्रकार । मल्लीत - मलिक, मलीक, राजा, वाद-
 शाह, स्वामी । अम्हां - हमारा । सोनगिरि = स्वर्ण गिरि - जालोर नगर या जालोर
 नगरका पर्वत । तिकण - उस । लियण - लेनेको । वासतै - लिये । अम्हे - हम ।
 सभि - सज्जित हो कर । तजि - छोड़ कर । सताव - शीघ्र । पाण जोडे - करवद्ध
 हो कर ।

नमिलतौ^१ 'मिलक जबदळ'^२ निडर, पकडौ बळ^३ खग पाणरी ।
 तौ करा वणै करता तिकौ, सराजाम घमसाणरौ^४ ॥ २१६
 असुरां दिस^५ लिख^६ एम^७, करे^८ दळ सबळ^९ भयकर ।
 पवग^{१०} पूर पाखरा, सूर सिलहा बळ^{११} सम्मर^{१२} ।
 हले टिला हाथिया^{१३}, जूट^{१४} हम्मला^{१५} हजार^{१६} ।
 सभे^{१७} चाढि बळ^{१८} सबळ^{१९}, इसी नाळिया^{२०} अपारां ।
 करि अगनि^{२१} बाण^{२२} घण रहकळां, दामणि सीसा दारवा^{२३} ।
 गढ कनक लियण^{२४} दारुण 'गजण', मडिया^{२५} चाळा मारवा^{२६} ॥ २२०

१ ख ग नमिलतौ । २ ख जबदळ । ३ ख. ग वल । ४ ख घणसाण । ५ ख ग दिसि । ६ ख ग लिपि । ७ ग ऐम । ८ ग करै । ९ ख. सबल । १० ख पवग । ग पमंग । ११ ख. ग. वळ । १२ ख ग. सम्मर । १३ ख ग हाथीया । १४ ख जूट । १५ ख. ग हमलां । १६ ख ग हाजारां । १७ क सभै । १८ ख ग वळि । १९ ख. सबल । २० ख ग नाळीयां । २१ ख ग. अगनि । २२ ख बाण । ग बाण । २३ ख ग दारवां । २४ ख. लीयण । २५ ख ग मडीया । २६ ख ग. मारवा ।

२१६. मिलक जबदळ — मिलक जवदतुलमुल्क ।

नोट — विहारी पठानोमे जालोर राज्यके सस्थापक उस्मानखाको गुजरातके बादशाहकी तरफसे जवदतुलमुल्कका खिताब मिला था । इस खिताबको अद्यावधि उस्मानखाके वंशज जो पहिले जालोरके शासक थे और बादमे पालनपुरके शासक रहे है, अपने नामके साथ लगाते है । — देखो तवारीखे पालनपुर ।

सराजाम — प्रवव, इन्तजाम, सामान, सामग्री । घमसाण — युद्ध ।

२२० असुरा — यवन, मुसलमानो । दिस — तरफ, ओर । एम — इस प्रकार, ऐसे । दळ — सेना, फौज । पवग — घोडा । पूर — पूर्ण । पाखरां — घोडोके कवचो । सूर — सूरवीर, सवाई राजा सूरसिंह । सिलहा — अस्त्र-शस्त्रो । सम्मर — युद्ध । हले — चले, गमन किया । टिला — आघात । जूट — युग्म, दो । हम्मला — हमाल, बोझा ढोने वाला, वजन, भार । बळ — सेना । इसी — ऐसी । नाळिया — बट्टको. तोपो । अपारा — अपार, असीम । अगनि बाण — तोप । घण — बहुत । रहकळा — सवारी विशेष, एक प्रकारका रथ या सकट । दामणि — तोप (?) । सीसा — एक मूल धातु जो बहुत भारी और नीलापन लिए काले रंगकी होती है । दारवा — बारूद । गढ-कनक — जालोरका किला । लियण — लेनेको । दारुण — भयकर, जबरदस्त । गजण — महाराजकुमार गजसिंह । मडिया — रचे । चाळा — युद्ध, समर । मारवा — राठौडो ।

छंद मालती

असे^१ अणभग सभै^२ दळ सग ।
 थटे अणथाह, हले 'गजसाह' ॥ २२४
 नगा असि नाळ^३, वजे विकराळ ।
 धरा रजि धोम, वणै^४ उडि वोम ॥ २२५
 प्रथी^५ अणपार, धुजै विखधार ।
 धुवै^६ धर धोम, कसक्कत^७ कोम ॥ २२६
 अकास^८ उडाय, पखी अत^९ पाय ।
 तई रज तेण, अमूभत एण^{१०} ॥ २२७
 नदी वह^{११} नाळ, त्रुटे^{१२} जळ-ताळ ।
 भिल्लै^{१३} रजभाण, मडे^{१४} तिमराण ॥ २२८
 चय तजि चक्क, हुवै वीर हक्क ।
 कटक्क^{१५} क्रहाक, हुवै बहु^{१६} हाक ॥ २२९

१ ख ग इसा । २ ख ग सभे । ३ ख ताल । ४ ख ग वणे । ५ ख. ग प्रिथी ।
 ६ ख धुवे । ग. धुवे । ७ ख कसकत । ग कसकत्त । ८ ख. ग अकासि । ९ ख ग
 मृत । १० ग ऐण । ११ ख वहौ । ग वौहौ । १२ ख ग. त्रुटे । १३ ख भिले ।
 १४ ख ग मडे । १५ ख ग कटक । १६ ख वहौ । ग वहौ ।

- २२४ अणभग - वीर, वहादुर । दळ - सेना । सग - साथ । थटे - एकत्रित हुए । अण-
 थाह - अपार, असीम । हले - कूच किये, चले । गजसाह - कुमार गजमिंह ।
 २२५ नगा - पैरो । असि - घोडा । नाळ - घोडेके मुमके नीचे लगाया जाने वाला गोला-
 कार धातुखड । विकराळ - भयकर । रजि - धूलि । धोम - धुंआ । वोम - व्योम-
 आकाश ।
 २२६ प्रथी - पृथ्वी । अणपार - अपार, असीम । धुजै - कम्पायमान होता है । विखधार -
 जेपनाग । धुवै धर धोम - प्रवल वेगसे पृथ्वी पर धुंआ छा जाता है । कसक्कत -
 कममसाहट करता है । कोम - कच्छपावतार ।
 २२७. पखी - पक्षी । अत - मृत्यु । पाय - प्राप्त कर । तई - उम । रज - धूलि ।
 अमूभत - दम घुटता है । एण - इस, हरिण ।
 २२८ ताळ - तालाव । भिल्लै - मिल जाता है । भाण - सूर्य । मडे तिमराण - अन्धेरा
 छा गया ।
 २२९ चय तजि चक्क - दिग्गज दिशाओमे डोलायमान हो गये । हुवै वीर हक्क - वीर-
 ध्वनि हो रही है । कटक्क - मेना, दल । क्रहाक - कोलाहल, चिल्लाहट । बहु -
 बहुत । हाक - आवाज ।

जसौल जबाब^१, सजत^२ सताब^३ ।
 हिसार^४ हयद, गराज गयद ॥ २३०
 लसै दळ^५ लेस, विखम^६ वनेस ।
 गाजत गरूर, त्रवागळ^७ तूर ॥ २३१
 धुजत^८ ध्रहाड, प्रचड पहाड^९ ।
 ताळी खुलि तान, उठे^{१०} तपवान ॥ २३२
 ओदक्क^{११} उराळ^{१२}, दसे द्रगपाळ ।
 समोभ्रम 'सूर', 'गजौ' मगरूर ॥ २३३
 इसा अणपार, लिया दळ लार ।
 जाळधर जाय, चौके^{१३} गढ चाय ॥ २३४

कवित्त—सभि गढ दारण^{१४} सगह, वाट जोवता विहारी ।
 ईखे गढ घेरियो^{१५}, जाळभळ फौज 'गजा'री ।

१ ख जबाब । २ ख ग. सभत । ३ ख सताब । ४ ख ग हिसार । ५ ख ग दह । ६ ख ग विषम । ७ ख त्रवागल । ८ ख ग धुजत । ९ ख पाहाड । १० ख ग. उठै । ११ ख. ग. ओदक्क । १२ ग उकाळ । १३ ख चौके । ग चौके । १४ ग दारण । १५ ख. ग घेरीयो ।

२३० जसौल—जोशपूर्ण, वीर, बहादुर । सजत सताब—शीघ्र ही उत्तर देते है । हिसार—हिनहिनाहट । हयंद—घोडा । गराज—गर्जना । गयंद—हाथी, गज ।

२३१. लसै—शोभित होता है । विखम—विपम । गरूर—गर्वपूर्ण, जोशपूर्ण । त्रवागळ—तगाडा । तूर—वाद्य विशेष ।

२३२ धुजत—कम्पायमान होते हैं । ध्रहाड—दहाड । ताळी—ध्यान, समाधि । तपवान—तपस्वी ।

२३३ ओदक्क—चौकते हैं, भयभीत होते हैं । उराळ—वाष्प, भाप । समोभ्रम—पुत्र, लडका । सूर—सवाई सूरसिंह । गजौ—महाराजकुमार गजसिंह । मगरूर—गर्वीला ।

२३४. अणपार—अपार, असीम । दळ—फौज । लार—पीछे । जाळधर—जालोर नगर । चौके—(?) ।

२३५ सगह—गर्वपूर्वक । वाट—प्रतीक्षा, इन्तजार । ईखे—देख कर । घेरियो—आवेष्टित किया । जाळभळ—जाज्वल्यमान । गजारी—गजसिंहकी ।

ता^१ दग्गे^२ वह^३ तोप, वहै गोळा दहुवै^४ वळ^५ ।
 मडे जमी असमान, भ्हाळ इम रूप भ्हाळहळ ।
 सुणि गाज निवाणा जळ सुकें, धुर्क सीस धारकधरा^६ ।
 कळिचाळ एम^७ दमगळ करै, सवळ^८ थाट 'गजसाह'रा ॥ २३५

धुवै^९ राग सिधुवा^{१०}, गजै नाळिया^{११} त्रवागळ^{१२} ।
 मेळा भड गहमहै, वहै गोळा^{१३} वीभाभळ^{१४} ।
 ठहै^{१५} दवानळ ठठर, भोकि पिड सामी^{१६} भ्हाळां ।
 खौभ^{१७} गिरद खोहरा, लिया^{१८} मोरचा लकाळां ।
 वहि वाण^{१९} वजर हूका^{२०} वहै, मतवाळा^{२१} औघा^{२२} मजा ।
 ज्वाळमे^{२३} हुवै^{२४} भभरूत^{२५} जग, धूत पठाणा कमधजा ॥ २३६

१ ख ग. ताम । २ ख. ग दगे । ३ ख वही । ग वही । ४ ख दहुवै । ग. दहुवै ।
 ५ ग. वळ । ६ ख धीरकधरा । ७ ग ऐम । ८ ख ग सवल । ९ ख ग. धुवै ।
 १० ख ग सीधुवा । ११ ख ग नाळीयां । १२ ख त्रवागळ । १३ ख गोला ।
 १४ ख ग वीभाजळ । १५ ख ग ठहे । १६ ख ग साम्ही । १७ ख ग पाभ ।
 १८ ख ग लीया । १९ ख ग वाण । २० ख ग. हूका । २१ ख ग मत्तिवाळा ।
 २२ ख मोघा । ग वोघा । २३ ख ग. ज्वाळमै । २४ ख ग हुवै । २५ ग
 भभुरूत ।

२३५ ता-वहाँ । वह-वहृत । दहुवै वळ-दोनो ओर । भ्हाळ-आगकी लपट ।
 भ्हाळहळ-जाज्वल्यमान । निवाणा-जलाशय । धुर्क-जलता है । धारकधरा-
 शेषनाग । कळिचाळ-योद्धा, वीर । दमगळ-युद्ध । थाट-दल, सेना । गज-
 साहरा-महाराजकुमार गजसिंहके ।

२३६ धुवै-जोशपूर्ण हो रहा है । गजै-गर्जना करती है, करते हैं । नाळियां-तोपो,
 बट्टको । त्रवागळ-नगाडा । मेळा-एकत्रित, मिले हुए । भड-योद्धा । गहमहै-
 एकत्रित हो रहे हैं । वीभाभळ-विव्याचल (?) । ठहै-होते हैं । दवानळ-
 दावाग्नि । ठठर-कठोर । भोकि-भोक कर । सामी-सामने । भ्हाळा-आगकी
 लपटें । खौभ-गुफा (?) । गिरद-पर्वत । खोह-कदरा । लकाळां-वीर,
 योद्धा । मतवाळा-उन्मत्त, मस्त । औघा-(?) । ज्वाळमै हुवै भभरूत जग-
 युद्धमें क्रोधाग्निमें पूर्ण होते हैं । धूत-उन्मत्त, मस्त । पठाणां-पठानो । कमधजा-
 राठौडो ।

सूरवीर 'गजसाह', वडा तरवार^१ बहादर^२ ।
हुवतां जुध हाकलै^३, निसा पडता नर^४ नाहर ।
पिड अगा^५ सिर टोप, वणै^६ भिलमा पर वेणी ।
कसि जमदढ खग कसे, सभे हाथळा नूसेणी^७ ।
इम चढे सोनगह^८ ऊपरा, सामत^९ 'गजण' सधीररा ।
तोडिवा जाणि चढिया^{१०} त्रिकुट, विकट^{११} घाट रघुवीररा ॥ २३७
नीम^{१२} कोट भड निडर, जाइ लागिया^{१३} जियारा ।
दाते^{१४} खग जमदाढ, विखम धारे जिण वारा ।
परठि नूसेणी^{१५} पाव, उरस^{१६} छिब^{१७} क्रोध^{१८} उभल्लै^{१९} ।
वह^{२०} वरसता बढूक^{२१}, भाळ मौहरी कर भल्लै ।
चढि किलै एम^{२२} भफै^{२३} अचळ, विच^{२४} दळ 'सूर' विहारिया^{२५} ।
तिण वार मिळै^{२६} हिदू^{२७} तुरक, उडै रीठ तरवारिया^{२८} ॥ २३८

१ ख ग तरवारि । २ ख. वाहदर । ग बहादर । ३ ख ग हाकले । ४ ख. ग भड ।
५ ख आगां । ग. आगा । ६ ख ग वणे । ७ ख ग निस्त्रेणी । ८ ख ग सोनगिर ।
९ ख ग सामत । १० ख ग चढीया । ११ ख विघट । १२ ख नाम । १३ ग.
लागीया । १४ ख दते । ग देसे । १५ ख ग निस्त्रेणी । १६ ख ग उरसि ।
१७ ख ग छिवि । १८/१९ ये दोनो शब्द ख प्रतिमे नही हैं । २० ख वही । ग वही ।
२१ ख बढूक । २२ ग ऐम । २३ ख ग भफे । २४ ख ग. विचि । २५ ख ग
विहारीया । २६ ख मिले । २७ ख ग हीदू । २८ ख ग तरवारीया ।

२३७ गजसाह — महाराजकुमार गजसिंहजी । हाकलै — जोश दिलाता है, उत्तेजित करता है ।
निसा — रात्रि । नर नाहर — नर शार्दूल । पिड — शरीर । अगा — कवच । टोप —
शिरस्त्राण । भिलमा — युद्धके समय शिर पर धारण करनेका टोप विशेष । वेणी —
(?) । हाथळा — हाथो । नूसेणी — निश्रेणी, सीढी, नसैनी । सोनगह —
जालोरका गढ । सामत — योद्धा, वीर । गजण — महाराजकुमार गजसिंह । सधीररा —
वीरके । तोडिवा — तोडनेको । जाणि — मानो । त्रिकुट — लका । घाट — सेना, दल ।
२३८. नीम — नीव । भड — भट, योद्धा । जियारा — जिस समयमे । जिण वारां — जिस
समय । परठि — धर कर, रख कर । नूसेणी — निश्रेणी । पाव — पैर, चरण । उरस —
आकाश । छिब — स्पर्श कर के । उभल्लै — उमडते है । भाळ — आगकी लपट ।
मौहरी — बढूककी नालका अग्र भाग । भल्लै — पकडता या पकडती है । भफै —
कूदते हैं । अचळ — पर्वत । विच — बीच, मध्य । सूर — वीर, सवाई राजा सूरसिंह ।
तिण वार — उस समय । रीठ — प्रहार । तरवारिया — तलवारो, योद्धाओ ।

वाजि भ्राट वीजला^१, घाट^२ तूट^३ घण वावा ।
 करि^४ निराट घण कटै, पाव^५ तूटै गज^६ पावा ।
 आटपाट रत^७ उभळ, 'सूर' कुळ वाट सकाजा ।
 गूद थाट पडि गरट, जाणि खुलि हाट वजाजा^८ ।
 औभाट भाट उतवग^९ उडै, खजर दाढ^{१०} पजर खळा ।
 रगमाट घाट वैराण^{११} रण, हुर्व नराट^{१२} भळाहळा ॥ २३९
 विढे^{१३} विहारी वढे, आदि जव^{१४} लगि^{१५} अणरेहा ।
 पडे^{१६} तूटि^{१७} गढ परा, जवन मोती लड जेहा ।
 के घायल कमधरा, असह घायन अणपारा ।
 गढ^{१८} डम जुध^{१९} करि 'गजण', जयति कीधी जिणवारा ।
 लडि वारह^{२०} वरस अलावदी, लखां दळां छळहू लियी^{२१} ।
 त्रण मास^{२२} मांय^{२३} 'गजवध'^{२४} तिकी^{२५}, जाळधर गढ जीपियी^{२६} ॥ २४०

१ ख विजलां । २ ग. याट । ३ ग लूटै । ४ ख ग कर । ५ ख ग पाट ।
 ६ ख गजा । ७ ख रज । ८ ख ग वजाजां । ९ ख ग. उतवग । १० ग. दाट ।
 ११ ख. ग वैराट । १२ ख ग निराट । १३ ग विढे । १४ ख ग जव । १५ ख
 ग दळ । १६ ख परे । ग पडे । १७ ख. तूट । १८ ख. गडि । ग गडि । १९ ग
 जुधि । २० ख. वारह । २१ ख ग लीयी । २२ ख ग त्रिण मान । २३ ख. ग
 माहि । २४ ख. गजवध । २५ ख ग तिकी । २६ ख ग जीतीयी ।

२३९ भाट - प्रहार । वीजलां - तलवारो । घाट - शरीर । आटपाट - पानीकी नदीके
 दोनो तटोके ऊपर वहनेकी क्रिया । रत - रक्त, खून । उभळ - उमड कर । गूद -
 मास, मासपिंड । थाट - मेना, दल । गरट - ढेर, समूह । जाणि - मानो । हाट -
 दुकान । वजाजा - वस्त्र वेचने वाले, व्यापारियो । औभाट - उलटा प्रहार । भाट -
 प्रहार । उतवग = उत्तमाङ्ग - शिर । खजर - एक प्रकारका शस्त्र विशेष । दाढ -
 कटार । पजर - शरीर । खळां - शत्रुग्री । रगमाट - रगरेजके घरका रग घोलनेका
 बडा पात्र । घाट - शरीर । वैराण - भयकर । रण - युद्ध । नराट - बहुत,
 अधिक ।

२४०. विढे - युद्धमें वीर गति प्राप्त हुए । अणरेहा - निष्कलक, वीर, योद्धा । लड - पक्ति,
 वागा । जेहा - जैसे । असह - शत्रु । अणपारा - अपार, असीम । गजण -
 गजसिंह । जयति - विजय । कीधी - की । जिण वारां - जिस समय । छळहूं -
 कपटसे । त्रण - तीन । गजवध - कुमार गजसिंह । तिकी - वह । जाळधर -
 जालोर । जीपियी - जीता, विजयी हुआ ।

वीहारी^१ दळ विहडि, जीपि लीधी जाळधर ।
 वीर त्रवाळ^२ वजाइ^३, सभै^४ फौजा घेसाहर^५ ।
 सीरोही धर सहर, धोम^६ अरबद्^७ धुजाया^८ ।
 दळे माण देवडां, लूटि^९ डंडि^{१०} पाय लगाया^{११} ।
 धोकळे^{१२} राण मेवाड धर, 'करण' साह चाकर कियौ^{१३} ।
 'गजसिघ' सिघ सूर^{१४} गरू, इम तारागढ आवियौ^{१५} ॥ २४१

श्रीघसता भुज उरस, क्रहस दळ^{१६} खिमस^{१७} सकाजा ।
 ऊससतौ आवियौ^{१८}, दिली नायक दरवांजा^{१९} ।
 असपति^{२०} अजसियौ^{२१}, पेख^{२२} अजसियौ पितापह^{२३} ।
 अवर खान उमराव^{२४}, सतरि इकहतर^{२५} दबे^{२६} सह^{२७} ।
 'गजसाह' देखि जंहगीर^{२८} गह, करि हित कमळ प्रकासियौ^{२९} ।
 पूजियौ^{३०} साह मुनसप पटां, 'सूरसाह' साबासियौ^{३१} ॥ २४२

१ ख. ग विहारीयादळ । २ ख त्रंवाळ । ३ ख ग वजाय । ४ ख. सभे । ५ क
 घेसाहर । ६ ख घूम । ग घूमि । ७ ख अरवद । ग अरबद । ८ ख ग धूजाया ।
 ९ ख लूटि । १० ख ग डड । ११ ख गाया । १२ ख ग. धोषले । १३ ख ग
 कीयौ । १४ ख सुर । ग सूरं । १५ ख ग आवीयौ । १६ ख ग क्रहदल ।
 १७ ख घमस । ग श्रमस । १८ ख ग. आवीयौ । १९ ख दरवारा । ग. दरबारा ।
 २० ख असपती । ग. असपत्ती । २१ ग अजसीयौ । २२ ख ग पेवि । २३ ख ग.
 पितापौहौ । २४ ख ग उवराव । २५ ख ग इकहतरि । २६ ख ग वेसौ २७ ख
 ग सीहौ । २८ ख ग जहागीर । २९ ख ग प्रकासीयौ । ३० ख ग. पूजीयौ ।
 ३१ ख ग साबासीयौ

२४१ विहाड - सहार कर, ध्वश कर । जीपि - जीत लिया, जीत कर । त्रवाळ - नगाडा ।
 वजाइ - वजवा कर । घेसाहर - समूह, दल । अरबद् - आवू पर्वत । धुजाया -
 कपायमान किया । दळे - नाश कर, ध्वश कर । माण - गर्व, मान । धोकळे - युद्धमे,
 युद्ध कर के । करण - महाराजकुमार कर्णसिंह ।

२४२ श्रीघसता - घर्षण करता हुआ । उरस - आसमान । ऊससतौ - जोशपूर्ण । अजसियो -
 गर्व किया । सह - सब । गजसाह - महाराजकुमार गजसिंहजी । गह - गर्व, अभि-
 मान । कमळ - मुख, मुह । प्रकासियौ - प्रकाशित किया, प्रफुल्लित किया । पूजियौ -
 मान बढ़ाया, प्रतिष्ठा व इज्जत की । मुनसप - मनमव । पटा - जागीर । सूरसाह -
 राजा सूरसिंह । साबासियौ - धन्यवाद दिया ।

अकळ^१ भूल आवळा^२, भिल्लै 'गजबंध'^३ भळाहळ^४ ।
 पित अजसै भूपाळ, 'सूर' भळहळ दळ सव्वळ^५ ।
 'सूर' कणैठी सूर, 'किसन' कमधज कळिचाळी ।
 'सूर' मुसाहिब सूर, भाटी 'गोयद' भुजाळी ।
 साहि^६ विण^७ साहिजादां सहित, कमध गिणै^८ तिल मात करि ।
 इम जोम^९ देखि^{१०} प्रफुलां^{११} अमुर, धिखे 'खुरम' चित धोह धरि ॥ २४३
 कथ 'गोइद'^{१२} 'किसनरै', पेवि^{१३} चित खांत^{१४} पहल्ली ।
 साहिजादै 'किसन' सृ, मडे हित पेच मुगल्ली^{१५} ।
 ताम^{१६} 'खुरम' मसलती^{१७}, एह^{१८} 'किमन'हू उचारी ।
 दुमह मारि 'गोयद', हो(इ) तुमह फतै हजारी ।
 कथ सुणे वद्धित मन कहै 'किसन', तेग 'खुरम' वळ^{१९} तासनु ।
 पाधरै खेत जाहनपना^{२०}, साभू 'गोयद' दासनु ॥ २४४

१ ख अकळ । २ ख ग आवळा । ३ ख गजबंध । ४ ग जळाहळ । ५ ख सव्वळ ।
 ६ ख सा । ७ ख ग विणि । ८ ग गणै । ९ ग देखि । १० ख देख ।
 ग जोम । ११ ख ग प्रजळै ।

*ग. प्रतिकी इस पक्तिमे 'देवि' पहले लिखा हुआ है और इसके पीछे जोम है ।

१२ ख ग गोयंद । १३ ग पिवि । १४ ख ग पाति । १५ ख ग मुगली ।
 १६ ख ग. ताम । १७ ख. ग मसलति । १८ ग ऐह । १९ ख वळ । २० ख.
 जाहानपनाह । ग जाहांपनाह ।

२४३ अकळ - वीर, योद्धा । भूल - समूह । आवळा - वाकुरा, वीर । भिल्लै - तपता है, ऐश्वर्य प्रकट करता है । गजबंध - महाराजकुमार गजसिंहजी । भळाहळ - पूर्ण तेजस्वी । पित - पिता । अजसै - गर्व करता है । सूर - सवाई राजा सूरसिंह । भळहळ - देदीप्यमान । कणैठी - कनिष्ठ, छोटा भाई । किसन - किशनसिंह राठौड जो महाराजा सूरसिंहका छोटा भाई तथा किशनगढ रियासतका मस्थापक था । कळिचाळी - योद्धा, वीर । भुजाळी - शक्तिशाली, ममर्थ । साहि - वादशह । जोम - जोश, बल । अमुर - मुसलमान । धिखे - क्रोध करता है, क्रोधमे प्रज्वलित होता है । धोह - द्वेष, दाह ।

२४४ किसनरै - किशनसिंह राठौडके । खात - नगन । पहल्ली - प्रथम, पहिली । पेच - जाल, छल, कपट । दुमह - शत्रु, दुष्ट । गोयद - मवाई राजा गूरसिंहका आमात्य, भाटी गोविन्ददाम । वद्धित - अभीष्ट । पाधरै खेत - खुले मैदान । जाहनपना - जहापनाह, समारको अपनी शरणमे लेने वाला, राजाओ और वादशाहोके लिए सबोधन शब्द । साभू - मार डालूंगा, मारूंगा ।

पावक सिव चख प्रवळ^१, सेस फूका धिखि सव्वळ^२ ।
 मभि धरियौ^३ घ्रत^४ समंद^५, नीर काढे बडवानळ^६ ।
 नारसिघ^७ नीछट्टै, अरण नहराद इतां उद्र ।
 काळ भाळ^८ कळकळ^९, रोस विकराळ जडा रुद्र ।
 अवसाण^{१०} बीज कोटिक उछब, तपत्^{११} बाण^{१२} रघुवरतणै ।
 रण जिसौ 'किसन' पथ खेड रथ, इसौ 'किसन' अध्रियामणौ^{१३} ॥ २४५

अथ भूलणा

इम मिसलति^{१४} करि आविया^{१५}, 'केहरि'^{१६} कळिचाळा ।
 करमसेन^{१७} मिळिया^{१८} 'करण', लोह मेलण लाला ।
 पूळा बळती^{१९} मभि पडै, भळहळ घ्रत^{२०} भाळा ।
 इम विकराळा ऊफणै^{२१}, पडि^{२२} क्रोध^{२३} प्रजाळा ॥ २४६
 तेडे 'केहरि'^{२४} वार तिण, भड थाट भुजाळा ।
 आया दरगह ऊबरा^{२५}, बहसे^{२६} विरदाळा^{२७} ।

१ ख ग प्रवल । २ ख सव्वल । ३ ख ग धरीयो । ४ ख ग घृत । ५ ख ग समद । ६ ख ग बडवानळ । ७ ग नारसीघ । ८ ग काळ । ९ ख. कलकले । १० ख असवाण । ग. असमाण । ११ ग तप । १२ ख बाण । १३ ख अध्रियामणौ । ग अध्रियमणौ । १४ ख. मसलत । १५ ख ग आवीया । १६ ग केहर । १७ ख. ग. करमसेण । १८ ख ग मिलीया । १९ ख बळती । २० ख ग घृत । २१ ख. ऊफणे । ग. उफणे । २२ ख ग पिड । २३ ख क्रोध । २४ ख ग केहर । २५ ख ऊमरा । ग ऊंबरा । २६ ख बहसे । २७ ख विरदाळा ।

२४५. पावक - अग्नि, आग । चख - चक्षु, नेत्र । सेख - शेषनाग । फूका - फुत्कार । धिखि - क्रोधमे प्रज्वलित हो कर । धरियौ - धरा । नारसिघ - नृसिंहावतार । अरण - लाल । नहराद - नाखून । उद्र - उदर । काळ - यमराज । भाळ - आग । कळकळ - तप्त होता है, प्रज्वलित होता है । जडा रुद्र - महादेवकी जटा । अवसाण - अवसर, मौका । किसन - श्रीकृष्ण । पथ - पार्थ, अर्जुन । अध्रियामणौ - जवर-दस्त, उग्र, भयावह ।

२४६ मिसलति = मसलहत - परामर्श, सलाह । केहरि - केसरी । पूळा - पुआल । बळती - प्रज्वलित । भळहळ - आग । प्रजाळा - प्रज्वलित ।

२४७. बहसे - जोशपूर्ण हो कर । विरदाळा - विरुद्धधारी, यशस्वी ।

देखि भडा^१ बोले^२ दुगम, कर^३ ग्रहि किरमाळा^४ ।
 मै^५ मरणा आसगिया^६, करणा धकचाळा ॥ २४७
 ल्लुग^७ वसिवा^८ आवौ सुतौ, अम^९ सत्थि^{१०} उताळा ।
 जीवण सुख चावौ^{११} जिके, टळ दे बहु^{१२} टाळा ।
 एम^{१३} सुणे भड लगि^{१४} उरसि, कथ कहै^{१५} कराळा ।
 इण दिन^{१६} कजि पावा अम्हे, वौह^{१७} पटा वडाळा ॥ २४८
 किम खावौ टाळा 'किसन', ते वडि^{१८} रिणताळा ।
 हुवै हुकम^{१९} तौ साहरा, रहचां रवदाळा ।
 कहौ तौ^{२०} आणा किलमरा, मदभर^{२१} मतवाळा^{२२} ।
 साहिजादा कै^{२३} अमीरसू, चित ह्वै चकचाळा ॥ २४९
 तौ 'केहर'^{२४} कहिजे^{२५} सताव^{२६}, वाइक विगताळा ।
 कूदि पडा गज कटहडा, चढि गौख विचाळा ।

१ ग भजा । २ ख बोले । ३ ख करि । ४ ख ग करिमाळा । ५ ख ग मै ।
 ६ ख. ग आसगीया । ७ ख ग श्रुगि । ८ ख ग वसिवा । ९ ख ग अम्ह ।
 १० ख ग. साथि । ११ ख. ग चाहौ । १२ ख बहु । १३ ग ऐम । १४ ख गि ।
 १५ ख कहे । १६ ख कजि । १७ ख वहौ । ग वहौ । १८ ख ग. वड । १९ ख.
 हुम । २० ख ग त । २१ ख महभर । २२ ख ग मतिवाळा । २३ ख ग क ।
 २४ ख ग केहरि । २५ ख ग कहिजे । २६ ख तताव ।

२४७ दुगम—दुर्गम, असह्य । कर—हाथ । ग्रहि—पकड कर । किरमाळा—तलवार ।
 मरणा—मृत्यु । आसगिया—स्वीकार किया, अगीकार किया । धकचाळा—युद्ध ।

२४८ ल्लुग—स्वर्ग । अम—हमारे, हमारा । सत्थि—साथ । उताळा—त्वरायुक्त । चावौ—
 चाहते हो । टाळा—टलना, प्रयत्न होनेकी क्रिया या भाव । कराळा—भयंकर ।
 अम्हे—हम । वौह—वहुत । पटा—पट्टा, जागीर । वडाळा—वडा ।

२४९ रिणताळा—युद्ध । रहचा—ध्वंस कर देवें, मार डालें । रवदाळा—यवन । किलमरा—
 यवनके, मुसलमानके । मदभर—हार्या । चकचाळा—छेड़छाड़ ।

२५०. सताव—शीघ्र । वाइक—वाक्य, वचन । विगताळा—वृत्तान्तपूर्वक । कटहडा—
 हाथीकी पीठ पर कमा जाने वाला चारजामा, अम्मारी । गौख—(?) । विचाळा—
 बीच, मे, मध्य ।

जडां घडा^१ जवना^२ जजर^३, पजर प्रतिमाळा ।
हुवै अमा^४ खावद हुकम, दीसै दावाळा ॥ २५०
तो^५ जुध जमहू तेवडा, चौडै^६ बधि^७ चाळा^८ ।

भाटी गोविंददासरें साथ किसर्नासिधरौ जुध-वरण

इम सुणि वाइक^९ ऊमरा^{१०}, बोले^{११} बंबराळा^{१२} ।
मोनू 'गोयद' मारणौ^{१३}, चित नहि^{१४} अनि चाळा ।
सुरतांणा^{१५} दळ^{१६} मभि सभौ, चौरग चिरताळा^{१७} ॥ २५१
सुणे 'गजण' कथ 'सूरसाह', तायक तिण ताळा* ।
कळहण ऊससियो^{१८} कुवर, पित धीर प्रमाळा ।
सूर' कहै गजसिधनू^{१९}, रखि^{२०} धीर रढाळा^{२१} ।
कळह करौ तदि 'केहरी', आय मडै^{२२} आळा ॥ २५२

१ ख घरा । २ ग जवना । ३ ख. ग जजर । ४ ख ग अमा । ५ ख ग तो ।
६ ख चौडै । ७ ख बधि । ८ ख चाळा । ९ ख ग वायक । १० ख ऊवरां ।
ग ऊवरा । ११ ख बोले । ग बोले । १२ ख बवराळा । ग बवराळा । १३ ख
मारण । १४ ख. ग नह । १५ ख. सूर तणी । ग सूर तणा । १६ ग. दलि ।
१७ ख चिरताळां ।

*इस पक्तिके पहले ख प्रतिमे निम्न पक्ति है—

सुणि भड उठे करण सज आरभ जुध वाळा ।

१८ ख ग ऊससियो । १९ ख ग ह । २० ख ग. रख्य । २१ ख रंढालां ।
२२ ग मडे ।

२५० जडा - प्रहार करे, बाँध डाले, बधनमे डाले । घडा - शरीर । जजर - शस्त्र विशेष,
जजीर अथवा जर्जर । पजर - शरीर । प्रतिमाळा - कटार । अमा - हमको ।
दावाळा - प्रतिपक्षी, शत्रु ।

२५१ जमहू - यमराजसे । तेवडा - निश्चय कर लेवे । ऊमरा - अमीर, सरदार । बवराळा -
जवरदस्त । अनि - अन्य । चाळा - लक्ष्य, कार्य जिसमे मन लगे । चौरग - युद्ध ।
चिरताळा - चरित्रवान, अद्भुत ।

२५२ तायक - क्रोधित, तेज त्वरायुक्त । तिण ताळा - उस समय । कळहळ - युद्ध । सूर -
मवाई राजा सूरसिंह । रढाळा - वीर, अपनी बात पर अटल रहने वाला । मडै -
रचा जाय । आळा - युद्ध, लड़ाई, छेड़छाड़ ।

राखौ^१ करे^२ तयारियां^३, जगा^४ जमजाळा ।
 सुणि भाटी भड^५ ऊससै^६, जेसाण उजाळा ।
 डेरा दळ बाहिर^७ दिया^८, बहसे^९ वांहाळा^{१०} ।
 चाहौ सुजि आवौ चढे^{११}, इम कहै^{१२} उताळा ॥ २५३
 चाढा दहं दळ चाढवै^{१३}, भळहळ भूलाळा ।
 खुरसांणां दहु^{१४} दळ खिवै, वीजळ वाढाळा ।
 *साभदा हुय^{१५} आतसां^{१६}, दुहु^{१७} दळ^{१८} दुरदाळा ।
 दहू^{१९} दळां हुय^{२०} साभदा^{२१}, पमग^{२२} पखराळा ॥ २४५
 दुहू दळां सावळ^{२३} दुगम^{२४}, ओपै अणियाळा^{२५} * ।
 जेवि^{२६} कवाण^{२७} कीजियै^{२८}, दुहु दळ दुगमाळा ।

१ ग राखी । २ ख ग करे । ३ ख ग तयारीया । ४ ग जगो । ५ ख. भडा ।
 ६ ख ग ऊससे । ७ ख वाहिर । ८ ख ग दीया । ९ ख. ग वहसे । १० ख ग
 वाहाला । ११ ग. चढे । १२ ख. ग. कहे । १३ ख ग हूँ । १४ ख दुहु । ग दुहु ।
 १५ ग होय । १६ ग आनसा । १७ ख दहं । ग दहु । १८ ख दळां । १९ ख.
 ग दहं । २० ग होय । २१ ग साभदा । २२ ग प्पमग । २३ ख सावळ ।
 २४ ख. दुकम । २५ ख. ग अणीयाळा ।

*इन पक्तियोमे से निम्न रिक्त स्थान वाली पक्तिया ख प्रतिमे नही लिखी हुई हैं—

दहू दला' . . . , ।

. . . 'साल दुकम, ओपै अणीयाला ॥

२६ ख ग जेवि । २७ ख कवाणा । २८ ग कीजियै ।

२५३ जमजाळा — एक प्रकारकी तोप । जेसांण — जयसलमेर । उजाळा — प्रकाशित करने वाला । बहसे — उत्कठित हो कर, जोशमे आ कर । वाहाळा — समर्थ, शक्तिशाली । उताळा — त्वरायुक्त, तेज ।

२५४ भळहळ — अग्नि, आग । भूलाळा — स्नान करने वाला । खुरसांण — यवन, मुसलमान । खिवै — चमकती है । वीजळ — तलवार । वाढाळा — पानी धार वाला, काटने वाला । दुरदाळा — हाथी, गज । साभदा — तैयार । पमग — घोडा । पखराळा — कवचधारी घोडा ।

२५५ सावळ — भाला विधेप । दुगम — जवरदस्त । ओपै — शोभा देते हैं । अणियाळा — नोक वाले । जेवि — अच्छा लगने वाला, सुन्दर, जेवि । दुगमाळा — दुर्गम, जवरदस्त ।

करै दळां^१ दहुवै^२ कमध, भर बाण^३ भथाळा ।
 दहू दळा वहसै^४ दुभल^५, भड भळहळ भाळा ॥ २५५
 वकरै^६ दहुवै दळ विढण^७, तायक^८ करताळा^९ ।
 ध्रोह जगे लग्गौ^{१०} धियाग, ब्रह्म लेख वडाळा ।
 धोम सिलती^{११} तोडा धिकै^{१२}, वह^{१३} दमग वराळा^{१४} ।
 इम देखे जग^{१५} उच्चरै, एकणि घरि^{१६} वाळा ॥ २५६
 आज विहांणै रटुवड^{१७}, लडसी लकाळा ।
 .. ।
 ।

॥ २५७

पमगा साकति पाखरा, सभि विखम सह्टी^{१८} ।
 भडा सिलह कसि ससत्र^{१९} भीडि, किय^{२०} सज कुळवट्टी ।
 आप सिलह कसि आवधा, भरि त्रसुळ^{२१} भ्रगुट्टी^{२२} ।
 चढे 'किसन' असि भड चढे, अग^{२३} नयण उछट्टी ॥ २५८

१ ख ग दळा । २ ख दहुवै । ग दहुये । ३ ख ग बाण । ४ ख. ग वहसै ।
 ५ ग दुजळ । ६ ग वकरै । ७ ग विढण । ८ ख ग ताय । ९ ग करवताळा ।
 १० ख ग लगे । ११ क सिलति । १२ ख ग धिषं । १३ ख ग वही । १४ ख
 ग. वराळा । १५ ख गज । १६ ख ग घर । १७ ख ग राठवड । १८ ख. सहट्टी ।
 १९ ख ग सस्त्र । २० ख ग कीय । २१ ख ग त्रसल । २२ ख भृकुट्टी । ग.
 भृगुट्टी । २३ ग अगि ।

२५५ दहुवै - दोनो ! भथाळा - तर्कशयुक्त, तर्कश धारण करने वाले । वहसै - जोशमे
 होते हैं । भळहळ - देदीप्यमान, चमकयुक्त । भाळा - देखने वाला, दिखाई देने वाला ।

२५६ वकरै - जोशमे होते हैं, क्रोधपूर्ण होते हैं । विढण - युद्ध करनेको, कटनेको । तायक -
 नाश करने वाला, विध्वंसक, शत्रु । ध्रोह - द्रोह, द्वेष । धियाग - आसमान । धोम -
 अग्नि । तोडा - बटुक या तोप छोड़नेका पलीता । वह - बहुत । दमग - अग्नि-
 कण, चिनगारी । वराळा - (?) । एकणि घरि वाळा - एक ही दशके ।

२५७. विहांणै - प्रात काल, सबेरे । लकाळा - वीर, योद्धा ।

२५८ साकति - जीन । पाखरा - घोडेका कवच । सहट्टी - (?) । सिलह - घोडेका
 कवच । सज - घोड़े, ऊँट आदिके जीन या चारजामेके उपकरण, तैयारी । कुळवट्टी -
 कुल-मार्ग । आवधा - आयुधो, अस्त्र-शस्त्रो । त्रसुळ - क्रोधमे ललाटमे होने वाली
 तीन वली या सलवट । भ्रगुट्टि - भ्रकुटि । किसन - किशनसिंह । अग -
 आग, अग्नि । उछट्टी - निकली, उछली ।

भाला भलि हल्ले भिडण, करि फौज विकट्टी ।
 खारखधा असि खेडिया^१, धावै वह^२ घट्टी ।
 दारुण 'गोयद' चौगडद, फिरिया^३ पह^४ - फट्टी ।
 ओभी आगि ब्रजागि अग, नाराज निछट्टी ॥ २५६
 कटि वगतर^५ आगौ कटै, काया खळ कट्टी ।
 आधा घड पडियां^६ उडै, पीछा घर पट्टी ।
 जाणि उलट्टी^७ दोवडी, लिय^८ नगर^९ नट्टी ।
 पडै^{१०} 'गोयद' ऊपरि गजर, खागा खळवट्टी* ॥ २६०
 'गोयंद' वह^{११} दीधा गजर^{१२}, अर घडा आछट्टी ।
 साथी गोयदासरा^{१३}, अति रीस उपट्टी ।
 'किसन' घडा खग भाडि^{१४} करि, धारा धोपट्टी^{१५} ।
 नाराजां वगौ^{१६} निहाव^{१७}, उस्सीस^{१८} अघट्टी ॥ २६१

१ ख ग. घेडीया । २ ख ग. वही । ३ ख ग. फिरीया । ४ ख ग. पोहौ । ५ ख
 वगतर । ६ ख ग. पड़ीया । ७ ख ग. उल्लटी । ८ ख. ग. लीय । ९ ख. ग.
 नीगर । १० ख. ग. पड़े ।

*यह पक्ति ख तथा ग. प्रतियोमे निम्न प्रकार है—

पडे गजर गोयद परा पागा पलपट्टी ।

११ ख ग. वौहौ । १२ ख अरघड । ग अरिघड । १३ ग. गोइददात । १४ ख ग.
 भाट । १५ ख. धोपट्टी । ग धौपट्टी । १६ ग. वगौ । १७ ख ग. निहाव वा । १८ ख
 ग. सीसि ।

२५६. भलि - धारण कर के । हल्ले - चले, कूच किया । विकट्टी - विकट, जबरदस्त ।
 -खारखधां - शत्रुताका भाव लिए हुए, अति क्रोधी । खेडिया - चलाये । धावै -
 दौडते हैं । घट्टी - घोडा । दारुण - जबरदस्त । चौगडद - चारो ओरसे । पह-फट्टी -
 प्रात काल, सूर्योदयसे पूर्व । ओभी आगि ब्रजागि - वह भी वज्राग्निके समान ।
 नाराज - तनवार । निछट्टी - प्रहार किया, म्यानसे तलवार निकाली ।

२६०. वगतर - कवच । आगौ - शरीर । खळ - शत्रु । कट्टी - कट गई । जाणि - मानो ।
 दोवडी - दोहरी । नगर - कुलाच । नट्टी - नट । गजर - प्रहार । खळवट्टी -
 ध्वसक ।

२६१ उपट्टी - उत्पन्न हुई । घडा - सेना । भाडि कर - सहार कर । धारा धोपट्टी -
 तलवारोंके प्रहार किये । नाराजा - तलवारो । वगौ - वजा । निहाव - प्रहार,
 चोट ।

'केहर'^१ मन वछत^२ किया^३, कुळरीस उकट्टी^४ ।
जोगणि^५ रत पीधा जठै, गळ ग्रीधळ गट्टी ।
कमळ लियो^६ वह^७ हार कजि, जिण वार त्रिजट्टी ।
मूरवीर 'गोयद'^८ सहित, वढिया^९ कुळवट्टी ॥ २६२
तूटा मोती हार तिम, भड पडिया^{१०} भट्टी ।
... .. ।
... .. ।
... .. ॥ २६३

'सूर' 'गजण' कथ साभळे^{११}, लगि ध्रोह सिलग्गी^{१२} ।
करि तुराण^{१३} सज केजमा, भड सिलह भमग्गी^{१४} ।
असत्र^{१५} ससत्र^{१६} खट तीस द्वै, सभिया^{१७} सरवग्गी^{१८} ।
'गजण' ऊच पौसाक गहि^{१९}, असमान उमग्गी^{२०} ॥ २६४
कसि आवध हल्ले कमंध^{२१}, आखू^{२२} व्रण^{२३} अग्गी ।
मुख सूरज^{२४} वारह^{२५} सडै^{२६}, भौह मूछ^{२७} भिडग्गी^{२८} ।

१ ख. ग. केहरि । २ ख ग. वछित । ३ ख ग कीया । ४ ग उक्कट्टी । ५ ग जोगिण । ६ ख. ग लीया । ७ ख ग वहाँ । ८ ग गोइद । ९ ख ग वढीया । १० ख. ग पडिया । ११ ख ग सभळे । १२ ख ग सिलगी । १३ ख ग तुरगा । १४ ग. भमगी । १५ ख असत्र । १६ ख ग ससत्र । १७ ग सभोयां । १८ ख सखग्गी । ग. सरवगी । १९ ख. ग गह । २० ग उमग्गी । २१ ख. कमध । २२ ख अंध । ग. अपू । २३ ख ब्रह्म । २४ ग सूरिज । २५ ख. वारह । ग वाहर । २६ ख मडे । २७ ग मूछ । २८ ख भिडग्गी । ग भिडगी ।

२६२. उकट्टी - (?) । जोगणि - रणचडी । रत - रक्त, खून । पीधा - पिया । जठै - जहाँ पर । गळ - मास पिंड । ग्रीधळ - गिद्ध पक्षी । गट्टी - निगला । कमळ - शिर, मस्तक । वह - वहुत । कजि - लिये । त्रिजट्टी - महादेव ।

२६३. पडिया - वीर गति प्राप्त हुए । भट्टी - भाटी वशका ।

२६४. सूर - सवाई राजा सूरसिंह । गजण - गजसिंह । सांभळे - सुन कर । ध्रोह - द्वेष, दाह । सिलग्गी - प्रज्वलित हुई । करि - हाथी । तुराण - घोडा । केजमा - (?) । भमग्गी - (?) । सभिया - सुसज्जित हुए । सरवग्गी - सर्वांग, सब शरीर । ऊच - श्रेष्ठ । असमान उमग्गी - आसमान तक ।

२६५ आखू - कहता हू । व्रण - वर्णन । अग्गी - अगाडी । भिडग्गी - स्पर्श कर गई छू गई ।

चढिया^१ पाव रकेव^२ चाढि, असि^३ तेज अथग्गी^४ ।
 सावळ^५ गहिया^६ 'सूरउत', भाळाहळ^७ भग्गी ॥ २६५
 अनि^८ सोहौ^९ चढिया उडड^{१०}, करि सेल करग्गी ।
 वाग उपाडी वैडका, धरती धगधग्गी ।
 आया सेल उधावियां^{११}, करि खाग उनग्गी^{१२} ।
 दहुवै दळां त्रवाक^{१३} डाक^{१४}, वीरा रस वग्गी ॥ २६६
 कहर^{१५} 'गजण' 'किसनेस'^{१६} री^{१७}, खुटहड़ घड़ खग्गी^{१८} ।
 घण सायक सावळ^{१९} घमक, विखमी खग वग्गी ।
 मिळ ज्वाळा ज्वाळा मही^{२०}, जाणै^{२१} घृत^{२२} जग्गी ।
 काकै^{२३} भात्रीजै^{२४} कळह, लग्गी^{२५} मझि लग्गी^{२६} ॥ २६७
 सावळ^{२७} वाहै सूरिमां, धड़ फूटै धज्जर ।
 सिलहा भल्लक^{२८} नीसरै, वरळक^{२९} रातंवर^{३०} ।

१ ख ग चढीया । २ ख ग. रकेव । ३ ख अस । ४ ग. अथगी । ५ ख सावल ।
 ६ ख ग ग्रहीया । ७ ख भाळाभम । ग भाळाभग । ८ ख. अति । ९ ख. ग. सोहौ ।
 १० ख. ग उडडं । ११ ख. ग. उधावीया । १२ ख उन्नगी । ग उभग्गी । १३ ख
 त्रवाळ । ग. त्रवाळ । १४ ख डाक । १५ ग. कहिर । १६ ख किसने । १७ ख
 ग की । १८ ग. अग्गी । १९ ख ग सावळ । २० ख मही । ग महीं । २१ ख.
 जाणे । ग जाणें । २२ ख ग. घृत । २३ ख ग काके । २४ ख ग भतीजे ।
 २५ प ग लगी । २६ ग जगी । २७ ख ग. सावळ । २८ ख ग. भरलक ।
 २९ ख ग. वरलक । ३० ख रातंवर ।

२६५ रकेव - घोटेनी काठीका पावदान जिम पर पर रख कर नवार होते हैं, रकाव, रिकवा ।
 अथग्गी - अथार, अर्नाम, बहूत । सूरउत - गजमिह । भाळाहळ - आग, अग्नि ।
 भग्गी - प्रखरित हुई ।

२६६ अनि - अन्य । सोहौ - गुभट, नव । उडड - घोडा । करग्गी - हाथोमे । वैडकां -
 पोथी । धगधग्गी - सम्पाद्यमान हुई । नेल - भाला । उधाविया - उठाये हुए ।
 उनग्गी - नग्न । त्रंवाक - तगाडा । डाक - टका, आवाज ।

२६७ कहर - कोप । खुटहड़ - बीर, योद्धा । घड़ - नेना । सायक - तीर । घमक -
 प्रहार, प्रहारणी अग्नि । वग्गी - वनी, वजी । मही - मे । जाणै - मानो । जग्गी -
 प्रखरित हुई । भात्रीजै - भ्रातृव्य ।

२६८ धारै - प्रहार परतत । सूरिमां - सूरवीर । धज्जर - नाता । भरलक - भाता ।
 वरळक - प्रहार या प्रहारणी अग्नि, घमक-धमक । रातंवर - तलाई, रक्तता ।

पडता रत जोगणि^१ पियै^२, भरि पत्र भयंकर ।
 वाला^३ खांणी खग वहै, धारां धमजग्गर ॥ २६८
 अध सिर उड्डै^४ घाट अध, कम्मर^५ कर कोपर ।
 भिलमां सहिता सिर भड्डै, कर धारै सकर* ।
 कंठ चौसर घातै करै, छक सूर^६ अपच्छर^७ ।
 नाचै बावन^८ वीर नृत^९, डह डह करि डम्मर^{१०} ॥ २६९
 करि रथ थाभे वाकसी^{११}, देखत दिनकर ।
 हडहड रिख नारद हसै, भड भड जूटै भर ।
 होय लथत्थड^{१२} आहुडै^{१३}, घड जडै जमधर ।
 करडक खग वीजळ कळा, वरडक्क^{१४} वगत्तर^{१५} ॥ २७०
 कध कडक^{१६} वरडक^{१७} कगळ, खरडक वहि^{१८} खजर ।
 रत दरडक काळिज रडक्क^{१९}, फरडक बौह^{२०} फीफर^{२१} ।

१ ख ग. जोगिण । २ ख ग पीवै । ३ ख ग वाल्हा । ४ ख ग ऊडै । ५ ख. ग. कम्मर ।

*यह पक्ति ख प्रतिमे नही है ।

६ ख सुवर । ग. सुवर । ७ ख. ग अपच्छर । ८ ख बावन । ९ ख ग नृत । १० ख. डमर । ग. डवर । ११ ख ग वाकसी । १२ ख ग लडथड । १३ ख अहुडै । ग. आहुडै । १४ ख ग वरडक्क । १५ ख वगत्तर । ग वगत्तर । १६ ख ग. करड । १७ ख. ग कवरडक । १८ ख. वहि । १९ ख ग रडक्क । २० ख वही । ग वही । २१ ख. ग फीफर ।

२६८ रत - रक्त, खून । पत्र - खप्पर । वाला = वाल्हा - प्यारा । धमजग्गर - युद्ध ।

२६९ अध - अर्द्ध, आधा । घाट - शरीर । कोपर - कूर्पर, कोहनी, घुटना । भिलमा - शिरत्राण । भड्डै - कट कर गिरते है । चौसर - वरमाला, पुष्पहार । छक - मस्त, उन्मत्त । डह डह - प्रसन्न, हर्षपूर्वक, डमरू वाद्यकी ध्वनि । डम्मर - डमरू नामक वाद्य ।

२७० दिनकर - सूर्य, भानु । लथत्थड - गुत्यमगुत्या । आहुडै - भिडते है, युद्ध करते हैं । जडै - प्रहार करते हैं । जमधर - कटार । करडक - ध्वनि विशेष । वीजळ - विद्युत्, विजली । कळा - प्रकार । वरडक्क - टूटने आदिसे होने वाली ध्वनि ।

२७१. कडक - टूट कर । वरडक - देखो वरडक्क । कगळ - कवच । खरडक - ध्वनि विशेष । वरडक - धारा, प्रवाह । रडक्क - टक्कर । फरडक - ध्वनि विशेष । बौह - बहुत । फीफर - फेंफडा ।

वाहै खग स्त्री हथ^१ 'किसन', 'गजपति' घर घुम्मर^२ ।
 पडै क जाणै^३ पाहडा, विकटा पर वज्जर ॥ २७१
 घण वाहै^४ भेले घणी, 'किसनेस' किरमर^५ ।
 चुख चुख हुय^६ पडियौ अचळ, 'ऊदल' सुत अडुर^७ ।
 पडिया^८ भड सह^९ पाखती, कामा^{१०} नामा^{११} कर ।
 के घायल ऊला कमध, पडिया^{१२} के पाधर ॥ २७२
 करणाजळ पडिया कमध, वाहै^{१३} वहि^{१४} वज्जर ।
 कुरग ज्युही^{१५} पलटै^{१६} कमध^{१७}, हल्ले^{१८} दावागर ।
 जैत नगारा वज्जिया^{१९}, वीता धमजगर^{२०} ।
 गह धर^{२१} इम जीता 'गजण', वळवत^{२२} वहादर^{२३} ॥ २७३

कवित्त- समर जीप^{२४} 'गजसाह', अथौ छिवतौ^{२५} भुज अवर^{२६} ।
 खुरम हियै^{२७} खटकियौ^{२८}, अवर दहले^{२९} दावागर ।
 'सूरसाह' 'गजसाह', साह भयप्रति सधारा^{३०} ।
 पूजि वधारा^{३१} पटा^{३२}, विदा कीधा जिण वारा ।

१ ख ग हथि । २ ख ग गुम्मर । ३ ख जाणे । ४ ख ग वाहे । ५ ख ग
 करिम्मर । ६ ख ग होय । ७ ख ग अडर । ८ ख ग पडीया । ९ ख ग
 सोही । १० ख ग कामा । ११ ख ग नामा । १२ ख ग पडीया । १३ ख वाहे ।
 ग वहि । १४ ग वाहे । १५ ख ग जही । १६ ख ग पलटे । १७ ख ग कमाद ।
 १८ ख ग हले । १९ ख ग वज्जिया । २० क समजगर । २१ ख ग धरि ।
 २२ ख. ग. वलिवत । २३ ख वाहादर । ग. वाहादर । २४ ख ग जीपि । २५ ख
 ग छिवतौ । २६ ख ग. अडुर । २७ ख. हीए । ग. हीए । २८ ख. ग पटकीयो ।
 २९ ख ग दहले । ३० ख. सुधारा । ३१ ख वपटारा । ३२ ख वधा ।

२७२. किरमर - तलवार । पडियो - वीर-गति प्राप्त हुआ । अचळ - पृथ्वी, भूमि । अडुर -
 निर्भय । ऊदल - मोटा राजा उदर्यासिंह । पाखती - पास, निकट ।

२७३ करणाजळ - करणसिंह जो किशनसिंहका भतीजा था । वज्जर - तलवार । कुरग -
 घोडा, हरिण । ज्युहीं - जैसे ही । दावागर - दावा करने वाला, शत्रु । धमजगर -
 युद्ध । गहधर - गर्वधारी ।

२७४ जीप - जीत कर । गजसाह - गजसिंह । अवर - आसमान । सूरसाह - शूरसिंह ।
 जिण वारा - जिस समय ।

हुय^१ तबळ^२ बंब^३ दळ मभिहले, पित सुत जस ब्रद फाविया^४ ।
हुय मगळ धमळ उछव^५ हुवा^६, एम मडोवर आविया^७ ॥ २७४
केइक^८ दीह कमधेस, रहे मंडोवर^९ राजा ।
इते दखिण^{१०} ऊठिया^{११}, सबळ^{१२} दळ दुद सकाजा ।
‘सूरसाह’ पतिसाह, तेडिया^{१३} तुर तिण वारा ।
आयौ ‘सूर’ अभग, सभे^{१४} फौजा घेसारां ।
गजपूर^{१५} दत भिडजां गजा, दिलीनाथ तौरा^{१६} दिया^{१७} * ।
दळ समपि अरावा^{१८} दिखण^{१९} दिस^{२०}, कमधज भूप^{२१} विदा किया^{२२} ॥ २७५
दीह केक मभि दुभल, सूर दळ लिया^{२३} सकाजा ।
अभग दखिण आवियौ^{२४}, रहे ब्रहनपुर^{२५} राजा ।
दहले भागा दुसह, पाय लागा बध^{२६} पाणै ।
अजू ‘सूर’ करि अमल, एक^{२७} हुकमह^{२८} धर^{२९} आणै^{३०} ।

१ ख ग होय । २ ख तवल । ३ ख. वव । ४ ख. ग पावीया । ५ ख उछव ।
ग. उत्छव । ६ ग हुआ । ७ ख ग आवीया । ८ ग कोइक । ९ ग मडोवरि ।
१० ख ग. दखिणि । ११ ख ग ऊठीया । १२ ख. सवल । १३ ख ग तेडिया ।
१४ ग. सभे । १५ ख ग गहतत । १६ ख ग तोरा । १७ ख ग दीया ।

*यह पक्ति ख. ग प्रतियोमे निम्न प्रकार है—

गहतत मिले तदि भिडज गज ।

१८ ख अरावा । १९ ख ग दखिणि । २० ख ग दिसि । २१ क. रूप । २२ ख ग
कीया । २३ ख ग कीया । २४ ख ग आवीयौ । २५ ख. ब्राहनपुर । ग
ब्रहानपुर । २६ ख बधि । ग बधि । २७ ग ऐक । २८ ग हुकम । २९ ख धरि ।
३० ख. आणे ।

२७४ तबळ — वाद्य विशेष । वव — नगाडा । ब्रद — विरुद । फाविया — शोभित हुए । मगळ
धमळ — मागलिक गायन, उत्मवके गीत ।

२७५ कमधेस — राठीड राजा । वुंद — वृद, युद्ध । तेडिया — बुलाये । तुर — तुरन्त । सूर —
शूरसिंह । घेसारा — समूहो । भिडजा — घोडो । अरावा — तोप ।

२७६ दहले — भयभीत हो कर । दुसह — शत्रु । पाय लागा बध पाणै — करबद्ध हो कर
पैरोमे लगे ।

वीह^१ करे^२ दांन खग अथिग^३ त्रिद^४, पिसणा^५ करि ऊथल^६ पथल ।
 मांनवा^७ लोक^८ जस करि अमर^९, देव लोक वसियी^{१०} दुभल ॥ २७६

इति तृतीय प्रकरण ।

इति पूरवारध ।



१ ख ग वही । २ ग. करे । ३ ख ग अथग । ४ ख ग त्रिद । ५ ख. प्रिसणा ।
 ग प्रिसुणां । ६ ख. उथल । ७ ख ग. मान्नव । ८ ग लोकि । ९ ख अम्मर ।
 १० ख. ग वसियी ।

२७६ अथिग - अपार, असीम । त्रिद - विरुद । पिसणा - शत्रुओ । ऊथल पुथल - उलट-
 पलट । वसियी - निवास किया । दुभल - वीर ।

* श्री *

परिशिष्ट १

नामानुक्रमणिका

अ

अगद ५०, ६२, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९
अगदेस ४६, ५०, ५२, ६२
अगिरा ८४
अतरीख ८१
अवरीख १२
असुमान १२
अकवर २७६, २८५
अकासु ११
अखौ ५८
अगनवरण ७८
अज १३, २३८
अजाभावा २८१
अजैचद २१५
अजोधिया २३, ७५
अटक २१८
अटक्क २२७
अतिय ७७
अन्न १०
अनीक ७७
अभपती ३
अभमल ७
अभमाल २
अभिभुति ७६
अभैपुरा ८८
अभैसेन १६४, २०८, २०९
अमर १०६, २०८, २०९, २१२, २८२,
२८३, २८४
अमरगढ़ १०५
अमरचद १८१

अमर विजै १०४, १०५
अमिन्नजीत ८१
अयुताजित १३
अरबद २६८
अरिजण २७८
अलहणपुर ६८
अलीहुसेन १८२
अवधि २०, ७६
अवधिपुरी २४
असताचळ १६४
असमजस १२
असोकेस ५७
अहमदवाद २७६
अहर १३१

आ

आवेर २६०
आडे-वळै २५१
आव् २६६
आवूगिरी १३६
आरद १०
आरवी २२२
आसथान २३८, २४०
आसोक ५३, ५७

इ

इद्र १८७, १६१, २१३, २१६
इद्रजीतण ७४
इक्ष्वाकु ६

ई

ईडरगढ़ २३८

उ

उग्रप्रभ १३७
उदल २६१
उदियाचळ १६४
उरमिळा ३२

ऊ

ऊदळ ३०८
ऊमर १८७

क

ककुस्थ १०
कणियागर २४५
कनवज १३६, २१५, २२७, २३५
कनवज्ज २३६
कनोज १३५, १७१
कनोज २२५
कमंध ४६, ८८, ११४, २६२, २६४,
२७२, २७४, २८१, २६६, २६८,
३०३, ३०५, ३०८
कमवज ८३, २१७
कमध १६६, २१४, २१५, २३८, २३९,
२४८, २५८, २७६
कमधज ८३, १८२, १८८, २५७, २६३,
२६५, २६८
कमधज्ज १०४, १४२, १४३, १८२,
२४५, २४६, २५३, २५६, २५७,
३०६
कमधेस ३०६
करण २६७
करणप्रताप १४०, १४१, १४२
करणाजळ ३०८
कळिजुगि ८३
कळू २१६
कवसतमणि ५
कानडू २४१

कामिप ६

कासी ३, १३५, १५४
कासीराज १६१
किरात ७
किसन १५६, २५६, २६८, २६६, ३००,
३०१, ३०३, ३०४, ३०८
किन्नतसिध ३०१
किसनेस २७८, ३०६, ३०८
कुभ ६२
कुभकरण ७३, ७४
कुभराण २४६, २५०
कुभिला ७२
कुभेण २४६
कुमेर १४
कुरहगढ १०६
कुरहै गढ १०५
कुस ७७
कूंभी २४६
केकई ३०
केसव ३६
केहर ३००, ३०४, ३०८
केहरि २६६
केहरी २०१
कोसळ २०
कौसल्या ३८, ७६
कृतजय ८१
क्रासिधु १७३
क्रीतसुदरी १००
ख
खरा ४१
खाटू २६०
खुद्रक ८२
खुनक ७६
खुरम २६८
खुरम २६८, ३०८
खेडू २३८

खेमघन्वा ७७

खैरवदा १६०

ग

गंग २५५, २५८

गंगराव २५४, २५८

गगवीर २५२

गजरा २७८, २८७, २८९, २९०, २९१,

२९५, २९६, ३०१, ३०५, ३०६,

३०८

गजनी २०५

गजपति २८६, २९०, ३०८

गजपत्ति २८५

गजपती २९०

गजवध २८६, २९६, २९८

गज-साह २८५, २९२, २९४, २९५,

२९७, ३०८

गर्जासिध २९७, ३०१

गर्जौ २९३

गढकनक २८९

गरणपति ८३

गवड २६०

गवाखेस ५४

गांगी २५४

गाधीमुत २४

गुजरात २५७, २८२

गुज्जर २८४

गुढवाड २५९

गूजर २७५

गोइद २९८

गोतम्म २६

गोयद २९८, ३०१, ३०४

गोयददास २९८

गोयदास ३०४

गोरख १६०

गोविंददास ३०१

घ

घडूकी २५२

च

चचुराय ११

चद ११, १९, ९८, २११, २१२, २१३,
२१४

चदहमीर १००, १०२

चदेल १४०

चद्रकूप १४१

चद्रमित १८४

चक्रेशुर २४९

चाडौ २४३

चाचौ २४६, २४७

चाटसू २६०

चाळक २४२

चावडा २३८, २३९

चाहुवाण १९४, २०२, २०३, २०४,
२१३, २७२

चित्रगढ २४९

चीतौड २४९

चूंडौ २४३

चूडामणि १६८, १७०

चौंड २४४, २४५

छ

छाडौ २४१

ज

जहगीर २९७

जगपत २१४

जगमुकट २२२, २२४, २२७, २२८

जटाएस ४५

जट्टाय ४६

जनकेस ३२

जवदळ २९०

जयचद २१६, २१८, २२७, २३०, २३५

जयवत २१५

जळखेडि ११४

जवनासव १०

जवनासु ११
जांनकी ५२, ५६
जामवंत ५४
जांहगीर २८५
जाजपुर २५६
जाळघर १०८, २८५, २८६, २६३,
२६६, २६७
जालण २४१
जाळोर २६०
जूजधिर २५६
जैसाण ३०२
जैचद २ ६, २१७, २१८, २२७, २२८,
२३२, २३६
जैत २५६
जोइया २४३
जोष २५१, २५२
जोषाण २५१, २५२, २६६, २८०
जोधो २५०, २५१, २५२

ड

डीडवाण २५६

ढ

दूढाड २६०

त

ताडिका २६
तारागढ २६७
तागाचद भाट २८१
तारापुर २१८
तीडा २४०
तीडी २४१
तीरधराज १७३
तुवर ११४
तुजधरमीर २६३
तुर्गती २६३
तेजमणि ११५, १२८, १०६, १३०

तोगनाथ ८४
त्रसरा ४१
त्रिकुट २६५
त्रिघना ११
त्रिध्यारुण ११

द

दलीप १२
दसरत्य ३३, ३६
दसरथ १३, २४, ७६
दससहस २४८
दांनयार २८२
दिलीप १३, २४
दिवसाळियो २५०
दुखरा ४१
देवडा, देवडा २४२, २६६, २७०, २७४,
२६७

देवानीक ७७
दौलतिइ २५८
द्रढासु १०
द्वापुर २१६
द्वापुरि १६२
द्धारामति २३६
द्धारिका २३८

ध

धरमवव ८४, १६१
धुधभार १०
धुवराज २४०
धुवसधि ७८
धूहड़ २४०

न

नभ ७७
नरहर २६
नळ ५४, ७२
नवसहस २५०

नागणेच २४०
 नागदुरग २५५
 नागपुर २४०
 नागांण २४०
 नागौर २५७
 नाडूळ २४५
 नाभग १२
 नारद ३०७
 निकुभ १०
 निखघि ७७
 नील ७२
 नेमनाथ १६२

प

पंग २३५
 पगरीज २१७
 पडित माघ ६
 पवार १३६
 पदम ११५
 पदारथि ८३
 पमार १०५
 परमार १०५, १६६
 पररेज २२१, २२३, २२५, २३२, २३४
 परिहार २४१
 पवार २६०
 पारकेम १३६, १३७
 पारसी २२२
 पारीजात ७७
 पाव जळद्री १०६
 पिय-भूप २७६
 पिराग १८१
 पीछोला २५०
 पुज ८४, १६१ २१५
 पुडरीक ७७
 पुक्कल ८१
 पुक्ष ७८
 पुख ७८

पुरुकुमीमान ११
 प्रतद्योम ८०
 प्रतीकास ८०
 प्रथभूप
 प्रदुमन १५६
 प्रसेन ७६
 प्रसेनजीत ७६

फ

फिरगी २३४

व

वधणौर २५६
 वढभीखण ५६, ६१
 वलमीक ७
 वहादर २६४, २७५, २७६
 वारट सकर २८०
 वाल ७७
 वालमीक ३६, ७६
 बालि ४६, ५४, ६६
 वालीसा २५६
 बालेस ४६
 वाहु १२
 वुगलाण ११५, १२४, १२५
 वूदी २५१

भ

भगीरथ ८०
 भरथ २०, २३, ७६, ६६, १५२, १७१,
 १७२
 भाण ८०
 भाणजदीप ६
 भांतीदान कविया २८१
 भागीरथ १२
 भाट गोप २८१
 भाटिया २८१
 भाटी ३०२
 भारथ २१५

भाग्वी २४२
भीममाल २४२
भिन्नु ५

म

मंडल श्रोत्रो २३६
मडवी ३७
मडोर २४, २४१, २४४
मडोवर ३०६
मऊ २५१
मछरीक २७४, २७५
मदफर २६३
ममारख २८४
मरखण ७६
मरीच ८४
मरु ७८
मरुदेव ८०
मरुघरा २४५
मलिनाथ ७
मल्यनाथ ७
मसूदी २५६
माडव २२५
माटिनपुर २५६
मानघाता ११
माघ ६
माघवदास २६
मारवा २७२, २८६
मारीच ६, २६, ४३
माल (राव मालदेव) २५८, २५९, २६१
मालपुर १६०
मालादेवी १०७, १०९
मिलक जचवळ
मीरतुजक २६३
मुदफर २६५, २६६, २७०, २७७, २७९
मुदफर माह २७६
मुरघर २६६, २८८
मेघ ५८, ५९

मेघनाद ७३
मेडती २५६
मेरी २४६, २४७
मेवाड़ २४६, २८६
मोकल २४६, २४७, २४८, २५७

य

यव्वनासु ११

र

रघु ३, १३
रघू १४
रघुराय २६
रणजय ८१
रणमल २४५, २४६
रणमाल २४६
रांग (महाराणा) २४६, २५०, २५६,
२६०, २७५, २९७
राण (रावण) ४६, ५८, ५९, ६०, ६१,
६२, ६६
रांम २३, २९, ३३, ३६, ४४, ४७, ४८,
५२, ५३, ५५, ५८, ५९, ६१, ६२,
७६, ९६, १६९
रांमचद २०, ९३
रामण ६६, ६७, ६८, ६९, ९४
राणै ४४
रावण १६६
राघी ४६
रायपाल २४१
राव (रणमल) २४६
राव (सिरोही के राजा) २७४
राव गागी २५३
राव जीवी २५१
राव घूहड २४०
राव रणमल २४६
राव मालदेव २५६, २६०
राव सूजी २५२

रासौ २६६
 रिणक ८२
 रिणमाल २५०, २५१
 रित्रुपरण १३
 रहक १२
 रुद्रसेण १६४, १६६
 रुद्रसेन १६२, १६३, १६५
 रुम २२१, २३४
 रेवानदी २५१, २८२
 रैणका ३६
 रोहितास ११

ल

लक ५६, २३३
 लंका ६०, ६२, ६६, १५३, २७८
 लखमण ८६
 लखमण २७८
 लखण २०, २३, ७२, ७६
 लखपत फुलांणी २६६
 लखपति २८०
 लखै २६७
 लछमण २६, ७३, १३२, १३४, १५६
 लाखमण ६१
 लाखौ २३७

व

वइवस्तु ६
 वढ्भीखणी ६४
 वरदाय २३५
 वरियावर १६४, १७३
 वहनि ८१
 वहन्य ८१
 वाघ २५७
 वाघी २५३
 वाढेल २३६
 वामुदेव १३२, १७६
 विभगिर १०७

विकुल ६
 विक्रमादीत १८२
 विजयचद २१६
 विजयसूर १२
 विजैचद २१५
 विदेह २८
 विधत ७८
 विस्टरास १०
 विस्वामित्र २४, २६
 विस्वामित्रेस २५
 विस्वासा ७६
 विहारी २८७
 वींभागिर १०७
 वींभाजळि १०७
 वींभाभळ २५१
 वीकमसी २३६
 वीकाण २५६
 वीर १५०, १५२, २४३
 वीरचद ८६, १००
 वीरभद्र १२६, १४६
 वीरम २४३
 वीरोचन १६४, २१२
 वेदव्यास ७, २१५
 व्रक १२
 ब्रह्मवळ ७६
 ब्रह्मभोज ८१
 ब्रह्मदस्व ८०
 ब्रहनपुर ३०६

स

सकराचारिज ८७
 सखोघार २३६
 सघारण ८१
 सजय ८१
 संधि ७६
 सपात ५२
 सपाति ५३

सभूत ११
 सहितासु १०
 सक्कुनिज १०
 सगर १२
 सजणविनोद १०६, ११०
 सभणविनोद ११४
 सतजुग २१६
 सतव्रत ११
 सत्यकृता ३२
 सत्रघण २०, २३, ४५, ७६
 सव्वरी ४७
 सरजू १४, २३
 सरवकरमा १३
 सलख २४३
 सहदेव ८०
 सहसाग्रजणि
 सावर २५६
 सिघका ५६
 सिघल १२१
 सिघलदीप १२१
 सिरोह २७४
 सिरोही २८६, २९७
 सिघ्दीप १२
 सिहासन ७६
 सिवपुरी २६६
 सोम्र ७८
 सोत ३६, ४३, ४४, ५३, ५७, ५९
 सोता ३०, ३३, ३६, ४७
 सोथळ ७८
 सोसोद २४७
 सोसोदिया २४८
 सीह २३६, २३७
 सीहो २३६
 सुक्लेण ५०, ७
 सुक्लेण ४७
 सुगण ७८

सुग्रीव ४७, ४८, ४९, ५३, ७७
 सुग्रीवेस ५०
 सुतपा ८१
 सुदरसण ७८
 सुदास १३
 सुदेव ११
 सुद्धन ११
 सुनक्षत्र ८०
 सुनिखत्र ८१
 सुप्रतीक ८०
 सुवाहु २६
 सुवुधि १४३
 सुमत्रा ३८
 सुमित्र ८२
 सुमित्रा २०
 सुरताण २२०, २३२, २३५, २६६,
 २७०, २७४, २७५, २८८
 सुरथ ८२
 सुरस्ता ५६
 सूजावत २५४
 सूजौ २५२
 सूरज २५२
 सूर (सवाई राजा सूरसिंह) २६२, २६३,
 २६५, २६७, २६८, २७०, २७१,
 २७२, २७४, २७५, २७६, २७७,
 २७८, २७९, २८०, २८१, २८२,
 २८३, २८४, २८५, २८३, २८५,
 २८६, २८८, ३०१, ३०५
 सूरजत ३०६, ३०९
 सूरज २६८
 सूरजप्रकास ८, ९
 सूरज्जसिघ २६१
 सूरभूमिह २६१
 सूरराव २७३
 सूरसाह (सवाई राजा सूरसिंह) २६४,
 २७०, २७७, २८२, २८३, २८४,

२६७, ३०१, ३०८, ३०९

सूरिजप्रकाश ७
 सेख २५५
 सेखराव २५८
 सेखावटी २६०
 सेखें २५४, २५६
 सेखों २५४, २५६
 सेर १८२, १८३
 सेरखां १८२, १८३
 सेसट ११
 सोनग २३८
 सोनंगरा २४२
 सोनगह २६५
 सोनगिरी २८८
 सोनिग २३८
 स्राव १०
 स्वसाद १०
 स्वसोध ८१

ह

हस २४६
 हणमत २६
 हणमतराव २०६
 हणवत ७२
 हणू ४७, ५६, ६१
 हणूमांन ५१, ५८, ५९, ६४
 हवसी २२३
 हरचद १८४
 हरदास ऊहड २५६, २५७
 हरिचद ११
 हरिजस १०
 हरो ऊहड २५६
 हाडा २६०
 हिगळाज १४०
 हुसेन २३४
 हित ११

* श्री *

परिशिष्ट २

छदानुक्रमणिका

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
अन्नतगति	अनि नृप कोय न अेही	२१७	३	५
अरद्धनाराच	इसी जवाण उच्चरै	२१	१	७
	करत के किलोहलं	२१	१	७
	किसू वखाण कीजियै	२३	१	१५
	कुलीन नारी केकय	२१	१	५
	छन्नप्पती उछाहमे	२२	१	११
	छभा उछाह छक्कय	२२	१	१०
	डहंत केलि डालय	२३	१	१४
	दीपै उछाह डमर	२२	१	१३
	रमै हसै नरिंदर	२२	१	९
	वणाव सोळ वामरा	२२	१	८
	वसिस्ट आदि ब्रह्मय	२२	१	१२
	सगीत नृत सोहती	२१	१	४
	सिगार मोळ मज्जयं	२१	१	३
कलहंस	उड रीठ गोळा नाळ भळपट ऊपडै	२७७	३	१९२
	उडि वाण तीर अपार असि आफाळिया	२७७	३	१९३
	कमघज्ज लडै कराळ उरड अथाहरा	२७८	३	१९६
	किसनेस ववव कणैठ अरि खग औभडै	२७८	३	१९५
	भळ रूप वीह भट भाट दुगम डडेहडा	२७८	३	१९४
कवित दीडी	प्रथम लाख ममपियौ कवि वारट सकर कर	२८०	३	२०२
कुसविचित्रा	भूपति नक्कल नमै डड भरै	२१७	३	४
माया	अवविपुरी आणद	२४	१	२०
	अस्ताग जोग अभ्यामी	३	१	५
	आदि एक अविणामी	५	१	९
	विघवत वेद विधान	२४	१	२१
	विध वलमीक विधान	२६	१	३०
	महम किरण परकास	४	१	७
	मोळवरम वय सार	२	१	३

छंदनाम	प्रथम पक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्याक
	स्त्रीपति भगति सकाजं	१	१	१
गीत त्रकुटबंध	इम वयण सुगिण कपिरावरा	६६	१	६६
चचळी	आकळे पुकार एह जोगणोस द्वार जाइ	२६२	३	१४४
	आवियौ कमघ एसि वोम लागि जेण वार	२६२	३	१४५
	कोटवाम नास कीघ जास नाथदास जैन	२६१	३	१४३
	सूररो कुरव्वसाह भाति भाति कीघ भाव	२६२	३	१४६
	सोहियौ सूरज्जमिघ नवकोटीतणौ नाह	२६१	३	१४२
छप्पय, छप्पै	अकळ भूल आवळा भिल्लै गजवघ भळ्ळाहळ	२६८	३	२४३
	अठी सूर पह अडर उठी अमर अमपत्ती	२८३	३	२०६
	अवधि राज कर इधक महल सुख कीघ महावळ	७६	१	१६७
	असट दीह नर इद इद्र जिम रहे अमामा	२६६	३	१६४
	असुरा दिस लिख एम करै दळ सबळ भयकर	२८६	३	२२०
	इम कागद आवियौ पेखि वचे गजपती	२६०	३	२२२
	इम जीपे आवियौ गग वाजता नगारा	२५८	३	१३१
	इम सुगिण चढिया उभै कटक कमघज कळिचाळा	२५७	३	१२६
	इळा राज करि एम 'माल' सगि वसे महावळ	२६१	३	१४२
	ईख राज छक इमौ अडर गागौ वाघावत	२५४	३	१२६
	उदित ब्रह्म मधि ईम पछौ वय किसन प्रकासै	४	१	८
	उभा सोह उमराव अ वदीवाण अनाही	२६३	३	१४७
	उरड जोस ऊण्णै वणै गहमह भड वका	२५४	३	१२५
	ऊला केक अपार पडै पल्ला अणपारा	२५७	३	१३०
	एक कहै असपत्ति लिखे खत हफत विलायत	२२७	३	३८
	एक वात ऊवरां सुणो रीभिघौ नरेसुर	२६७	३	१५८
	अघिसता भुज उरस क्रहस दळ खिमस सकाजा	२६७	३	२४२
	कथ गोइद किसनरै पेखि चित खात पहल्ली	२६८	३	२४४
	करे ऊच पौमाक पहिर वहु अतर परमळ	२६१	३	२३३
	करे रीभ कमघ सूर उगतै दळ सब्वळ	२८१	३	२०३
	कर फते कमघज्ज करे वह रीभ कवेसा	२५३	३	१२३
	करै कइक मुकाम अधिक आतुर वळ आया	२७६	३	१८६
	कुम्भरांण वाळक्क जुगत राज ऊ न जाणै	२४६	३	११६
	केइक दीह कमघेस रहे मडोवर राजा	३०६	३	२७५
	कोइक सुकवि इम कहै वरस वह नूप किम वरणौ	२१५	२	५०४
	जहर विखम जारग भुजा धारग भुजगम	३	१	६
	जाइ करा जोघाण जूथ केजम जरदाळा	२६६	३	१५६
	ओघ पाट जगजीत सूर दाता राव सूजौ	२५२	३	१२२

छंदनाम	प्रथम पक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्याक
ताम खचरि बहु तेज अई गुजर घरवाळी		२७५	३	१८८
त्राममाण सुगताण मांण पारम वळ मूकै		२७५	३	१८७
दानयाग दहलियौ हुतौ मळ हफतहजारी		२८२	३	२०५
दिवस एक जैचद वीर मिमलति विचारी		२१८	३	६
दीह केक मळि दुजल 'मूर' दळ लिया नकाजा		३०६	३	२७६
घरा महरि ऊधमै जोध खिजिया जमजाळा		२५०	३	११६
धृत्रै राग मिधवा गजै नाळिया त्रवागळ		२६४	३	२३६
नग सीम गळ नीम गरक असमा चूनागळ		२५१	३	१२१
नीम कोट भड निडर जाइ लागिया जियारा		२६५	३	२३८
पगा गगजळ प्रघळ विव कछनी पीतवर		५	१	१०
पावक मिध चख प्रवळ सेम फूका विखि मव्वळ		२६६	३	२४५
भडा वात मभळे एण विधहू त अकारा		२८७	३	२१७
भय दिखाय कुभेण जीवघर द्रोह जगाया		२४६	३	११७
मसलत डेरा मडे भडा विकराळ भुजाळा		२८७	३	२१६
अत इम करि रगामाल मिले लग लोक मभारा		२५०	३	११८
राव सहित रागिया भमै वनि वनि चित भग		२७४	३	१८६
वळै लिखी आ वात विमळ मलिनाथ ब्राहमण		७	१	१५
वाजि भाट वीजळां घाट तूटे घण घाए		२६६	३	२३६
वाजि घमस उडड वाजि त्र वाळ चहुवळ		२७०	३	१६५
विडे एम वेखियौ इता एकरा घरवाळा		२५५	३	१२७
विडे विहारी वडे आदि जव लगि अणरेहा		२६६	३	२४०
विदा होय तिण वार ममत गज जेम मलप्ये		२८६	३	२१५
वीहार ी दळ विहडि जीपि लोवी जाळ वर		२६७	३	२४१
सका गजा मिरपोस ममत गज फतै ममारख		२८४	३	२-७
मळि गढ दारण मगह वाट जीवता विहारे		२६३	३	२३५
सभे एम मल्लीत प्रकट इम लिखे पठारण		२८८	३	२१६
स्तर महम वर सूर कीध वसि एक गमकळ		२७६	३	१६६
समपि यती पतमाह एम गजपति हूं अक्खै		२८६	३	२१४
समर जीप 'गजसाह' अयौ छित्रती भुज अवर		३०८	३	२७४
महमतेर अमवार सीह सादूळ ममोमर		२८२	३	२०४
मिरै माह पररेज रुम पति ग्रहे बहादर		२३४	३	६७
मिलै पोम लख असि पमंग असवार सपक्खर		२१६	३	१
सुजा पाट नकाज वाघ कमघ वरदाई		२५३	३	१२४
सुणि इम वोलै सुभइ आप जिम कुण इम अक्खे		२८८	३	२१८
सुघन्य माता कौमल्य तात दमरथ वनि भूपति		७६	१	१६८

छंदनाम	प्रथम पदित	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
	सूडादड अहेस राग रीक्षेम समोसर	२	१	२
	सूत दियण नग सिरै मिळै जोधौ भड मेळा	२५१	१	१२०
	सूरवीर गजसाह वडा तरवार वहादुर	२६५	३	२३७
	सेखे इम साभळे घुरा लिखियौ कमघज्जा	२५६	३	१२८
	सोभवती सजती सोळ स्र गार मक्कती	२	१	४
	स्याम काज साजिजै वैर इण विघ वाळीजे	२६६	३	१६७
भूपताळ	अति भूल गहमह आवळा	२४१	३	१०३
	इण भाति कागद आवियौ	२४६	३	१०७
	इम वहे पोरस ऊफणै	२४७	३	१०६
	कळि रुधिर केसरिया किया	२४८	३	११४
	गहि खाग जिण करियागरा	२४५	३	१०२
	चित्त समद थानिक चौंडरै	२४५	३	१०४
	दइवारा उद्दम दामराँ	२४७	३	१११
	दस च्यार रवि दरसाविया	२४५	३	१०१
	घडसीम पग धरि खग धरै	२४८	३	११२
	पत्र एम लिख निज पाणियै	२४६	३	१०६
	पर छती जगि रिण जीपियौ	२४८	३	११३
	पह खानजादा पाछटे	२४४	३	६६
	प्रथमाद सिर व्रद पावियौ	२४४	३	१००
	महि कु भराज जमावियौ	२४६	३	११५
	भेरो र' चाचौ मारळ	२४६	३	१०८
	वरियाम चौड वखाणियै	२४४	३	६८
	विघ वयण क्रोध विचारिये	२४६	३	१०५
	सीसोद कमघा सैफळा	२४७	३	११०
भूलणा	अघ सिर उड्डे घाट अघ कम्मर कर कोपर	३०७	३	२६६
	अनि सोहौ चढिया उडंड करि मेल करग्गी	३०६	३	२६६
	आज विहाणै रट्टवड लडसी लकाळा	३०३	३	२५७
	इम मसलति करि आविया केहरि कळिचाळा	२६६	३	२४६
	कध करडक वरडक कगळ खरडक वहि खजर	३०७	३	२७१
	कटि वगतर आगौ कटै काया खळ कट्टी	३०४	३	२६०
	करणाजळ पडिया कमघ वाहै वहि वज्जर	३०८	३	२७३
	कसि आवघ हल्ले कमघ आखू वरण अग्गी	३०५	३	२६५
	कहर 'गजण' 'किसनेस' री खुटहड घड सग्गी	३०६	३	२६७
	किम खावौ टाळा 'किमन' ते वडि रिणताळा	३००	३	२४६
	'केहर' मन वट्टत किया कुळ रीस उकट्टी	३०५	३	२६२

छंदनाम	प्रथम पक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्याक
	गोयद वह दीघा गजर अर घडा आछट्टी	३०४	३	२६१
	घण वाहै भेलै घणी 'किमनेस' 'किरमर'	३०८	३	२७२
	चाढा दह दळ चाढवै भळहळ भूलाळा	३०२	३	२४५
	तेडे 'केहरि' वार तिरा भड थाट भुजाळा	२६६	३	२४७
	तौ 'केहर' कहिजे सताव वाइक विगताळा	३००	३	२५०
	दहु दळा मावळ दुगम ओपै अणियाळा	३०२	३	२४६
	भाला भलि हल्ले भिडण करि फौज विकट्टी	३०४	३	२५६
	राखी करे तयारिया जगा जमजाळा	३०२	३	२५३
	वकरै दहु वे दळ विडण तायक करताळा	३०३	३	२५६
	सावळ वाहै सूरिमा घड फूटै घज्ज	३०६	३	२६८
	सुगो 'गजरा' कथ 'सूरमाह' तायक तिरा ताळा	३०१	३	२५२
	'सूर' 'गजरा' कथ साभळे लगि धोह मिलगी	३०५	३	२६४
	सुग वनिवा आवी सुती अम सतिथ उताळा	३००	३	२४६
तारक	अठ दीह करार करे भड आया	२६६	३	१६३
	निछरावळ द्रव उडत अनेका	२६८	३	१६१
	मिळिया वह साजण उच्छव मेळा	२६८	३	१६०
	सुकिया मिळ जूथ अनेक करे सुख	२६६	३	१६२
दूहा, दोहा	अकवर असपति आयमे	२८५	३	२०६
	अभमल सूरज हिंदवा	६	१	१७
	आदि ग्रथरै स्त्री अक्षर	६	१	१२
	इम लिखि मिळिया साह अठ	२२७	३	४०
	इम जीते कनवज अयो	२३५	३	६८
	उच्छव वध अजोधिया	२३	१	१७
	कठै साख इण विघ कहि	६	१	१३
	करि सलाम द्रव नजरि करि	२२८	३	४४
	करै राज इण विघ कमघ	२३५	३	७१
	काळ रूप चड्ढी किटक	२७७	३	१६१
	तदि नृप पग वदि मुनितणा	२६	१	२६
	ताण मू छ तोले तिजड	२२८	३	४४
	तेडे राजा सूर तदि	२८५	३	२१०
	दे गज असि सिरपाव दळ	२३५	३	७०
	घर गुज्जर दक्खिण घरा	२८४	३	२०८
	घरपति जोवै धारणा	२२८	३	४२
	परखण वळ गजपतिरौ	२८५	३	२१२
	फतौ तुमै कै हम फतौ	२२७	३	३६

छंदनाम	प्रथम पक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्याक
	बहु खाटे जयचद विरद	२३५	३	६६
	भार अरथ कवि भारवी	७	१	१४
	भावी थित प्ररण गरभ	२०	१	१
	महि कनवज महि जगमुकट	२२७	३	४१
	महि पति कु वर मिळावियौ	२८५	३	२११
	रामचद्ररा वस मभि	२१६	३	५०५
	राम लखण सत्रघण भरथ	२३	१	१६
	लघु लघु सर कर घनक लघु	२३	१	१६
	वरणवि कवि रघुवसिया	६	१	१८
	वीता इम केइक वरस	२३	१	१८
	सिव हणमत नरहर मुकवि	२६	१	३१
	सूर पान ले माहरा	२७७	३	१६०
नाराच	अनेक पद्याणी अवाम रूप भोमि रच्चए	२१७	३	२
	कराळ औ मुनिद्र कोइ भाखसी बुरी भली	२६	१	२८
	कराळ देस राकसा कुमार ए न मोकळू	२५	१	२६
	छजत भूपती छमा सलाम भूपती सजै	२१७	३	३
	भलोस आज मु भू भाग आप ग्रेह आविया	२४	१	२२
	रेचै चिंतामणि सु हारकठि रक कीजियै	२५	१	२५
	रोमच अ ग घोम रूप ब्रह्म तेजमे वणे	२५	१	२७
	वदै मुनेस जेण वार देखि भूप वीनती	२४	१	२३
नीसाणी	अज गुर सुत भाखौ अलप वायक उच्चारे	६६	१	१८४
	अटके नह सकिया अ गद दहकष दुवारे	६५	१	१८२
	इम वायक सुणि अ गदह रामण उच्चारे	६६	१	१८६
	उप कनक हीरा जडाव जग जोति जुहारे	६६	१	१६४
	उभै कोडि राकस अ गद पळ माहि प्रहारे	६८	१	१६३
	एक वार मेल्हौ अ गद महि लक मभारे	६५	१	१८१
	कपि पकडौ पकडौ कहै राकस हलकारे	६८	१	१६१
	पार उतारे पूछियौ कपिराज हकारे	६५	१	१८०
	पिंड पिंड दस दस सिर परठि सिर सिर छत्र घारे	६६	१	१८३
	पै हिरा सिल फेरे प्रचड सनमुख सभारे	६६	१	१८५
	रोस उपट्टा रौभटा बहौ थटा वथारे	६८	१	१६२
	लोकलाजि तजि हल्लती प्रभु जेणि प्रहारे	६८	१	१६०
	वदियौ स्वान वनचरा नहि लाज निहारे	६७	१	१८८
	सो तौ दीठी आज सच निज चखा निहारे	६७	१	१८६
	सो भख तौ दासी प्रसाद करि करि नृतकारे	६७	१	१८७

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
पट्टरी	क्षीपति दम्भीखरगह सिंग नो मुकट सधारे	६६	१	१६५
	अनि मुकवि कोडक पूछे अभास	७	१	१६
	अपछग हूर रथ आममाण	२३१	३	५४
	असल तो दियू जद साह आय	२२६	३	३५
	आवियां सेव पावौ उत्तन्न	२२१	३	१७
	आवियां जठै पतनाह आप	२२६	३	३६
	इण भात सात निस दिन अभग	२३४	३	६६
	इण हिज दळ समसर दळ उमड	२३०	३	५३
	इम कहै वयण मैदेस आय	२३७	३	७८
	इम सुरो रूम असपति अमान	२२३	३	२६
	उड रहियौ खागा गजर एम	२३३	३	६२
	उण ठौड ववर उजछत्रक आय	२२४	३	३०
	उगमण घराहूँ एम आय	२३८	३	८०
	उडड नाम सामा अपार	२३०	३	५०
	एळची हिदसे इहा आय	२२३	३	२७
	करि मदत चावडा अचडकीव	२३६	३	७५
	काविल किताव मत्री कुलीण	२२२	३	२१
	काळिका डहक डमरु क्रहाक	२३१	३	५५
	गजराज चडे कमवज गरूर	२६५	३	१५२
	गज मीम पडै घड पडै गात	२३४	३	६४
	गहकत इनौ लाखी गरूर	२३७	३	७७
	चडि चडि गज भिडजा नयण चोळ	२१६	३	११
	चडि मसंद वैसि इम कहै चौज	२२५	३	३२
	चतुरग मिळै दरगाह चद	२२०	३	१२
	चाळका लीधि चाकै चहोडि	२४२	३	६५
	छहनीस वन श्रायुव छतीन	२२६	३	४७
	जग मुकट केक दिन माहि जाय	२२२	३	२२
	जयचद तरणा दळ एण जात	२३०	३	५२
	जयचद वचन वाचे ब्रजागि	२२६	३	३७
	जरदैन लोह मफि कडाजूड	२२३	३	२५
	जळदेवी मप्रमन्न हुई जाम	२३६	३	८४
	जळवर अग्राज चडि धोम जोर	२३१	३	५६
	जिण लखै अबनि वह घाट जीत	२३७	३	७६
	जिण ब्रह्म तरां मागीच जाणि	६	१	१६
	तन फूट पडत तडफडत ताइ	२३२	३	५६

छंदनाम	प्रथम पक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
तिण तीडा आगळ जुघ अताळ		२४२	३	६३
तीडा री सलख कुळ चाढ तोइ		२४३	३	६६
तूटा वह जळ सर नदि तटाक		२३०	३	५०
ते सुतन सीह दन खाग तीख		२३६	३	७३
दमगळ रवि थाभै वाग दीठ		२४१	३	६१
दसकत सिर चाढी करि अदाव		२२१	३	१६
दस दिसा एम फुरमाण दीघ		२१६	३	१०
देखत चमर छत्र सीख दीघ		२२१	३	१८
घड फूटत तूटत सीस घार		२३३	३	६१
घर दीघ तूळनू मूळ घाय		२३६	३	८५
नदि नाम आगे कहता निलाव		२३४	३	६५
पडहार घणा हरिण सुजस पामि		२४०	३	८६
पत्र जेण लिखी इण विघ प्रयोग		२२०	३	१५
पह चढे जाणि दघ छिले पाज		२३६	३	७४
पह घूहड सभ्रम रायपाळ		२४१	३	६०
पुत्र सीहातणा वळ सीह पूर		२३७	३	७६
वह छूटत अम्होसम्ह कुहक वारण		२३२	३	५७
मत्रिया लिखी फुरमाण मेक		२२०	३	१४
माणक च्यार अस्व सरस मेक		२३६	३	८३
मुडिया वालिसा मेलि माण		२४२	३	६४
वजि ध्रीह नगारा जेण वार		२२८	३	४२
वरदाय पगु सुत सूरवीर		२३५	३	७२
वाहरू सीत जाणै ब्रजाणि		२२०	३	१३
विड रूप चले असि चढि क्रुवाणि		२२४	३	२६
विढि हणू वहादर खाग वाहि		२६४	३	१५०
विघ मृणे वजीरा एम वाणि		२२२	३	२०
विहडियौ सिवर मगहर वाधि		२३८	३	८१
सत्रु वाढि सीस पूजै सकत्ति		२३६	३	८६
सामठा लडै धड पडै सूर		२३३	३	६३
सामिळ तुरक हिंदू सक्रोध		२३२	३	६०
सिधुरा मेघडवर सक्राज		२२८	३	४६
सुणि खवर सभै दळ वळ सक्राज		२२२	३	२३
सुणि साह हुकम इम सूर साह		२६४	३	१४६
सुत रायपाळरौ कानड सधीर		२४१	३	६२
सो भरत डड अरु करत सेव		२२५	३	३४

छंदनाम	प्रथम पवित	पृ०	प्रकरण	पद्याक
	हवसी करूर दस-दस हजार	२२३	३	२४
	हव देखी असपति मूभ हाथ	२६४	३	१५१
	हाकले भडा जैचंद अथाह	२३२	३	५६
	हालिया थाट रजडवर होय	२२६	३	४६
	हुय हुकळ कळहळ दळ अथाह	२२६	३	४८
वेअक्षरी	अग सोळमौ कनिक उगाहारै	११६	२	१३०
	अतवार कहि अत उधारिस	१५४	२	२६८
	अव हिम विघ सुसत अचवावै	१७६	२	३६३
	अगनिहोत्र दिढ वरस इकीसा	१५६	२	२७२
	अग्रजहू तो सेव अभ्यासी	१३५	२	१६३
	अडताळीस तोडे कर एकरा	१६२	२	४४५
	अछरि तेजमिण भूप वराए	१३०	२	१७४
	अटक पार हू ता जोरावर	१८०	२	३६८
	अति धख क्रोव दहू दळ आणै	१७०	२	३३१
	अदभुत गति हिगळाज अवाजा	१४१	२	२१५
	अद्विती उवरि आप अस आवौ	१६५	२	४२८
	अनग अस वरतै चक्र आए	१५६	२	२८८
	अनड लोप तर भगर अथागा	१६६	२	३१४
	अनि नर नारि पसू पखिवाळी	१५७	२	२७६
	अनि सुणि कोइक वरणा नूप आसी	२००	२	४४५
	अनि सव वसत विछाइत आणै	१७६	२	३६२
	अमर ताम भळ क्रोध उठाई	१०६	२	८४
	अमर विजै छक तेज अमावौ	१०४	२	७६
	अमर सुजस दत खगि अघिकाई	१३१	२	१७६
	अलहरापुर पाटण आथाणा	६८	२	५६
	अवर ग्यान नह ध्यान उचारै	६४	२	४१
	अवर न कौ पूजै नूप ओडै	१५४	२	२६५
	असख्यात दत कमण गिणावै	८५	२	७
	अस इक चढण पच अत आगळि	१०७	२	६१
	असि चढि विस वनि रमै अकेलौ	१४४	२	२२६
	असि घुज गयद सिलह भिद अगा	१६८	२	३२२
	असि पग थडा सहित उठावै	१४८	२	२४४
	असि पटभरहू त ऊतरियो	१७१	२	३३३
	असि सेराहू त भिडियो असि	१८३	२	३७६
	अहि खग अिग दम हस अळू भै	२०८	२	४७६

छंदनाम्	प्रथम पक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्याक
वेअक्खरी	अहि गज वाघ वदन उणिहारै	१४७	२	२४०
	आनन विमळ मुखोप अपारा	१७७	२	३५७
	आए तठै तुरग ऊकडिया	१४१	२	२१७
	आखै आय क्षुधत निज आरत	१७३	२	३४१
	आखै सकति हसै प्रति-उत्तर	१६५	२	४२७
	आगै घरि वाजित्र घर आतुर	२०७	२	४७३
	आतस बाण दगे नह इतरै	१४२	२	२१६
	आतुर लगन दीध दुज आए	१०३	२	७५
	आप इसी हित चित इकतारी	६७	२	५३
	आभातेणि छाह मफि आवै	१६२	२	२६६
	आभा रूप जोम उफाणिक	१७२	२	३३८
	आय तोरण वदि दीठ उछाहै	१०३	२	७६
	आय नृपति पूछी विघ एही	६३	२	२५
	आय पटण देखै रीधौ अति	१०२	२	७२
	आय मिळै बहु कीध इलाजा	१६३	२	३०१
	आयो रुद्र महलहू ऊतरि	१७०	२	३३०
	आराधता छौळ ऊभाळै	१०६	२	६६
	आरुण करणि रूप अधिकारी	१६३	२	४१८
	आरोगई स्त्री हथा अधपति	१७६	२	३६४
	आवण अठे केणि अधिकारी	६१	२	२७
	आवघ कसि दुति इद्र अदत्ती	२०७	२	४७२
	आस्त्रीवाद द्विज रीभ उचारै	१५८	२	२८१
	इक धारण तो जिम चित आवै	१८७	२	३६६
	इकसठ वरस अवसता आई	१५२	२	२६०
	इण आणद निद्रा तदि आवै	१७६	२	३५२
	इण कारण परमार उथपे	१०५	२	८३
	इण सोभा वपु तेज उफाणै	१६२	२	२०७
	इता देस पुर ज तू दवावै	८८	२	१८
	इम इरु निसा अमावस आधी	१४४	२	२२६
	इम कहि घरे गोळ घड आगै	१८७	२	३६४
	इम कहि विढण दीध नृप आयस	१२७	२	१६२
	इम गढ निकट विकट थट आया	१६६	२	३१३
	इम चद कीरति जगत उजामी	२१४	२	५००
	इम चहुवाण प्रवळ दळ औपै	२०४	२	४६२
	इम वेभडा लोह धुवि आरण	१६६	२	३२५

छंदनाम	प्रथम पक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
वेअक्षरी	इम वागा लागा असमाणा	१२६	२	१६८
	इम सिध वयण मुणो उदमदियो	२०६	२	२०७
	इम सुणि नृप छोड अस्व आयो	१८६	२	३६२
	इम सुणि वचन नृपत इकतारे	१३८	२	२०३
	इळ घुकि लचक मीम अहिवाळा	२०२	२	४५२
	ईख रूप मनि इम ठहराई	१२२	२	१४२
	ईले सुपन त्रिया छिव एही	६१	२	२६
	ईस कडा सुद्रमण चक्र ओपम	१४०	२	२१३
	उवर आदि राजा पाडे अरि	१८८	२	४००
	उफळे नीर पताळा एहा	११४	२	११४
	उग खग नाम खेत जुध आवर	१४३	२	२२४
	उण दिनहू ते रत उजवाळी	८६	२	८
	उण पदमण उडती अवरेखे	१२४	२	१५०
	उत्तर दिसि गिरवर तर आवर	१६२	२	२६६
	उत्तर नाम वम उजवाळी	१६४	२	३०४
	उपर जिया घनूख उणिहारे	१६१	२	२६४
	उपवन करि अति ग्रेह उसीरा	१७३	२	३४२
	उपव मुनि मेल्लै मिख इतरै	१८१	२	३७२
	उभै सहम अठसठ घुज ऊतग	२०७	२	४७१
	उमर वरम एकादस आई	२००	२	४४७
	उरई दळ.समहर उदमादा	२०६	२	४८०
	उरवसी सची वाह गळि आणौ	६६	२	४६
	उलटै नृप आयो चित्त उत्तरि	१०८	२	६५
	ऊधम किर राळै घग् अदर	२१२	२	४६२
	ऊपर वीस सहम आखाडै	१२६	२	१६७
	ऊमर ताम सामुहो आए	१८७	२	३६७
	एक अग्र चित्त सुध आरावे	१३८	२	२०२
	एक अग्र लखमण अहिनाणै	१३२	२	१८०
	एक सहम मुखि त्रिण अघारै	१८८	२	४०१
	अ सुत पुज तेरह अग्रकारी	२१५	२	५०२
	ओ उठाय एकत घरायो	१२०	२	१३७
	ओपम तिका भमता अच्युर	२१२	२	४६१
	ओ मै तो प्रस्ताव दिखायो	६६	२	४६
	कचन खंभ निरतर कीजै	१५७	२	२७७
	कवर दोख खत्रवट अचिकाई	१८६	२	४०३

छंदनाम	प्रथम पक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
वेप्रखखरी	कथ सुरा दुजन गिणै तिल काची	१०२	२	७१
	कथ सुरा अचभ धाविया किंकर	१६६	२	४४२
	कथ सुरा नृप दाखिया कृपा करि	१५४	२	२६६
	कनिया भोमि विवर लघु लघु काया	१६६	२	४४१
	कपडकोट उज्जळ वह कीजै	१७६	२	३५३
	कमघज जुध दूलह केसरियो	२११	२	४६६
	कमघज भाण पाटवी कूर	१६६	२	३२७
	कमघज वर मागै जोडे कर	८५	२	४
	कमघज साथ असवार करुरा	१०४	२	८०
	कर जोडे महिमा हित चितकरि	१६७	२	४३४
	करण प्रताप सुरा दळ कीघा	१४२	२	२१८
	करण फतै जुध दाळिद कापण	१५३	२	२६३
	कर भाला वयभलै कराळा	२०२	२	४५४
	करि अचवन जळ चळू करावै	१७६	२	३५१
	करि चक्र पूज हेत अधिकारै	१६०	२	२६१
	करि ढाला भट ओट कजाका	१७२	२	३३५
	करि घक क्रोध हरौ करिचाळा	२०६	२	४७६
	करि वनफळ जळ अग्र जोडि कर	६५	२	४५
	करु न दरस अतर इण काया	१३४	२	१८६
	करे कटाछिन नेह सकाजा	१२५	२	१५४
	करे विचार एम सिव कामणि	६५	२	४३
	कळिजुगि केकि वरस वीता कर	८३	२	२२
	कहि जिण सुतण वीर नृप केहौ	८०	२	१२
	कहियौ नृप कारिज सिध कीजै	१२१	२	१३६
	कहियौ नृप प्रज भय किरासू	८७	२	१३
	कहियौ नृप सिधह जोडे कर	१८५	२	३८६
	कहियौ बघव तेम नृप कीघी	१३७	२	१६६
	कहियौ मूरति हसे कृपा करि	२१४	२	४६७
	कहियौ सकति जेम दुज कहियौ	१०१	२	६८
	कहियौ सुणै वीर कुदरती	१२४	२	१४८
	कहै सिध नृपत सोच किम कीघी	१०६	२	६६
	काढी धर खोदे मुळकती	१६६	२	४४३
	कारज सिद्ध सिद्ध इम कहियौ	१०८	२	६२
	कारण कवण वयण लघु काया	१६७	२	४३३
	काळा कोट साथि दळ काज	२०६	२	४६८

छंदनाम	प्रथम पक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
वेअक्षरी	कियो निखेद देख श्री कूता	१३६	२	१६६
	किर रघु हुकम मन विकराल	२१०	२	४६०
	किसी समै हव वेग कहीजे	१३६	२	२०६
	कीधी विगुण भयाणक जाया	११०	२	२४६
	की वह मेव राज हव कीजे	१३३	२	१८१
	कुळ भूखण तिरारै मुर कम्मर	१६४	२	८२५
	कुहक वाण भूढ वाण भयवर	२०८	२	४७७
	के जमदटा जई कळिचाळा	२१०	२	४८५
	केजिम मिलह ससन अग कमिया	२०१	२	४४८
	के हिक तरणा सडे केकाणा	१८१	२	३७१
	कोकिल मोर मोर तडवि क्रत	१७६	२	३६५
	कोच पुडीर वैम मकवाणा	८६	२	१६
	कोम आठ डेरी नृप कीधी	८६	२	१०
	क्रपा करे सर जीवत करसी	१०१	२	६६
	खडगह खभदार गदराखित	१७६	२	३५४
	खळ दम सहंस अडे दळ खूटा	१२६	२	१६६
	खितपति सुणे अधिक हरखाणी	२००	२	४४६
	खीरकद मिन्नित हित खती	१७५	२	३५०
	खैग अलगहू ता निस खडिया	१११	२	१०५
	गड जडाव भूखण नव ग्रहणा	६०	२	२४
	गज तिरा गिर अग रूप गजावै	१४६	२	२३६
	गढ वरियावर विरद अथागा	१७३	२	३३६
	गाजै घण वाजै त्रवागळ	१६३	२	३०३
	गायण तठै करै नृत गावै	११८	२	१२६
	गिरदै उदै चहुर गहराई	१६१	२	२६५
	गुफा ध्यान लवलीन गिरोवर	२०८	२	४७५
	ग्यारहसै डड करि अवगाढौ	१६३	२	४१६
	घड रत वहै घाव कर घूमै	१४२	२	२२१
	घण अम्हसम्हा सिलहवघ घाटा	१६८	२	३२३
	घण जोवन घन रूप घरेघरि	१८४	२	३८४
	चचळ केक करै नृत चाळा	११	२	१३०
	चंद उठी दळ वेग चलाया	२०५	२	४६३
	चद्रहास भट घकै चहोडे	१७१	२	३३४
	चढता घकै वाण कसि चदर	१८३	२	३७८
	चढि नृप गिर वदण करि चढै	१०८	२	६४
	चमकै रत्न पेच चीरारा	११६	२	१३१

छंदनाम	प्रथम पवित	पृ०	प्रकरण	पद्याक
बेअक्षरी	चमतकार जग ह्रवी सचेली	१२२	२	१४३
	चर बहुवै दिस नृपत चलावै	१६२	२	२६८
	चलि हस किता किता तह चाली	११४	२	११३
	चवसठ मफि वावन चिरताळा	१४६	२	२४७
	चाढि छाक मद भख ले चवियी	१२३	२	१४७
	चादर हीज फुहार नीर चलि	११८	२	१२७
	चौकी रूप पिलग चढाए	११६	२	१२३
	च्यार पमार धार छत्र चमर	२०६	२	४७०
	छक मसताक रूप अति छाजै	६०	२	२५
	छकि छतरे मोह मन छाथी	१२०	२	१३५
	छठी नरेस पूज सुत छाजै	११५	२	११६
	छत्रपति प्रेम-भाव सुख छाजै	१७४	२	३४४
	छत्रपतिहृत सहस गुण छाजै	१४६	२	२३७
	छ रहै मास सेत गज छाया	१६०	२	२८६
	छळत्रळ कीध प्रगट बहु छाने	१६३	२	३०२
	छापा रोज जरीरी सरसता छजि	११६	२	१२१
	छायी गयण गभ रथ छाजै	११२	२	१०६
	छिलती सलित न्याव नह छूटै	६२	२	३२
	छूटै प्राण पाव नह छूटै	१२८	२	१६५
	छोडे भूप दास खळ छोडै	११३	२	१११
	जग कामना पूर जग जाहर	१५३	२	२६४
	जगमग जोति उदोत उजासी	११८	२	१२८
	जदि द्विज पति निरत्र करि जोजन	१५७	२	२८०
	जदि नृप कहै सुता ले जावौ	१६८	२	४३८
	जदि माया निद्रा फद जडियौ	१२०	२	१३६
	जनमे नखत करुरा जिणसू	६८	२	५७
	जप गायत्री आण विध जुती	१५५	२	२७०
	जपियौ सिध जिण विध जुध जीता	१६१	२	४१०
	जमदद चच तेजमणि जडियौ	१३०	२	१७२
	जरदोजी कतिला कारी जर	१७८	२	३६१
	जळ वडवानळ जिकौ जळावै	११०	२	१०१
	जवन अनेक वैर धक जुडसी	१६०	२	४०७
	जार्ण भडा साथ पहुंचीजै	१०५	२	८४
	जादव जाणि कठीर जगायो	१२६	२	१७०
	जिण नृप पूज तरां रवि जोपै	१३७	२	२०१
	जिण राणी चवदे सुत जाए	१०४	२	७८

छंदनाम	प्रथम पदित	पृ०	प्रकरण	पद्याक
वेग्नखरी	जिण वाचै उच्छव नृप जाणे	१४१	२	२१४
	जिण विलोकि कहियो जगजाभी	६५	२	६५
	जिणहिज वार तेजमणि जादव	११५	२	११७
	जिती भोम लीधा जळ जावै	१५५	२	२७१
	जीमण सिखरण भाय जिमावै	१७४	२	३४५
	जुडि भड खडा विखै चख ज्वाळा	२०३	२	४५७
	जुध सिर कर ग्रहि ग्रहि जरदैता	२११	२	४८८
	जुधि किराहिक जाता नृप जाणै	१२२	२	१४४
	जे विण पदम राणिया जणियायी	१२४	२	१५१
	जे सुत पारिजात कृत ऊभळ	७७	१	३
	जे सुत ब्रह्म भोज जगजाहर	८१	१	१५
	जे सुत हुवौ सधि हत दूजण	७६	१	७
	जो अरथी दस दिन मक्ति जाचै	१५६	२	२८७
	जोगिण हिगळाज इम जोसी	१४०		२१०
	जोगी नेमनाथ सेवै जिण	१६२	२	४१६
	जोडि कपाळ सकर जीवाए	१०४	२	७७
	जोजन अरध सिध आगै जिण	१२१	२	१४१
	जोतवत कसि मोड जवाहर	२०५	२	४६६
	जोतिस रिख वायक विहु जोडै	१००	२	६३
	जो मन वमी मोह फद जूटा	६७	०	५२
	ज्या मक्ति तखत नमद जमाता	१७५	२	३४६
	ज्या विण हुवा राजरी आसा	१३५	२	१६१
	ज्वाळ घणा खळ उरा जळाई	८६	२	२१
	भट खग सकट जजीरा जडिया	१६८	२	३२१
	भपट चमर छुघ छाह न भलै	६२	२	३३
	भळहळ पखर सिलह अत्र भालै	१६४	२	३०७
	भाला धोम तेज भळहळियो	१४०	२	२११
	भिलम टोप सूवौ सिर भडियो	१७०	२	३२६
	भुक्ती कळ दावानळ भालै	१२६	२	१५६
	ठहिया तो पिण राज ठिकारणै	१३४	२	१८८
	ठहिया भूखण सरव ठिकारणै	१४८	२	२४२
	ठाढी नृतत आय मुनि वन घित	६६	२	४८
	डायण चढी जिया पर डकरै	१४५	२	२३३
	तजि स्यामता जाणि वपि ताजै	१५८	२	२८२
	तरण नृप पुज सथानक तीजै	८६	२	२२

छंदनाम	प्रथमे पक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्याक
बेअक्षरी	तत मनसा भोजन दिव तिम तिम	१७८	२	३५६
	तदि स्रव छभा कहै नृप तिणनू	२००	२	४४४
	तपे ज्या कीध भरथ सम तूले	६६	२	४७
	तर गुल डवर रूपमे तारा	११५	२	११८
	तरि तरि तार रूप वीह तुररा	११६	२	१२२
	तास कनात अनेक तणाए	११६	२	१२०
	तिण कामना जाचियौ तिसडी	८५	२	६
	तिण ग्रहता अहिरो वप तजियौ	१४०	२	२१२
	तिण सुत सजय रघुकुळतारण	८१	२	१६
	तिणहिज वार दुतिय छत्रपत्ती	१६४	२	४२३
	तीरथराज राजवेता तत	१८०	२	३६६
	तूँ स्रव जाण राज प्रभुताई	१८६	२	३६१
	तूटा गज सिर करै त्र वाका	१४६	२	२४५
	तेज इमौ दीमै भळहळ तन	१६४	२	४२२
	तेरहमौ सुत पुज तवीजै	१६१	२	४११
	तेरह लोह अग रातवर	१७२	२	३३६
	तो कुळ भाण जगत सिरताजा	६३	०	३६
	तौ पिण नृप नह डरै हेक तिल	१५०	२	२५२
	त्रखा रही जुध अगै करण तिण	२१३	२	४६६
	त्रजड जवन वाहै सुजि तूटै	१८८	२	३६६
	त्रपति होइ मुख विमळ करै तदि	१७४	२	३४६
	त्रिचख अनेक लिये सिरताजा	२१०	२	४८३
	त्रिया इक अति सुदर चख तीखे	६०	२	२३
	थट औ सरव तूम कजि थटियौ	१५१	२	२५३
	दगि वीह कोहक वाण दायकका	१२८	२	१६४
	दगै अराव ताम दइवाणा	१६७	२	३१६
	दत मौ पछै अमै नृप दीजे	१५४	२	२६७
	दसत चाप अरु रास दसत्ता	२०४	२	४६१
	दाखि पडण विध करण दिखाए	१२३	२	१४६
	दास पच अग रहै दुरती	११२	२	१०८
	दासा तन अतराइ न दीधी	१८४	२	३८२
	दिव नयणा परब्रहम न देखे	६५	२	४२
	दिल मो ग्यान त्रकाळग्यदरमी	१००	२	६५
	दीधी नाम वीर वरदाई	१५१	२	२५६
	दीपक लोय आच सम दीजे	१५६	२	२७३

छंदनाम	प्रथम पक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
वेम्बळखरी	दुज दे आत्तीवाद विधि दक्खे	१५५	२	२६६
	दुति नूत गान एम दरसावै	१२०	२	१३४
	दुतिय अनग रूप दरसाणा	१६१	२	४१३
	दुत्री नाम कुभला वरदाता	१०७	०	६०
	दुरत निलै तसळै वळ दोधी	११२	२	१०७
	दे दे पान पान तिण दोळा	१६३	२	४२१
	घनख वदूक वीस लख धारा	२०४	२	४६०
	घर अवर गिर तरा धिकावै	१५०	२	२५१
	घर करि अमल पदम छत्र धारै	१३१	२	१७५
	घर अनराज काज नह धारै	६३	२	३४
	घर तदि पड़े पछट खग धारा	१८३	२	३८०
	घरपति वहु सेवै अवरधर	१८०	२	३६७
	घर वुगलाण तेज छत्रधारी	१२४	२	१४६
	घरम वभ लघु भ्रात हेत धरि	१६१	२	४१२
	धरि चित खिमा दोस मत धारी	१८५	२	३८८
	धरि जे मुत प्रतव्योम धुरधर	८०	१	११
	धरिया नूप दत खाग विरद धज	१६३	२	३००
	धरि वौह मत्र जत्र चित धारणि	१०७	२	८६
	धारण तूम वडै नूप वूकै	१३६	२	२०६
	धारण सवद दिसा चित धारै	१६७	२	४३५
	धारण सलज चखा चद धारै	२१४	२	४६७
	घोम-तोप दहु दळ घडहडिया	२०७	२	४७४
	घ्रम सनेह कुळ मारग धारा	६७	२	५१
	नवमौ मैद समौ नूप नानौ	१०६	२	८६
	नवलापुरी पुरी इद्र नोखा	१२७	२	१६१
	निज दिन हूत मास इक नमै	१६५	२	४२६
	नौवत वजै जैत सद नोखा	१७२	२	३३७
	नूपति प्रमेनजात ते नंदराण	७६	१	८
	नूप होसी तो जोड नरेहण	१६०	२	४०६
	पच एक कर वाण प्रचडे	१६५	२	३१०
	पडव दळा अनेक प्रहारे	७६	१	६
	पग वदि हरखि भूप तदि पुणिया	१०६	२	८८
	पडिया जुव प्रथमी जस पावै	१६६	२	४४०
	पति विग्रह तो ग्रह परठाणै	१००	२	६२
	पदमणि तठै तेजमणि भूपति	१२५	२	१५३

छंदनाम	प्रथम पक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्याक
बेअक्षरी	पसरी मुकति बेल रूपहरी	१३७	२	१६८
	पह चहुवाण खेत परमाणं	२१३	२	४६५
	पहप भार दुख जननि न प्रमं	१६६	२	४३०
	पहरण घण ओढण पममीना	१७७	२	३५८
	पाच महर स्त्रीफळ नृप अण्पे	१०८	२	६३
	पांचमाळ अहिरी गळ पहरी	१४७	२	२३६
	पान खान हित भाव सपूरति	१०५	२	८२
	पाय गदद तूटा घण पावै	१४८	२	२४३
	पितहू जुदौ राज घर पाऊ	८६	२	११
	पुढरीक नभ पाटि विरदपति	७७	१	२
	पुक्ष सभ्रम घुवसधि प्रथीपति	७८	१	५
	पुणै निजूम अरज मत प्राजौ	१६८	२	४३६
	पुत्र सुनिखत्र नृपरै नृप पुक्कळ	८१	१	१४
	पुर तारा ऋसीपति वाळा	२११	२	४८६
	पूजै सिव वरहूँ नृप पाई	१६८	२	४३६
	पेखे चद हरवळ खळ पाडे	२०६	२	४८१
	पोह जिण साख नाम प्रगटाए	१३१	२	१७८
	पोह निज रंगमहल पघराए	१५२	२	२५७
	पोढै ताम उठावै ऊपरि	१७५	२	३४७
	पोढै तेण वखत नृप पावै	१६३	२	४२०
	पोहती सुरग एम करि पौरिस	७६	१	१०
	प्याला सुरा पिवै नह पावै	६२	२	३१
	प्रगट नृपति राका वर पायी	८५	२	५
	प्रगटे जेण रीत प्रथमी परि	८४	२	२
	प्रतीकास जिण सुत वौह पौरम	८०	१	१३
	फळ वहु सेल मछा वृति फावी	१४५	२	२३०
	फळ वौह फूल रूप मे फविया	११५	२	११६
	वधव अरिज सुणै अतुळीवळ	१३६	२	१६४
	वव नयण विक्रम गजवोहा	१८२	२	३७७
	वडी हरीळ वाजुवा विहुवै	२०३	२	४५८
	वह नीसरै सिलह घट वूडै	११३	२	११२
	वह वायक सिघ जिम बोलता	२०२	२	४५५
	वहु करि कोप लोप भड वारणा	१८७	२	३६८
	वहु धड मीन रुधिर उच्छई वुडि	१४६	२	२३४
	वाजू गोळ चदोळ महाबळ	२१०	२	४८२
	विहु कूरमा साथ विरदाळा	२०६	२	४६७

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
वेअक्षरी	वोह जळ खेडि तुवर डूवाए	११४	२	११५
	भय भ्रम सोच चकित चित भारी	१६६	२	४३१
	भाण तुवर हृणि फौज भंजाई	१५२	२	२५८
	भाग त्रगुण पकज पर भेळै	१५६	२	२७४
	भाथा कटि करगा भलि भाले	१६५	२	३०८
	भाव वताय सामुही भाळै	१४६	२	२४६
	भिडज जूथ विजई भाराथं	२०१	२	४५१
	भिडिया तिकै मुवा काइ भ्रमिया	८६	२	२०
	भिदि खट चक्र नाळि अलिभ्र मर	८२	१	१६
	भिदि वज्र सिखर चकर इम भळकै	१६०	२	२६०
	भूपति आर्यौ पुर विभ्रमियै	१२३	२	१४५
	भूपति पूजतणै दुति अदभुत	१०६	२	८८
	भूपति हसै देखि सिध भेसा	१८४	२	३८५
	भेदै मडळ सूर बहु भाणा	२१०	२	४८४
	भ्रम आखेट न वाण भ्रम्यासी	६२	२	३०
	भक्ति तिया कनक सकति धरि मूरति	१५७	२	२७६
	भक्ति वन सघन सकति काली मढ	१०५	२	८१
	भरिण त्रइलोक प्रभा जगि मडित	६४	२	३६
	भधि खट मास अनै वासुर मुर	१६५	२	४२६
	भधि जळ नूमळ पियै हित मन्नै	१७७	२	३५६
	भरु जिण सुतरण तपोवळ मडै	७८	१	६
	भरुहपै किर गिर चडि हेमाळै	११७	२	१२६
	भरुहपै देखि गयदहू महपति	१३०	२	१७१
	महपति करि वदन उज्जळ मन	१७८	२	३६०
	महपति चद उवटण करि मजन	२०५	२	४६४
	महपति घरमवव कुळ जगमिणि	१७३	२	३४०
	महल निवाण वाग मन मोहै	१६४	२	४२४
	महल मेज नह रमण उमाहै	६१	२	२६
	महिपति करै त्रपण तिया मोमरि	१३३	२	१८४
	महिल रंग पदमणि उदमहे	१२६	२	१५७
	मिणघर फण कीधा चित मोहै	१४७	२	२३८
	मिळ सुत सुभड जूथ जुत महपति	१८६	२	४०४
	मिळि जुघ जयवर दत महमाया	२१५	२	५०१
	मुग लखि मोम तजेवा मुर मुख	१०२	२	७०
	मुनि सुणि त्रास घरम महिपती	१८१	२	३७३

छंदनाम	प्रथम पक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
वेग्नखरी	मो कय सखा धारि निज मनया	६६	२	६१
	मोद कादि बहुचक्र मभारों	१७७	२	३५६
	मो-पुर प्रज मो देस मभारै	८८	२	१७
	रटियौ वदण वीर तदि रीघी	१५१	२	२५४
	रमा हुतासणि सरणि रहाए	६४	२	४०
	रवद पिराग देखि छिन्न रीघा	१८१	२	३७०
	रस वनफळ वीह पाय रसाळी	६६	२	५८
	रसी उसीर पख ठहराणै	१७४	२	३४३
	राम पाट कुस भूप विराजे	७७	१	१
	राजस पुर देखे चद रीघी	२१४	२	४६८
	राजा कनोज सहित चौरासी	१३५	२	१६०
	राजा कमधज सुतण पदारथि	८३	२	२४
	राजा देखि कतूहळ रीघी	१४६	२	२४८
	राजा देखि तरह विकराळै	१३८	२	२०४
	राजा सम गज घुज राजारै	२०१	२	४५०
	राजा सुण तेडे राजस्सी	१६६	२	४३२
	रिण तिरण हिणा काइ वदराळा	१११	२	१०४
	रीछ खाल अगिया विकराळी	१४७	२	२४१
	रीभ अम कहियौ सुरराणी	८८	२	१६
	रुद्रसेण उण गज मोहरि ल्याऊ	१६४	२	३०५
	रौद्रव दुख सुत विघन सुणै रिख	१८६	२	३६०
	रौळी दौय पहर इम रहियौ	१६७	२	३१६
	लखमण जात्रा हेत लगायी	८६	२	६
	लख लख नाव महिख घड लावै	१४५	२	२३१
	लखि पण हसि माने भय लहियौ	१०३	२	७३
	लघु भ्रत जिम अभिलाख सुलाघै	१३२	२	१८१
	लडि नृप दखिण तरणी घर लीजै	१४१	२	२१६
	लटिया अवर घरा नृप लीघी	१४३	२	२२३
	लाल वदन अवर सिर लागी	१८२	२	३७४
	ले कदळी पत्र अगि लगाए	१८८	२	४०२
	ले गौ सिध वा त्रिया बुगलाणे	१२५	२	१५२
	ले मुख उडत नाग जिम लुडियौ	१२१	२	१४०
	लोही घड वहि वहि फळ लोहा	१६६	२	३२४
	वज्रनाभ जिण सुतण धरम वप	७८	१	३
	वदता एम ऊपडै वागा	१६८	२	३२०

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
वेदवखरी	वदन मजीठ रूप विकराळा	२०३	२	४५६
	वदि र्द्र खाग स्त्रीहया वाहै	१७१	२	३३२
	वधि भळ क्रोध नयण इम वणिया	१६४	२	३०६
	वनि डक सभै रमै तिण वेळा	६६	२	६६
	वप घणस्याम नेत्र दुति वारज	६३	२	३७
	वपु दम गुणै जोर नूप वधियो	१६०	२	४१७
	वर चदेल खग वम वधाया	१४३	२	२०५
	वरमाळा ले कठि वणावै	६१	२	२८
	वमतपचमी करी विमाहौ	१२६	२	१५६
	वहता घण गोळा विकराळा	१६७	२	३१८
	वाम दखिण मति दुज मुख वारिज	८७	२	१४
	वामै समदळ दखिण वडाळी	२०६	२	४६६
	वागा लोप अराव वीरवर	२०८	२	४७८
	ऽवा जखि सुता सुता नूप अेही	१०१	२	६७
	वात इसी तू हीज विचारै	१३४	२	१८७
	वात करे हित चित वरताए	६६	२	६०
	ऽवा निहकट करे घर आपा	१३६	२	१६५
	ऽवा पंच वरस कन्यका आई	१०६	२	६७
	वाह पदम खळ पदम विहारै	१३०	२	१७३
	विच इम छळ माया वरताणी	१५१	२	५५५
	विजयचद जे सुत वरदायक	२१५	२	५०३
	विण सिर घड उठै विकराळा	१४४	२	२२८
	विघ इण सेभ अनेक विराजे	११७	२	१२४
	विघ खव करि जिम ग्रय वतावै	१५३	२	२६३
	वीजळ सेल गुरज घण वाजै	१४२	२	२००
	वीता केक वरस नूप त्रियावर	६३	२	२३
	वीता पहर कवर विग्रहियो	१८३	२	३८१
	वीर भरथवाळा विकराळा	१६६	२	३२६
	वीर सिंगार चढे रसवाता	२०५	२	४६५
	वेखे चक्र करै नूप वदण	१५६	२	२८६
	ऽवे पहराय कनक अरघारो	१३३	२	१८२
	व्रवियो मिघ आराध वडाळी	११०	२	१००
	सवण ताम वूटौ ममराथा	१५०	२	२५०
	सपत कोस कनवजहू सोहत	१३६	२	१६७
	सपत पुज सुजाव सकाजा	१३१	२	१७७

छंदनाम	प्रथम पवित	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
वेअक्षरी	सरप वाघ गज गीछ सरीखा	१४५	२	२३२
	सवा टाकि जळ जदि चक्र वरमै	१६०	२	२६२
	सहम गुणा लडमी घरा सारा	१६०	२	४०८
	सहम पडे कमघत्र भड मारा	१४३	२	२२२
	सहस वार गज घुज अनि माथी	२०३	२	४५६
	सहम समपि कपिला इक साथै	१५६	२	२८५
	सावर नूर वाघ दरसाणा	१४४	२	२२७
	साभळि ध्यान घरे दुज साची	६८	२	५५
	मांमगरी अग्र घरे सुचारा	१३३	२	१८३
	साधि अनेक जवन सत्र पतिनूं	१८७	२	३६५
	सासत्र विघ सतसग समाजा	१८५	२	३८६
	सिध इम देखि नूपति सकुचारे	१२१	२	१३८
	सिध दाखियौ भळाहळ सूरत	१३६	२	२०८
	मिध पूजे नूप ताम सिधाए	११०	२	१०२
	सिध हसियौ नूप चख सकुचारे	१३८	२	२०५
	सिलह पखर धारक समराथै	१६७	२	३१७
	मीचे अन्नत अग अति संजम	८३	१	२१
	सुख इण वित्र वीह भात समाजा	१७५	२	३४८
	सुज घर पडि ठै खग साहै	२१३	२	४६४
	सुजस तूभ वदसी वह साखै	१६०	२	४०६
	सुणि इम उच्छव करै सकाजा	१५३	२	२६१
	सुणि इम वैण वीररस साजा	१११	२	१०६
	सुणि इम हुकम धारि लीधी सिर	१३४	२	१८६
	सुणि कथ पदम सभे दळ साजा	१२६	२	१५८
	सुणि चहुवाण कटक सालळिया	२०२	२	४५३
	सुणि दुजराज वयण तिरा सायत	१०२	२	६६
	सुणि प्रोहित हित वात सुहाई	६८	२	५४
	सुरो हास्य विघ कहै नरेनुर	१८५	२	३८७
	सुत चहुवाण मुगो बहु साभे	२१३	२	४६३
	सुतण-पूभ दत खाग सनेहौ	१५२	२	२५६
	सुतण सुरथ नूप सुमित्र सरूपति	८२	१	१६
	सुत पति सिर सिध हाथ सधारे	१८६	२	४०५
	सुदन खाग उज्जळ जस सधियौ	१३७	२	२००
	सुपन वात तदि कहे सुणाई	१०३	२	७४
	सुभ मभि असुभ लेख विघ साखै	१२५	२	१५५

छंदनाम	प्रथम पङ्क्ति	पृ०	प्रकरण	पद्याक	
वेम्बखरी	सूरा बिहूँ काटि खग साहि	१७०	२	३२८	
	सूरिजकुळ सुगि एह रीत सति	६७	२	५०	
	सेना कवच तुवर सघारे	८७	२	१२	
	सेवा कवच तगा वंधव सुत	१११	२	१०३	
	सो आखेटक गए सकाजा	८४	२	३	
	सोम धूप खेवै सतवारै	१५७	२	२७८	
	सोळ हजार पमार सघारे	१०६	२	८७	
	स्याम गऊचै दूधि समोवै	१५८	२	२८३	
	हसत्रोले खेले ससि हसी	११७	२	१२५	
	हर क्रत हार मुनद क्रत हासै	१८२	२	३७६	
	हरचद वीर मुनद हडहडिया	२८४	२	३८३	
	हाक डाक व बक घमहमिया	१६६	२	३१२	
	हाक निहाव अवर घर हुवियो	१२८	२	१६६	
	हाथी हणै वाहि खग हाथै	१६६	२	३१५	
	हाव भाव लावै मद हासा	११७	२	१३३	
	हुत भुक सस घनुख घर हाथै	२०१	२	४४६	
	हुवै निहाव घाव भड हाका	१८२	२	३७५	
	होता प्रभु करता जग हरता	६४	२	३८	
	भुजगी	अडीखभ डारण भरता अछाया	६२	१	१७२
		अजू लागणा वैण सीता लगाए	४४	१	१०२
		अजे जानकी सोधवा जोष आया	५२	१	१३२
अजै राज चाहेस ती धारि आछी		५६	१	१५६	
अरोहै हणू राममें इ अनुज्ज		६३	१	१७४	
अवद्धेस राजेस जानेस आया		३१	१	५२	
अवध्वेस राजा प्रभू धम असी		३५	१	६६	
अह नाम सोय प्रभा घाम एता		५२	१	१३०	
इता हालिया थाट ते भार आगा		६३	१	१७६	
इळा खत्रिया आप लीधी अछेहा		३४	१	६३	
इसा देखि आचभिया जोष एते		५१	१	१२८	
इसा राम रो अद्व हेला उत्तारै		३६	१	७०	
इसी लक देखे असोकेस आया		५७	१	१५१	
उठै जामवत कहै वैण एहा		५४	१	१३७	
उठै तीन लोका तराँ दण्ड घावै		५७	१	१५६	
उठै वाण दैतेम लकेम आया	२७	१	३५		
उठै वाग आसोक रुखा अथाहै	५३	१	१३४		

छंदनाम	प्रथम पदित	पृ०	प्रकरण	पद्याक
भुजगी	उठै वाहरू राम नागेश आया	४५	१	१०६
	उनै वार वढभीखणी चालि आयी	६४	१	१७८
	एही राम दाखे जती वैण एहा	४७	१	११०
	कढे हम वाळोसनु मोक्ष कीधी	४६	१	१२०
	कपी वीस कोडेक सुवखेण कीघा	५०	१	१२३
	करा मेघ ब्रह्मातरणी पासि काढी	५८	१	१५६
	कळाहीण व्है भाजि कूके कहोकी	४१	१	६०
	कवी क्रीत दाखै जिता रोर कापै	३३	१	५७
	कवी छद बोलै प्रभू अग्रकारी	३०	१	४६
	कहेमी जिकै आपहू ता करारा	४७	१	१११
	किसा दीह आणद विन्नोद कीघा	३६	१	८२
	कुटंवा सहेता हुती नाव कीर	२७	१	३४
	खत्रीमार इक्कीम मै वार खोए	३४	१	६२
	खरा दूखरा ब्रस्सरा दैत खीजे	४१	१	६१
	खुध्यावत हू मातहू वैण अक्खै	५७	१	१५२
	गवै जोजना तीस दाखै गहीर	५४	१	१३६
	गिरौ तुच्छ मात्रे पुरा ग्रन्थ मोडै	३५	१	६५
	चखा चोळमे रग कोदड चाढे	४०	१	८६
	चखा भाळ तूटै मुखा भाळ चडा	३३	१	५६
	चहु भ्रात चौरि चढै नेह चगा	३२	१	५५
	चिता सिंघका विग्रहा दाउ चाहै	५६	१	१४६
	छहै तीस ही आभ्रणा धारि साजै	३७	१	७४
	जकै भूप दीसै महासूर जाता	२६	१	४३
	जकै वाररी औधि सोभा जगाणी	३३	१	५८
	जगाजोत आदीतरी जोत ओपै	४३	१	६७
	जगाजोत हीरामणी दीप जगै	३८	१	८०
	जडाऊ नगा मिदरा हेम जाळी	३८	१	७६
	जती दोग जूटै इमी राय जाणै	३४	१	६४
	ज तू राम वाळक्क मोनू न जाणै	३४	१	६१
	जळा-बोळ लीघा दळा राण जायो	५८	१	१५५
	जाळै राणारा कु भरा ग्रेह जाळै	६२	१	१७०
	जिका आविया सीस ती लक जासी	३१	१	१६७
	जिकै वम दाता हुवा सूर जेता	२८	१	४१
	जिकै वार तेजोमई थाट जाडो	५५	१	१४४
	जिकै वार बोलै दडी पात जह	२८	१	४०

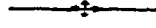
छंदनाम	प्रथम पक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्याक
भुजंगी	जिकै सीत जाता पडै भोमि जागै	४८	१	११५
	जिहा माहि जोधा हणुमान जेहा	५१	१	१२५
	जुथा दडकारा धरे भेख जूजी	४३	१	६६
	जुना भाजि कोमड तै भूप जीता	३३	१	६१
	जोवी दूसरी दास कूरम्म जेहौ	२६	१	४६
	ठहै सामद्रा नीरमे पू छ ठारी	६२	१	१७१
	तई नैर ओछडियौ हेम तारा	३७	१	७३
	तगस्सेस नागा सिरै जाणि तूटी	५५	१	१४५
	तरै वाण वादे गयो देखि तासं	२८	१	३६
	तरै भ्रात वेवै हसे दीघ ताळी	४१	१	८६
	तरै सोच धारै कपी देह त्याग	५७	१	१५०
	वई दैत्य जाणै इसौ जाव दीघौ	४३	१	६८
	दखै भाख ज्यारा जतीवस दीता	४४	१	१०१
	दत्तनाम हू गंधप आदि देव	४६	१	१०६
	दुखीवत भू वदरा रध देखै	५१	१	१२७
	दुजा राज ज्यारा धरै ध्यान देखै	३६	१	६६
	दुवै पाव वदं हणूं मैण दीघी	६३	१	१७३
	धरा जोजना मत्र रामंद धारै	५४	१	१३६
	धरे वध पावक्करी ऊक धारै	६२	१	१६६
	पन्वाळा भरै जम्म भैमौ मप्राजै	५६	१	१४८
	पडते जती ध्राव एहौ पुकारै	४४	१	१००
	प्रभू वाळि माभेम तो राज पावा	४८	१	११४
	वधू कृ भ जेहौ अर्न मेघ वेटी	६०	१	१६३
	वदं ताम सुग्रीव मो वाळि वेरी	४७	१	११३
	भरणे चली कोमडा तूर भेरी	६३	१	१७५
	भळावै जती मोत ले चाप भायै	४४	१	६६
	भिडे रत्य चाचा नखा भाजि भारी	४५	१	१०४
	भिदं जाळिया रूप मोभा भळक्की	३७	१	७५
	मडै दीठ नौ ही ग्रहा वदि माहै	५६	१	१४७
	मस ग्रेह पंठे करै भेव मल्ना	३०	१	४७
	मती गु ऋ कीपी जठे राण माता	६०	१	१६१
	मती धारि पूरव्व वज्रीत मेले	५०	१	१२२
	महामगळामे हुंती जोगमाया	४४	१	१०३
	महादद डैरु वजै जोगमाया	६४	१	१४७
	मही दीठ धारै चवै वैण मद	५३	१	१३६

छंदनाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
भुजगी	मिटै मोह छोळा थटै देवमाया	४६	१	१२१
	मिळै छत्र छत्रा घसै भीड माचै	२७	१	३६
	मु सा दादराहू त नागा मराडै	६०	१	१६४
	मुकट्टा जटा वाधिया हंस मोहै	३६	१	८३
	मुनिद्रेस जोगेस कव्वेस मेळा	२७	१	३७
	रटै मुज्झहू वाणि जै उद्धरेत	५२	१	१३१
	रटंत वघाई व्रवै दासरत्य	३०	१	५०
	रिखा साथि आये दुहू भ्रात रूप	३६	१	३२
	लखा जोजना जामर्त भाण लीघौ	५५	१	१४२
	लखे राकसी वधवा ज्वाळ लागी	४२	१	६३
	लगवै फळा भोमि आहार लीघौ	५८	१	१५३
	लगे बाणहूँ श्राद आयौ लकेसू	२८	१	३८
	लगै वैण जामतरौ सीख लागे	५४	१	१३८
	लडतौ करा वीस जट्टाय लीघौ	४५	१	१०५
	लहे ज्ञान राजा वडा रीति लीघौ	३६	१	८४
	लहे ब्रह्म अग्या व्रदा मेघ लीघौ	५६	१	१५७
	वडा वसरी रीत राजा विचारै	३५	१	६७
	वडै रूपवाही जके लच्छि वीजी	४२	१	६५
	वडौ दुग्गमी देस जोवै विलू घौ	५१	१	१२६
	वरौ चत्र घाए रचै पतिव्रता	३२	१	५६
	वरौ सूरदाता उभै व्रद वका	६४	१	१७६
	वदै भाख मोनु प्रभू नाम वाता	४८	१	११६
	वर नारिके कुंभ नीला वंदावै	३६	१	७०
	वर वेहडा वाद सोभा वणाई	३२	१	५४
	विचै आवता वधवा वाह वाळै	४६	१	१०८
	विस्वामित्ररै ज्याग सोभा वधारी	२६	१	३३
	ब्रह्ममंड कोटेंक जो रोमवास	२६	१	४५
	सकौ पाव वादै कपी व्हे हुलास	५५	१	१४३
	सकौ राकसा एकणी हाथ साहे	५६	१	१६०
	सजी तूटते वू व एही सरस्स	३०	१	४८
	सभै फौज कीघौ विदा अगदेस	५०	१	१२४
	सभै सोउ मंडाण ऊडाण सारा	५५	१	१४१
	सता ताड वेघे प्रभू हेक साथे	४८	१	११७
	सत्यानद नाळेर दीघा समत्य	३१	१	५३
	सत्री हेक साथै जिया रूप साजै	४२	१	६४

छंदनाम	प्रथम पक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
भुजगी	समाचार पूछे कहे भेद साहै	४६	१	१०७
	समै तेरा राधी रहे वाण माहे	४६	१	११८
	सही सेस लाखमणा वारि भोवा	६१	१	१६६
	साईवान चिंगा जरी तार सोहै	३६	१	७२
	सुखेण नळं नील सुग्रीव साथा	४७	१	११२
	सुग्रीवा ग्रीवा रामगे फूल सोभा	४६	१	११६
	सुराे भूप ऐ वात ऊठै सतेज	२६	१	४२
	सुणै वात आवै जोध सारा	५३	१	१३५
	सुराे वात ऐ मात नै भ्रात माथै	६०	१	१६२
	सुमत्रा अनै केकई मात साई	३८	१	७७
	हजाग दसा हाथिया पाण हाली	४०	१	८८
	हय रत्थ गौजूह पायक्क हल्लै	३१	१	५१
	हरी केसरी बोळ कु कू हळद	३७	१	४६
	हरी मेल घानख घानख हाथे	३५	१	६८
	हले चित्रकोटा तजे ताम हेना	४०	१	८५
	हसै दीव आभीस आणदहू ती	३८	१	७८
	हुई भोम निव्वीज दाखै हुकम्भ	२६	१	४४
	हुई लकमे वूत्र आया हकारे	५८	१	१५४
	हुवौ मूरछा मत्रिया लीघ हामा	६१	१	१६८
	अष्टिक	ऊछळ त हाथ पाव	२७३	३
ऊछळ गोळा अथाह		२७२	३	१७५
ऊवमन देस एम		२७२	३	१७२
ऊफणै कमध ईस		२७२	३	१७४
एहडा दळ अथाह		२७०	३	१६६
काळ भाळ क्रोव		२७४	३	१८२
घट गै घमक घोर		२७१	३	१६७
जामि लोक भाजि जस्य		२७१	३	१७१
तूटये नदी तटाक		२७१	३	१६६
तोय ज्यूं पीवत ताम		२७३	३	१७८
अवि वाजि भेर तूर		२७४	३	१८५
देवडा मुक्तदाम		२७४	३	१८३
दोय एक वीच दीह		२७१	३	१७०
घू घळै रजेस घोम		२७१	३	१६८
माखा तुरग मेलि		२७२	३	१७६
रीभवै हसै रिखेम	२७३	३	१८०	

छन्दनाम	प्रथम पक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मदिक	वाकडा कमघ वीर	२७४	३	१८४
	वाजता न्र वाळ वीर	२७२	३	१७३
	सूर राव हाथ सेल	२७३	३	१७७
	सूरवीर दोइ साथ	२७३	३	१८१
मत मातंग लीला करदंडक—हालिया एहडा घेरवकी घडा	२६७	३	१५६	
मालती	अकास उडाय	२६२	३	२२७
	असे अणभग	२६२	३	२२४
	इसा अणपार	२६३	३	२३४
	श्रीदक्क उराळ	२६३	३	२३३
	चय तजि चक्क	२६२	३	२२६
	जसौल जत्राव	२६३	३	२३०
	घुजत ध्रहाड	२६३	३	२३२
	नगा असि नाळ	२६२	३	२२५
	नदी बह नाळ	२६२	३	२२८
	अथी अणपार	२६२	३	२२६
लसै दळ लेस	२६३	३	२३१	

सूरजप्रकाशके प्रथम खडके सपादनके सहायक ग्रथोकी सूची



- १ उदयपुरका इतिहास—डॉ० गौरीशंकर हीराचद ओभा कृत—जिल्द १, २
- २ जोधपुर राज्यका इतिहास—डॉ० गौरीशंकर हीराचद ओभा कृत—जिल्द १, २
- ३ जोधपुर राज्यकी ख्यात—(हस्तलिखित) हमारे संग्रहमे ।
- ४ दयाळदासकी ख्यात—सिढायच दयाळदास कृत—भाग २
डॉ० दशरथ शर्मा आदि द्वारा सपादित
अनूप सस्कृत लायब्रेरी, वीकानेर, द्वारा प्रकाशित
- ५ नैणसी, मुहणोत नैणसीकी ख्यात—काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित—
खड १, २
- ६ मारवाड़का इतिहास—प० विश्वेश्वरनाथ रेळु कृत—प्रथम भाग ।
- ७ मारवाड़का संक्षिप्त इतिहास—प० रामकरण आसोपा कृत ।
- ८ वीर विनोद—महामहोपाध्याय, कविराजा श्यामलदास कृत—भाग १, २
- ९ तवारीखे पालनपुर—सैयद गुलाब मिया कृत
- १० पालनपुर राज्यनो इतिहास—(गुजराती) भाग १—नवाब सरताले मुहम्मद खा कृत
- ११ राजरूपक—वीरभारण रतनू कृत





राजस्थान सरकार

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

Rajasthan Oriental Research Institute

जोधपुर



सूची-पत्र

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

मार्च, १९६१ ई०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-साला

प्रधान सम्पादक-पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित ग्रन्थ

१ सस्कृत

- १ प्रमाणमजरी, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्यकृत, सम्पादक - मीमानान्यायकेमरी प० पट्टाभिरामशास्त्री, विद्यासागर । मूल्य-६००
- २ यन्त्रराजरचना, महाराजा सवाईजयसिंह-कारित । सम्पादक-स्व० प० केदारनाथ ज्योतिर्विद्, जयपुर । मूल्य-१७५
- ३ महर्षिकुलवंभवम्, स्व० प० मधुनन्दन ओझाप्रणीत, सम्पादक-म०म० प० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी । मूल्य-१०.७५
- ४ तर्कसंग्रह, अन्नभट्टकृत, सम्पादक-डॉ. जितेन्द्र जेटनी, एम ए, पी-एच. डी, मूल्य-३००
- ५ कारकसंबन्धोद्योत, प० रभसनन्दीकृत, सम्पादक-डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम ए, पी-एच डी. । मूल्य-१.७५
- ६ वृत्तिदीपिका, मौनिकृष्णभट्टकृत, सम्पादक-स्व० प० पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य । मूल्य-२००
- ७ शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक-डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम ए, पी-एच. डी । मूल्य-२.००
- ८ कृष्णगीति, कवि सोमनाथविरचित, सम्पादिका-डॉ० प्रियवाला शाह, एम ए, पी-एच डी, डी लिट् । मूल्य-१.७५
- ९ नृत्तसंग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका-डॉ० प्रियवाला शाह, एम ए, पी-एच. डी., डी लिट् । मूल्य-१.७५
१०. शृङ्गारहारावली, श्रीहर्षकविरचित, सम्पादिका-डॉ० प्रियवाला शाह, एम ए, पी-एच डी, लिट् । मूल्य-२७५
- ११ राजविनोद महाकाव्य, महाकवि उदयरजप्रणीत, सम्पादक-प० श्रीगोपालनारायण वहुरा, एम. ए., उपसञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य-२२५
- १२ चक्रपाणिविजय महाकाव्य, भट्टलक्ष्मीधरविरचित, सम्पादक-केशवराम काशीराम शास्त्री मूल्य-३.५०
१३. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्णकृत, सम्पादक-प्रो० रसिकलाल छोटालाल पारिख तथा डॉ० प्रियवाला शाह, एम ए, पी-एच. डी., डी लिट् । मूल्य-३७५
१४. उक्तिरत्नाकर, साधुमुन्दरगणिविरचित, सम्पादक-पुरातत्त्वाचार्य श्रीजिनविजयमुनि, सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य-४७५
- १५ दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० प० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक-प० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य । मूल्य-४२५
- १६ कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथविरचित, सम्पादक-प० श्रीगोपालनारायण वहुरा, एम. ए., उप-संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । इन्ही कविवर की अपर कृति श्रीकृष्णलीलामृतसहित । मूल्य-१५०
- १७ ईश्वरविलासमहाकाव्यम्, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक-भट्ट श्रीमथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर । मूल्य-११५०

- १८ रसदीर्घिका, कविविद्यारामप्रणीत, सम्पादक-प० श्रीगोपालनारायण बहुरा, उपसचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य-२.००
- १९ पद्यमूक्तावली, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक-भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य । मूल्य-४.००
- २० काव्यप्रकाशसकेत, भाग १ भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पादक-श्रीरसिकलाल छो० पारीख, मूल्य-१२.००
२१. ,, भाग २ ,, ,, मूल्य-८.२५
२२. वस्तुरत्नकोष, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक-डॉ० प्रियवाला शाह । मूल्य-४.००
२३. दशकण्ठवधम्, प० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक-प० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी । मूल्य-४.००
- २४ श्री भुवनेश्वरीमहास्तोत्रम्, सभाष्य, पृथ्वीधराचार्यविरचित, कवि पद्मनाभकृत, भाष्य-सहित पूजापञ्चाङ्गादिसंवलित । सम्पादक-प० श्रीगोपालनारायण बहुरा । मूल्य-३.७५

राजस्थानी और हिन्दी

- २५ कान्हडदेप्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभविरचित, सम्पादक-प्रो० के.बी व्यास, एम ए, । मूल्य-१२.२५
२६. क्यामखा-रोसा, कविवर जान-रचित, सम्पादक-डॉ० दशरथ शर्मा और श्रीअगरचन्द नाहुटा । मूल्य-४.७५
- २७ लावा-रासा, चारण कविया गोपालदानविरचित, सम्पादक-श्रीमहतावचन्द खारैड । मूल्य-३.७५
२८. वांकीदासरी ख्यात, कविवर वाकीदामरचित, सम्पादक-श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम ए, । मूल्य-५.५०
- २९ राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १, सम्पादक-श्रीनरोत्तम स्वामी, एम ए, । मूल्य-२.२५
- ३० कवीन्द्र कल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वतीविरचित, सम्पादिका-श्रीमती रानी लक्ष्मी-कुमारी चूडावत । मूल्य-२.००
- ३१ जुगलविलास, महाराज पृथ्वीसिंहकृत, सम्पादिका-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत । मूल्य-१.७५
३२. भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारणकृत, सम्पादक-श्री उदैराजजी उज्ज्वल । मूल्य-१.७५
- ३३ राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोकी सूची, भाग १ । मूल्य-७.५०
- ३४ राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके हस्तलिखित ग्रंथोकी सूची, भाग २ । मूल्य-१२.००
- ३५ मुहता नैणारी ख्यात, भाग १, मुहता नैणसीकृत, सम्पादक-श्रीब्रद्रीप्रसाद साकरिया । मूल्य-८.५०
- ३६ रघुवरजसप्रकाश, किमनाजीग्राहाकृत, सम्पादक-श्री सीताराम लाळस । मूल्य-८.२५
- ३७ राजस्थानी हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग १, सम्पादक-मुनि श्रीजिनविजय । मूल्य-४.५०
- ३८ वीरवाण, ढाढी वादरकृत, सम्पादिका-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत । मूल्य-४.५०
३९. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग २, सम्पादक-श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम ए., साहित्यरत्न । मूल्य-२.५०
- ४० स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण ग्रन्थ संग्रह सूची, सम्पादक-श्रीगोपालनारायण बहुरा एम ए और श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित । मूल्य-६.२५
४१. सूरजप्रकाश, भाग १-कविया करणीदानजी कृत, सम्पादक-श्री सीताराम लाळस । मूल्य-८.००

प्रेसों में छप रहे ग्रंथ

सस्कृत

१. शकुनप्रदीप, लावण्यशर्मरचित, सम्पादक—मुनि श्रीजिनविजय ।
२. त्रिपुराभारतीलघुस्तव, धर्माचार्यंप्रणीत, सम्पादक—मुनि श्रीजिनविजय ।
३. करुणामृतप्रपा, भट्ट सोमेश्वरविनिमित्त, सम्पा०—मुनि श्रीजिनविजय ।
४. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर सग्रामसिंहरचित, सम्पा०—मुनि श्रीजिनविजय ।
५. पदार्थरत्नमजूषा, प० कृष्णमिश्रविरचित, सम्पा०—मुनि श्रीजिनविजय ।
६. वसन्तविलास फागु, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०—श्री एम सी मोदी ।
७. नन्दोपाख्यान, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०—श्री वी जे सांडेसरा ।
८. चान्द्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमिविरचित, सम्पा०—श्री वी डी. दोशी ।
९. वृत्तजातिसमुच्चय, कविविरहाङ्करचित, सम्पा०—श्री एच डी. वेलणकर ।
१०. कविदर्पण, अज्ञातकर्तृक " " "
११. स्वयभूच्छन्द, कविस्वयभूरचित " " "
१२. प्राकृतानन्द, रघुनाथकविरचित, सम्पा०—मुनि श्री जिनविजय ।
१३. कविकौस्तुभ, प० रघुनाथरचित, ,, श्री एम. एन. गोरी ।
१४. नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुभकर्णंप्रणीत, सम्पा०—डॉ. प्रियवाला शाह ।
१५. इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध, सम्पा०—डॉ श्रीदशरथ शर्मा ।
१६. हमीरमहाकाव्यम्, नयचन्द्रसूरिकृत, सम्पा०—मुनि श्रीजिनविजयजी ।
१७. रत्नपरीक्षादि, ठक्कुर फेरूरचित " "
१८. स्थूलिभद्रकाकादि, सम्पा०—डॉ० आत्माराम जाजोदिया ।
१९. वासवदत्ता, सुवन्धुकृत, सम्पा०—डॉ० जयदेव मोहनलाल शूक्ल ।
२०. घटखर्परादि पंचलघुकाव्यानि ,, प० अमृतलाल मोहनलाल ।
२१. भुवनदीपक, यावनाचार्यकृत, सम्पा०—प० श्रीपुरुषोत्तमभट्ट ।

राजस्थानी और हिन्दी

२२. महता नैणसीरी ख्यात, भाग २, मुहता नैणसीकृत, सम्पा०—श्रीवद्वीप्रसाद साकरिया ।
 २३. गोरा बादल पदमिणी चऊपई, कवि हेमरतनकृत ,, श्रीउदयसिंह भटनागर ।
 २४. राजस्थानमें सस्कृत साहित्यकी खोज, एस आर भाण्डारकर हिन्दीअनुवादक—श्रीब्रह्मदत्त त्रिवेदी ।
 २५. राठौडारी वंशावली, सम्पा०—मुनि श्रीजिनविजय ।
 २६. सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्यग्रन्थसूची, सम्पादक—मुनिश्रीजिनविजय ।
 २७. मीरां-बृहत्-पदावली, स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण द्वारा सकलित, सम्पा०—मुनि श्रीजिनविजय ।
 २८. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग ३, संपादक—श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी ।
 २९. सूरजप्रकास, भाग २, कविया करणीदानकृत, सम्पा०—श्रीसीताराम लाळस ।
 ३०. नेहतरंग, वूंदीनरेश रावराजा बुधसिंह हाडाकृत, सम्पा०—श्रीरामप्रसाद दाधीच ।
- विशेष—पुस्तक-विक्रेताओं को २५ कमीशन दिया जाता है ।

